

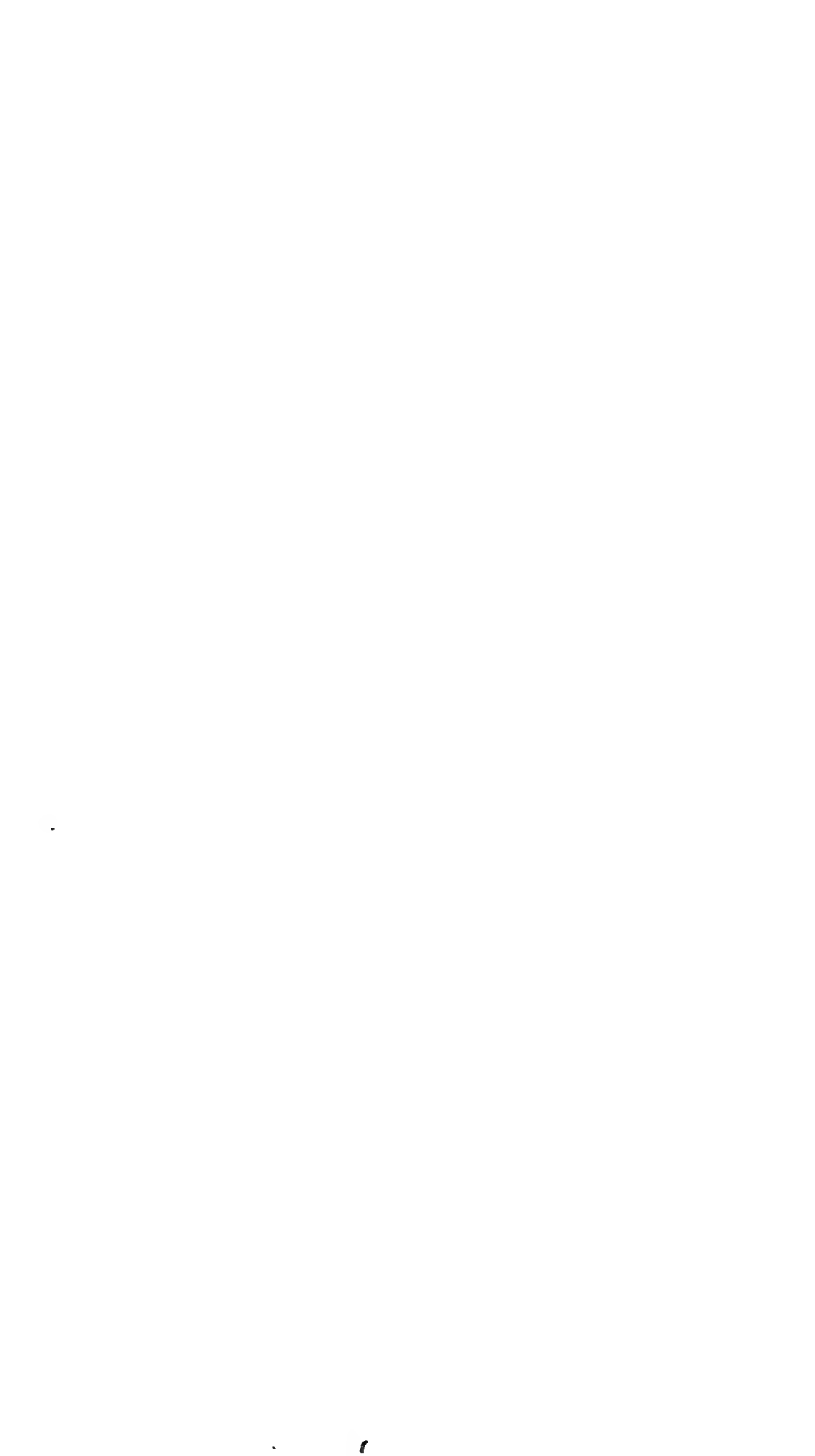
GOVERNMENT OF INDIA
ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA
CENTRAL
ARCHÆOLOGICAL
LIBRARY

ACCESSION NO 23621

CALL No. 091.4912/G.O.M.L.M.

D.G.A. 79





A DESCRIPTIVE CATALOGUE
OF THE
SANSKRIT MANUSCRIPTS

IN THE
GOVERNMENT ORIENTAL MANUSCRIPTS
LIBRARY, MADRAS

BY
S. KUPPUSWAMI SASTRI, M.A.
CURATOR, GOVERNMENT ORIENTAL MANUSCRIPTS LIBRARY, AND PROFESSOR OF SANSKRIT
AND COMPARATIVE PHILOLOGY, PRESIDENCY COLLEGE, MADRAS

Prepared under the orders of the Government of Madras

Volume XXV.—Supplemental

091.49.2
G.O.M.L.M

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL
OF THE GOVERNMENT OF INDIA

M A D R A S
PRINTED BY THE SUPERINTENDENT, GOVERNMENT PRESS

1924

23621
23. 4. 56.
291 4912/G.O.M.L.M

CONTENTS.

| Name of the work. | Number. | Page |
|---|---------|------|
| Dhāryānirāpaṇa | 14077 | 9491 |
| Samānapadāni | 14078 | 9491 |
| Śāmavedalakṣaṇa | 14079 | 9492 |
| Vēdalakṣaṇa | 14080 | 9492 |
| | 14098 | 9502 |
| Padaratnaparibhāṣā | 14081 | 9493 |
| Saptasankhyānirāpaṇa | 14082 | 9494 |
| Rgvēdānukramaṇikā | 14083 | 9494 |
| Brahmayajūprayōga | 14084 | 9495 |
| | 14112 | 9511 |
| | 14331 | 9619 |
| | 14337 | 9621 |
| Śeṣatvaśeṣitalakṣaṇopanyāsa | 14085 | 9495 |
| Viśistādvaitavedūnta | 14086 | 9496 |
| Vēdāntaviṣaya | 14087 | 9496 |
| | 14104 | 9506 |
| Bhēdadhikkāra with Satkriyā | 14088 | 9497 |
| Vēdūntadvayatātparyā | 14089 | 9498 |
| Maṇiṣāpaṇcaka | 14090 | 9499 |
| Śivakavaca | 14091 | 9499 |
| Hantraprayōga | 14092 | 9499 |
| Ādhānaprayōga | 14093 | 9500 |
| Śrautaprayōga | 14094 | 9500 |
| Uhaḥchalākṣara | 14095 | 9501 |
| Agnistōmaprayōga | 14096 | 9502 |
| Vedāṅgajyautiṣa | 14097 | 9502 |
| Cakrādīdhāranapramāṇa | 14099 | 9503 |
| Śrutivākya | 14100 | 9503 |
| Narasimhadhyāna | 14101 | 9504 |
| Dāyavibhāgaśloka | 14102 | 9504 |
| Pañcabrahmamantra with commentary | 14103 | 9505 |
| Hanumadyautrōddhāra | 14105 | 9506 |
| Līngatarpaṇa | 14106 | 9507 |
| Rudramaṅgalāśāsana with Telugu meaning | 14107 | 9508 |
| Gāyatrīmantrajapakrama | 14108 | 9508 |
| Hērāmbopaniṣad | 14109 | 9509 |
| Pratiṣṭhākārikā | 14110 | 9510 |
| Līnganyāsa | 14111 | 9510 |
| Bhasmajūbālōpaniṣad | 14113 | 9512 |
| Bhūtisūnāvidhi | 14114 | 9512 |
| Pañcūkṣaṇmantra | 14115 | 9513 |
| Amsumadbheda : Kūṣyapīya | 14116 | 9513 |

| Name of the work | Number. | Page |
|---|---------|------|
| Brhajjūbālōpaniśad | 14117 | 9514 |
| Prāṇapraśiṣṭhāmantra | 14118 | 9514 |
| Taittirīyōpaniśad | 14119 | 9514 |
| Chāndogyaupaniśad | 14120 | 9514 |
| | 14127 | 9516 |
| | 14136 | 9521 |
| Sandhyāvandanamantra | 14121 | 9514 |
| Gitagovinda | 14122 | 9515 |
| Dakṣasthūlipūkavidhi | 14123 | 9515 |
| Aitareyaupaniśad | 14124 | 9516 |
| Īśvāryōpaniśad | 14125 | 9516 |
| Mundakopaniśad | 14126 | 9516 |
| Pañcikarānavyākhyā | 14128 | 9517 |
| | 14285 | 9595 |
| Mahāvākyaṛṭhavicarana | 14129 | 9517 |
| Dhyānakrama | 14130 | 9517 |
| Pranavamantra | 14131 | 9518 |
| Pañcikarana | 14132 | 9519 |
| | 14181 | 9542 |
| Ātmasannyāsavidhi | 14133 | 9519 |
| | 14212 | 9555 |
| | 14241 | 9572 |
| | 14247 | 9575 |
| | 14378 | 9644 |
| | 14495 | 9705 |
| Kramasannyāsavidhi | 14134 | 9519 |
| Sannyāśikṛtya | 14135 | 9520 |
| Prūyaścittaviśaya | 14137 | 9521 |
| | 14152 | 9526 |
| Sannyāsaprayōga | 14138 | 9521 |
| Śivohampañcaka | 14139 | 9522 |
| Mṛttikāśnānavidhūna | 14140 | 9522 |
| Bhāgavatadharmā | 14141 | 9523 |
| Paramarahasyaśivatattvavidyōpaniśad | 14142 | 9523 |
| Viśayavākyaḍipikā | 14143 | 9524 |
| Yamunāpūjā | 14144 | 9524 |
| Anantavratakalpa | 14145 | 9525 |
| Tarkabhāṣā | 14146 | 9525 |
| Rgvēdalakṣaṇa | 14147 | 9525 |
| | 14388 | 9648 |
| Rksaṅghitā | 14148 | 9525 |
| | 14346 | 9627 |
| Āvalīyanapūrvaprayōga | 14149 | 9526 |
| | 14336 | 9621 |
| Śrīśūktā | 14150 | 9526 |
| Brahmacāritrataviśaya | 14151 | 9526 |
| Upanaśanaseñkalpa | 14153 | 9527 |
| Aitareyabrāhmaṇa | 14154 | 9526 |
| | 14162 | 9532 |

| Name of the work. | Number. | Page |
|--|---------|------|
| Upākarmaavidhi | 14155 | 9528 |
| Curāṅkā | 14156 | 9529 |
| Varamaṅgalāṣṭaka | 14157 | 9529 |
| | 14159 | 9530 |
| | 14161 | 9531 |
| | 14188 | 9544 |
| | 14400 | 9684 |
| Maṅgalāṣṭaka | 14158 | 9530 |
| | 14309 | 9610 |
| Vadhuvaiśvavāda | 14160 | 9531 |
| Arkavivūha | 14163 | 9532 |
| Dvibhāryāṅgisaṁskāra | 14164 | 9533 |
| Vratatatusṭaya | 14165 | 9533 |
| | 14158 | 9682 |
| Purvāparaprayoga | 14166 | 9534 |
| Navagrahasṭōtra | 14167 | 9534 |
| Vāyusṭōtramantrapurascaraṇaḥ addhāt | 14168 | 9535 |
| Viśvūmitrasaṁhitā | 14169 | 9535 |
| Kalanirṇaya | 14170 | 9536 |
| Āturasannyāsaḥ prayōga | 14171 | 9536 |
| Itihāsopaniṣad | 14172 | 9537 |
| | 14185 | 9544 |
| Somōtpatti | 14173 | 9537 |
| | 14186 | 9544 |
| Ajapāvidhāna | 14174 | 9537 |
| Mātrkūsarasvatīmantā | 14175 | 9538 |
| Śrāvanasānīāravrata | 14176 | 9539 |
| Jyantiṣavisaya | 14177 | 9539 |
| | 14248 | 9576 |
| | 14260 | 9585 |
| | 14348 | 9628 |
| | 14500 | 9613 |
| Kuṇḍikṛti | 14178 | 9539 |
| Kūrtaviryārjunayantroddhara | 14179 | 9540 |
| Sitārāmacakra | 14180 | 9541 |
| Gaḍḍāntasāntimantra | 14182 | 9542 |
| Tryambakakaipa | 14183 | 9543 |
| | 14402 | 9655 |
| | 14405 | 9686 |
| Rajasvalāśānti | 14184 | 9543 |
| | 14182 | 9608 |
| Rudraprasna | 14187 | 9544 |
| Vatvanugrahaṣṭaka | 14189 | 9545 |
| Punarādhāna | 14190 | 9545 |
| Udakaśāntimantra | 14191 | 9546 |
| Udakaśāntiprayoga | 14192 | 9546 |
| Śrāvanahōma | 14193 | 9546 |
| Nāndiprayōga | 14194 | 9547 |
| Navagrahapūjāhōmādi | 14195 | 9548 |

| Name of the work. | Number. | Page |
|---|---------|-------|
| Prayōgapaddhati | 14196 | 9548 |
| Puṇassandhāna | 14197 | 9548 |
| Bhagavadgītā | 14198 | 9549 |
| Candrasekharāṣṭaka | 14199, | 9549, |
| | 14281 | 9593 |
| Mārkaṇḍeyastōtra | 14200 | 9549 |
| Sāmavedāsanhitā : Rkpāṭha | 14201 | 9550 |
| Dīkṣālanamaskāra | 14202 | 9550 |
| Navagrahanamaskāra | 14203 | 9550 |
| Śrisukta-japa | 14204 | 9551 |
| Bindudvādasivratākalpa | 14205 | 9551 |
| Āgrayapasthūlipāka | 14206 | 6552 |
| Mahānyāsa | 14207, | 9552, |
| | 14269 | 9587 |
| Śrīśailasankalpa | 14208 | 9552 |
| Śaivaśrāddhaprayōga | 14209 | 9553 |
| Āpastambagrhyaprayōga | 14210 | 9554 |
| Rāmagaḍya | 14211 | 9554 |
| Yatisaṁskāraprayōga | 14213, | 9555, |
| | 14497 | 9706 |
| Yatipārvanaprayōga | 14214 | 9556 |
| Aparaprayōga | 14215 | 9556 |
| Vaśyaprayōga | 14216 | 9557 |
| Sāntiprayōga | 14217 | 9558 |
| Mṛtyulāṅgūlamantra | 14218 | 9559 |
| Dvādasivrataviśaya | 14219 | 9559 |
| Jayādīprāyascittahōmānukramanīkā | 14220 | 9559 |
| Agnimukha | 14221 | 9560 |
| Darśanaśrāddhaprayōga | 14222 | 9560 |
| Dharmaśāstraśloka | 14223 | 9561 |
| Puṇyābhavācana | 14224 | 9561 |
| Mortidhyāna | 14225 | 9562 |
| Āpastambadharmasūtra | 14226 | 9563 |
| Gāyatrīsāvitrisarassvatīkavaca | 14227 | 9563 |
| Śravaṇadvādaśīnirṇaya | 14228 | 9563 |
| Āpriyā | 14229 | 9564 |
| Gopālukasaṁdhyāvandanaparakāra | 14230 | 9565 |
| Pravarūdhya | 14231 | 9566 |
| Aṣṭavargadaśāphalādivivaraṇa | 14232 | 9566 |
| Navagrahapujā | 14233 | 9567 |
| Ṣaḍasti : with commentary | 14234 | 9568, |
| | 14485 | 9700 |
| Āśvalāyanasamārtapradīpikā | 14235 | 9568 |
| Āśvalāyanapāṭimēdhikaprayōga | 14236 | 9568 |
| Ghataśrāddhavidhi | 14237 | 9969 |
| Uḍakakriyā | 14238 | 9570 |
| Nāgaprati-ṭhāvra | 14239 | 9571 |
| Nārāyaṇabali | 14240 | 9572 |
| Vighnēśvaragīta | 14242 | 9573 |

| Name of the work. | Number. | Page |
|--|-----------------------------|------|
| Kāvṛibhujāṅga | 14243 | 9573 |
| Saṁnyāsisasāṁskāra | 14244 | 9574 |
| Dattahōmaprayōga | 14245 | 9575 |
| Dattamīmāṁsā | 14246 | 9575 |
| Āśāntaramṛtasāṁskāra | 14249 | 9577 |
| Śivagadya | 14250 | 9577 |
| Karmamādhyasūtakādiviśaya | 14251 | 9578 |
| Dharmāmṛta | 14252 | 9579 |
| Jinasāṁhitāsaṅgraha | 14253 | 9580 |
| Prakriyākāumudivṛkhyā | 14254 | 9581 |
| Prākṛtasaptasati | 14255 | 9582 |
| Indriyalakṣaṇa | 14256 | 9582 |
| Nyāyasiddhāntatattva | 14257 | 9583 |
| Nyāyasāra | 14258 | 9583 |
| Nyāyasāra : with commentary | 14259 | 9584 |
| Ātatrāṇaparāyanastōtra | 14261 | 9585 |
| Mahāsāṁkalpā | 14262 | 9585 |
| Tarkabhāṣāvṛkhyā : Cennubhaṭṭiyā | 14263 | 9585 |
| Rāmāyana | 14264 | 9586 |
| Adityahṛdaya | 14265 | 9586 |
| Sūryasūta | 14266 | 9586 |
| Khādiragṛhyasūtra with commentary | 14267 | 9586 |
| Nyāyasūtravivṛti : Kēcana | 14268 | 9586 |
| Śāṇaisācarastōtra | 14270 | 9587 |
| Kaivalyōpaniṣad | 14271 | 9588 |
| Gitāsāra | 14272 | 9588 |
| Bālarakṣāvidhi | 14273 | 9589 |
| Nakṣatrahōmaprayōga | 14274 | 9590 |
| Caturvimsatimūrtilakṣaṇa | 14275 | 9590 |
| Yatisāṁskāravidhi | 14276 | 9591 |
| Śāntihōma | 14277 | 9591 |
| Tirthasāradhāṅgapipḍadānavacana | 14278 | 9592 |
| Ramacandraṣṭōttarasatanāṁmastōtra | 14279 | 9593 |
| Sūryaṣṭōttarasatanāṁmastōtra | 14280 | 9593 |
| Pāṇḍavagītā | 14282 | 9594 |
| Śrūtigītā with commentary | 14283 | 9594 |
| Śivagītā | 14284 | 9595 |
| Itihāṣōttama | 14286 | 9596 |
| Bhāratavāṁśāvali | 14287 | 9596 |
| Mahābhāratasaṅgraha | 14288 | 9597 |
| Dharmasāstra | 14289 | 9597 |
| Gāyatrīyakṣaradhyāna | 14290 | 9598 |
| Sandhyāvandanavidhi | 14291 | 9598 |
| Prāyaścittavidhi | 14292 | 9599 |
| Rgvēdamantraprasnabhāṣya | 14293 | 9600 |
| Vāstusāntihōma | 14294 | 9600 |
| Jātakarmādimantrārtha | 14295 | 9602 |
| | 14399 9653 14459 9683 14530 | 9727 |
| | 14537 9782 14539 | 9733 |

| Name of the work. | Number. | Page |
|--|---------|------|
| Gṛhyacandrikā | 14297 | 9602 |
| Śrāddhaviṣayavacana | 14298 | 9603 |
| Aśaucadīpikā | 14299 | 9604 |
| Niruktaparīṣiṣṭa | 14300 | 9605 |
| Amarakōśapadaṭṭippaṇa | 14301 | 9605 |
| Putrajananadānaviśeṣa | 14302 | 9605 |
| Adhiṣṭhānalakṣaṇa with Telugu meaning | 14303 | 9606 |
| Madhvāṣṭaka | 14304 | 9607 |
| Viṣṇusaahasranāmastōtra | 14305 | 9607 |
| Raghuvamśa | 14306 | 9608 |
| | 14349 | 9629 |
| Garudapañcamivratavidhi | 14397 | 9608 |
| Śivarātrivratakalpa | 14308 | 9609 |
| Mithyātvaḥbhanga | 14310 | 9610 |
| Dr̥ṣyatvaḥetubhanga | 14311 | 9611 |
| Śisupālavadha | 14312 | 9611 |
| Punassandhānaprayōga | 14313 | 9611 |
| Pratyābdikaśrāddhaprayōga | 14314 | 9612 |
| Rāmasaptarṣiṣṭōtra | 14315 | 9613 |
| | 14512 | 9715 |
| Gajendramōkṣa | 14316 | 9613 |
| | 14354 | 9630 |
| Kṛṣṇakarnāmṛta | 14317 | 9613 |
| Nāmanakṣatrādīnirūpaṇa | 14318 | 9613 |
| Bhāgavata | 14319 | 9614 |
| Nāmalīṅgānuśāsaṇa... .. | 14320 | 9614 |
| Madhvaviṣaya | 14321 | 9614 |
| Abhiśravaṇamantra | 14322 | 9614 |
| Yamagītā | 14323 | 9615 |
| Prayogarātna | 14324 | 9615 |
| | 14339 | 9623 |
| Dēvināhātmya | 14325 | 9616 |
| Dēvistōtra | 14326 | 9616 |
| Hastamalakastōtra | 14327 | 9616 |
| Ekōddiṣṭaprayōga | 14328 | 9617 |
| Tithyādīnirpaya | 14329 | 9617 |
| | 14533 | 9729 |
| Dakṣināmūrtyaṣṭakā | 14330 | 9618 |
| Nakṣatranighanṭu | 14332 | 9619 |
| Namaśśivāyāṣṭaka | 14333 | 9616 |
| Śrautaprayogurātna | 14334 | 9620 |
| Bhāgavatātātparyanirnaya | 14335 | 9621 |
| Purvaprayoga | 14338 | 9622 |
| Gṛhaṇajananaūdhṣanti | 14340 | 9623 |
| Vṛṣotsarjanaprayoga | 14341 | 9623 |
| Prasnopanīśad | 14342 | 9624 |
| Garuḍapurāṇa | 14343 | 9624 |
| Prētasamskāravidhi (Kārikā) | 14344 | 9625 |
| Dāyavibhūgavacana | 14345 | 9626 |

| Name of the work. | Number. | Page |
|---|---------|-------|
| Bhūgōla | 14347 | 9627 |
| Siddhāntakaumudī | 14350 | 9629 |
| Rgvēdasandhyāvandanakrama | 14351 | 9629 |
| Kṛṣṇajayantivratārghyaśloka | 14352 | 9629 |
| Nārāyaṇopaniṣad | 14353 | 9630 |
| | 14384 | 9647 |
| | 14547 | 9737 |
| Dharmapravṛtti | 14355 | 9630 |
| Āpastambāparaprayōga | 14356, | 9631, |
| | 14494 | 9704 |
| Bhārṛṣāpindyaṇayōga | 14357 | 9632 |
| Sūtikārajasvalāgarbhiniṃṣtiprāyaścittavidhi | 14358 | 9633 |
| Mṛttikāśnānavidhi | 14359 | 9633 |
| Anābhirāgnyantyēṣṭiprayōga | 14360 | 9634 |
| Tāmbūlacarvaṇavidhi | 14361 | 9635 |
| Agnihōtraprayōga | 14362 | 9636 |
| Vāsavadattāstha padanirvacana | 14363 | 9636 |
| Mālatimādhavavyākhyā | 14364 | 9637 |
| Patrasandēśa | 14365 | 9637 |
| Viṣṇustava with commentary | 14366 | 9638 |
| Agninūrajūnitimantārtha | 14367 | 9639 |
| Nyāyasiddhāntamañjarīdīpikā : Tarkaprakāśikā | 14368 | 9639 |
| Muktāvalīvyākhyā | 14369 | 9640 |
| Ēkādāśinirṇaya with Kanerese meaning | 14370 | 9640 |
| Rudrākṣadhāraṇavidhi | 14371 | 9641 |
| Śrūtabōdha | 14372 | 9642 |
| Nṛsiṃhatāpinyupaniṣad | 14373 | 9642 |
| Aṣṭāṅghrdayavyākhyā : Bālaprabōdhini | 14374 | 9642 |
| Aṣṭāṅghrdayavyākhyā : Sarvāṅgasundarī | 14375 | 9643 |
| Abhiśēkamantra | 14376 | 9644 |
| Pañcasānti | 14377 | 9644 |
| Purusasūktahōmamantra | 14379 | 9645 |
| Rudrahōma | 14380 | 9645 |
| Āpāmārga hōmavidhi with Telugu meaning | 14381 | 9646 |
| Kālisantūranopaniṣad | 14382 | 9646 |
| Taittirīyopaniṣadbhāṣya | 14383 | 9647 |
| Atharvaśira Upaniṣad | 14385 | 9647 |
| Āśvalāyanaśrautasūtra | 14386 | 9647 |
| Taittirīyayajñsamhitā | 14387 | 9648 |
| Aparaviśya | 14389 | 9648 |
| | 14533 | 9732 |
| Boppanabhāṭṭīya | 14390 | 9649 |
| Añkurārpanaprayōga | 14391 | 9649 |
| Śrāddhavidhi | 14392 | 9650 |
| Āpastambasūtravṛtti : Sātradīpikā | 14393 | 9651 |
| Bōdhāyana gṛhyaśēśa sūtra | 14394 | 9651 |
| Dvibhāryāgnivibhāga with Prayōga | 14395 | 9651 |
| Dvibhāryāgnidvayasamśargavidhi | 14396, | 9652, |
| | 4534 | 9730 |

| Name of the work. | Number. | Page |
|--|---------|-------|
| Gaṇahōma | 14397 | 9652 |
| Hanumanmālāmantra | 14398 | 9653 |
| Uccōdarki | 14400 | 9659 |
| Yogīśvarīmantra | 14401 | 9654 |
| Gauripāñcāṅga | 14403 | 9655 |
| Ēkaśloka | 14404 | 9655 |
| Pañcaratna | 14405 | 9655 |
| Cāṭusloka | 14406 | 9655 |
| Vedāntakārikā | 14407 | 9656 |
| Rāmādurgūkavaca | 14408 | 9657 |
| Paramabhāgavatādi stōtra | 14409 | 9657 |
| Viṣṇumātrkāpūjā | 14410 | 9657 |
| Vedāntaviśayaślokanukramanīkā | 14411 | 9659 |
| Rāmacandramangalāṣṭaka | 14412 | 9658 |
| Rāmākṣṇanapañcaratna | 14413 | 9659 |
| Vyūhūrūddhanaprayōga | 14414 | 9659 |
| Paramahamsōpaniṣad | 14415 | 9660 |
| Brahmōpaniṣad | 14416 | 9660 |
| Jīvanmuktīprakaraṇa | 14417 | 9660 |
| Vyūsaputrāṣṭaka | 14418 | 9661 |
| Advaitamakaranda | 14419 | 9661 |
| Ātmānāt navivēka | 14420 | 9661 |
| Nṛsiṃhasstōtra | 14421 | 9662 |
| Rudrākṣajūbūlōpaniṣad | 14422 | 9663 |
| Yōgaśikhōpaniṣad | 14423 | 9663 |
| Jūbūlōpaniṣad | 14424 | 9663 |
| Bhōjanaviśayavacana | 14425 | 9663 |
| Vyātīpātavaidhṛtī prathamāmṛtavaśānti | 14426 | 9664 |
| Prathamāmṛtavaśānti | 14427 | 9664 |
| Viśanūḍī jananaśāntīprayōga | 14428, | 9665, |
| | 14441 | 9672 |
| Kūrmāśānti | 14429 | 9665 |
| Samudrasnānāṅgatīrtha-rādīdhavidhi | 14430 | 9666 |
| Grahanaśānti | 14431 | 9667 |
| Mahādēvaprati-ṭhā | 14432 | 9667 |
| Grahayōgaśānti | 14433 | 9668 |
| Navagrahaśāntīvidhi | 14434 | 9669 |
| Kuhāśānti | 14435, | 9670, |
| | 14450, | 9676, |
| | 14478 | 9695 |
| Bhūnuvārajanmanakṣatrayōgaśānti | 14436 | 9670 |
| Bhūmavārajanmarkṣayōgaśānti | 14437 | 9670 |
| Mandavārajanmarksayōga jananaśānti | 14438 | 9671 |
| Udyaddanta jananaśānti | 14439 | 9673 |
| Yamalajananaśānti | 14440 | 9671 |
| Kṛṣṇacaturdaśajananaśānti | 14442 | 9672 |
| Gaṇḍanaksatraśānti | 14443 | 9673 |
| Ēkanakṣatra-jātaśānti | 14444 | 9673 |
| Śanivārūrtavaśānti | 14445 | 9674 |

| Name of the work. | Number. | Page |
|---|---------|-------|
| Bhānuvārārtavasānti | 14446 | 9674 |
| Āpastambapurvaprayōgakārikā | 14447 | 9675 |
| Nāgabali | 14448 | 9676 |
| Śamānasandhi | 14449 | 9676 |
| Agninaṣṭaprayāścitta | 14451 | 9677 |
| Āpastambaśrāvaṇahōma | 14452 | 9678 |
| Puṇassandhānaparisatprāyaścitta | 14453 | 9678 |
| Anvārambhanīyaprayōga | 14454 | 9674 |
| Sthālipākaprayōga | 14455 | 9680 |
| Garbhādhāna | 14456 | 9681 |
| Puṇṣavanasimantaprayōga | 14457 | 9682 |
| Kākamaithunadarśanaśānti | 14461 | 9684 |
| Mahōtpātasānti | 14462 | 9684 |
| Jātavedasādurgānyāsa | 14463 | 9685 |
| Nāmetrayavidhāna | 14464 | 9686 |
| Sarvasāntikarmaprakāra | 14466 | 9687 |
| Kapōtasānti | 14467 | 9687 |
| Kadalīsānti | 14468 | 9688 |
| Utpalāsānti | 14469, | 9689 |
| | 14470 | 9690 |
| Śīthilīsāntikalpavidhi | 14471 | 9690 |
| Amāvāsyā prasūtiśānti | 14472 | 9691 |
| Molāślēṣājananaśānti | 14473 | 9692 |
| Jyesthānuṣṭatrajananaśānti | 14474 | 9693 |
| Sadantaajananaśānti | 14475, | 9693, |
| | 14476 | 9694 |
| Caturdaśiprasūtiśānti | 14477 | 9694 |
| Grahāṇa jananaśānti | 14479 | 9696 |
| Gomahīṣyādīdvitrivatesa prasūtiśānti | 14480 | 9697 |
| Ājyādīdānavidhi | 14481 | 9697 |
| Svanakṣatrajananaśānti | 14483 | 9699 |
| Gurugītā | 14484 | 9699 |
| Candramaulipāñcaka | 14486 | 9700 |
| Aparaviṣayavacana | 14487 | 9700 |
| Bhramarāmbikāṣṭaka | 14488 | 9701 |
| Tripurāṇudaryaṣṭaka | 14489 | 9701 |
| Kṛṣṇajayantivratākālpa | 14490 | 9702 |
| Janmāṣṭamivratākālpa | 14491 | 9702 |
| Saṅkṛāntinirṇaya | 14492 | 9703 |
| Navaग्रहārādhana | 14493 | 9703 |
| Atyāturavidhi | 14496 | 9701 |
| Taittirīyabrāhmaṇānukramanikā | 14498 | 9707 |
| Gāyatrījapaviṣaya | 14499 | 9708 |
| Upāntyabhārgavavratā | 14500 | 9708 |
| Āṅgirasasmṛti | 14501 | 9709 |
| Kartṭkrama | 14502 | 9709 |
| | 14528 | 9726 |
| Bhōjacaritra | 14503 | 9710 |
| Gautamadharmasūtrabhāṣya | 14504 | 9710 |

| Name of the work. | Number. | Page |
|---|---------|------|
| Vamadevasamhita | 14505 | 9711 |
| Pratiśukraśānti | 14506 | 9711 |
| Prayaścittavacana | 14507 | 9712 |
| Śuddhicandrikā | 14508 | 9712 |
| Kapiladhenuprasāmsā | 14510 | 9713 |
| Vibhāganirṇaya | 14511 | 9714 |
| Pūrvaprayōgapaddhati | 14513 | 9715 |
| Āgrayanaprayōga | 14514 | 9715 |
| Agnisāmsargaprāyaścittaprayōga | 14515 | 9716 |
| Aśvatthapūjāvidhi | 14516 | 9717 |
| Vratadānadivisaṃyavacana | 14517 | 9717 |
| Dattahōmaprakaraṇa | 14518 | 9718 |
| Cāturmāsyanirṇaya | 14519 | 9719 |
| Grahāṇanirṇaya | 14520 | 9720 |
| Mukhāvalōkanavidhi | 14521 | 9721 |
| Malamāsaṃptāhanirṇaya | 14522 | 9721 |
| Śrāddhīyaśmṛtīvacana | 14523 | 9722 |
| Śaṅkarakulalaksana | 14524 | 9723 |
| Parāśarasamṛti with commentary | 14525 | 9723 |
| Subhāṣita | 14526 | 9724 |
| Dattaputraviśaya | 14527 | 9725 |
| Āśaṇcaṇṇi | 14529 | 9726 |
| Vyavaharakāṇḍa | 14531 | 9728 |
| Patitaśrāddhādividhi | 14532 | 9729 |
| S ryaśataka with commentary | 14535 | 9731 |
| Yājñavalkyaśmṛti with Rjūmitakṣarā | 14536 | 9731 |
| Viṣṇusahasranāmāvali | 14540 | 9734 |
| Jitāntēstōtra | 14541 | 9734 |
| Pārvatīśaṅkarajayastōtra | 14543 | 9735 |
| Malamāsaṇṇi | 14544 | 9735 |
| Kulūmantra | 14545 | 9736 |
| Navarātripūjāvidhi | 14546 | 9736 |
| Dattātrēyavaprakavaca | 14548 | 9737 |
| Prakriyākaumudīyākhyā: Prasāda | 14549 | 9738 |
| Kumārasambhāvayākhyā: Sañjivini | 14550 | 9738 |
| Sarasaṇṇivratākalpa | 14551 | 9738 |
| Lalitāsahasranāmāvali | 14552 | 9739 |
| Vṛttīddharūpasangraha | 14553 | 9739 |
| Liṅganirṇaya | 14554 | 9739 |
| Bhṛitadanakrama | 14555 | 9739 |
| Yajñōpavitadhāraṇaprayōga | 14556 | 9740 |
| Nānāśmṛtīvacana | 14557 | 9741 |
| Āgamagrantha | 14558 | 9742 |
| Āyatrīrāmāyana | 14559 | 9743 |
| Rāmāyaparahaṣya | 14560 | 9744 |

ADDENDA AND CORRIGENDA.

| Page | Line | For | Read |
|------|------|------------------------|-------------------------|
| 9493 | 10 | सधुक्षण | सन्धुक्षण |
| „ | 25 | अवगृह्यस्यन्तं | अवगृह्यस्यान्तं |
| 9496 | 23 | 14807 | 14087 |
| 9501 | 1 | विष्टरा | विष्टरो |
| „ | 2 | विष्टर | विष्टर |
| 9502 | 14 | सोपपीथ | सोमपीथ |
| 9505 | 22 | सद्योजात | तद्योजातं |
| „ | 25 | जन्मातिलङ्घन | जन्मातिलङ्घन. |
| 9510 | 26 | पुष्पमीशान | पुष्पमीशान. |
| 9520 | 10 | समाप्ताः | समाप्तः. |
| 9522 | 8 | जुह्यात् | जुहुयात्. |
| 9529 | 12 | जरिक | जीरक |
| 9534 | 24 | तिलानुदाकुम्भांश्च | तिलानुदकुम्भांश्च. |
| 9541 | 25 | कुम्भकर्णचस्य | कुम्भकर्णस्य च |
| 9545 | 4 | वद्वनुग्रह | वद्वनुग्रह |
| 9558 | 26 | मा शिवन | मा शिवेन |
| 9561 | 31 | कर्मास्त | कर्मास्तु |
| 9563 | 25 | गायत्री | गायत्री |
| 9565 | 3 | यथा देवानां | यथा देवानां |
| „ | 4 | देवैर्नरथं तुरोभिः | देवैस्सरथं तुरोभिः |
| „ | 10 | नराशंस सुषूदतीमं | नराशंसस्सुषूदतीमं |
| 9566 | 1 | तन्नोऽनङ्ग प्रचोदयात्. | तन्नोऽनङ्गः प्रचोदयात्. |
| „ | 19 | विदुः | विदुः. |
| 9570 | 3 | त्यजेद्देश | त्यजेद् देशं |
| „ | 14 | शास्त्रविहित | शास्त्रविहित |
| „ | 17 | पाततेषु | पतितेषु |

| Page | Line | For | Rea ¹ |
|------|------|------------------|-------------------------------|
| 9572 | 16 | दशकालौ | देशकालौ |
| .. | 21 | तिष्ठनामिति | तिष्ठनामिति |
| 9571 | 5 | नभश्चाम्बि | नभश्चुम्बि |
| 9578 | 32 | सुत | सुतः |
| 9586 | 26 | विषयाः-केचन | विषयः |
| .. | 27 | Keeana | Omitted |
| 9587 | 5 | करणप्रा- | करणप्राग |
| 9590 | 19 | मत्यादि | मित्यादि |
| .. | 32 | चक्रगदा | चक्रगदा |
| 9603 | 31 | तृती | तृतीया |
| 9605 | 32 | विशेषः | विशेषः |
| 9610 | 13 | of the world | of the Nyāyāvarta which is |
| 9621 | 20 | कीरप्ये | करिप्ये |
| 9622 | 23 | नामाम्यहम् | नमाम्यहम् |
| 9632 | 24 | प्रतत्वाविमुक्ति | प्रतत्वाविमुक्ति |
| 9634 | 4 | प्रयाभूयि | प्रया भूमि |
| 9636 | 2 | ताम्बूल | ताम्बूल |
| 9651 | 30 | आकर्षय | आकर्षय |
| 9663 | 2 | nisat | ni-sat |
| 9670 | 1 | केतुप्रतिभा | केतुप्रतिभा |
| 9672 | 6 | सक्षयः | संक्षयः |
| 9677 | 32 | ग्न्युत्पत्ति | ग्न्युत्पत्ति |
| 9683 | 21 | उपराग च | उपरागे च |
| 9693 | 10 | योनिश्शास्त्रे | ज्योतिश्शास्त्रे |
| .. | 11 | तृतीयोऽध्यायः | तृतीयोऽध्यायः |
| 9694 | 25 | मन्दहेः | सन्देहः |
| 9695 | 10 | वर्जयेयुः | वर्जयेयुः |
| 9695 | 26 | द्वितीये | द्वितीये |

| Page | Line | For | Read |
|------|------|--------------------|--|
| 9699 | 12 | मातृभ | मातृभे |
| 9700 | 31 | मनाहे | मृताहे |
| 9701 | 32 | <i>ante</i> | <i>ante</i> wherein see for the beginning |
| 9703 | 18 | सङ्क्रमप्वे | सङ्क्रमणेषु |
| „ | 26 | त्रिष्णुं | त्रिष्णुपदं |
| 9704 | 9 | ब्रह्मजज्ञानं | ब्रह्मजज्ञानं |
| 9706 | 5 | सन्यस्तं | सन्यस्तं |
| „ | 6 | „ | „ |
| 9708 | 20 | व्ययुत | व्ययुतं |
| 9709 | 7 | काशिनं | काङ्गिनं |
| 9712 | 26 | गुह्य | शुद्धि |
| 9719 | 11 | क्राथित्वा | कारयित्वा |
| „ | 32 | मुहर्त | मुहूर्त |
| 9722 | 32 | अपराह्णतु सापण्ड्य | अपराह्णतु सापिण्ड्यं |
| 9728 | 5 | पाषाण्डं | पाषण्डं |
| 9730 | 31 | द्वितीयाववाहं | द्वितीयाववाह |
| 9732 | 28 | निवृत्ति | निवृत्ति |
| 9736 | 20 | शङ्खिनी | शङ्खिनी |
| 9739 | 22 | जाल | ज्वाला |

A DESCRIPTIVE CATALOGUE
OF THE
SANSKRIT MANUSCRIPTS.
VOLUME XXV.

SUPPLEMENTAL.

No. 14077. धार्यनिरूपणम्.
DHĀRYANIRŪPAṆAM.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 61, wherein this work was omitted to be mentioned in the list of other works.

Incomplete.

Indicates certain places in the Sāman chants of the Ūha portion of the Sāmaveda which have to be sung in certain peculiar tones.

Beginning :

अथोहगीतानां तृतीयचतुर्थयोर्यदक्षरं तद्धार्थमित्युच्यते । यत् तृतीये
तत्तृतीयं धारि, यच्चतुर्थे तच्चतुर्थम् । यत्र संहितं तच्चतुर्धा कुर्यात् ।
यदुच्चं तच्चतुर्धादिह्रस्वाह्रस्वस्वरह्रस्वो न वेदे (?) मलमश्रुत इति वचनात्
वियोनिमधिगच्छन्तीति तस्मा(दि)दमध्येतृणां संशयनिराकरणार्थम् ।

End :

वाङ्निधने अ(भि) प्रवा असावि समाना निषेधेऽप्य । अभ्रीवर्ते
सर्वत्र तरुतीनान् गौवर्जमिति (?) ॥

Colophon :

इति तृतीयधार्यस्समाप्तः ॥

No. 14078. समानपदानि.
SAMĀNAPADĀNI.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 2b of the MS. described under No. 61, wherein this work was omitted to be mentioned in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 977 ante.

Beginning :

अग्न इतरा विहा स्तोमा देवाः पर्वता अनू(रा)धाः पृथिव्या धियं धा
विश्वा जातवेदा हेत्या एकादश ।

End :

आशुः सोमपाः सहोज ईषवस्ताक्षा मित्रदुषा अनाधृष्याः कुमारा
देवा देवा दश ॥

Colophon :

इति समानपदानि समाप्तानि ॥

No. 14079. सामवेदलक्षणम्.

SĀMAVĒDALAKṢAṆAM.

Pages, 7. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 36 of the MS. described under No. 61, and not on fol. 1a as mentioned therein.

Incomplete.

A treatise on the modes of chanting the hymns of the Samaveda.

Beginning :

गद्य आद्यास्त्रयो(?) वर्णा दादयश्चैव वादयः ।

यादिवान्तं हकारश्च शसान्तावन्यसंयतौ ॥

* * * *

साम्नो नमो वेदम् । आयातधर्म इन्द्र इन्द्राणी तपस्वीह सोमो-
द्गाता शातु आयायि ब्रूयात् सोमो धर्मान् । नमो वाचे तृतीयः ।
आदित्यो वै भर्ता त्वां मां च प्रीत्या वै शास्यात् ।

End :

प्रीतः शुक्रः प्रियान् गुणानि सर्वसुरान्नत्वा प्रीणाति । इमे शान्त-
वध्यैवभिधान् पूजयेत् ।

एकविंश एकविंशः ॥

अकारे पञ्च एको ना आकारे द्वौ षडे(व)वा ।

इवर्णे सप्त वा त्रिर्वा उवर्णे चतुरष्ट वा ॥

एते ओ औ इत्येते अनवग्रहाः ॥

No. 14080. वेदलक्षणम्.

VĒDALAKṢAṆAM.

Pages, 11. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 6b of the MS. described under No. 61, wherein this has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Incomplete.

On Vedic accentuation and grammar chiefly in regard to the Khila portion of the R̥g Vēda.

Beginning :

स्वर्यवो देवयानस्य आवर्ति देवतातये ।
चिक्रतस्युक्तं चैव नव गृह्णन्ति पण्डिताः ॥
आद्यादित्यो जातवेदाः सधुक्ष(ण)मृशुः प्रभुः ।
अमर्त्यः सुक्रतुः स्वस्ति शतक्रतुविचर्षणिः ॥

* * * *

य उदात्तमनुदात्तं तद्यत्स्वरितं तत्पदे भवति नीचम् ।

End :

युजाथे अस्मे हरी रोदसी उभे त्वे अस्मे हन्.

No. 14081. पदरत्नपरिभाषा.
PADARATNAPARIBHĀṢĀ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 64a of the MS. described under No. 39.

Complete.

Indicates the means of knowing the words ending with न, Visarga, तु, से, etc., in each of the Vargas of the various Aṣṭakas of the R̥gvēda.

Beginning :

नान्तं विसर्गान्तमथावगृह्यस्यन्तं तुसेन्तं विषमं समं च ।
सङ्ख्यां प्रगृह्यस्य च पञ्चकृत्ये पदेषु वक्ष्ये प्रतिवर्गमत्र ॥
काद्यैरष्टौ चतुष्कांश्च वर्गादीनां नमैः क्रमात् ।
न विसर्गान्तदुःखण्डं कशयोर्विषमं समम् ॥

End :

वाक्यद्वयमिह ज्ञेयं सुखग्रहणसिद्धये ।
इत्यत्र परिभाषेयं लक्षणं स विशेषतः ॥

Colophon :

इति पदरत्नपरिभाषा समाप्ता ॥

No. 14082. सप्तसङ्ख्यानिरूपणम्.
SAPTASAN̐KHYĀNIRŪPAṆAM.

Pages, 79. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 65b of the MS. described under No. 39 and not on fol. 1 as stated therein.

Complete.

Gives seven figures probably to indicate seven kinds of particulars about each of the Vargas in the various Aṣṭakas of the R̥gveda such as the number of Padas in a Varga, etc.

Beginning :

अग्निमीळे—४७-० ८-१७-१-३-१४ ।

यदङ्ग—४१-०-४८-१७-०-३ ।

वायवायाहि—४९-६-७-१३-८०-० ।

वायविन्द्रः—३६-४-६-४-१२-०० ।

अश्विना—४९-४-१०-१९-३-०-१ ।

ओमासः—५१-०-७-२१-७-०-० ।

End :

प्राग्नये—३१-०-३ १२-२-०-१ ।

प्र नूनम्—२३-०-७-८-७-०-० ।

आयम्—३३-१-३ ७-४-१-९ ।

ऋतं च—६-०-०-२-०-०-१ ।

संसमित्—३३-०-६-४१ ४-१-१ ।

Colophon :

सप्तसङ्ख्या समाप्ता ॥

No. 14083. ऋग्वेदानुक्रमणिका.
RGVĒDĀNUKRAMANIKĀ.

Pages, 136. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 105a of the MS. described under No. 39 and not on fol. 64 as stated therein.

Almost complete.

Similar to the work described under No. 889 ante.

Beginning :

अग्निमीले नुता विश्वा दधाना अजोषा इन्द्र तास्सोमपा इमा जुष्टा
यत्सरा द्रप्ता वृतपृष्ठा यजत्रा द्रविणोदा दधाना शुभ्रा पञ्चदश । अग्नि-

मीले तुविजातौ दधाना इन्द्र योगे चक्षसे महाधने ये बृहते हूमहे यज्ञे
सुजिह्वौ भ्रियन्त एकादश ।

End :

बृहस्पतिर्नराशंसस्तपुर्मूर्धा त्रयः । प्राप्नये यः परस्या यो रक्षांसि यो
विश्वामि यो अस्य पोरे पञ्च ॥

No. 14084. ब्रह्मयज्ञप्रयोगः.

BRAHMAYAJÑAPRAYŪGAH.

Size, 7½ × 1½ inches. Pages, 12. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 198.

Complete with Vastranispīdanamantra.

Same work as that described under No. 3746 ante.

No. 14085. शेषत्वशेषित्वलक्षणोपन्यासः.

ŚĒṢATVAŚĒṢITVALAKṢANŌPANYĀSAH.

Pages, 5. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 212 and not on
fol. 16a as stated therein.

Wants the beginning ; otherwise complete.

A discussion of the inseparable relationship of the subsidiary and
the principal existing between the individual soul and the Supreme
Brahman.

Beginning :

परगतातिशयाधानेच्छयोपादेयत्वमेव यस्य स्वरूपं स शेषः परश्शे-
षीति भगवान् भाष्यकारो वेदार्थसङ्ग्रहे शेषत्वलक्षणमभाषिट । शेषः परा-
र्थत्वादिति शेषशेषिभावलक्षणपरस्य जैमिनिसूत्रस्य परैरन्यथा व्याख्यात-
त्वात्तद्व्यावृत्त्यर्थं तस्य सूत्रस्यार्थोऽनेन लक्षणग्रन्थेन यथावत्प्रदर्श्यते । अस्यार्थं
उच्यते—अन्यस्य प्रयोजनमेव यस्य परमप्रयोजनं स शेषः अन्यश्शेषीति
वाक्यार्थः । अत्र परशब्दोऽन्यपर्यायः । परातिशयशब्दयोः कर्मधारयशङ्का-
निवृत्त्यर्थो गतशब्दः ।

End :

शेषभूतवस्त्वाहितलीलारसाद्यतिशयभाक्त्वं परमात्मनो नावाप्तसमस्तका-
मत्वविरोधि । इच्छायां सत्यामभिमतविनियोगानुगुणपरिकरसंपत्तिर्द्वाप्तसमस्त-

कामता । यथाह भगवान् भाष्यकारो वेदान्तसारे—अस्यातृप्तस्याप्तकामत्वं हि सदाभिमतसकलभोगोपकरणसद्भाव इति । अतो यथोक्तं शेषत्वलक्षणमुपपन्नम् ॥

No. 14086. विशिष्टाद्वैतवेदान्तः.
VIŚIṢṬĀDVĀITAVĒDĀNTAḤ.

Pages, 9. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 212, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Wants the beginning.

Similar to the work described under No. 4999 ante.

Beginning :

तत्त्वमिति समानाधिकरणवृत्तयोर्द्वयोः पदयोरपि ब्रह्मैव वाच्यम् । तत्र तत्पदं जगत्कारणभूतं सर्वकल्याणगुणाकरं निर्विकारमाचष्टे । त्वमिति च तदेव ब्रह्म जीवान्तर्यामिरूपि सशरीरजीवप्रकारविशिष्टमाचष्टे । तदेवं प्रवृत्ति-निमित्तभेदेन एकस्मिन् ब्रह्मण्येव तत्त्वमिति पदयोर्द्वयोरपि वृत्तिरुक्ता । वाक्यं चेदुद्देश्योपादेयविभागवत् उद्देश्यं ह्यवगतमुपादेयं विधेयमनवगतम् । तत्र तत्पदं नोद्देश्यसमर्पकं सार्वज्ञ्यादिगुणकस्य प्रत्यक्षाद्यगोचरत्वात् । त्वंशब्द-स्यान्तर्यामिपरत्वे सत्युद्देश्यसमर्पकत्वमनुपपन्नम् ।

End :

यत्रान्यत्पश्यति, अन्यच्छृणोति, अन्यद्विजानाति तदल्पं न तत्समं चाभ्यधिकं च दृश्यते—इत्यादिवाक्यैरतत्तात्मकनानात्वं निषिध्यते । तस्मा-त्सिद्धं विशिष्टाद्वैतम् ।

No. 14807. वेदान्तविषयः.
VĒDĀNTAVIṢAYAḤ.

Pages, 7. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 24b of the MS. described under No. 212 wherein this work has been omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 4743 ante.

Beginning :

एकमेवाद्वितीयं तद्ब्रह्मेत्युपनिषद्वचः ।

ब्रह्मणोऽन्यस्य सद्भावं ननु तत्प्रतिषेधति ॥

अत्र ब्रूमोऽद्वितीयोक्तौ समासः को विवक्षितः ।

किं स्वित्तत्पुरुषः को वा बहुव्रीहिरथोच्यताम् ॥

पूर्वस्मिन्नुत्तरस्तावत्प्राधान्येन विवक्ष्यते ।

पदार्थस्तत्र तद्ब्रह्म ततोऽन्यत्सदृशं तु वा ॥

End :

यथा—इदं रजतमिति । एवं घटस्सन् पटस्सन् इत्यधिष्ठानस्य सतः प्रपञ्चस्य चैकधीवेद्यत्वात् दृश्यत्वमनेकान्तिकम् ।

No. 14088. भेदधिकारः—सत्क्रियासहितः.

BHĒDADHIKKĀRAH WITH SATKRIYĀ.

Pages, 3. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 28a of the MS. described under No. 212 wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Contains the 2nd stanza only.

The text is by Nṛsiṃhāśrama and is the same as that described under No. 4696 ante. The commentary Satkriyā is by Nārāyaṇāśrama and is the same as that described under No. 4699 ante.

Beginning :

ननु समस्तभेदसत्त्वसाधनसार्थेषु कणभुगादि(मतानुवर्ति)षु अभिनवता-
किंकेषु जीवत्सु कथं वेदान्तानां स्वारस्यमात्रेण प्रत्यगभिन्नाद्वयब्रह्मणि प्रामाण्यं
सिद्ध्येदित्याशङ्क्य सर्वज्ञेनापि परमेश्वरेण मां प्रति जीवपरादिभेदसत्त्वमशक्यं
साधयितुमिति परमेश्वरेण सह विवादव्याजेन वदन् अन्यान् प्रति तन्निराकृति-
स्सुकरेति सूचयन् भक्तिभरनग्रेण चेतसा पुनस्तमेवानुसन्धत्ते—किं न त्व-
मित्यादिना । हे नृसिंह आस्तां तावदन्यदभेदसाधने मानं तवैव नाम निरु-
च्यमानं [मे] मदभेदं साधयतीत्याह—किं न त्वं नरसिंह एवेति । त्वं नर
सिंह एव न किमिति किमा नञर्थ आक्षिप्यते ।

End :

किं न त्वं नरसिंह एव यदि वा नाहं न नो चेत्कथं
बन्धो मय्यखिलेश्वरे त्वयि विभो किं नास्ति मत्तः परः ।

भूयादर्थवदात्मबन्धहर इत्याद्यं वचोऽमानुषं
न त्वं ना तदहं त्वमेव नृहरे भूयासमात्मंस्त्वयि ॥

No. 14089. वेदान्तद्वयतात्पर्यम्.

VEDĀNTADVAIYATĀTPARYAM.

Pages, 16. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 30a of the MS. described under No. 212, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Herein it is shown that the principles of the Viśiṣṭādvaita Vēdānta are brought out and explained in the Śrībhāṣya of Rāmānuja and in the Tiruvāymoli of Saint Śaṭhakōpa.

Beginning :

वाधूलवरदार्येण कृपार्द्राकृतचेतसा ।

वेदान्तद्वयतात्पर्यं व्यक्तमुक्तं ममाधुना ॥

स्तनकण्डूतिशान्त्यर्थं मृतापत्या सती पयः ।

स्थले वर्षति तद्रीत्या वरदार्यः कृपानिधिः ॥

श्रियः पतिः परमकारुणिको भगवान् सर्वेषां पुरुषाणामुपादित्सिजिहा-
सितेष्टानिष्टप्राप्तिपरिहारतत्साधनानां त्याज्योपादेयविवेकार्थं हर्तुं तमस्सदसती
च विवेक्तुम् ।

अभ्यर्थितो भगवान् व्यासरूपेणावतीर्थ उत्सन्नान् वेदान् उद्धृत्य बहुधा
विभज्य तदर्थज्ञानाय सूत्राणि प्राणेष्ट ।

अनतिस्फुटार्थत्वात्तदर्थज्ञानाय वकुलाभरणरूपेणावतीर्थ सहस्रशास्त्रा-
श्रीसूक्तिव्याजेन स्फुटीचकार । तत्राप्यर्वाचीनैः संस्कृतद्रामिडयोस्सामानाधि-
करण्याभावादसंगतमिति दूषिते सति

पुरा सूत्रैर्व्यासः श्रुतिगणशिरोऽर्थं ग्रथितवान्

स विप्रेतं श्राव्यं वकुलधरतामेत्य च पुनः ।

इदानीं तौ गूढौ स्फुटयितुमलं युक्तिभिरसौ

पुनर्जज्ञे रामानुज इति परब्रह्ममुकुरः ॥

इत्युक्तप्रकारेण रामानुजरूपेणावतीर्थ

अथातो ब्रह्मजिज्ञासेत्यारभ्य एतेन सर्वे व्याख्याता (व्याख्याता) इत्येवमन्तेन
प्रथमाध्यायेन अकारार्थस्सूचितः । द्वितीयाध्याये पूर्वद्विकेन स्मृतितर्करूपेण
तत्परिपन्थिनिराकरणमुखेनानन्यार्हतासूचकेन, उकारार्थस्सूचितः । उत्तरपाद-
द्विकेन मकारार्थ उक्तः ।

End :

चिदचिद्वस्तुशरीरतया परमात्मनि शरीरत्वसम्भवाच्चानन्दमयः परमा-
त्मेत्युक्तम् । *இறவிக்கூடியும்* वित्यत्र जन्मप्रयुक्तदुःखनिवृत्तये ज्ञानयोगेना-
विद्याकर्मदेहादिसमस्तोपाधिविनिर्मुक्तस्सन् तेजोमयस्वात्मानुभवो मे भूयादिति
परमात्मसमाश्रयणप्रकारकत्वानन्यप्रयोजनाधिकारिणोऽनुभाव्यत्वेन परस्य
ब्रह्मणो निरतिशयानन्दयोग उक्तः.

No. 14090. मनीषापञ्चकम्.

MANIṢĀPAÑCAKAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 200.

Complete.

Same work as that described under No. 4705 ante but with different readings.

No. 14091. शिवकवचः.

ŚIVAKAVACAḤ.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 30a of the MS. described under No. 200.

Complete.

Same work as that described under Nos. 7378 and 7387 ante.

Colophon :

शिवकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 14092. हौत्रप्रयोगः.

HAUTRAPRAYŌGAḤ.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 199a of the MS. described under No. 1116, wherein this work has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Incomplete.

On the Mantras to be repeated by Hōtr priests in sacrifices.

Beginning :

उपास्मै गायतां नरोम् । अभि ते मधुना पयोम् । स नः पवस्व शङ्ग-
वोम् ।

प्रातस्सवनस्य प्रस्तारवाक्यानि ।

अथ दक्षिणविहारे प्रातस्सवनस्य—पवस्व वाचो अग्नियोम् । समु-
द्रिया अपोम् ।

End:

इन्द्रो दधीचो अस्थभोम् । इच्छन्नश्वस्य यच्छिरोम् । अत्राह गौर-
मन्वतोम् । इयं वामस्य मन्मनोम् । शृणुनं जरितुर्हवोम् । मा पापत्वा-
य नो नरोम् ॥

एवमुत्तरविहारे.

No. 14093. आधानप्रयोगः.

ĀDHĀNAPRAYŪGAḤ.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 103a of the MS. described under No. 1187.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 1099 ante.

Beginning :

आधानस्य प्रयोग उच्यते । इष्टचेकत्वपक्षे षड्द्वीषि भवन्ति तदा एवं
प्रयोगः । नमः प्रवक्त्र इत्यादि । शोचिष्केशस्तमीमहोम् । पृथुपाजास्तं सबाधः ।
आचक्रुरग्निमूतयोम् । समिद्धो अग्न आहुतेत्यादि । आवह देवान् यजमानाय ।
अग्निमग्न आवह । सोममावह । अग्निमावह । अग्नि पवमानमावह ।

End :

ओं यं—हे । पावीरवी कन्या—धियं धातू । ग्राभिरच्छिद्रं—शर्म य॥
सात् वौ ॥

No. 14094. श्रौतप्रयोगः.

ŚRAUTAPRAYŪGAḤ.

Pages, 60. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 1030.

Incomplete.

On the procedure followed in the performance of sacrifices.

Beginning :

ऋतुसङ्कल्पकाले होता को यज्ञः, क ऋविजः, का दक्षिणेति । महं मे
वोचो [भर्गो मे वोचो] भर्गो मे वोचो यशो मे वोचो . . मे वोचः ऋषिं मे
वोचो भुक्तिं मे वोचस्सर्वं मे वोचस्तन्मामवतु तन्मा विशतु तेन भुक्षिषीयाग्निष्टे

होता सती होता होताहं ते मानुषः इत्युच्चैः । ततो मधुपर्कः । विष्टरा विष्टरो
विष्टर इत्युक्ते अहं वर्ष्म सजातानां विद्युतामिव सूर्यः । इदं त्वमाधितिष्ठामि ।
यो माकश्राभिदा सति । उदगग्रे विष्टर उपविशेत् । पाद्यं पाद्यं पाद्यमित्युक्ते
प्रक्षालयी(त्ये)त पादः ।

End :

इदमाप इत्यादि । अध्वर्युपथ उपतिष्ठन्ते । आदित्यप्रभृतीन् धिष्ण्या-
नादित्यमग्रे । अध्वनामध्वपते श्रेष्ठ स्वस्त्यस्याध्वनः पारमशीय । यूपादित्याह-
वनीयनिर्मन्थ्यात् । अग्रयस्सगरौ सगरा अग्रयः । सगरास्थ सगरेण नाम्ना
पातमाग्रयः पीपृतमाम्रयो नमो.

No. 14095. ऊहच्छलाक्षरः.

ŪHACCHĀLĀKṢARAH

Pages, 12. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No 44.

Contains the Daśarātra complete and breaks off in the second
Vimśa in Samvatsara.

Gives the numbers expressed in letters, of the special tones Udgha,
Prāṅkha and Dīrgha, and of the Gati and the Agati in the Stōbhas
relating to the Sāmans of the Ūhatantra of the Sāmaveda.

Beginning :

उच्चा न आमहीयवम् । पुना बौ टी रौरवयौषाजये । प्रतु डै औश-
नम् । कया पी वामदेव्यम् । तं वौ दै नौधसम् । तरो ग कालेयम् । स्वादि
डू संहितम् । पवस्वेन्द्रमच्छा फो थो सभपौष्कले । पुरो घेषा श्वावाश्वा-
न्धीगवे ।

सूर्यस्य खू वाजिजीत् । अग्रि नरो लू विराड् वामदेव्यम् ।

Colophon :

दशरात्रः ।

वृषा दू आमहीयवम् । पुना णू समन्तम् ।

End :

सवि धू औदलम् । प्रसुन्ना जु साग्रम् ।

प्रथमः ।

विना उ वृषा थ चै हाविष्मनयौक्ताश्चोत्तरे ।

आत्वा धौ अभिवर्तः । तिस्रो पै क्षुल्ल.

No. 14096. अग्निष्टोमप्रयोगः.

AGNISTÔMAPRAYÔGAH.

Substance, palm-leaf. Size, $13\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 92. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, very much injured. Appearance, old.

Incomplete.

Similar to the work described under No 1124 ante.

Beginning:

अपरेण गार्हपत्यं दर्भेष्वासीनां दर्भान् धारयमाणः पत्न्या सह प्राणानायम्य सङ्कल्पं करोति । विच्छिन्नसोपपीथसन्धानार्थमैन्द्राग्रं पशुं दौर्बाह्मण्यनिर्हरणार्थमाश्विनं च पशुमग्नीषोमीयेण सहोपालम्भं कुर्वन् सोमेन यक्ष्ये ।

End:

शुन्धध्वमिति सर्वाभिः प्रोक्षणम् । हविष्कृता वाचं विसृज्य पशून् विशास्ति । मुदा सीमा निर्वर्लेषीर्वनिष्ठुर्निर्वर्लेषीः । ह.

No. 14097. वेदाङ्गज्यौतिषम्.

VĒDĀNGAJYAUTIṢAM.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 8b of the MS described under No. 888, wherein this work was mentioned as Kālaññāna in the list of other works given therein.

Complete.

Same work as that described under No. 1027 ante.

No. 14098. वेदलक्षणम्.

VĒDALAKṢANAM.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 26a of the MS. described under No. 902, wherein this has been omitted to be included in the list of other works given therein.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work Vikrtivalli described under No. 958 ante.

Beginning :

शैशिरिये समाम्नाये व्यालिनैव महर्षिणा ।
जटाया विकृतीरष्टौ लक्ष्यन्ते नातिविस्तरम् ॥
जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो पु(घ)नः ।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा मनीषिभिः ॥

End :

शृङ्गवद्बालवत्सस्य बालिकाकुचयुग्मवत् ।
नेत्रवत्कृष्णसर्पस्य स विसर्ग इति स्मृतः ॥

No. 14099. चक्रादिधारणप्रमाणम्.
CAKRĀDIDHĀRAṆAPRAMĀṆAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 43b of the MS. described under No. 139 and not on fol. 43a as stated therein.

Similar to the work described under No. 4443 ante.

Beginning :

एवं ब्रह्मोपनिषदि प्रोक्तं चक्रादिधारणम् ।
तथैव साम्नि यजुषि ऋचि प्रोक्तं शुभानने ॥
व्रती विष्णोरब्जे(ब्ज)चक्रे पवित्रे जन्माभ्योधि तर्तुमिच्छुर्द्विजेन्द्रः ।
मूले बाह्वोर्दधत्याद्ये पुराणे लिङ्गान्येतावन्ति धारयन्ति ॥
चरणं पवित्रं विततं पुराणं वाङ्मयं शुभम् ।
तेन चक्रेण सन्तप्तास्तेरयुः पातकाम्बुधिम् ॥

End :

तस्माद्वै विधिवद्धार्याश्शङ्खचक्रादिहेतयः ।
ब्राह्मणानां विशेषेण वैष्णवानां विशेषतः ॥
कृतोर्ध्वपुण्ड्रो धृत(दर)चक्रधारी विष्णुं परं ध्यायति यो महात्मा ।
सर्वेण मन्त्रेण सदा हृदि स्थितं परात्परं यानि विशुद्धचेताः ॥

No. 14100. तिवाक्यम्.
ŚRUTIVĀKYAM.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 44/ of the MS. described under No. 139, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

A few passages apparently belonging to a Brāhmaṇa or Upaniṣad, and describing briefly the process of creative evolution.

Beginning and End :

अथातो रेतससृष्टिः प्रजापते रेतो देवानां रेतो वर्ष वर्षस्य रेत ओषधय
ओषधीनां रेतोऽन्नमन्नस्य रेतो रेतो रेतसो रेतः प्रजाः प्रजानां रेतो हृदयं
हृदयस्य रेतो मनो मनसो रेतो वाग्वाचो रेतः कर्म तदिदं कर्मकृतमयं
पुरुषो ब्रह्मणो लोकस्त्वैरामयो यद्द्वैरामयस्तस्माद्विरण्मयो ह वा अमुष्मिन्
लोके संभवति हिरण्यस्य सर्वेभ्यो भूतेभ्यो ददृशे य एवं वेद ॥

No. 14101. नरसिंहध्यानम्.

NARASIMHADHYĀNAM.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 139.

On the form in which God Nṛsiṃha should be meditated upon.

Beginning and End :

शङ्खं चक्रं च चापं परशुमसिमिषुं शूलपाशाङ्कुशाब्जं
विभ्राणं वज्रखेटं हलमुसलगदाकुन्तमत्युग्रदंष्ट्रम् ।
ज्वालाकेशं त्रिनेत्रं ज्वलदनलनिभं हारकेयूरभूषं
ध्यायेत्षट्कोणसंस्थं सकलरिपुजनप्राणसंहारचक्रम् ॥
आधिव्याधिमहाभीतिमहादुःखनिवारक ।
अपारकरुणासिन्धो दिव्यसिंह नमोऽस्तु ते ॥

No. 14102. दायविभागश्लोकाः.

DĀYAVIBHĀGAŚLŌKĀḤ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 71a of the MS. described under No. 139, wherein this was omitted to be included in the list of other works given therein.

A collection of stanzas explaining what property should be considered as self-acquired and so not divisible among the brothers.

Beginning :

पितृद्रव्याविरोधेन यदन्यस्वयमार्जितम् ।
मैत्रमौद्वाहिकं चैव दायदानां न तद्भवेत् ॥

क्रमादभ्यागतं द्रव्यं हृतमभ्युद्धरेत्तु यः ।
 दायादेभ्यो न तद्दद्याद्विद्यया लब्धमेव च ॥
 अनाश्रित्य पितृद्रव्यं स्वशक्त्याप्नोति यद्धनम् ।
 भ्रात्रादिभ्यो न तद्दद्याद्विद्यया लब्धमेव च ॥

End :

वसेयुर्नव वर्षाणि पृथग्धर्माः पृथक्क्रियाः ।
 विभक्ताः भ्रातरस्तेऽपि विज्ञेयाः पैतृकाधनाः ॥

No. 14103. पञ्चब्रह्ममन्त्रः-- सव्याख्यः.

PAÑCABRAHMAMANTRAH WITH COMMENTARY.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 77a of the MS. described under No. 139.

Complete.

On the five Mantras considered as the five faces of God Śiva. Aghōra, Sadyōjāta, Vāmadēva, Tatpuruṣa and Īśāna. The Mantras from the Anuvākas 43 to 47 of the 10th Prāśna of the Taittiriya Āraṇyaka, and they are followed by a commentary apparently by Śāyaṇācārya.

Beginning :

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमेवार्थं प्रकाशते ।

पुमर्थश्चतुरो वेदान् विद्यातीर्थमहेश्वरम् ॥(?)

मेषाविनः पुरुषस्य ज्ञानोत्पादनाय महादेवसम्बन्धिषु पञ्चसु वक्त्रेषु मध्ये पञ्चमवक्त्रप्रतिपादकं मन्त्रमाह—सद्योजातं प्रपद्यामि—भवोद्भवाय नमः । सद्योजातनामकं पश्चिमवक्त्रं तद्रूपं परमेश्वरं प्रपद्यामि प्राप्नोति । तादृशाय सद्योजाताय नमोऽस्तु । हे सद्योजात भवे भवे तत्र तत्र जन्मनि जन्मनि-मित्तं मां नातिभवस्व न प्रेरयेत्यर्थः । किं तर्हि अतिभवे जन्मातिलङ्घन-निमित्तं भवस्व तत्त्वज्ञानाय प्रेरय । भवोद्भवाय भवात्संसारादुद्धर्त्रे सद्योजाताय नमोऽस्तु ।

End :

ब्रह्माधिपतिः ब्रह्मणो वेदस्याधिपतित्वेनोपासकः । तथा ब्रह्मणो हिरण्यगर्भस्याधिपतिः तादृशो यो ब्रह्मा प्रसिद्धः परमात्मा सोऽयं ममानु-ग्रहाय शिवः शान्तोऽस्तु सदाशिवः स एव सदाशिवः सत्यज्ञानानन्दस्वरूपब्रह्मैव ओं अहं भवामीति ॥

No. 14104. वेदान्तविषयः.

VEDĀNTAVIṢAYAḤ.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 78b of the MS. described under No. 139, wherein this has been omitted to be included in the list of other works therein given.

Similar to the work described under No. 4743 ante.

Beginning :

इदं विश्वं विशिष्टज्ञानवत्पूर्वकं चित्रकार्यत्वात्, चित्रादिवत् विमतः शिवः
वृत्त्यादिभ्यो भिद्यते वृत्त्यादिसाक्षित्वान् यद्वृत्त्यादिभ्यो न भिद्यते तद्वृत्त्यादिसाक्षी न
भवति यथा वृत्त्यादिः, विमतः शिवः सत्यो भवितुमर्हति मिथ्याधिष्ठानत्वात्
असत्यरजताधिष्ठानशुक्तिवत्, विमतश्चिद्रूपः जडमात्रावभासकत्वात् यच्चिद्रूपं न
भवति यथा घटादिः, विमतः परमानन्दरूपः परमप्रेमास्पदत्वात् त(य)-
द्वृत्त्यादि साक्षात्परमानन्दरूपं न भवति तत् पर(मप्रे)मास्पदमपि न
भवति यथा घटादिः ।

End :

अनुभूतेरभावेऽपि ब्रह्मास्मीत्येव चिन्त्यताम् ।
अप्यसत्प्राप्यते ध्यानं (नात्) नित्याप्तं ब्रह्म किंपुनः ॥
देहाभिमानं विध्वंस्य ध्यानादात्मानमव्ययम् ।
पश्यन्मर्त्योऽमृतो भूत्वा ह्यत्र ब्रह्म समश्नुते ॥

No. 14105. हनुमद्यन्त्रोद्धारणम्.

HANUMADYANTRÔDDHĀRAṆAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 87b of the MS. described under No. 139 and not on fol. 87a as stated therein.

Complete.

Similar to the work described under No. 8157 ante.

Beginning :

आदौ चन्द्रं समालिख्य त्रिकोणं वर्तुलं तथा ।
बहिरष्टदलं पञ्च षोडशारं ततो बहिः ॥

तद्दहिर्वृत्तमालिख्य द्वात्रिंशद्दलमेव हि ।
 चतुष्पष्टिदलोपेतं शोभनं वृत्तमुज्ज्वलम् ॥
 तद्वाद्ये भूपुरद्वन्द्वं वज्रकोणसमन्वितम् ।
 मायाबीजं लिखेद्बीजान् त्रिकोणेषु तथा लिखेत् ॥

End :

वेदादिः प्रथमो ज्ञेयो रामदूताय उद्धरेत् ॥
 स्वाहान्तमेवं वक्ष्यार्थमष्टोत्तरमुदीरितम् ।
 पूजां चै वैष्णवे पीठे शैवे वा विदधीत वै ॥
 एतद्यन्त्रं समालिख्य गुलिकीकृत्य धारयेत् ।
 सर्वशत्रुक्षयकरं सदा विजयवर्धनम् ॥
 रौद्राभिचारकोदण्डं परमन्त्रेषु भीषणम् ।
 आयुरारोग्यमैश्वर्यं लभते नात्र संशयः ॥

No. 14106. लिङ्गतर्पणम्.
 LINGATARPANAM.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 3a of the MS. described under No. 217.

Incomplete.

On the propitiation of the Jaṅgama and Sthāvāra Liṅgas of the Vira-Saivas by the repetition of certain Mantras.

Beginning :

यद्भुवमर्पितं लिङ्गं तद्भुवं भोक्तृनाशुचि (?) ।
 रूपान्तर(प)भुक्तं च भुक्तं च तदनर्पितम् ॥
 लिङ्गजङ्गमपादाब्जसम्भूताय शिवार्पणे ।
 परमानन्दरूपाय पादतीर्थाय नमो नमः ॥

End :

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
 यः स्मरेद्द्वै विरूपाक्षं सबाह्याभ्यन्तरशुचिः ॥

तर्पणमन्त्रः—

आत्मात्मानमिष्टलिङ्गं तर्पयामि । अन्तरात्मात्मानं प्राणलिङ्गं तर्पयामि ।
 परमात्मात्मानं बाह्यलिङ्गं तर्पयामि ॥

No. 14107. రుద్రమङ్గలాశంసనమ్, ఆంధ్రభాషాసహితమ్.
RUDRAMAṅGALĀŚAMSANAM WITH TELUGU
MEANING.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 217.

Complete.

Similar to the work described under No. 11202 of the D.C.S. MSS., Vol. XIX. This work is in prose and contains benedictions addressed to God Śiva.

Beginning :

శ్రీవహ(మహా)దేవా య శైవ(ఐ)రామ(ర)ద్రుమాయ సోమశే(స్వ)రాయ దివ్యసుంద-
రాయ భీమభుజవలాయ దేవ్యాభి(దు)రాయ తుహినశేలజామనోనలినదినేశాయ మङ్గలం
మङ్గలమ్ ।

End :

చింతితార్థదాయినే భసితవీలెపనాङ్గాయ శాన్తాయ శ్రీగిరిశాయ మङ్గలం
మङ్గలం మङ్గలం మङ్గలం జయమङ్గలాయ భవతే । అङ్గజారిభుజङ్గభూషణ లిङ్గవృష-
భతురङ్గ జయ జయ

* * * * *

చల్లని పాటను గోరిపల్లభు బాడుచు నంపుటైలు మెల్లలకొల్లలుగా
నెడచల్లుచు ప్రణవములల్ల మల రగనుకు జయమంగళమనరే.

No. 14108. గాయత్రీమన్త్రజపక్రమః.
GĀYATRĪMANTRAJAPAKRAMAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 19b and not on 20a of the MS. described under No. 217.

Complete.

Similar to the work described under No. 6204 of the D.C.S. MSS., Vol. XII.

Beginning :

ప్రాతస్సన్ధ్యాం గాయత్రీం కుమారీం రక్తవర్ణాం రక్తాంబరధరాం హంసవాహనాం బ్రహ్మ-
దేవత్యామక్షాత్రకమణ्डలధారిణీంశ్రువేదసహితామాదిత్యపథగామినిమోక్షారాశిరవామావా-
హనీయామావాహయేత్ ।

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैश्च(स्त्री)क्षणै-
 र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमकुटीं तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ।
 गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकशां शुभ्रं कपालं गदां
 शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे ॥
 सुरभिज्ञानचक्रं च मत्स्यः क्रूर्मोऽथ पङ्कजम् ।
 लिङ्गनिर्याणमुद्राश्च दर्शयेज्जपपूर्तये ॥

End :

सन्ध्या सात्र सरस्वती भगवती पीताम्बराडम्बरा
 सन्ध्या सामवपुर्लनापरिणमद्गात्राञ्जिता वैष्णवी ।
 तार्क्ष्यस्था मणिनूपुराङ्गदमणिग्रैवेयभूषोज्ज्वला
 हस्तालम्बितशङ्खचक्रसगदा भूतिश्रियै चास्तु नः ॥

ऐं ब्रह्मणे सूर्याय प्रातस्तसन्ध्यायै नमः, ह्रीं सूर्याय रुद्राय माध्याह्नि
 कसन्ध्यायै नमः, सौः विष्णवे सूर्याय सायंसन्ध्यायै नमः ॥

No. 14109. हेरम्बोपनिषद्.

HĒRAMBŌPANIṢAD.

Pages, 3. Line, 5 on a page.

Begins on fol. 44a of the MS. described under No. 217.

Complete.

Similar to the work described under No. 422 of the D.C.S. MSS.,
 Vol. I, Part 3.

Beginning :

हेरम्बाय नमः । ओं भद्रं कर्णेभिः—ओं शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।
 अथातो हेरम्बोपनिषदं व्याख्यास्यामो गौरी सा सर्वमङ्गला सर्वज्ञं परमेश्वरं
 प्रतिसमेत्योवाच—

अधीहि भगवन्नात्मविद्यां प्रशस्तां यया जन्तुर्मुच्यते सर्वदुःखैः ।
 यया विघ्नादात्ममोहाद्विमुक्तः प्राप्नोति लोकं परमं च शुभ्रम् ॥
 तां वै सहोवाच महानुकम्पस्य सिन्धुर्वन्धुर्भुवनस्य गोप्ता ।
 श्रद्धस्त्वैतद्वैरि सर्वात्मना त्वं हेरम्बतच्चे प(र)मान्प्रसारे ॥

End :

य इमां हेरम्बोपनिषदमधीते स सर्वान् कामान् लभते । स सर्वपापैः

प्रमुक्तो भवति । स सर्वैर्देवैर्ज्ञातो(भवति) । स सर्वैर्देवैः पूजितो भवति ।
स सर्ववेदपारायणपुण्यं लभते । गणेशसायुज्यमवाप्नोति य एवं वेदेत्युप-
निषत् ॥

Colophon :

हेरम्बोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 14110. प्रतिष्ठाकारिका.

PRATIṢṬHĀKĀRIKĀ.

Pages, 23. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 60b of the MS. described under No. 217.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 5526 of the D.C.S. MSS..

Vol. XI.

Beginning :

चण्डरुद्राय गोस्थाने वाप्यां कुम्भोदराय च ।

कूपे तु शङ्ख(ङ्कु)कर्णाय गङ्गाय च नदीतटे ॥

क्षेत्रपालाय वै क्षेत्रे सरस्वत्यै सभास्थले ।

दुर्गा ज्येष्ठा बलिं चैव भीमरुद्राय गोपुरे ॥

अदीक्षितश्चतुर्वेदी प्रविशेद्भर्गगेहकम् ।

प्रमादाद्भर्गगेहं च प्रतिष्ठां पुनराचरेत् ॥

आ[रु](र्षि)कं दैविकं प्रोक्तं स्वायम्भुवमितिस्तथः (त्रिधा) ।

मोहाद्यन्त्रादिकं कृत्वा कर्तारिष्टं तथा नृणाम् ॥

End :

पीठे करे लिङ्गमुपस्थितं च उदङ्मुखं गोमुखमुत्तमं शिवे ।

तस्मात्रिकालेप्वाखिलोपचारैरघोरवक्त्रे च बुधस्समर्चयेत् ॥

गन्धं वाममुखं चैव पुण्यमीशानवक्त्रके ।

धूपं सद्येन वक्त्रं स्याद्दीपं चाघोरमेव च ॥

तत्पुरुषं तु निवेद्य स्यात्पञ्चवक्त्रेषु बुद्धिमान् ।

No. 14111. लिङ्गन्यासः.

LINGANYĀSAḤ.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 80a of the MS. described under No. 217.

Incomplete.

On the ceremonial touching of certain parts of the body at the time of the worship of the Liṅga image of God Śiva accompanied by the repetition of the Pañcākṣaramantra, i.e., the five-syllabled prayer formula relating to God Śiva.

Beginning:

महोग्राय ओं नं फट् इति पादौ न्यसेत् । महाभीमाय ओं मं फट् इति जङ्घे न्यसेत् । महाशर्वाय ओं शिं फट् इति कटिदेशे न्यसेत् । महापिनाकिने ओं वां फट् इति नाभौ न्यसेत् । महाकर्पदिने ओं यं फट् इति हृदयदेशे न्यसेत् । महावीराय हुं फट् इति गले न्यसेत् । महालिङ्गाय वषट् ओं फट् इति मुखे न्यसेत् ।

End:

परमात्मलिङ्गाय स्वाहेति षष्ठी सर्वाङ्गुलैः परमात्मलिङ्गश्चो(चो)दाहृतमिति प्राणाहुतीर्जुहुयात् । गायत्र्या चान्ने प्रोक्ष्य तदन्नं बादरिकप्रमाणं पूर्व-दक्षिणपश्चिमोत्तराणि तन्मध्ये च पञ्च मन्त्रानुक्त्वा जुहुयादिति तुर्यप्रकरणेन शैवानां विधिरिति य एवं वेद ॥

महोग्राय गुरुसन्निधौ द्वादशाब्दं

ब्रह्मविद्यायां महाशैवविधिं व्याख्यास्यामः । ओं शान्तिश्शान्तिः ।
ॐ न ईशानाः सुमित्रा नः ॥

No. 14112. ब्रह्मयज्ञप्रयोगः.

BRAHMAYAJÑAPRAYŪGAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 82a of the MS. described under No. 217.

Complete.

Slightly different from the work described under No. 3746 ante.

Beginning:

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां पुण्यतिथौ श्रीपरमेश्वरमुद्दिश्य श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं ब्रह्मयज्ञेन यक्ष्ये । विद्युदसि विद्य मे पाप्मानमृतात्सत्यमुपैमि । हस्ताववनिज्य त्रिराचमेत् । द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य यत्सर्वं पापं पादौ प्रोक्ष्य[ति] शिरश्चक्षुषी नासिके श्रोत्रे हृदयमालभ्य ।

End:

वृष्टिरसि वृश्च मे पाप्मानमृतात्सत्यमुपागाम् । अनेन ब्रह्मयज्ञेन भगवान् सर्वात्मकः ॥

No. 14113. भस्मजाबालोपनिषत्.
BHASMAJĀBĀLŌPANISAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 9^a of the MS. described under No. 203.

Complete.

Same work as that described under No. 669 ante, but with some difference in the beginning.

Beginning :

अथ ज(न)को ह वैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसमेत्योवाच भगवन् त्रिपुण्ड्र-
विधिमनुब्रूहि इति । स होवाच याज्ञवल्क्यः प्रमाणमस्य त्रिधा ललाटादाच-
क्षुषः [खा]भ्रुवोर्मध्यं तथा । अथ जनको ह वैदेहस्त होवाच भगवन्
यद्वयं तदाग्रेयमाग्रेयं भस्म सद्यादिपञ्चब्रह्ममन्त्रैः परिगृह्याग्निरिति भस्मेत्य-
भिमन्त्र्य मा नस्तोक इति शिरोललाटवक्षस्स्कन्धेषु धारयित्वा ।

No. 14114. भूतिस्लानविधिः.

BHŪTISNĀNAVIDHIḤ.

Page, 1. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 10^b of the MS. described under No. 203, which was omitted to be included in the list of other works.

Almost complete.

Similar to the work described under No. 5485 of the D.C.S. MSS., Vol. XI.

Beginning :

वातूलतन्त्रे —

आचारलिङ्गाय नम इत्याद्यैष्वङ्गभिरात्मनः ।
पादयोर्नाभिदेशे च हृदये चानने तथा ॥
मस्तके च शिखायां च समभ्युक्ष्य तथा पुनः ।
शिखादिपादपर्यन्तं तत्तत्स्थानेष्वनुक्रमात् ॥
महालिङ्गाय नम इत्याद्यैः संप्रोक्ष्य पूर्ववत् ।
भूतिस्नानं प्रकुर्वीत सृष्टिसंहारभेदतः ॥

End :

नमश्शिवायेति भस्म सप्तकृत्वोऽभिमन्त्रितम् ।
उकूलयेच्छरीरं तु त्रिपुण्ड्रं चापि धारयेत् ॥
सप्तकोटिमहामन्त्रा मम वक्त्राद्विनिर्गताः ।
मह्य नमश्शिवायेति मन्त्रादन्यं न रोचते ॥

No. 14115. पञ्चाक्षरीमन्त्रः.
PAÑCĀKṢARĪMANTRAḤ.

Page, 1. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 203, wherein this was omitted to be included in the list of other works given therein.

Incomplete.

Same work as that described under No. 6571 ante, but with slight difference in the beginning.

Beginning :

अस्य श्रीपञ्चाक्षरीमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, श्रीसदाशिवो देवता, हमिति बीजम्, उभेति शक्तिः, उदात्तस्वरः, श्वेतवर्णः, श्रीसदा-शिवप्रतिर्थे जपे विनियोगः ।

No. 14116. अंशुमन्त्रेदः—काश्यपीयः.
AMŚUMADBHĒDAḤ : KĀŚYAPĪYAḤ.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 203.

Contains a portion of the 48th Paṭala.

Slightly different from the work described under No. 13082 ante.

Beginning :

अंशुमान काश्यपे

प्राच्यां वै वृषभः स्थाप्योऽलङ्कारस्त्वग्निगोचरे ।

अग्निस्थाने तु दुर्गा वा याम्ये वै सप्त मातरः ॥

धनदो राजा पृथिवी मरुतः शनैश्चरः । मूर्त्यष्टका ।

वृषलक्षणमाख्यातं शृणु बहेस्तु लक्षणम् ।

द्विवक्त्रं चैकनेत्रं च द्विनासी च षडक्षकम् ॥

End :

उग्रश्शनैश्चरश्चैवं द्वात्रिंशत्परिवारकाः ।

भवश्चतुर्भुजश्शान्तो जटामकुटमण्डितः ॥

अनिलः प्रत्युषश्चैव प्रभासश्च तथैव च ।

षस्रवश्चाष्टका एते एकवर्णा . . . ॥

No. 14117. बृहज्जाबालोपनिषद्.
BRHAJJĀBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 8. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 203.

Contains the Brāhmaṇas 1 to 7 complete and the 8th incomplete.

Same work as that described under No. 629 ante.

No. 14118. प्राणप्रतिष्ठामन्त्रः.
PRĀṆAPRAṬIṢṬHĀMANTRAḤ.

Page, 1. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 21b of the MS. described under No. 203.

Complete.

Similar to the work described under No. 6677 ante.

Beginning :

प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुस्सामाथर्वणानि
छन्दांसि, सकलजगत्सृष्टिकरी प्राणशक्तिर्देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं
कीलकं, सकलमन्त्रयन्त्रप्रतिष्ठार्थमस्मिन्देहे विनियोगः ।

End :

सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा ॥

No. 14119. तैत्तिरीयापनिषद्.
TAITTIRĪYŌPANIṢAD.

Pages, 22. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 22a of the MS. described under No. 203.

Complete.

Same work as that described under No. 486 ante.

No. 14120. छान्दोग्योपनिषद्.
CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 24b of the MS. described under No. 300.

Contains the fifth Adhyāya only.

Same work as that described under No. 451

No. 14121. सन्ध्यावन्दनमन्त्रः.
SANDHYĀVANDANAMANTRAḤ.

Pages, 10. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 48a of the MS. described under No. 401, wherein this was named as Gāyatrihṛdaya in the list of other works given therein.

Almost complete.

Similar to the work described under No. 5629 of the D.C.S. MSS., Vol. XII.

Beginning :

ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीमहाविष्णुप्रतिथर्थे प्रातस्सन्ध्यावन्दनं करिष्ये ।

देव्यास्त्रिकोणमालिख्य मध्ये श्रीं ह्रीं च विन्यसेत् ।

प्रणवेन च संवेष्ट्य श्रीकेशवाय नम इति कीलकम् ।

आपो हि छेति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः, गायत्री छन्दः, आपो देवता ।

End :

अथ सायम्—

सायं चैव सरस्वती भगवती पीताम्बराडम्बरा

श्यामा सामवपुलेता परिणमद्वात्राञ्जिता वैष्णवी ।

तार्क्ष्यस्था मणिनूपुराङ्गदमणिग्रैवेयभूषोज्ज्वला

हस्तालम्बितशङ्खचक्रसगदाभीतिः प्रसन्नास्तु नः ॥

No. 14122. गीतगोविन्दः.

GĪTAGŌVINDAḤ.

Pages, 17. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS. described under No. 401.

Contains the Aṣṭapadis 10—12.

Same work as that described under No. 11937 ante.

No. 14123. दर्शस्थालीपाकविधिः.

DARŚASTHĀLĪPĀKAVIDHIḤ.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 83b of the MS. described under No. 401.

Complete.

Similar to the work described under No. 3630 of the D.C.S. MSS., Vol. VII.

Beginning :

श्रीगोविन्द गोविन्द अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपराधे श्वेतवराहकल्पे वैव-
स्वतमन्वन्तरे कलियुगे प्रथमपादे त्रिथौ दर्शस्थालीपाकेन यक्षे । स्थण्डिलं

कृत्वा प्राचीः पूर्वमुदकसंस्थं दक्षिणारम्भमालिखेत् । अथोदीचीः पुरस्तसंस्थं पश्चिमारम्भमालिखेत् । अवाकरोऽभ्युक्ष्य, निधाय वह्निम् ।

End:

प्राणायामः. परिषेचनम् । प्रणीतास्वप अनीय प्रतिजलमृ(मुत्सृ)ज्य ब्रह्मोद्भासनं, कायेन वाचा ॥

No. 14124. ऐतरेयोपनिषद्.

AITARĒYŌPANISAD.

Pages, 5. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 16b of the MS. described under No. 292, wherein this work was omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

Same work as that described under No. 323 ante.

No. 14125. ईशावस्योपनिषद्.

ĪŚĀVĀSYŌPANISAD.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 292.

Complete.

Same work as that described under No. 300 ante.

No. 14126. मुण्डकोपनिषद्.

MUNDAKŌPANISAD.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Incomplete.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 713 ante.

Same work as that described under No. 715 ante.

No. 14127. छान्दोग्योपनिषद्.

CHĀNDŌGYŌPANISAD.

Pages, 8. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 31b of the MS. described under No. 292, wherein this work was omitted to be included in the list of other works given therein.

Contains a small portion of the fifth Adhyāya.

Same work as that described under No. 451 ante.

No. 14128. पञ्चीकरणव्याख्या.
PAÑCĪKARAṆAVYĀKHYĀ.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 322.

Wants the beginning; otherwise complete.

Similar to the work described under No. 4642 ante.

Beginning :

विराडित्युच्यते । एतत्स्थूलशरीरमात्मनः । इन्द्रियैरर्थोपलब्धिर्जाग-
रितम् । एतत्रयमकारः ।
अपञ्चीकृतपञ्चमहाभूतानि तत्कार्यं च सप्तदशकलिङ्गं भौतिकं हिरण्यगर्भं
इत्युच्यते । एतत्सूक्ष्मशरीरमात्मनः । करणेषूपसंहतेषु जागरितसंस्कारज-
प्रत्ययस्सविषयस्त्वप्नः । तदुभयाभिमान्यात्मा तैजसः । (एत)त्रयमुकारः ।

End :

देहेन्द्रियमनोबुद्धिप्राणाहङ्कृतिविलक्षणं सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं प्रत्यग्भूतं
परं ब्रह्मैवाहमस्मि इत्यहं ब्रह्मेत्यभेदेनावस्थानं समाधिः । ओं अहं
ब्रह्मास्मि ॥

No. 14129. महावाक्यार्थविवरणम्.
MAHĀVĀKYĀRTHAVIVARAṆAM.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12b of the MS. described under No. 322.

Complete.

Same work as that described under No. 4715 ante.

No. 14130. ध्यानक्रमः.
DHYĀNAKRAMAḤ.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 322.

Deals with the contemplation or Dhyāna in general.

Beginning :

नत्वा गुरुं ब्रह्मविदां वरेण्यं जित्वान्तरस्थं तद(षड)मित्रवर्गम् ।
स्थित्वा सदैकान्तविशुद्धदेशे ध्यात्वा शिवं भ्रूयुगमध्यपद्मे ॥
श्रुत्वा तदानाहतदिव्यनादं धृत्वा विभिन्नामलविन्दुरत्नम् ।
पीत्वा सुधां चन्द्रमसः पतन्तीं छिप्त्वा च सङ्कल्पविकल्पजालम् ॥

End:

वक्त्रे चापूर्य वायुं हुतवहनिलयेऽपानमाकृष्य धृत्वा
स्वाङ्गुष्ठाद् व्यङ्गुलीभिर्वरकरतलयोः षड्भिरेवं निरुध्य ।
श्रोत्रे नेत्रे च नासापुटयुगलमपि ध्यानमार्गेण धीराः
पश्यन्ति प्रत्ययांस्तान् प्रणवबहुविधान् ध्यानसंलीनचिन्ताः ॥

No. 14131. प्रणवमन्त्रः.
PRANAVAMANTRAH.

Pages, 6 Lines, 6 on a page

Begins on fol. 19^a of the MS. described under No. 322.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 6637 ante.

Beginning :

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं (. . .) विघ्नोपशान्तये ॥

सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णायास्त्रिष्टकारिणे ।

नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुद्धिसाक्षिणे ॥

यदबोधादिदं भाति यद्बोधात्प्रविलीयते ।

नमस्तस्मै परानन्दवपुषे परमात्मने ॥

* * * *

हृदयकमलमध्य परब्रह्मस्वरूपं प्रणवं ध्यात्वा षट् प्राणायामान् कुर्यात् ।
तदनु प्रणवेन करशुद्धिं कृत्वा अङ्गुलिन्यासं कुर्यात् ।

* * * *

प्रणवेन तालत्रयदिग्बन्धनाग्निप्राकाराग्निधाय तत्करं ब्रह्मरन्ध्रे
निधाय प्रणवस्य अन्तर्यामी ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, परमात्मा
देवता ।

End :

ओं अर्धमात्राया वर्ण ऋषिः, विराट्छन्दः, पुरुषो देवता, कौं बीजं,
सर्वे वर्णाः, तुर्यावस्था, भूमवस्सुवस्थानानि, उदात्तानुदात्तस्वरितस्वराः.

* * * *

जगदङ्कुरकन्दाय सच्चिदानन्दमूर्तये ।

गलिताखिलभेदाय नमश्शान्ताय विष्णवे ॥

No. 14132. पञ्चीकरणम्.
PAÑČĪKARANAM.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 21b of the MS. described under No. 322, wherein this work was omitted to be included in the list of other works given therein.

Incomplete.

Same work as that described under No. 4635 ante.

No. 14133. आतुरसन्न्यासविधिः.

ĀTURASANNYĀSAVIDHIH.

Size, 10½ × 1½ inches. Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 33a the MS. described under No. 322

Complete.

Similar to the work described under No. 3542 ante

Beginning:

अस्माद्गार्हस्थ्याश्रमात् परमहंससन्न्यासाश्रमं प्रविशामीति सङ्कल्प्यापं
समीपं गत्वा स्नात्वाचम्य पात्रान्तरेणोदकमादाय दक्षिणेन पाणिनाप्सु
जुहुयात् ।

End:

प्रणवजपे विनियोगः । ओमिति ततो भिक्षुर्जपति । पुत्रबन्धुगृहादिकं
न विशेत् ॥

Colophon:

इत्यातुरसन्न्यासविधिः ॥

No. 14134. क्रमसन्न्यासविधिः.

KRAMASANNYĀSAVIDHIH.

Pages, 11. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 38a of the MS. described under No. 322.

Complete.

Similar to the work described under No. 3841 of the D.C.S. MSS.,
Vol. VII.

Beginning:

अथातश्शौनकादयो विधिं व्याख्यास्यामः । पूर्वेष्वर्नान्दीश्राद्धं कुर्यात् ।
केन प्र(कारेण) . . . देवर्षिदिव्यमनुष्यभूतपितृमातृआत्मेत्यष्टौ श्राद्धानि
विहितानि । प्रथमं सत्यसंज्ञिका विश्वे देवाः

* * * * *
तत्रायं प्रयोगः—कर्ता स्नात्वा पादौ प्रक्षाल्याचम्य प्राङ्मुख उपवि-
श्यात्मशुद्धिं कुर्यात् ।

कृच्छ्रांस्तु चतुरः कुर्यात्साधनार्थमनाश्रमी ।

आश्रमी कृच्छ्रमेकं न कृत्वा सो योग्यतावि . . ? ॥

End:

दण्डं नमस्कृत्य सदुरून् विधिवत्प्रणम्य शुभमुहूर्ते (गुरु)भ्यस्सका-
शात् ब्रह्मबुद्ध्या तद्वाक्यश्रवणं कुर्वन् यावज्जीवं तदधीनो भवेत् ॥

Colophon:

इति शौनकमते एकदण्डसन्न्यासविधिः समाप्ताः ॥

No. 14155. सन्न्यासिकृत्यम्.

SANNYĀSIKṚTYAM.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 43a of the MS. described under No. 322, wherein this work was omitted to be included in the list of other works given therein.

Complete.

On the conduct of a person immediately after becoming a Sannyāsin who is here required to remove the tuft of hair in the head and to cast away his clothes and the sacred thread muttering at the same time the Vyāhṛtmantra.

Beginning :

नदनन्तरं सन्ध्यानुष्ठानप्रकारः । प्राणायामषट्कं कृत्वा प्रणवस्यान्तर्यामी
ऋषिः, देवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, दक्षिणहस्तेन जलं गृहीत्वा,
प्रणवेन द्वादशवारमभिमन्त्र्य शिरः प्रोक्षयेत् ।

* * * * *
महावाक्योपदेशप्रकारः—आदौ विष्णुप्रार्थना ।

तत्र यमः—

गत्वा नैवान्तिकं विप्रां भक्त्या संप्रार्थयेद्धरिम् ।

सर्वदेवात्मनं तुभ्यं तोयाहुतिमहं हरेः ॥

दत्त्वा सर्वेपणां त्यक्त्वा युष्मच्चरणमागतः ।

त्राहि मां सर्वलोकेश गतिरन्या न विद्यते ॥

सन्न्यस्तं मे जगन्नाथ पाहि मां मधुसूदन ।

त्राहि मां सर्वदेवेश वासुदेव सनातन ॥

End:

शिखाः छित्वा विसृज्य यज्ञोपवीताच्छादने कृत्वा उदकाञ्जलिं व्याह-
तिनाभिः) अप्सु जुह्यात् । ततो दिगम्बरो भूत्वा उदङ्मुखो गच्छेत् ॥

No. 14136. छान्दोग्योपनिषद्.
CHĀNDÓGYÓPANISAD

Pages, 14. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 322, wherein this work was omitted to be included in the list of other works given therein.

Contains the sixth Praśna.

Same work as that described under No. 451 ante.

No. 14137. प्रायश्चित्तविषयः.
PRĀYAŚCITTAVIŚAYAH

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 51a of the MS. described under No. 322, wherein this work was omitted to be included in the list of other works given therein.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3485 ante.

Beginning:

तत्रापि मन्दमध्यमाधिकारिभिरवशीकृतचित्तैः कृच्छ्रचान्द्रायणप्रणवजप
प्राणायामादयः कार्याः । वशीकृतचित्तैस्तु ध्यानमेव कार्यम् ।

उक्तं च—

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु येके (एकं) ध्यानं विशिष्यते ।

प्रणवस्य जपो वाथ मूलमन्त्रस्य संस्मृतिः ॥

End:

य(अ)वशेनापि यन्नामि कीर्तिते सर्वपातकैः ।

पुमान् विमुच्यते सद्यः सिंहत्रस्तैर्मृगैरिव ॥

No. 1418. सन्यासप्रयोगः.
SANNYĀSAPRAYÓGAH.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS. described under No. 322, wherein this was omitted to be mentioned in the list of other works.

Incomplete.

On the ceremonial procedure to be observed for entering the order of a Sannyāsin of the Ēkadanḍi type.

Beginning :

स्नात्वाचम्य प्राणायामत्र(यं) कृत्वा ततः तीर्थदेशं गत्वा मृत्पात्रद्वयं सम्पाद्य ताम्ब्यामुदकं गृहीत्वा अप्सु जुह्यात् । तत्र होमप्रकारः—दक्षिणेन पाणिना तयोरेकपात्रमादाय पात्रान्त(र)स्थजले एष वा अक्षय्यः प्राणः प्राणं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा—इति तत्पात्रस्थमुदकमप्सु जुहुयात् । इति प्रथमाहुतिः ।

End :

पात्रे निश्शेषं तत्पात्रस्थोदकमादाय ओं भूर्भुवस्सुवः मया सन्न्यस्तं स्वाहा इति तृतीयाहुतिं पिबेत् ।

अनन्तरमाचम्यान्यपात्रस्थमु(द)कमञ्जलिना पूर्णमादाय

* * * *

ओं भूः गायत्री व्याहृतौ प्रविलापयामि । ओं भुवः भर्गो देवस्य धीमहि
सावित्री व्याहृतौ, ओं सुवः धियो यो नः प्रचोदयात् सरस्वतीम्.

No. 14139. शिवोऽहंपञ्चकम्.

ŚIVOHAMPAÑCAKAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 58a of the MS. described under No. 322, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 4630 of the D.C.S. MSS., Vol. IX.

No. 14140. मृत्तिकास्नानविधानम्.

MṚTTIKĀSNĀNAVIDHĀNAM.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 322.

Incomplete.

Same work as that described under No. 3759 ante, but with slight difference.

No. 14141. भागवतधर्माः.
BHĀGAVATADHARMĀḤ.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 59b of the MS. described under No. 322.

Complete.

On the conduct and duties of persons devoted to the worship of God Viṣṇu.

Beginning :

ज्ञानस्वरूपमत्यन्तं निर्मलं परमार्थतः ।
तमे(दे)वार्थस्वरूपेण भ्रान्तिदर्शनतास्थितम् ॥
* * * * *
तस्माद् गुहं प्रपद्येत जिज्ञासुश्श्रेय उत्तमम् ।
शब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्युपरमाश्रयम् ॥
तत्र भागवतान् धर्मान् शिक्षेद्गुर्वात्मदैवतः ।
अमाययानुवृत्त्या यैस्तुष्येदात्मात्मदो हरिः ॥
सर्वतो मनसोऽसङ्गमादौ सङ्गं च साधुषु ।
दयां मैत्रीं प्रश्रयं च भूतेष्वद्धा यथोचितम् ॥

End :

परिचर्यां चोभयत्र महत्सु नृषु साधुषु ।
परस्परानुकथनं पावनं भगवद्यशः ॥
मिथो रतिर्मिथस्तुष्टिर्निर्वृतिर्मिथ आत्मनः ।
स्मरन्तस्स्मारयन्तश्च मिथोऽधौघहरं हरिम् ॥
भक्त्या सज्जातया भक्त्या बिभ्रत्युत्पुलकां तनुम् ।
* * * * *
इति भागवतान् धर्मान् शिक्षन् भक्त्या तदुत्थया ।
नारायणपरो मायामञ्ज(ज्ञ)स्तरति दुस्तर(रा)म् ॥

No. 14142. परमरहस्यशिवतत्त्वविद्योपनिषद्.

PARAMARAHASYAŚIVATATTVAVIDYŪPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 41b of the MS. described under No. 254 and not on fol. 41a as mentioned therein.

Complete.

An Upaniṣad inculcating the greatness and importance of the worship of God Śiva. Mārkaṇḍēya is said to have revealed the secret details regarding the due worship of God Śiva to the sages Śaunaka and others.

Beginning :

भद्रं - शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः ।

ब्रह्मावर्ते महाभाण्डे वटे मूले महासत्राय सभेता महर्षयश्शौनकादयस्ते ह समित्पाणयस्तच्चजिज्ञासवो मार्कण्डेयं चिरञ्जीविनमुपसमेत्य पप्रच्छुः—
कन त्वं चिरंजीव्यसि, केन वानन्दमनुभवसीति? परमरहस्यशिवतत्त्वज्ञाने-
(ने)ति स होवाच । किं परमरहस्यम्? शिवतत्त्वज्ञानम् । तत्र को देवः
के मन्त्राः, का निष्ठा, किं तज्ज्ञानं, कः परिकरः, को विधिः, कः कालः,
किं स्थानम्? स होवाच—येन दक्षिणाभिमुखश्चिव (अ)परोक्षीकृतो
भवति ।

End :

य इमां परमरहस्यशिवतत्त्वविद्यामधीते सर्वपापेभ्यो मुक्तो भवति य एवं
वेद स कैवल्यमनुभवति ॥

Colophon :

इत्याथर्वणे कौषीतकशाखायां परमरहस्यशिवतत्त्वविद्योपनिषत्समाप्ता ॥
सह नावबु=शान्तिः ॥

No. 14143. विषयवाक्यदीपिका.

VIṢAYAVĀKYADĪPIKĀ.

Substance, palm-leaf. Size, $13\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 169. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Same work as that described under No. 5001 ante. By Raṅga-rāmānujasvāmin.

No. 14144. यमुनापूजा.

YAMUNĀPŪJĀ.

Substance, palm-leaf. Size, $14\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ and $12 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 4. Lines, 7 on a page. Character, Nandināgarī. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol 1a. The other works herein are Anantivratīkalpa 3a, Tarkabhāṣā 17a, Rgvēdalakṣaṇa 23a, Rksamhitā 43a, Āśvalāyaṇa-pūrvajayoga 55a.

Complete.

Same work as that described under No. 8419 ante.

No. 14145. अनन्तव्रतकल्पः.

ANANTAVRATAKALPAH.

Pages, 26. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 3a of the MS. described under No. 14144.

Imperfect and in disorder.

Same work as that described under Nos. 8167 and 8168 ante

No. 14146. तर्कभाषा.

TARKABHĀṢĀ.

Pages, 12. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 14144.

Incomplete.

Same work as that described under No. 4104 ante. By Kēśavamīśra.

No. 14147. ऋग्वेदलक्षणम्.

RGVĒDALAKṢANAM.

Pages, 39. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 14144.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 885 ante.

Beginning :

सादिमादिमेतमेत चस्य तस्य तं पुनाना हरिमिन्दुं प्रधारा वर्जम् ।

एत गन्त वरुण गन्त वयमुक्त्वा गन्त अन्यत्र गन्ता गन्त वर्जम् ।

End :

रेतो रेतश्च रेजश्च रेवन्ते रुद्र रेवती ।

रूपैश्च ऋसमानैश्च रुद्रैस्तारिषीशि च ॥

राजा राष्ट्रं च राशिश्च रायो रायेरथर्यसि ।

अभीतिरपसो रक्षो रमस्वद्रभसं रसम् ॥

ररारा च रराक्तां च रवधेन रपांसि च ।

रजो रघः प्रवादौ तु रेतासां सप्तविंशतिः (?) ॥

No. 14148. ऋक्संहिता.

RKSAMHITĀ.

Pages, 24. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 43a of the MS. described under No. 14144.

Contains extracts from the second and third Maṇḍalas.

Same work as that described under No. 1 ante.

No. 14149. आश्वलायनपूर्वप्रयोगः.

ĀŚVALĀYANAPŪRVAPRAYŪGAḤ.

Pages, 64. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 55a of the MS. described under No. 14144.

Wants the beginning and the end.

Same work as that described under No. 3563 ante.

No. 14150. श्रीसूक्तम्.

ŚRĪSŪKTAM.

Pages, 4. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 206a of the MS. described under No. 2892

Complete.

Same work as that described under No. 17 ante.

No. 14151. ब्रह्मचारिव्रतविषयः.

BRAHMACĀRIVRATAVIŚAYAH.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 238a of the MS. described under No. 2892, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Wants the beginning and the end.

On certain religious observances of the Brahmachārin (students of the Vēdas).

Beginning :

श्रीशदाश्विकानुप्रवचननियमी तिष्ठेदहःशेषमस्तमिते ब्रह्मोदनमनुप्र-
वचनीयं श्रावयित्वाचार्याय निवेदयेत् । आचार्यः समन्वारब्धो जुहुयात् ।
सदसस्पतिं सावित्रीं द्वितीयमृषिभ्यस्तृतीयं सौविष्टकृतं चतुर्थं ब्राह्मणान्
भोजयित्वा वेदनसमान्तं वाचयीत् । अत ऊर्ध्वं क्षौर . . . शनौ ब्रह्म-
चारिणावलङ्कुर्वाणौ अधश्शायिनौ ।

End :

व्याहृतिभिः समुच्चयेन एकैकां च नत्वार्यमा भवामि उवाहे तथा ।

No. 14152. प्रायश्चित्तविषयः.

PRĀYAŚCITTAVIŚAYAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 208b of the MS. described under No. 2892, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 3486 ante.

Beginning :

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां तिथौ मम औपासनान्तरितादिपुनस्तन्धान-
पर्यन्तमेकैकस्य मासस्य मासस्य प्राजापत्यात्मकं प्रायश्चित्तं षण्मासावर्ति
एकैकमासस्य प्राजापत्यकृच्छ्रद्वयात्मकं प्रायश्चित्तं होमद्रव्यार्थं धान्यकृच्छ्रं
मम शरीरशुद्ध्यर्थं स्वर्णकृच्छ्रं चैतानि कृच्छ्राणि शास्त्रीयाणि स्वीकृत्य ममौ-
पासनाधिकारसिद्धिमुपगृह्णन्तु । परिषदुपदिष्टप्रायश्चित्तमध्ये हिरण्यधान्य-
कृच्छ्राण्याचरिष्ये ।

End :

मासि मासि तु कृच्छ्रं स्यात्षण्मासाद्द्विगुणं भवेत् ।
त्रिगुणं नवमासे तु अत ऊर्ध्वं चतुर्गुणम् ॥

No. 14153. उपनयनसङ्कल्पः.

UPANAYANASANKALPAH.

Pages, 8. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 210b of the MS. described under No. 2892.

Complete.

On the performances of certain religious ceremonies by a person preliminary to investing his son with the sacred string.

Beginning :

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां तिथौ मम कुमारस्यातिशयजननार्थं श्वो
भूते जातकर्मनामकरणान्नप्राशनचौलोपनयनाख्यैः कर्मभिः संस्कारिष्यमाण-
स्तदादावाभ्युदयिकं कर्तुं तदङ्गत्वेन देवताह्वानार्थमिडां वाचयिष्यमाणः
तदादौ मम

नवसूत्रधारणं कर्तुं तदादौ तदङ्गत्वेन शुद्ध्यर्थमृद्ध्यर्थमभ्युदयार्थं च ब्राह्मणै-
स्सह मम पुण्याहवाचनाख्यं कर्म करिष्ये ।

क्षुद्रपापनिवारणशुद्धिद्वारास्य कुमारस्योपनयनाधिकारसिद्धयर्थं ममो-
पनेतृत्वाधिकारसिद्धयर्थं प्रायश्चित्तं परिषदुपस्थानपूर्वकं प्राच्योदीच्याङ्गसहितं
करिष्ये ।

End :

सर्वे त्रयः श्रवतः परिहिता भवन्ति भवन्ति ॥

No. 14154. ऐतरेयब्राह्मणम्.
AITARĒYABRĀHMAṆAM.

Pages, 5. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 235a of the MS. described under No. 2892, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Contains the 13th and 14th Khaṇḍa of the 13th Adhyāya.
Same work as that described under No. 32 ante.

No. 14155. उपाकर्मविधिः.
UPĀKARMAVIDHIḤ.

Pages, 16. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 246a of the MS. described under No. 2892.
Complete.

Similar to the work described under No. 3576 ante.

Beginning :

अथोपाकर्मविधिरुच्यते ।

अत्राश्वलायनः—

अध्यायानामुपाकर्म श्रावण्यां श्रवणेन तु ।
तन्मासे हस्तयुक्तायां पञ्चम्यां वा करिष्यते ॥
अपुष्यो(वृष्ट्यौ)षधयस्तस्मिन् मासे तु न भवन्ति च
तदा भाद्रपदे मासि श्रवणेन करोति तत् ॥
वेदोपकरणप्राप्तिः कुलीरस्थे दिवाकरे ।
उपाकर्म न कर्तव्यं कर्तव्यं सिंहयुक्तके ॥

कात्यायनः—

उदयव्यापिनी चैव विष्णुभे घटिकाद्वयम् ।
तत् कर्म सफलं ज्ञेयं तस्य पुण्यमनन्तकम् ॥

End :

अनध्यायान् श्रुतौ सिद्धान् परिहृत्य(त्व)धीयते ।
यस्तु पूर्वमधीतेऽसौ प्रारभेत शुभेऽहनि ॥

Colophon :

इत्युपाकर्मविधिः ॥

No. 14156. चूर्णिका.

CŪRṆIKĀ.

Pages, 3. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 74a of the MS. described under No. 3562.

Benedictory prose passages invoking blessings on a married couple.

Beginning :

स्वस्त्याशीतिसहस्राणां ह . . धरदैवत्यानां पुरुहूतहुतवहदण्डधरनिशाचर-
पाशपाणिसमीरण(धनद)शशिशेखराणामायुष्मतः कमलासनस्य सकलदुरितनिवा-
रणपारावारस्याद्यन्तरहितस्य गौरीमनोबल्लभस्य पुष्परससायकस्य तस्य
. . . कुमुदचन्द्रस्य रामचन्द्रस्य प्रज्ञागुरोः

End :

श्रीलक्ष्मीनारायणस्य प्रसादेन दम्पत्योरिक्षुक्षौद्राधिमधुवृतजरिकमरीचि-
कादिमङ्गलद्रव्याणि सर्वौषधयः सर्वसस्यानि सर्वमङ्गलकराणि भवेयुः ।
तिथिवारनक्षत्रयोगकरणजन्मलग्नहोराद्रेक्काणनवांशद्वादशांशत्रिंशदंशकानां नि-
रन्तरमनुकूलाः सर्वे ग्रहाः सुनक्षत्राश्चुम्बिकादशस्थानफलदाः सुप्रसन्ना
भवन्तु ॥

No. 14157. वरमङ्गलाष्टकम्.

VARAMAṆGALĀṢṬAKAM.

Pages, 2. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 75b of the MS. described under No. 3562, wherein this was included under the general name Maṅgalāṣṭaka in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 11333 ante. The stanzas here invoke the blessings of God Vēṅkaṭeśa.

Beginning :

श्रीकान्ताकुचकुङ्कुमोद्धतरजःपुञ्जैस्मुरञ्जीकृतं
वक्षो यस्य महात्मनः समुचितप्रख्यैः सुहारैर्वृतम् ।
श्रीलक्ष्म्या वरमन्दिरं सुवित्तं श्रीवत्सलक्ष्माङ्कितं
दद्याद्वेङ्कटशैलवास्यथ हरिः सान्द्रं सदा मङ्गलम् ॥

End :

इत्येतद्वरमङ्गलाष्टकमिदं श्रीवेङ्कटेशार्पितं
यो मर्त्यः प्रपठेच्च तस्य मधुजित्कल्याणपारम्परीम् ।
दत्ते पुत्रसुपौत्रगोकुलधनं सज्ज्ञानमानन्ददं
सत्सेवां हरिभक्तिदां सुदिशदां शं तीर्थहृत्पद्मगः ॥

**No. 14158. मङ्गलाष्टकम्.
MAṄGALĀṢṬAKAM.**

Pages, 3. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 76a and not on 75b of the MS. described under No. 3562.

Complete.

Similar to the work described under No. 11331 ante. By Rāma, son of Narasimha of Gautamagōtra.

Beginning :

शर्वाहीशविपेन्द्रपूर्वकसुरैस्सेव्याङ्घ्रिपद्मद्वयः
श्रीवाणीविमलः सुभक्तिविमलज्ञानादिदः सद्गुरुः ।
श्रीवाणीकरकञ्जलालितपदः श्रीशाङ्खिभक्त्यारतः
सर्वज्ञस्तकलेश्वरो हिततमो दद्यात्सदा मङ्गलम् ॥

End :

इत्येतच्छुभमङ्गलाष्टकमिदं श्रीरामनाम्ना कृतं
श्रीमद्वैतमगोत्रजस्य नरसिंहार्यस्य पुत्रेण तु ।
माङ्गल्यादिशुभक्रियादि सततं भक्त्या पठेद्यो नरः
तस्य श्रीनृहरिर्दशप्रमतिगो दद्यात्सदा मङ्गलम् ॥

**No. 14159. वरमङ्गलाष्टकम्.
VARAMAṄGALĀṢṬAKAM.**

Pages, 3. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 77a of the MS. described under No. 3562, wherein this was included under the general name Maṅgalāṣṭaka, in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 11331 ante, but with the additional stanza at the end which is given below.

इत्येते(वं) वरमङ्गलाष्टकमिदं पापौघविध्वंसिनी (सकृत्)
 पुण्या(ण्यं) नः(सं)प्रति कालिदासकवित(ना)रुतः(तैः) प्रबन्धीकृता(तम्) ।
 यः प्रातश्श्रुण्यात्स हीनम(वृ)जिना(नो)ज्ञानं(नी) च भक्ते(क्त्य)न्वित(तः)
 गङ्गासागरसङ्गमं(वत्) प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥

No. 14160. वधूवराशीर्वादः.
 VADHŪVARĀŚĪRVĀDAḤ.

Page, 1. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 78a of the MS. described under No. 3562, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 11334 ante.

The stanzas exhort blessings upon a married couple.

Beginning and End :

विघ्नेश्वरो विघ्नविदूरकारी निर्विघ्नकार्येषु फलं प्रसिद्धम् ।
 विघ्नेश्वरो नाम सुरेषु पूज्यः वधूवराभ्यां वरदा भवन्तु ॥
 सर्वेषु कार्येष्वचलार्थसिद्धिः वागीश्वरी सत्यवती च दुर्गा ।
 सरस्वती नाम विधातृपत्नी वधूवराभ्यां वरदा भवन्तु ॥
 शिवस्य पत्नी गिरिराजपुत्री सुवर्णदिव्याम्बरवस्त्रभूषा ।
 कल्याणगौरा शुभमङ्गलार्था वधूवराभ्यां वरदा . . . ॥
 वसन्तलक्ष्मीर्वनराजलक्ष्मीः क्षीराब्धिपुत्री कमलायताक्षी ।
 श्रीविष्णुपत्नी भुवनैकमाता वधूवराभ्यां वरदा भवन्तु ॥

No. 14161. वरमङ्गलाष्टकम्.
 VARAMAṅGALĀṢṬAKAM.

Pages, 3. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 78a of the MS. described under No. 3562, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 11333 ante. Apparently by Rājarājēśvara.

Beginning :

लक्ष्मीर्यस्य परिग्रहः कमलभूस्सुनुर्गरुत्मान् रथः
 पौत्रश्चन्द्रविभूषणः सुरगुरुशेषश्च शय्या पुनः ।

ब्रह्माण्डं वरमन्दिरं सुरगणा यस्य प्रभोस्सेवकाः
स त्रैलोक्यकुटुम्बपालनपरः कुर्याद्धर्मिङ्गलम् ॥

End :

इत्येतद्वरमङ्गलाष्टकमिदं (श्री)राजराजेश्वरै-
राख्यातं जगदात्म ।
माङ्गल्यादिशुभक्रियासु सततं सन्ध्यासु वा यः पठेत्
धर्मार्थादिसमस्तवाञ्छितफलं प्राप्नोत्यसौ मानवः ॥

No. 14162. ऐतरेयब्राह्मणम्.
AITARĒYABRĀHMAṆAM.

Pages, 2. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 79a of the MS. described under No. 3562, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Contains the 12th and the 13th Khaṇḍas of the 12th Adhyāya.

Same work as that described under No. 32 ante.

No. 14163. अर्कविवाहः.
ARKAVIVĀHAḤ

Substance, palm-leaf. Size, 10½ × 1½ inches. Pages, 6. Lines, 6 on a page. Character, Nandināgarī. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Dvibbāryāgnisamskāra 5a, Vratatustāya 15a, Pūrvāparaprayōga 22a.

Complete.

Similar to the work described under No. 3533 ante.

Beginning :

अथार्कविवाह उच्यते ।

उद्वाहे प्र(प)तिसिद्ध्यर्थं तृतीयां न कदाचन ।
मोहादज्ञानतो वापि यदि गच्छेत्स मानुषीम् ॥
नश्यत्येव न सन्देहो गार्ग्यस्य वचनं तथा ।
अन्यत्र धर्मयागस्य नोद्वाहेन्मानुषीं स्त्रियम् ॥
तृतीयां यदि चोद्वाहेत्तर्हि सा विधवा भवेत् ।

तृतीयविवाहनिषेधस्य मानुषीवि(ष)यत्वात् । तदार्ककन्याविवाहः स्यात् ।

End :

चतुर्थे दिवसे वृक्षसमीपं गत्वा पूर्ववत्प्रहोमाग्नि(ग्री)विसृज्य ब्राह्मणान्
भोजयित्वाशिषो वाचयित्वा पश्चान्मानुषीं कन्यामुद्रहेत् । पुत्रपौत्रधनधान्य-
समृद्धिभिः ॥

Colophon :

इत्यर्कविवाहस्तमाप्तः ॥

No. 14164. द्विभार्याग्निहोमसंस्कारः.

DVIBHĀRYĀGNISĀMSKĀRAH.

Pages, 20. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 14163.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3639 ante.

Beginning :

अथ द्विभार्याग्निहोमसंस्कार उच्यते । यस्य लौकिकाग्नौ द्वितीयविवाहः
स्यात् द्वितीयविवाहप्रभृति विवाहं(हे)चोभावग्निं विधिवत्पृथगुपःसीत(याताम्) ।
अथैकादशाहे द्वादशाहे वोभावग्निं पृथक् स्थापयित्वा प्राणानायम्य, गृह्या-
ग्निसाध्यानां कर्मणां तन्त्रानुष्ठानसिद्ध्यर्थमौपासनाग्निहोमसंसर्गं करिष्ये इति
सङ्कल्प्य, द्वितीयाग्नौ(या औ)पासनाग्नौ आज्यसंस्कारान्ते द्वितीयायामन्वारम्भणी-
(या)यां चतुर्गृहीतमाज्यं गृहीत्वा ।

End :

द्वितीयोद्वाहमारभ्य पृथगुक्त्वानलद्वयम् ।

साङ्गं बोधायनः प्राह दशाहादिदिनत्रये ॥

गृह्याग्निर्ज्यहोमान्तं तन्त्रानुष्ठानसिद्ध्ये ।

No. 14165. व्रतचतुष्टयम्.

VRATACATUṢṬAYAM.

Pages, 10. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 14163.

Incomplete.

Deals with the procedure relating to the performance of four Vratas or religious observances, viz., Prājāpatya, Saumya, Agnēya, Vaiśvadeva. These Vratas are observed immediately after the due completion of the Vedic study, i.e., the Brahmacharya stage.

Beginning :

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ इमं कुमारं प्राजापत्यसौम्याग्नेय-
वैश्वदेवाख्यैः कर्मभिरैकतन्त्रेण संस्करिष्य इति सङ्कल्प्याग्निं प्रतिष्ठाप्याग्ने-
रुत्तरतश्चतस्र औदुम्बरसमिधः समीलनवस्त्रभदंति(कुम्भं) चासाद्य ततश्चेत-
तण्डुलोपरि ऋषीन्निवीती तर्पयेत् ।

End :

अग्ने व्रतपते वैश्वदैवव्रतमचारिषम् । तन्मे राधि । वायो व्रतपते ।
तन्मे राधि । आदित्यव्रतपते । तन्मे राधि । व्रतानां व्रतपते । तन्मे
राधि । जयादिब्रह्मविसर्जनान्ते शनोऽनुवाकपठनम्.

No. 14166. पूर्वापरप्रयोगः.

PŪRVĀPARAPRAYŪGAH.

Pages, 181. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 22a of the MS. described under No. 14163.

Incomplete.

On the ceremonies to be performed in relation to a person from
conception onwards as well as after his death

Beginning :

अथ गर्भाधानमुच्यते—ऋतुस्नातायां शुभेऽहनि मङ्गलस्नातौ भूत्वा
पुण्याहं वाचयित्वा पत्नीं दक्षिणत उपवेश्य स्वयमुत्तरत आसीनः प्राणा-
नायम्य एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां शुभे मुहूर्ते मम पत्न्या गर्भाधानं करिष्य
इति सङ्कल्प्य ।

End :

एवं कृत्वा वृषभस्य रोमत्वग्दाहजनितदोषप्रायश्चित्तार्थं तिलानुदा
कुम्भांश्च वासोहिरण्यगोदानदशदानानि करिष्ये । गोमिथुनमध्वर्यवे
दद्यात् ।

Foll. 112b and 113a contain a few *Aparakārikās*.

No. 14167. नवग्रहस्तोत्रम्.

NAVAGRAHASTŌTRAM.

Pages, 2 Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 3237.

Complete.

Same work as that described under No. 9537 ante.

No. 14168. वायुस्तोत्रमन्त्रपुरश्चरणपद्धतिः.

VĀYUSTŌTRAMANTRAPURĀSCARAṆAPADDHATIḤ.

Size, 6½ × 1½ inches. Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 116a of the MS. described under No. 3237.

Complete.

Deals with the manner of the ceremonial repetition of the Vāyustōtra which is in praise of Vāyu, the god of wind.

Beginning :

हितं न जाने श्रीजाने नापि शक्तोऽस्य साधने ।

वेत्सीश त्वं समर्थश्च तत्तद्देव विधेहि मे ॥

भूशुद्धिप्राणायामगुरुनमस्कारपरपुरुषशोषणदाहनप्लावनवज्रत्रयप्राणायाम-
तत्त्वन्यासमातृकान्यासान् कृत्वा अस्य श्रीवायुस्तोत्रमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः,
गायत्री छन्दः, हरिवायुर्देवता ।

नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै च वायवे ।

श्रीमदानन्दतीर्थार्यहृदयामलमन्दिर ॥

End :

सम्पत्तिद्वयार्थं सम्पद्रक्षणार्थमाद्यन्तं प्रतिदिनं सप्तवारं जपन् होमादिकं
कुर्यात् ॥

Colophon :

वायुस्तोत्रमन्त्रपुरश्चरणपद्धतिः ॥

No. 14169. विश्वामित्रसंहिता.

VIŚVĀMITRASAMHITĀ.

Size, 6½ × 1½ inches Pages, 24. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 120a of the MS. described under No. 3237.

Complete.

Deals with the auspicious time for the performance of the religious rites during the life time of a person. The time considered inauspicious for the performance of these ceremonies is also mentioned. According to the colophon this forms part of the Jayōttarasamhitā.

Beginning :

विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभानि निषेककाले ।

पूज्यानि पुण्यवसुशीतकराश्विचित्रादित्याश्च मध्यमफला विफलास्त्युरन्ये ॥

षष्ठ्यष्टमीं पञ्चदशीं चतुर्थीं चतुर्दशीमप्युभयं रहित्वा ।
शेषाशुभास्स्युस्तिथयो निषेके . . शशाङ्केऽस्तमिते . . ॥

End :

ऋक्षाणां पूर्वभागे तु ऋक्षकर्म समाचरेत् ।
तिथीनां पश्चिमे भागे तिथिकर्म समाचरेत् ॥

Colophon :

इति जयोत्तरसंहितायां विश्वामित्रसंहिता ॥

No. 14170. कालनिर्णयः.

KĀLANIRṆAYAH.

Size, $6\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 132a of the MS. described under No. 3237, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work described under No. 13517 ante.

Beginning :

. . . समृद्धिः स्याच्चान्द्रे सर्वविनाशनम् ।
देवकार्याणि सर्वाणि सौरमासेषु कारयेत् ॥
सिंहमासे तु रोहिण्यां . . . कृष्णाष्टमी ।

End :

स्वकालोऽप्यन्यकालो वा पूर्वकर्मवशाद्भवेत् ।
निमित्तमात्रं दैवज्ञः नद्वशाच्च शुभाशुभम् ॥

No. 14171. आतुरसन्न्यासप्रयोगः.

ĀTURASANNYĀSAPRAYŪGAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 46 of the MS. described under No. 2902, wherein this has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 3542 ante.

Beginning :

ममेह जन्मनि जन्मजन्मान्तकृत्प्रारब्धागामिसञ्चितपापक्षयद्वारा ब्रह्मी-
भावसिद्धिर्चर्यमातुरसन्न्यासं करिष्ये इति सङ्कल्प्य, जलाहुतिमन्त्रः—

एष एवाग्निर्यः प्राणः प्राणं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा । आपो
वे सर्वा देवतास्सर्वाभ्यो देवताभ्यो जुहोति स्वाहा ।

End :

ओं भूः संन्यस्तं संन्यस्तं मया सन्न्यस्तम् । ओं भुवः सन्न्यस्तं
सन्न्यस्तं मया सन्न्यस्तम् । ओं सुवः सन्न्यस्तं सन्न्यस्तं मया सन्न्यस्तम् ।
ओं भूर्भुवस्सुवः सन्न्यस्तोऽहमिति चतुर्थमुच्चैश्चरेत् ॥

No. 14172. इतिहासोपनिषद्.
ITIHĀSŌPANIṢAD.

Pages, 10. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 2902.

Complete.

Same work as that described under No. 299 ante.

No. 14173. सोमोत्पत्तिः.
SŌMŌTPATTIḤ.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 2902

Complete.

Same work as that described under No. 2592 ante.

No. 14174. अजपाविधानम्.
AJAPĀVIDHĀNAM.

Pages, 8. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 28a of the MS. described under No. 2902, wherein
this has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Similar to the work described under No. 7732 ante.

Beginning :

ओं गुरुवन्दनादिपूर्वकं प्राणायामत्रयं कृत्वा ममाशेषपापक्षयार्थं पर-
मात्मप्रीतिं कामयमानो गणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवगुरुसदाशिवप्रीत्यर्थं पूर्वदिनकृत-
षट्छनोत्तरैकैर्विंशतिसहस्रमजपाजपं तत्तद्देवभ्यो निवेदनं करिष्ये ।

अस्य श्री अजपागायत्रीनिवेदनमन्त्रस्य हंस ऋषिः, अव्यक्तगायत्री
छन्दः, परमहंसो देवता, अकारो बीजम्, उकारशक्तिः, मकारः कीलकम् ।

मतान्तरे हं बीजं, सः शक्तिः, सो हं कीलकं, मम समस्तपापक्षयार्थे विनियोगः ।

End :

इति पञ्चोपचारं कृत्वा पूर्वदिनैकसहस्रमजपाजपमहं निवेदयामि ।
ध्यानम्,

विश्वव्यापिनमादिपूरुषमजं विश्वं जगत्कारणं
विश्वोद्बुद्धसमस्तपत्रकमलेति . क्षरैर्मण्डितः ।

विश्वोत्पत्तिविपत्तिरक्षणयुतं . . . हासयन्
स्वात्मानन्दमनुप्रविश्य विहरेत् स्वच्छन्दतः सर्वदा ॥

पुनः प्राणायामः, पुनः षडङ्ग(न्यासः) । संहारमुद्रां प्रदर्श्य यथासुखं
विहरेत् ।

*

*

*

*

हंसं हंसमिति जीवं परमात्मनि संयोज्य पृथिवीमुपसंहरामि ॥

No. 14175. मातृकासरस्वतीमन्त्रः.

MĀTRKĀSARASVATĪMANTRAH.

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 31b of the MS. described under No. 2902, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 6933 ante.

Beginning :

अस्य श्रीमातृकासरस्वतीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः,
मातृकासरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, ब्रह्मा बीजं, माया-
शक्तिः सुपुत्रा नाडी, सरस्वती शक्तिः, मम समस्तपापक्षयार्थे जपे
विनियोगः ।

End :

गणेशं नादरूपं च अक्षरं च सरस्वती ।

उच्चारणात्परा शक्तिर्धमात्रा वरानने ॥

*

*

*

*

अर्धेन्दुमौलिम(ज)नृतामरविन्दसंस्थां वर्णेश्वरीं प्रणमत स्तनभारनम्राम् ।

No. 14176. श्रावणशनिवारव्रतम्.
ŚRĀVAṆAŚANIVĀRAVRATAM.

Pages, 3. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 2902.

Complete.

Same work as that described under No. 8558 ante.

Foll. 35b and 36a contain the investigation of the meaning of certain words and also 2 or 3 witty stanzas.

No. 14177. ज्यौतिषविषयः.
JYĀUṬIṢA VIṢAYAH.

Pages, 8. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 37b of the MS. described under No. 2902.

Similar to the work described under No. 13563 ante.

Beginning:

राशिकूटः—

यदि पृच्छति दैवज्ञः सर्वज्ञारिक्तपाणयः ।
विधवा वा भवत्कन्या मिथने च वरस्तदा ॥
प्रश्लक्ष्मवशनः करग्रहैः भावि ग्रंसतु शुभाशुभो विधिः ।
स्याद्विवाहसमये ग्रहस्थितिः सप्तमेऽपि शुभदाः शुभग्रहः ॥

दिनकूटः —

जन्मक्षमृक्षमित्याहुर्नामर्क्षाभ्यामथापि वा ॥
स्त्रीजन्मतारापूर्वाभ्यां ब्रूयात्त्राज्ञः शुभाशुभम् ॥

End:

सूर्यनक्षत्रमारभ्य नित्यनक्षत्रं गण्यते ।
नव त्रीणि चतुः पञ्च स द्योगः स्वचरस्तथा ॥ •
विवाहेषु च वैधव्यं सीमन्ते च शिशुक्षयः ।
मौलीवन्धे वटु(टो)र्नष्टं प्रयाणे मरणं ध्रुवम् ॥
प्रवेशे मृत्युमाप्नोति इत्येते स्वचरस्तथा ।

No. 14178. कुण्डाकृतिः
KUNḌĀKṚTIH

Pages, 17. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 46r of the MS. described under No. 2902.

Complete.

This work describing the dimensions of sacrificial altars is also called *Kuṇḍalakṣaṇa*. The author is *Rāmacarḍia* of *Bhāradvājagōtra*. He is said to have come to *Naimiṣa* from *Mālava*. The date of the work is given as 1506 *Vikrama*. For further particulars about the author see page LIX of the 5th Report of Operations in search of Sanskrit MSS. in the Bombay circle by Peterson.

Beginning :

इष्टापूर्तेष्वङ्गमाद्यं तदाहः यस्योनत्वाधिक्यतो भूरिदोषाः ।
कुण्डं साङ्गं भूरिभेदं तदत्र ब्रूते रामो नैमिषश्चो विचार्य ॥
त्रयमेणू रथरेणुवीलाग्रं तदनु लिखा च ।
यूका यवोऽङ्गुलमिति परमाणो क्रमनोऽष्टगुणितानि ॥
कृतमुष्टिकप्रकोष्ठो मुष्टीरलिर्निरष्टमोऽशकः ।
सोऽरलिस्त्वकनिष्ठः कर एव कलांशरहितः स्यात् ॥

End :

कश्चिन्न वेद गणितं यदि वेत्ति शूलं शूलं न वेद यदि वेत्त्यपरोऽङ्गुलसिम् ।
विद्वान् द्वयं न(व)विभागमपण्डितोऽन्यः तद्ध्यानवानपि सुपर्णचितौ पटुः कः ॥

* * * *

श्रीमद्रत्नपुराधिपेन महितश्रीरामचन्द्रेण यो
भारद्वाजकुलाम्बुधेर्विधुरिव श्रीम(मि)श्ररामद्विजः ।
बन्धूनां परिणीतयेऽभ्युपगतोऽसौ मालवो नैमिषं
तेनर्ग्वेदविदेरितेन रचिता रामेण कुण्डाकृतिः ॥
रसगगनतिथिप्रमाद(ण)वर्षे गतवति विक्रमभूमिपस्य कालात् ।
कृतुविधिलफलायके मखेज्ये कृतिरिदमस्तु ममार्पिता सुरेशे ॥

Colophon :

इति रामचन्द्रकृतं कुण्डलक्षणं समाप्तम् ॥

No. 14179 कर्तवीर्यजुनयन्त्रोद्धारः.

KĀRTAVĪRYĀRJUNAYANTRŌDDHĀRAḤ.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 55a of the MS. described under No. 2902.

Complete.

Similar to the work described under No. 7791 ante. This *Kārtavīryārjunamantra* is considered to be efficacious in the accomplishment of one's desires.

Beginning :

आदौ चतुर्दलं पद्मं लिख्यादष्टदलं बहिः ।
 तद्वहिः षोडशदलं तद् द्वात्रिंशद् दलं बहिः ॥
 कर्णिकायां न्यसेद्बीजं कार्तवीर्यस्य भूपतेः ।
 वेदादिननिमध्यस्था साध्याङ्केन समायुतम् ॥

End :

तद्यन्त्रं कालसंस्थानाद्वन्ध्यायन्त्रं प्रसूतये ।
 राजाभिषेको जयति शत्रुदिक्ष्वत्र वाजिना ॥
 त्रैलोक्यानि समा येन रक्षयेत्तु समाहितः ।
 बहूनां किं प्रयोगेण यन्त्रमेतदनुत्तमम् ॥
 सर्वकाममवाप्नोति कुर्यान्मन्त्री समाहितः ।

Colophon :

इति कार्तवीर्यार्जुनयन्त्रोद्धारस्तमाहितः ॥

No. 14180, सीतारामचक्रम्
 SĪTĀRĀMACAKRAM

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 55b of the MS. described under No. 2902, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Stanzas considered useful in making certain predictions based upon the names of Rāma, Sita and others taken from the Rāmāyaṇa enclosed in a particular diagram

Beginning and End :

स्थानभ्रष्टस्य रामस्तु सीताया दुःखमेव च ।
 लक्ष्मणः कार्यसिद्धिं च सर्वलाभो विभीषणः ॥
 मरणं कुम्भकर्णचस्य रावणस्तु कुलक्षयम् ।
 अङ्गदेन ध्रुवं गच्छं सुग्रीवं बन्धुदर्शनम् ॥
 इन्द्रजित्तेन कल्याणं कार्यनाशनं शूलिनाम् ।
 धनलाभो हनूमांश्च जी दीर्घमातुश्च जाम्बवान् ॥
 नारदः कलहश्चैव भरतः कार्यसिद्धिदः ।
 कैकेयः कार्यनाशाय गुहेन विषदर्शनम् ।
 पञ्चरेखाङ्कितं चक्रं निर्यग्रेयास्तु पञ्चमन ।
 भवेयुः कोष्ठकादीनामीशादि गणनं भवेत् ॥

No. 14181. पञ्चीकरणम्.

PAÑCĪKARANAM.

Size, 8 x 1½ inches. Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 90a of the MS. described under No. 2902.

Incomplete.

By Śaṅkarācārya. Same work as that described under No. 4635 ante in the beginning but differs considerably towards the end.

Explains also the various states of consciousness such as wakefulness, dream, sleep, and samādhi in relation to the 17 raṇava and enjoins the meditation of the Brahman.

Beginning:

ओम् । पञ्चीकृतपञ्चमहाभूतानि तत्कार्यं च सर्वं विराडित्युच्यते ।
एतत्स्थूलशरीरमात्मनः इन्द्रियैरर्थोपलब्धिर्जागरितम् । तदुभयाभिमान्यात्मा
विश्वः एतत् अकारः । अपञ्चीकृतपञ्चमहाभूतानि तत्कार्यं च सप्तदशक
लिङ्गं भौतिकं हिरण्यगर्भं इत्युच्यते । एतत्सूक्ष्मशरीरमात्मनः करणेषु
उपसंहृतेषु जागर्ति । तत्संस्कारजप्रत्ययः सविषयः स्वप्नः । तदुभयाभि-
मान्यात्मा तैजसः एतन्नयमुकारः । शरीरद्वयकारणमात्माज्ञानं साभासमव्या-
कृतमित्युच्यते ।

End:

विज्ञानं प्रज्ञानं ब्रह्म ओ ब्रह्म ज्योतिरहो इति निर्गुणं द्वापञ्च-
शतं जपेत् । सगुणं द्वासहस्रं जपेत्

No. 14182. गण्डान्तशान्तिमन्त्रः.

GANDANTASANTIMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 2840.

Incomplete.

Gives the Vedic Mantras to be repeated at the time of performing certain pacificatory ceremonies for averting the evils due to certain events occurring during inauspicious periods of time called Gandānta.

Beginning.

यमाय सोमम्, पूषा गा इत्येतस्या ऋचः भग्द्वज ऋषिः, गायत्री
छन्दः, पूषा देवता । पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वनः । पूषा वाजं
सनोतु नः । अश्विना यज्व रीरिष इत्येतस्या ऋचः मधुच्छन्दा ऋषिः,

गायत्री छन्दः, (अश्विनौ)देवता । अश्विना यज्व रीरिषो द्रवत्पाणी
शुभस्पती । पुरूमुजा च नश्यतम् ।

End :

आपो हि ष्ठा एतोन्विन्द्रमृतं च हिरण्यवर्णाः, बलिस्थाः, सहस्रशीर्षा,
पवमानः सु, तच्छं योरिति । तच्छं योः शंयुर्गायत्री.

No. 14183. त्र्यम्बककल्पः.

TRYAMBAKAKALPAH.

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 2840.

Complete.

Similar to the work described under No. 7863 ante.

Beginning :

अस्य त्रियम्बकमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, मृत्युञ्जयात्रियम्ब-
करुद्रो देवता, देवदेव्यौ प्रणवौ बीजशक्ती, रं बीजं, यं कीलकं, शुक्लवर्णम् ।
(अनुदात्तस्वरः ।) यजुर्वेदस्वरूपं, गार्हपत्यस्थानं, समस्तशत्रुसमस्तव्याधि-
परिहारार्थं जपे विनियोगः ।

* * * *

त्वावतस्त्वद्गतप्राणः त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड ।
इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मन्त्रं त्रियम्बकम् ॥

End :

. शवर्णे रविसर्गवर्णासरत्कर्णिकां
किञ्चल्कालिखितास्व(रं) प्रतिदला प्रारब्धवर्गाष्टकम् ? ।
क्षान्विम्बेण जाश्वाशासुसंवेष्टितं
वर्णाब्जं शिरसि स्मरेद्विषगनप्रध्वंसि मृत्युञ्जयम् ? ॥

Colophon :

इति त्रियम्बककल्पस्समाप्तः ॥

No. 1414 रजस्वलाशान्तिः.

RAJASVALĀSĀNTIḤ

Pages, 3. Lines, 3 on a page.

Begins on fol. 90b of the MS. described under No. 3232

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3380 ante.

Beginning :

रजसि प्रथमे स्त्रीणा शान्तिं वक्ष्याम शनैक ।
 तिथिलम्बयोगेभ्यो लग्नाच्च ग्रहसप्तमे ॥
 ग्रहेभ्यो दुःस्थितेभ्यश्च तत्तद्दोषहराय च ।
 अधमर्थदिलोभार्थः (१) दम्पत्योरभितृडये ॥

End :

होमार्थं च जपार्थं च वरयेद्विजो बहून् ।
 यजमानो द्विजैस्तार्थं शान्तिहोमं समाचरेत् ॥
 गृहादीशानदिग्भागे देवनायतनेऽपि वा ।
 द्रोणप्रमाणकैर्ब्रीहिधान्यराशित्रयं भवेत् ॥
 वस्त्रैश्च परिवेष्टितम् ।
 कुम्भैश्च तीर्थसलिलैः

No. 14185 इतिहासोपनिषद्.
 ITIHĀSOPANIṢAD.

Pages, 10. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 3521, wherein this was mentioned as Itihāsa in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 298 ante.

No. 14186. सोमोत्पातः.
 SÔMÔTPATTIḤ.

Pages, 3. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 20b of the MS. described under No. 3521, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 2592 ante.

No. 14187 रुद्रप्रश्नः.
 RUDRAPRAŚNAḤ.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 3521.

Contains the Anuvākas 1 and 2 complete and 3 incomplete in the Namaka.

Same work as that described under Nos. 118 and 120 ante.

No. 14188. वरमङ्गलान्तकम्.
 VARAṆĠALĀNTAKAM

Pages, 4. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 3521.

Complete.

Same work as that described under No. 11333 ante.

No. 14189. वट्टनुग्रहाष्टकम्.
VATTVANUGRAHĀṢṬAKAM

Pages. 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 33b of the MS. described under No. 3521, wherein this was included under Maṅgalāśāstra in the list of other works.

Complete.

Eight stanzas procuring benedictions on a bachelor to the effect that he should live long, get fame and become learned.

Beginning:

आदौ गणेशस्तदनु स्वया(यं)भूस्ततो गिरीशस्तदनन्तरं हरिः ।
एते सुरास्तौख्यकरा दिशन्तु वटोश्चिरायुश्शुभकीर्तिविद्या ॥

End:

ताम्बूलगन्धाक्षतपुष्पधूपदीपाङ्कुराशीर्वचनानि यानि ।
पुण्यानि वाक्यानि दिशन्तु तानि वटोश्चिरायुश्शुभकीर्तिविद्याः ॥

No. 14190. पुनराधानम्.
PUNARĀDHĀNAM.

Page. 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 34b of the MS. described under No. 3521, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3363 ante.

Beginning:

अथ पुनराधानं व्याख्यास्यामः—

आपस्तम्बानुसारेण कर्ता होमानीतप्रायश्चित्तं कृत्वा ततः होमद्रव्याणि
ब्राह्मणाय दत्त्वा शुचिर्भूत्वा वत्सा दक्षिणत आसीनः अतिक्रमणौपासनाग्निं
पुनस्तन्धास्य इति सकृल्लप्य श्रोत्रधाराग्राहि माहृत्या तन्ने विधिनाग्निं प्रतिष्ठाप्य ।

End

उद्धृष्यस्वाम उद्धृतममुद्रयन्.

Fol. 35a contains Rudravidhāna

No. 14191. उदकशान्तिमन्त्रः.

UDAKAŚĀNTIMANTRAḤ.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 993.

Complete.

Same work as that described under No. 3573 ante.

No. 14192. उदकशान्तिप्रयोगः.

UDAKAŚĀNTIPRAYŌGAḤ.

Pages, 16. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 993, which was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3574 ante.

Beginning :

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतस्फुरुचो वेन आवः ।

स बुद्धिर्वा उपमा अस्य विष्ठास्सन्धश्च योनिमसतश्च विवः ॥

* * * *

अद्भिरभ्यूह्य शकलं निरस्याप उपस्पृश्य पात्रसादनादिप्रोक्षणान्तं
कृत्वा ।**End :**यातुधाना हेती रक्षांसि प्रहेतिस्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो
यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधाम्ययम्.

No. 14193. श्रावणहोमः.

ŚRĀVAṆAHŌMAḤ.

Pages, 7. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 239.

Complete.

On the performance of offerings to the sacred fire on the Upākarma day as a preliminary ceremony to the commencement of the study of the Veda.

Beginning :

पर्वण्यौदधिके कुर्युः श्रावणं तैत्तिरीयकाः ।

श्रावण्यां बह्वृचाः कुर्युः ग्रहसङ्क्रान्तिवर्जिताः ॥

श्रावण्यां पौर्णमास्यामाचार्यशिश्यैस्सहितः प्राणानायम्य एवं विशिष्टेऽ-
भ्युदये शुभे मुहूर्ते अध्यायोपाकर्म करिष्ये इति सङ्कल्प्य नद्यादिपुण्योदकेषु
स्तात्वा सर्वे निवीतिनो भूत्वा प्रजापतिं सोममग्निं विश्वान् देवान् सांहिती-
देवता उपनिषदो याज्ञिकीदेवता उपनिषदो वारुणीदेवता उपनिषदो ब्रह्माणं
स्वयम्भुवं सदसस्पतिं चे(ति) नव ऋषीन् षोडशोपचारैस्तण्डुलैरभ्यर्च्य ।

End :

एतत्कर्मणः कर्मसमृद्धयर्थं जयादिहोमं करिष्ये—चित्तं च स्वाहा—
चित्तायेदम् । जयादिब्रह्मविसर्जनान्ते नान्दीश्राद्धं कुर्यात् ॥

Colophon :

इति श्रावणहोमः ।'

No. 14194 नान्दीप्रयोगः.

NĀNDĪPRAYŌGAḤ.

Pages. 2 Lines. 9 on a page.

Begins on fol. 28a of the MS. described under No. 239.

Incomplete.

On details connected with the performance of a ceremony called Nāndī on marriage and other auspicious occasions.

Beginning :

नान्दीमुखे (खं) पिता कुर्यात्पुत्रीपुत्रविवाहयोः ।

उत्तरेषु विवाहेषु स्वयं कुर्यात् नान्दिकम् ॥ इति ।

अस्यां शुभतिथौ तत्तत्कर्माङ्गभूताभ्युदयिकं करिष्ये इति सङ्कल्प्य तत्र
नान्दीप्रपितामहीपितामहीमातरः काश्यपगोत्रा नान्दीमुखाः नान्दी प्रपितामहपि-
तामहपितरः काश्यपगोत्रा नान्दीमुखा उभाभ्यामुभाभ्यां सत्यवसुसंज्ञिका
विश्वे देवाश्च षोडशोपचारैः सम्पूज्य पूजानन्तरं देवतानुमोदनार्थमिडावाचनं
करिष्ये ।

End :

नान्दीदेवताशोभनदेवता युग्मास्समुच्चयाः अस्यां शोभनवेदि-
का(या)मागत्य सर्वास्त्राहतास्तस्यः मामनुगृह्णन्तु ।

त्रयस्ते पितरः प्रोक्ताः चत्वारो लेपभाजनाः ।

नान्दीमुखा सप्तमादुपरि स्थिताः ॥

अनस्मद्बृहदशब्दाश्च अपुत्राश्च सप्तोत्रिणः ।

No. 14195. नवग्रहपूजाहोमादिः.
NAVAGRAHAPŪJĀHŌMĀDIḤ.

Pages, 8. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 236 of the MS. described under No. 239.

Complete.

Similar to the work described under No. 3614 ante.

Beginning :

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः, कूर्मो देवता, सुतलं छन्दः, आसने विनियोगः । प्रणवरय परब्रह्म ऋषिः, परमात्मा देवता, देवी गायत्री छन्दः, प्राणायामे विनियोगः । प्राणायामं कृत्वा एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ यजमानस्य अमुकगोत्रे अमुकनक्षत्रे अमुकराशौ जातस्य यज्ञेश्वरनामधेयस्य जन्मलग्नापेक्षया दृष्टारिष्टपरिहारद्वारा शुभफलप्राप्त्यर्थमादित्यादिनवग्रहदेवताप्रीत्यर्थमधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितं समिदाज्यचरुभिर्यथासङ्ख्याकं एभिर्ब्राह्मणैर्ग्रहार्चनपुष्पसरं नवग्रहमुपसृजं कारयिष्ये । तत्तद्ग्रहदेवताप्रीत्यर्थमर्चनादिजपहोमार्थं(दि) मर्त्यं भवन्नः कुर्वन्त्विति ब्राह्मणान् वरयिष्ये ।

End :

तत्तद्ग्रहसमिधः ब्राह्मणानां दद्यात् । अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितं समिच्चर्वाज्याहुतीर्हुत्वा प्रधानदेव्या इन्द्रादिदिक्पालकदुर्गागणपतिदेवतादि यथावदाज्यं जुहुयात् । ततः हव्यवाहमभिमातिषाहमिति स्विष्टकृद्धोमं हुत्वा समिधमिधमसन्नहनं चाम्नौ प्रहृत्य जयादि ब्रह्मविसर्जनान्तं कृत्वाराधनग्रहदेवतार्थं हुतशेषं चरुं समर्प्य पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा प्रदक्षिणनमस्कारं कृत्वा ब्राह्मणाय दक्षिणां दद्यात् ॥

No. 14196. प्रयोगपद्धतिः.

PRAYŌGAPADDHATIḤ.

Pages, 13. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 27a of the MS. described under No. 239, wherein this has been omitted to be included in the list of other works.

Wants the first two stanzas and the end.

Same work as that described under R. No. 1769 of the Triennial Catalogue of Sanskrit MS. Vol. II. Part I. c. By Śiṅgabhāṭṭa.

No. 14197. पुनस्तन्धानम्.

PUNASTANDHĀNAM.

Pages, 5. Lines, 2 on a page.

Begins on fol. 326 of the MS. described under No. 239.

Complete

Similar to the work described under No. 3691 ante.

Beginning :

पूर्वेद्युरुपोप्यापरेद्युः प्रातस्स्नात्वा शुचिर्भूत्वा नित्यकर्मादिकं कृत्वा
नमस्सदसे नम इति मन्त्रमुच्चार्य सर्वेभ्यो महाजनेभ्यो नमः अशेषे हे
परिषत् भवत्पादमूले मया समर्पितां परिषद्दक्षिणां स्वीकृत्य मदीयां विज्ञाप-
नामवधार्यावयोः विच्छिन्नस्यौपासनाग्नेः पुनस्सन्धानयोग्यतामिद्विरस्त्विति अनु-
गृहाण । पुनस्सन्धानयोग्यतासिद्धिरस्तु । होमानीतकालप्रायश्चित्तार्थमिदमाग्नेयं
हिरण्यं ब्राह्मणाय संप्रददे न मम । एवंगुणविशेषणविशिष्टायामस्यां शुभतिथौ
विच्छिन्नस्यौपासनाग्नेः पुनस्सन्धानाख्यं कर्म करिष्ये इति सङ्कल्प्याग्निं
प्रतिष्ठाप्य ।

End :

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पूर्वेद्युस्सायमद्य प्रानरौपासनहोमं तण्डुलैर्होष्ये ।
औपासनं कुर्यात् ॥

Colophon :

इति पुनस्सन्धानं समाप्तम् ॥

No. 14198. भगवद्गीता.

BHAGAVADGĪTĀ.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 366 of the MS. described under No. 239.

Contains the 15th Adhyāya only.

Same work as that described under No. 1992 ante.

No. 14199. चन्द्रशेखराष्टकम्.

CANDRAŚĒKHARĀṢṬAKAM.

Pages, 2. Lines, 9 on a page

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 239 wherein
this has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under R. No. 221 (m) of the Triennial
Catalogue of MSS., Vol. I, Part I-A

No. 14200. मार्कण्डेयस्तोत्रम्.

MĀRKANDEYASTOTRAM.

Page, 1. Lines, 9 on a page

Begins on fol. 376 of the MS. described under No. 239, wherein this has been omitted to be included in the list of other works.

Almost complete.

Same work as that described under R. No. 324 (j) of the Triennial Catalogue of the Sanskrit MSS., Vol. I, Part I-A

No. 14201. सामवेदसंहिता ऋक्पाठः.
SĀMAVEDASAMHITĀ RĪKĀṬHAḤ.

Pages, 17. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 35a of the MS. described under No. 3511, wherein this work appears under the name Āgnēyaṛcaḥ (Sāmavēda) in the list of other works.

Contains the first Adhyāya in the Āgnēyasāman.

Same work as that described under No. 42 ante.

Fol. 43b contains some Rgvēdasūktas, etc.

No 14202. दिक्पालनमस्कारः.
DIKPĀLANAMASKĀRAḤ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 43a of the MS. described under No. 5537, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Deals with the worship of the guardian deities held to be presiding over the universe at the eight cardinal points.

Beginning :

इन्द्राय नमः, इन्द्रासनाय नमः, इन्द्रमूर्तये नमः ; आग्नेयाय नमः, अग्नेयासनाय नमः, अग्निमूर्तये नमः ; यमाय नमः, यमासनाय नमः, यममूर्तये नमः ।

End :

कुबेराय नमः, कुबेरासनाय नमः, कुबेरमूर्तये नमः ; ईशान्या(ना)य नमः, ईशानासनाय नमः, ईशानमूर्तये नमः ॥

No. 14203. नवग्रहनमस्कारः.
NAVAGRAHANAMASKĀRAḤ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 13b of the MS. described under No. 5537, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Deals with the propitiatory worship of the presiding deities of the 9 Grahās or planets.

Beginning:

सूर्याय नमः, सूर्याति(धि)देवताय(यै) नमः ; चन्द्राय नमः, चन्द्राति(धि)-
देवताय(यै) नमः ; अङ्गारकाय नमः, अङ्गारकाति(धि)देवताय(य) नमः,
बुधाय नमः, बुधाति(धि)देवताय(यै) नमः ।

End:

शनैश्चराय नमः, शनिअति(शन्यधि)देवताय(यै) नमः ; राहुआय(हवे)
नमः, राहुअति(ह्वधि)देवताय(यै) नमः ; केताय(तवे) नमः, केतादि(त्वधि)
देवताय(यै) नमः ॥

No. 14204. श्रीसूक्तजपः.

ŚRISŪKTAJAPAḤ

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 30a of the MS. described under No. 8645.

Foll. 27 to 29 contain some Kanarese verses and Śaṇāmantra.

Wants the beginning and the end.

Same work as that described under No. 17 ante.

Fol. 31½ contains sixth stanza of the first Adhyāya in Bhagavad-
gītā.

No. 14205. बिन्दुद्वादशीव्रतकल्पः.

BINDUDVĀDAŚĪVRATAKALPAḤ.

Page, 1. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 3b of the MS. described under No. 1014.

Incomplete

Similar to the work described under No. 8383 ante.

Beginning:

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ मम समस्तपापक्षयार्थं पुत्रपौत्राभि-
वृद्ध्यर्थं मध्या यनित्वत्पर्यमिह लोके सौभाग्यपरम्परावाप्त्यर्थं पर-
लोके वैकुण्ठप्राप्त्यर्थं धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलावाप्त्यर्थं भविष्योत्तरपुराणोक्त-
बिन्दुद्वादशीव्रतोद्यापनकल्पोक्तसम्पूर्णसकलफलावाप्त्यर्थमनाद्यविद्यावासनया प्र-
वर्तमानेऽस्मिन् संसारचक्रे.

End :

श्रीलक्ष्मीनारायणमुद्दिश्य श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थं बिन्दुद्वादशीव्रतम्.

No. 14206. आग्रयणस्थालीपाकः.
ĀGRAYANASTHĀLĪPĀKAH

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 1014, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

On the performance of a fire-offering on a new moon or full-moon day of the autumn season after the harvest and before cooking the newly harvested grain for food.

Beginning :

आग्रयणम्—

शरत्काले अमावास्यायां पौर्णमास्यां वा औपासनाग्निं प्रतिष्ठाप्य प्राणानायम्य नवान्नप्राशनार्थं नवैर्व्रीहिभिर्गमयणं कर्ष्य इति सङ्कल्प्य, तत्र इन्द्राग्नी विश्वे देवा द्यावापृथिवी प्रधानदेवताः स्विष्टकृत् तदङ्गदेवता व्रीहमयं चरुद्रव्यमिति सङ्कल्प्य पत्युः सहन्ति चरुः श्रपयित्वा ।

End :

यत्र यथा न पतति तथा उद्ध्रियते ।

No. 14207. महान्यासः.

MAHĀNYĀSAH.

Page, 5. Lines, 8 on a page. Character, Nandirūg ri

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 2871.

Complete.

Same work as that described under No. 3751 ante, wherein see for the Beginning.

End :

पापक्षयाधिव्याधिविमोचनार्थं जीवितार्थं च कुर्यात् । एवं कुर्वन् सिद्धिमवाप्नोति । आचार्येभ्यो गां दक्षिणां दद्यात् । जितविभूषितवृषभैकादश (?) दद्यात् । तदलये एकां गां दद्यात् । एकादश ब्राह्मणान् भोजयेत् । ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दद्यादित्याह भगवान् बोधायनः ॥

N 14208. श्रीशैलसङ्कल्पः.

ŚRĪŚAILASĀṆKALPAH

Pages, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 8722.

Incomplete.

Same work as that described under No. 3831 ante but with slight difference here and there.

Beginning :

अस्य श्रीमहादिदेवस्य भगवतः सच्चिदानन्दविग्रहस्य परब्रह्मणः सकल-
जगदुपादानभूतविरा(ड)ध्यासादिसद्विलक्षणप्रपञ्चबाह्याभ्य(न्त)रपरिपूर्णस्वरूपस्य
निरतिशयानन्दकन्दलितस्य श्रीशैलशिखरसिंहासनमध्ये अध्यासीनस्य ।

अस्य मल्लेश्वरस्य विवाहसमये संवत्सरायनऋतुमासपक्षतिथिवारनक्षत्रयोग-
करणांश्विते शिवतिथौ अस्य देवदेवस्य लीलाविवाहमहोत्सवार्थकन्यादानं
करिष्ये । शतमानं भवति ।

End :

भक्तमहेश्वरप्रसादप्राणलिङ्गशरणैकपदस्थलवीर(मा)हेश्वराचागनिश्चलव्रत-
स्ता(स्था)नां रेवणसिद्ध रामपण्डितागध्यचतुर्भुजचतुर्भुजचतुराचार्य ।

No. 14209. शैवश्राद्धप्रयोगः.

ŚAIVASĀRĀDDHAPRAYOGAII.

Pages, 16. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 8722.

Incomplete.

On the procedure for the performance of the Śāradha ceremony by the Śaivites.

Beginning :

अद्य पूर्वोक्तैवङ्गणविशेषणविशिष्टायां शिवतिथौ अस्मत्पितृमाचि(सि)का-
राधननन्दिमहाकालसंज्ञस(ानां) विश्लेषां देवानां स्थान(आ)हवनीयार्थे क्षणं
दत्वा भवद्भिः क्षणप्रसादः(ः)करणीयः । अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां गोत्राणां
शर्मणां पादार्चनं कृत्वा नन्दिमहाकालसंज्ञकविश्वेश्वरमहेश्वरसदाशिवस्वरूपाणां
स्थानआवाह(हव)नीयार्थे क्षणं दत्वा ।

End :

एकरात्रिं वीरमाहेश्वरदेवताभ्यां नमः । कर्पूरदीपागधनं समर्पयामि ।
यथासुखं जुषध्वम् । सर्वान् पदार्थम(ान) ॐ नमः ॐ नमः ॐ नमः ॐ नमः ॐ नमः
सत्यं सत्येन परिषिञ्चयामि । अमृतमस्तु अमृतोपस्तरणं स्वाहा ।

No. 14210. आपस्तम्बगृह्यप्रयोगः.

ĀPASTA MBAGRHYAPRAYŪGAH.

Pages. 56. Lines. 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 3440.

Incomplete

On the conduct of the house-hold rites and ceremonies according to the school of the Āpastan ba.

Beginning :

अथ गार्ह्याणि कर्माणि उदगयनपूर्वपक्षाहःपुष्याहेतु कार्याणि यज्ञोप
वीति(ना) प्रदर्शयाम् ।

स्थण्डिलं कल्पयित्वा प्राचीरुदकसंस्थाः उदीचीः प्राक्संस्थीस्तस्त्र-
स्तिस्रो रेखा लिखित्वाद्भिरवोक्ष्य शेषमुत्सृज्य भूर्भुवस्सुवरोमित्यग्निं प्रतिष्ठाप्य ।

End :

वैश्वदेवं करिष्य इति सङ्कल्प्यौपासने पचने वामौ . . . स्वाहेति
षडभिः प्रनिमन्त्रं ब्रह्महस्तेन जुहुयादुत्तरतः उल्लेखास्तस्य हविष्यमुभयतः
परिषंचनं बलीनाम्.

No. 14211. रामगद्यम्.

RAMAGADYAM

Pages. 3. Lines. 5 on a page.

Begins on fol. 41a of the MS. described under No. 2818 wherein this work has been omitted to be included in the list of other works.

Wants the beginning

A eulogy on God Rāma by describing him by means of different signifying epithets strung in a kind of rhythmic prose.

Beginning :

देवकी(वादि) सकलसुखमणिमकुट

रघुकुलानिलक, मूर्तिवंशप्रदीप, [जलकानिकरजनकगजम्.] चानकीमत्स्या
(नम्)राजहंस, विश्वामित्राज्ञप्रतिपालन, नाटकमहोत्सवप्राणापहार, अहल्या
मोक्षपादारविन्द, मित्रिभ्रात्राभिराजितमार्जन(सन्दर्शित)देवग्रामभावमहाको-
दण्डभग्न ।

End :

भरताग्रज धर्मपरिपालन शताश्वमेधयज्ञदीक्षित[रघु] भरतशत्रुघ्नसहोदरसी-
तापते [सौन्दर्य] श्रीरामचन्द्रपाद नमस्ते नमस्ते ॥

No. 14212. आतुरसन्न्यासविधिः.
ĀTURASANNYĀSAVIDHIH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 10a of the MS. described under No. 1234.

Wants the beginning.

Complete.

Similar to the work described under No. 3542 ante.

Beginning :

वस्सुवरोम् मया सन्न्यस्तं स्वाहेति द्वितीयं पिबेत् । अभयं सर्वभूते-
भ्यो मत्तः स्वाहेति तृतीयं पिबेत् । ततोऽन्यतोयमञ्जलिना पूर्णमादाय प्रा-
गादिदि भूसावित्रीं प्रवेशयामि । ओं भुवः सा-
वित्रीं प्रवेशयामि ।

End :

या ते अग्ने . . . क्षय एहीत्यग्निमात्मनि समारोप्य आतुरस्सन्न्यासं
कुर्यात् ॥

No. 14213. यतिसंस्कारप्रयोगः.
YATISAMSKĀRAPRAYÔGAH.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 1234, wherein
this work was omitted to be included in the list of other works.

Similar to the work described under No. 3764 ante.

Beginning :

सर्वाङ्गवपनपूर्वकं स्नात्वा गृहस्थः शुद्धात्मा यतिसंस्कारमाचरेत् ।

आदौ प्रक्षाल्यै तद्देहं तीर्थतोयैरकल्मषैः ।

पौरुषेण च सूक्तेन शङ्खतोयैस्स भक्तिमान् ॥

पञ्चामृतैः स्नापयित्वा प्रणवेन ततः परम् ।

अबिलङ्गैर्वारुणैर्मन्त्रैर्विष्णुसूक्तेन वै तथा ॥

*

*

*

*

तस्मात् गर्तं भृशं खनित्वा प्रच्छादयेत् । तत्संस्कारदेशे अश्वत्थं वि-
ल्ववृक्षं वा स्थापयेत् ।

End :

एवं प्रतिदिनं कुर्यात् । एवं प्रकारेण दशादिनपर्यन्तं तर्पणानि पूजां बलिं च कुर्यात् । एतत्सर्वमुपवीती कुर्यात् ।

No. 14214. यतिपार्वणप्रयोगः.

YATIPĀRVANAPRAYŪGAḤ.

Pages, 24. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 1234, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Similar to the work described under No. 3763 ante.

Beginning :

एकादशदिने देशकालौ सङ्कीर्त्य त्रिथौ ब्रह्मीभूतस्य पितुः दर्शश्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थं पार्वणश्राद्धं करिष्ये इति सङ्कल्प्य पूर्वाश्रमे नामगोत्रा(दि) उच्चार्य विश्वेदेवपूर्वकं स्वशाखोक्तप्रकारेण प्रत्याब्दिकवत् आसमिन्तादिकं सर्वं कुर्यात् । सर्वत्र केशव यदेव नारायण यदेव राम यदेव इति ब्रूयात् । एकादशेऽहनि पार्वणश्राद्धाधिकारसिद्ध्यर्थं पुण्याहवाचनं करिष्ये इति सङ्कल्प्य पुण्याहं तदनन्तरं पार्वणं च कुर्यात् । द्वादशदिने प्राणायामं कृत्वा ।

End :

धाता पुरस्तेति मन्त्रपुष्पम् । धाता पुरस्ताद्यमुदा—अयनाय विद्यते—पुरुषाधि—नमः—मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । यज्ञेन यज्ञमयजन्तेत्युद्गासनम्—यज्ञेन यज्ञमय—देवाः—पुरुषाधि—नमः—नमस्कारं समर्पयामि ॥

No. 14215. अपरप्रयोगः.

ĀPARAPRAYŪGAḤ.

Substance, palm-leaf. Size, $7\frac{1}{8} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 90. Lines, 6 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Incomplete.

Deals with the procedure relating to the performance of funeral rites according to the school of Āpastan̄ba.

Beginning :

अथातः पैतृमेधिकं व्याख्यास्यामः कालं पुरुषं स्नापयित्वा शुचौ स (गो)मयोपलितं निधाय गोत्रनाम सङ्कीर्त्य

. प्राणोत्क्रमणसिद्ध्यर्थमुत्क्रान्तिगोदानं क)रिष्य इति सङ्कल्प्य गन्धपुष्पाक्षतै.
 त्क्रान्तौ प्रवृत्तस्य सुखोत्क्रमण . . तुभ्यं गां सम्प्रय-
 च्छामि इमामुत्क्रान्तिसंज्ञिकाम् । दत्त्वा तस्य दक्षिणे कर्णे जपति—
 आयुषः प्राणं सन्तनु । प्राणादपानं सन्तनु ।

End :

ते अस्मिन् यज्ञे समवयन्ताम् । दक्षिणा प्रागग्रैर्दर्भैरग्निं परिस्तीर्य उत्तरेः
 गार्गिं दर्भान् संस्तीर्य तेप्वेव पात्राणि प्रयुनक्ति । अग्रेर्दक्षिणतः -
 र्थेषु दर्भेषु एकोद्दिष्टवत् पात्राणि.

No. 14216. वश्यप्रयोगः.

VAŚYAPRAYŪGAH.

Pages, 6. Lines, 5 on a page."

Begins on fol. 28a of the MS. described under No. 430, wherein this is mentioned under the name Bhartrvaśyādirayoga.

Contains the following :—

- (१) आचार्यभिक्षाप्रयोगः.
- (२) शत्रुवश्यप्रयोगः.
- (३) भार्यापुरुषान्तरसंयोगशङ्कानिवृत्तिप्रयोगः.
- (४) क्रयविक्रयलाभार्थप्रयोगः.
- (५) भर्तृवश्यप्रयोगः.
- (६) भृत्यपुनरागमनप्रयोगः.

On the procedure relating to the performance of certain rites considered efficacious in bringing one's enemy into one's power, in bringing the husband under the wife's influence, the servant under the master's control, etc.

Beginning :

अथ शिष्टानां मन्त्राणां विनियोगमाह—आचार्यार्थं भिक्षामीति सङ्क-
 ल्प्य अन्नमिव ते दृशे भूयासम् । वस्त्रमिव ते दृशे भूयासम् । वित्तमिव
 ते दृशे भूयासम् । श्रद्धेव ते दृशे भूयासम् ।

*

*

*

*

ऋणादानादिव्यवहारेण जयलक्षणमाह । तस्य प्रयाग —सव्येन पाणि-
 ना छत्रं दण्डं चाधाय अवजिह्वक निजिह्वकाय त्वा हविषा यजे । तत्सत्यं,

यदहं ब्रवीम्यधरो मत्पद्यस्व लक्ष्मि शर्मा(क्षमय)स्वाहा—लक्ष्मयशर्मण इदम् ।
 अवाचीनपाणिना स्वाहाग्नौ जुहोति । परिस्तरणपर्युक्षणमुभयतस्तूर्णीं करोति ।
 शत्रुनाम गृह्णाति ! संवाददेशं गत्वा आ ते वाच(1)मावास्यां दद आमनस्याः
 हृदयादधि । यत्र यत्र दे (ते) वाङ्निहिता तां तत आददे । तत्सत्यं,
 यदहं ब्रवीम्यधरो मत्पद्यस्व लक्ष्मयशर्मन् इत्यशत्रुं वश्यं जपेत् ।

End :

इन्द्रः पाशेन सिक्त्वा वो मल्लमिद्वशमानय स्वाहा—इन्द्रायेदम् ।
 येन पथा दासाः पलायेरन् तस्मिन् पथि दारुमयाणि इण्वानि निधाय ते-
 प्वेवानग्नौ जुहुयात् । केचिदिण्वानि अग्नौ निधाय तत्रामावेव होम इति.

No. 14217. शान्तिप्रयोगः.
 ŚĀNTIPRAYŪGAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 306 of the MS. described under No. 430, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

On certain pacificatory rites for averting the evils attributed by the fall of the fruits of trees upon a person, by the falling of certain birds on a person, etc.

Beginning :

अन्यत्कर्म—

यदि वृक्षाद्यद्यन्तरिक्षात्फलमभ्यपतत्तदु वायुरेव । यत्तास्पृक्षत्तनुवं यत्रा-
 वास आपो बाधन्तां निरृतिं पराचैः । वृक्षफलेनोपहतं शरीरं प्रक्षालयीत ।
 कर्मान्तरम् । ये पक्षिण पतयन्ति बिभ्यतो निरनृनैस्तह । ते मा शिवेन श-
 ग्मेन तेजसो दन्तिवर्चसा । पक्षिणा स्पृष्टः स्नायात् ।

End :

कपोतदर्शनेऽमात्यानां शरीररेषणेऽन्येषु चाद्भुतोत्पातेष्वमावास्यायां
 निशायां यत्रापां न शृणुयात् तदग्रेरुपसमाधानाद्याज्यभागान्ते उत्तराहुतीः
 हुत्वा अद्भुतप्रायश्चित्तम्—रात्राविन्द्रे धनुरादित्ये अगारस्थूणानामङ्कुरारोप-
 जनने गृहे मधुन उपवेशने पाकगृहे अरण्य.

No. 14218. मृत्युलाङ्गुलमन्त्रः.

MṚTYULĀNGŪLAMANTRAḤ.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 62b of the MS. described under No. 430.

Complete.

Same work as that described under No. 6955 ante.

Fol. 63b contains a few stanzas on Dharmaśāstra.

No. 14219. द्वादशीव्रतविषयः.

DVĀDAŚĪVRATAVIṢAYAḤ.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 80a of the MS. described under No. 430, wherein this appears as Dvādaśārghyam in the list of other works.

A prayer addressed to God Viṣṇu with a view to make one's fast on the Ekādaśī day and the taking of food on the next day as efficacious as it ought to be.

Beginning and End :

एकादश्यां निराहारं कृत्वाहमपरेऽहनि ।
 भोक्ष्यामि देवदेवेश शरणं मे भवाच्युत ।
 उपवासं च तां चैव मया भुङ्क्ते जनार्दन ।
 तन्न्यूनमधिकं यान्ति सफलं कुरु केशव ॥
 इति प्रार्थनं कृत्वा पारणं कुर्यात् ।

No. 14220. जयादिप्रायश्चित्तहोमानुक्रमणिका.

JAYĀDIPRĀYAŚCITTĀHŌMĀNUKRAMANIKĀ

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 102a of the MS. described under No. 430, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Wants the beginning and the end.

Contains a list of the Mantras that have to be repeated during the fire-offerings conducted as expiatory ceremonies for certain irregularities.

Beginning :

ऋताषाडृतधामाग्निगन्धर्वः संहितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वः सुषुप्तसूर्य-
 रश्मिर्भुज्जुस्तुपर्णः प्रजापतिर्विश्वकर्मा इषिरो भुवनस्य पते ।

End :

अस्कान् द्यौः इति स्कन्नादिदोषप्रायश्चित्तार्थं यन्म आत्मन इति मिन्दा-
दोषप्रायश्चित्तार्थं पुनस्त्वादित्या इति सर्वप्रायश्चित्तार्थम् ॥

No. 14221. अग्निमुखम्.

AGNIMUKHAM.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 950, wherein this work appears as Agnisandhānam in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3510 ante.

Beginning :

अथ गार्ह्येषु कर्मसु पुरस्तात्तत्रोपरिष्ठात्
साधारणहोमधर्मा उ(प)दिश्यन्ते । तत्र यथायोगं सभार्यः सदभसिनः
पवित्रपाणिः कृतप्राणायामस्तत्तत्कर्मनाम्ना सङ्कल्प्याथ शुचिः शुचौ देशे
सिकताः प्रकीर्य चतुरश्रं स्थण्डिलं कल्पयित्वा प्राचीरुदीचीश्च तिस्रस्तिस्त्रो रेखा
लिखित्वाद्भिर्बोक्ष्याग्ने नयेत्यग्निं प्रतिष्ठाप्याग्निं प्रज्वालयावोक्षणशेषमुत्सिच्यान्य-
दुदकं प्रागुदग्वा निधाय ।

End :

आज्यं तु संस्कृत्य सकृद्गृहीत्वा परिस्तृतेऽग्नौ जुहुयादयाश्च ।
एकाहुनि व्याहृतिभिश्च हुत्वा चतुर्गृहीतेन च सप्तहोता ॥
मनस्पतिं चापि चतुर्गृहीतया अस्मिन् यज्ञेऽपि चतुर्गृहीतम् ।
द्विषड्गृहीतेन च सप्तवत्या ततश्चरुस्तन्तुमती समर्थः ॥

No. 14222. दर्शान्नश्राद्धप्रयोगः.

DARŚĀNNAŚRĀDDHAPRAYŪGAH.

Pages, 17. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 950.

Incomplete.

Same work as that described under No. 3634 ante, and with the additional stanza in the beginning as given below

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।
 नमः स्वधायै स्वाहायै नित्यमेव नमो नमः ॥
 समस्तसम्पत् (.) सवः ॥
 आपद्वन—सवः ॥ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः.

No. 14223. धर्मशास्त्रश्लोकाः.
 DHARMAŚĀSTRAŚLŌKĀH.

Pages, 14. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 950.
 Incomplete.

A collection of stanzas taken from Dharmaśāstra works.

Beginning :

सन्ध्याया विधिना प्रातः रूपे तिष्ठतु मानुषी ।
 सपत्नीकसमारूढा नक्षत्रो यागमाचरेत् (?) ॥
 अग्नीत् पूर्तिं निशि ज्ञेय(यं)सन्धानं सायमेव तु ।
 प्रातः पूर्वं न कर्तव्यं कर्तव्यं सायमाहुतिम् ॥

End :

सालग्रामं च चक्राणि पुरुषसूक्तं तथैव च ।
 तुलस्यां शङ्खतीर्थानि पञ्चैते तीर्थलक्षणम् ॥

No. 14224. पुण्याहवाचनम्.
 PUNYĀHAVĀCANAM.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 88a of the MS described under No. 3122, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Deals with the performance of the ordinary purificatory religious ceremony.

Beginning :

(प्रसी)दन्तु भवन्तः । प्रसन्नास्मः । शान्तिरस्तु, पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु,
 वृद्धिरस्तु, अविघ्नमस्तु, आयुष्यमस्तु, आरोग्यमस्तु, स्वस्ति शुभं कर्मास्त,
 कर्मसमृद्धिरस्तु ।

End:

शिवा वनस्पतयस्सन्तु, अहोरात्रे शिवे स्यातामुत्तरे कर्मण्यविघ्नमस्तु,
उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु, उत्तरोत्तराशुभाः क्रियास्सम्पद्यन्ताम् । मही
. . . . पुरो गा विश्वे देवाश्च प्रीयन्ताम् ॥

No. 14225. मूर्तिध्यानानि.
MŪRTIDHYĀNĀNI.

Pages, 14. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 89a of the MS. described under No. 3122, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

On the form and manner in which certain deities should be contemplated upon.

Beginning:

रविं चतुर्भुजं वापि द्विभुजं पद्मधारिणम् ।
वरदाभयपद्मैश्च चतुर्भुजयुतं तथा ॥
करण्डमुकुटोपेतं प्रभामण्डलमध्यगम् ।
उषा च प्रत्युषा देवी सव्यासव्ये तु संस्थिते ॥
अरुणं त्वग्रतो ध्यात्वा पङ्क्तुतत्त्वस्वरूपिणम् ।
सप्ताश्वरथमध्यस्थं भास्करं भावयेद्बुधः ॥
ब्रह्मार्णी ब्रह्मवद् ध्यायेन्माहेशीमश्विरोपमाम् ।
कुमारवच्च कौमारीं वैष्णवीं विष्णुवत्तथा ॥

End:

अग्निहोत्रध्यानम् —

द्विमुखं चैकहृदयं चतुश्श्रोत्रं द्विनासिकम् ।
आस्यद्वयं च षण्णेत्रं पिङ्गलं सप्तहस्तकम् ॥

हरिहरस्वामिध्यानम् —

अथातस्संप्रवक्ष्यामि शिवकेशवरूपिणम् ।
शिरोदक्षिणपार्श्वे तु जटापटलशोभितम् ।

* * * *

चराचरान्तरात्मानं करुणापूरितेक्षणम् ।

मनोरथप्रदं ध्यायेद् देवं हरिहरात्मकम् ॥

Fol. 96 contains a deed of the gift of a land to a certain person.

No. 14226. आपस्तम्बधर्मसूत्रम्.

ĀPASTAMBADHARMAŚŪTRAM.

Substance, palm-leaf. Size, $14\frac{3}{8} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 59. Lines, 8 on a page. Character, Nandināgarī. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Gāyatrīsāvitṛīsarasvatīkāvaca 31a, Śravaṇadvādaśīnirṇaya 32a.

Complete.

Same work as that described under No. 1215 ante.

No. 14227. गायत्रीसावित्रीसरस्वतीकवचः.

GĀYATRĪSĀVITRĪSARASVATĪKAVACAḤ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under the previous number.

Complete.

Similar to the work described under No. 6177 ante.

Beginning :

अस्य श्रीगायत्रीसावित्रीसरस्वतीकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा
ऋषयः, ऋग्यजुस्तामाथर्वाणः छन्दांसि, ब्रह्मरथप्रणवस्वरूपी ब्रह्मशक्तिः.
गायत्री देवता ओं बीजं, भर्गो देवः शक्तिः, धीमहीति कीलकं, गायत्री-
प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री पातु दक्षिणे ।

ब्रह्मसन्ध्या पातु पश्चादुत्तरां मे सरस्वती ॥

End :

चतुष्पष्टिकलाविद्याविलासैश्वर्यसिद्धिदम् ।

जपान्ते चैव गायत्र्या गयत्रीकवचं जपेत् ॥

गोब्राह्मणवधान्मित्रद्रोहाद्यखिलपातकैः ।

मुच्यते सर्वपापेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥

Colophon :

इति गायत्रीसावित्रीसरस्वतीकवचं सम्पूर्णम् ॥

No. 14228. श्रवणद्वादशीनिर्णयः.

ŚRAVAṆADVĀDAŚĪNIRṆAYAḤ.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 14226.

Incomplete.

On the conditions that should be satisfied for determining the Śravanadvādaśī day.

Beginning :

यो वर्णेरिज्यते नित्यैः कर्मभिश्चादितैर्निजैः ।
 तेभ्योऽपवर्गदो यश्च तं नमाम्यद्वयं हरिम् ॥
 यत्र सोऽस्तमियाद्भानुः निशि यद्युक्तमिन्दुना ।
 तत्रैवोपवसेदक्षे नक्षत्रं श्रवणं विना ॥
 याः काश्च तिथयस्सर्वाः पुण्या नक्षत्रयोगतः ।
 तस्वेव तद्गतं कुर्याच्छ्रवणद्वादशीं विना ॥

End :

उदयव्यापिनी ग्राह्या श्रवणद्वादशीव्रते ।
 श्रवणद्वादशी(व्रत)करूपे—
 आभाकाशितपक्षे तु यत्र श्रवणरेवती ।
 तिथिर्विद्धा प्रशस्या स्यात्पूर्वमं तु परित्यजेत् ॥

Then the following stanzas unconnected with the subject are found :—

आदौ मध्येऽवसाने वा यत्र कन्यां व्रजेद्रविः ।
 स पक्षः सकलः पूज्यः श्राद्धषोडशिकं प्रति ॥
 वृद्धमनुः—
 मध्ये वा यदि वाप्यन्ते यत्र कन्यां रविर्व्रजेत् ।
 स पक्षः सकलः पूज्यः श्राद्धं तत्र विधीयते ॥
 आषाढीमवधिं कृत्वा यः पक्षः पञ्चमो भवेत् ।
 तत्र श्राद्धं प्रकुर्वीत कन्यास्थोऽर्को भवेन्न वा ॥

Fol. 32b, contains some Smṛtīvācanas.

No. 14229. आप्रिया.

ĀPRIYĀ.

Size, 10½ × 1½ inches. Pages, 4. Lines, 6 on a page. Character, Telugu.

Begins on fol. 117a of the MS. described under No. 3482, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 1153 ante.

Beginning :

कर्मण्यस्सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामा वौ । वनस्पतेऽवसृजोप
देवानभिर्हविश्शमिता सूदयाति । सेदु होता सत्यतरो यजाति यदा देवानां
जनिमानि वेदा वौ । आ याद्यग्रे समिधानो अर्वाङ्निन्द्रेण देवैर्न रथं तुरोभः ।
वर्हिर्न आस्तामदितिस्सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्तां वौ ।

अथ कण्वानामाप्रिया—ये—हे सुसमिद्धो न आवह देवाः अग्रे
हविष्मते । होतः पावक यक्षि च वौ ।

End :

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसा इ वौ ।
नराशंस सुभूमतीमं यज्ञमदाभ्यः । कविर्हि मधुहस्त्या वौ ।

No. 14230. गोपालकसन्ध्यावन्दनप्रकारः.

GŌPĀLAKASANDHYĀVANDANAPRAKĀRAḤ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 119a of the MS. described under No. 3482, wherein
this work was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

On the performance of the Tantric Sandhyāvandana using the
Mantra relating to Gōpāla or Lord Kṛṣṇa.

Beginning :

गोपालकसन्ध्यावन्दनप्रकारो लिख्यते—

प्रथमं वैदिकसन्ध्यावन्दनं कृत्वा दक्षिणहस्ततलेन जलमादाय वामकर
हृदय(मन्त्रेण)सलिलं निधाय तदङ्गुष्ठविवरनिर्गतजलबिन्दुभिर्दक्षिणकरेण नेत्र-
मन्त्रेण शिरसि सम्प्रोक्ष्यावशिष्टमस्त्रमन्त्रेण करेणादाय निक्षिप्य
पुनरप्येवं चतुः कृत्वोऽभ्यस्य दक्षिणकरेण हृदयमन्त्रेण जलमादाय वामनासा-
पुटेनाध्यायान्तर्ग प्रक्षाल्य दक्षिणेन निस्सार्य विमृज्याञ्जलिना जल-
मादायादित्यमण्डलगताय मारगायत्र्या त्रिरर्ध्वं निवेद्य तदङ्गादीन् न्यसेत् ।

End :

गोपीजनाय विद्महे गोपीवल्लभ(य)धीमहि । तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्—
इति गोपालगायत्री । अस्य मूलमन्त्रवद्व्यादिन्यासः । अथ वा मारगायत्री—

कामदेवाय हव, विश्वं शिरः, पुष्पवाणाय शिखायै, धीमहि कवचं, तन्नोऽनङ्ग-
प्रचोदयात् नेत्रम् । नारदगायत्री—कृष्णा ऋष्याद्याः शिरोललाटनेत्रद्वयोदोः-
पत्तन्ध्यग्रेषु वर्णशो न्यसेत् । अयं मन्त्र एव गायत्रीमन्त्रः.

No. 14231. प्रवराध्यायः.

PRAVARĀDHYĀYAḤ.

Pages, 51. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 3470.

Complete; as found in the 19th Adhyāya called the Pravarādhyaḥ in the Dānakāṇḍa of Hēmādri's work.

Deals with the ascertainment of the Pravara or the group of R̥ṣis or sages who formed the ancestors of a family.

Beginning :

अथातः प्रवरान् व्याख्यास्यामस्ते यदि न विज्ञायन्ते कुलानि नश्ये
रन्यज्ञेष्वप्रवरणाद्यज्ञानप्रवृत्तेरन्यद्विज्ञानान् पूतानि कर्माणि कुलानि पूता-
नीत्यतो वक्तव्यानीति विज्ञायते । तत्रासगोबामुहुरसमानप्रवरामसमानपिण्डां
मातृतः पञ्चमीं पितृतस्तसमीं समानपिण्डां काश्यपा आचक्षन्ते(ते) त्रीनतीत्य
मातृतः, पञ्चातीत्य पितृतः इति वासिष्ठाः ।

End :

एवमष्टादश गणा उक्ता गोत्रविनिर्णये ।
ऊनपञ्चाशदेवेति केचित्सूत्रकृतो विदुः ॥
यः पठेत्प्रवराध्यायं नित्यं पर्वणि पर्वणि ।
सम्यक् प्रवरविज्ञानाद्ब्रह्मलोके महीयते ॥

Colophon :

इति हेमाद्रौ दानकाण्डे प्रवराध्यायो नाम एकोनविंशोऽध्यायः ॥

No. 14232. अष्टवर्गदशाफलादिविवरणम्.

AṢṬAVARGADAŚĀPHALĀDIVIVARAṆAM.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 27a of the MS. described under No. 3470, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Explains the nature of the fortune of a person consequent on the influence exercised by the nine Grahas or planets during their respective periods.

Beginning :

अथातस्सम्प्रवक्ष्यामि शृणु नारद यत्नतः ।
 आदित्यभौममन्दानां राहुकेत्वोर्दशान्तरम् ॥
 पापग्रहान्तरदशासम्भूता मृत्युनाशनम् ।
 अष्टग्रहाणां वर्गस्य विन्दोः फलनिवारणम् ॥
 मन्दसूर्यकुजादीनां दुरिष्टफलनाशनम् ।
 सर्वतोभद्रचक्रादिक्रूरवेधोद्भवं फलम् ॥

End :

ग्रहाच्छादनवस्त्राणि ग्रहवर्णानि कारयेत् ।
 यज्ञोपवीतयुक्तानि प्रत्येकं परिधारयेत् ॥
 नवधा फलपुष्पाणि नैवेद्यानि तथैव च ।
 तत्तद्वर्णानि धान्यानि गन्धवस्त्रं तथैव च ॥
 धूपदीपादिकैर्युक्तं कृत्वा सर्वसुशोभनम् ।
 पश्चात्संपूजयेद्भक्त्या स्वैस्त्वैर्मन्त्रैर्नवग्रहान् ॥
 चित्रान्नं कारयेत्तत्र फलपुष्पादिकं शुभम् ।

No. 14233. नवग्रहपूजा.

NAVAGRAHAPŪJĀ.

Pages, 23. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 30a of the MS. described under No. 3470.

Complete ; as found in the Śāntiprakaraṇa in Hēmādri work.

On details connected with the worship of the nine Grahas (planets) with a view to propitiate them.

Beginning :

अथ ग्रहपूजाविधिः कथ्यते—

त्रैलोक्यदीपकं देवं त्रिगुणात्मत्रयीमयम् ।

स्थापयामि महाभक्त्या भास्करं ग्रहनायकम् ॥

इति सूर्यस्थापनम् । वेदिकामध्ये वर्तुलाकारमण्डले प्राङ्मुखं कलिङ्गदेशं काश्यपगोत्रजं विशाखानक्षत्रज विश्वामित्रार्पणं त्रिष्टुप्छन्दसं कपिलाग्रिकं छन्दोमयहरितसप्ताश्वं सप्तरज्जुकं पद्मासनं

*

*

*

*

ग्रहमण्डले प्रविष्टमधिदेवता अग्निं प्रत्यधिदेवता रुद्रम् । ओं भूः रविमावाहयामि, ओं भुवः रविमावाहयामि, ओं स्वः रविमावाहयामि ।

Beginning :

अथ जातिभ्रंशस्य घटश्राद्धविधिः । तस्य परित्यागनिर्णयमाह पराशरः—
 त्यजेदेशं कृतयुगे त्रेतायां ग्राममुत्सृजेत् ।
 द्वापरे कुलमेकं च कर्तारं च कलौ युगे ॥
 कर्तारं च कलौ युगे इति वाक्येन तस्य बहिष्कारार्थं घटश्राद्धं कुर्यात् ।
 तस्य घटश्राद्धे तस्य परित्यागप्रकारः स्मृतिसङ्ग्रहे—
 पतितानां यथाह्नीबिं गर्भभर्तृपुरापिणाम् ।
 कुलटानां यथा देहद्रोहिण्यां वास्ति संस्कृतिः ॥
 नाशौचं नोदकं तस्य न कुर्यात्पैतृमेधिकम् ।
 महापातकसाम्यानि पापानि विविधानि च ॥

* * * *

तस्य सङ्कल्पः—

देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रस्यामुकशर्मणः दुष्कर्मणो जातिभ्रंशस्यामुकस्य
 सर्वैः बन्धुभिः बहिष्कारणार्थं तस्य स्वबन्धनिवृत्तिं कर्तुं तदङ्गतया धर्मशास्त्रवि-
 दितप्रकारेण त्रिमूर्तिदेवताकलशपूजादिकं कर्तुं तदन्ते घटस्फोटनं कर्तुं त-
 दादौ घटश्राद्धकर्म करिष्ये—इति सङ्कल्प्य.

दासीं कुम्भं बहिर्ग्रामान्नियेयुस्तवान्धवाः ।
 पतितेषु बहिष्कुर्युः सर्वकार्यैः शुचैव हि ॥

End :

द्वादश्यां विष्णुमुद्दिश्य यथा शक्या च कारयेत् ।
 अस्मद्गोत्रात्परित्यक्तः त्रिवारं वाचयेदथ ॥
 ब्राह्मणैस्तु परित्यक्तः चास्तुशब्दैस्समुच्चरेत् ।
 दक्षिणां च यथाशक्या दद्याद्विभ्रेभ्य एव वा ॥

Colophon :

इति घटश्राद्धविधिः समाप्तः ॥

No 14238. उदकक्रिया.

UDAKAKRIYĀ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 125a of the MS. described under No. 14237.
 Incomplete.

Deals with the procedure relating to the offering of water during the funeral ceremonies of a person who has not been duly burnt after death.

Beginning :

खण्ड(ण्ड)तादिनिमित्तेन नष्टकीकसदेहिनाम् ।
 पालाशकैः प्रतिकृतिर्दाहस्तेषां न विद्यते ॥
 उदकक्रियैव तेषां तु वक्ष्यमाणप्रकारतः ।
 ब्राह्मणैस्सहितः पुण्यनदीं गत्वा विचक्षणः ॥
 यथासम्भवमासाद्य शि(तिला)दिद्रव्यसंयुतम् ।
 ब्राह्मणानुज्ञया सम्यक् सचेल्लानमाचरेत् ॥
 प्रक्षाल्य पाणिपादौ च ब्रह्मदण्डार्थमेव वा ।
 दर्भान् तिलान् हिरण्यं च गृहीत्वा दक्षिणैः(णे)करे ॥
 परिषदक्षिणां कृत्वा विज्ञाप्य स्वं निमित्तकम् ।
 अद्भिः संप्रोक्ष्य गायत्र्या शुद्धमस्फुटितं दृढम् ॥
 पाषाणं तत्र निक्षिप्य प्राणसंयमनं तदा ।
 केशवाद्यैश्च संस्त्राप्य मृज्जलाभ्यां विचक्षणः ॥

End :

त्रिरात्राशौचपक्षे तु नवश्राद्धं कथं भवेत् ।
 आद्ये त्रीणि द्वितीये द्वे तृतीये द्वेकमेव च ॥
 प्रथमे दिवसे देयात् त्रयः पिण्डमुदाहृतः ? ।
 द्वितीये चतुरो दद्यात् त्रयः पिण्डाः(ः) तृतीयेक ॥

No. 14239. नागप्रतिष्ठाव्रतम्.

NĀGAPRATISTHĀVRATAM.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 125b of the MS. described under No. 14237.

Complete.

Similar to the work described under No. 3651 ante.

Beginning :

तत्संवत्सरश्रावणशुक्लपञ्चमीमारभ्यान्यां वा शुक्लपञ्चमीमारभ्य पञ्चम्यामुप-
 वासः । यद्वा चतुर्थ्यामेकमुक्तं पञ्चम्यां नक्तं दारुमयं मृण्म(न्म)यं वा नागं पञ्चफ-
 णं कृत्वा गन्धैः करवीरशतपत्रजातीपुष्पैर्धूपैरनन्तं वासुकिं शङ्खं पद्मं कम्बलं कर्को-
 टकमश्वतरं धृतराष्ट्रं शङ्खपालं कालीयं तक्षकं कपिलं च प्रतिमास्तन्नामभिश्शु-
 क्लपञ्चम्यां सम्पूज्य ब्राह्मणान् घृतपायसमोदकैः भोजयेत् ।

End:

गव्यक्षीरं मोदकं च भूमौ निवेद्योपस्थाय एवं वदेत्—मुञ्च मुञ्चामुक्मिति । तद्दिने मधुरमश्नीयात् । एवमब्दं विधिना नागमभ्यर्च्य पूर्णेऽब्दे सौवर्ष-
नागं च गां च दद्यात् ।

No. 14240. नारायणबलिः.

NĀRĀYAṆABALIḤ.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 126a of the MS. described under No. 14237.

Complete.

Similar to the work described under No. 3655 ante. The author evidently derives his authority from Smṛtisārāvalī to which he refers.

Beginning :

ततो नारायणबलिं च कृत्वा श्राद्धादि सर्वं कुर्यात् । अत्र मूलवचनानि स्मृतिसारावर्यां ज्ञेयानि । अथ पूर्वोक्तपापण्ड्यादीनां बुद्धिपूर्वकात्मघातिनां च नारायणबलिप्रयोगः । एकादश्यां नदीमन्यद्वा तीर्थं गत्वा स्नानादि कृत्वाचम्य प्राणानायम्य दशकालौ स्मृत्वामुकगोत्रस्यामुकशर्मणः आत्महत्यापाषण्डित्वादि-
पापोपशमनद्वारा और्ध्वदेहिकसम्पादनयोग्यतासिद्ध्यर्थं नारायणबलिं करिष्य
इति सङ्कल्प्य ।

End:

ततः पवित्रपाणिभिर्ब्राह्मणैः कृत्वामुकगोत्रायामुकशर्मणे प्रेताय विष्णुरूपाये-
दं तिलोदकमुपतिष्ठतामिति वाचयित्वा सकुशतिलाञ्जलीमु(लि उ)दकां(कं) दाप-
येत् । ततः स्नात्वा गुडशर्करापायसादिभिः स्वजनैस्सहितो भुञ्जीत ॥

Colophon :

इत्यौर्ध्वदेहिकपद्धतौ नारायणबलिः ॥

No. 14241. आतुरसन्न्यासविधिः.

ĀTURASANNYĀSAVIDHIḤ.

Pages, 7. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 128a of the MS. described under No. 14235.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3542 ante. The procedure herein given is laid down by Āṅgīrasa.

Beginning :

अथाङ्गिरसोक्तमातुरसत्र्यासग्रहणविधिं व्याख्यास्यामः—

[आतुराश्चातुराश्च] आसन्ने सङ्कटे धोरे चोरव्याघ्रादिसंकुले ।

भयं प्राप्तस्य सत्र्यासः कर्तव्यो मुनिरब्रवीत् ॥

आतुराणां तु सत्र्यासे न विधिर्नैव च क्रिया ।

प्रैषमात्रं समुच्चार्य सत्र्यासं तत्र पूरयेत् ॥

एतदत्यातुरविषयम् । आतुरस्य सत्र्यासप्रकारं वक्ष्यामि । व्याध्यादि-
भिर्बाधितो गृहस्थो वपनपूर्वकं स्नात्वा ब्राह्मणानाहूय तेषां पुरतः सङ्कल्पपूर्वक-
मातुरसत्र्यासमहं करिष्ये—इति सङ्कल्प्य ।

End :

षोडशब्राह्मणानां वा केशवादिनामभिश्चतुर्थ्यन्तैः पाद्यासनवस्त्रादीनि दत्त्वा
सर्वानेतान् प्राङ्मुखानुपवेश्य भोजयेत् । कर्ता पुरुषसूक्तं विष्णुसूक्तानि च.

No. 14242. विघ्नेश्वरगीतम्.

VIGHNĒŚVARAGĪTAM.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 105a of the MS. described under No. 2761.

Contains five stanzas only.

A song of praise on God Vighnēśvara written in all probability after
the model of Gopikāgītā.

Beginning :

विश्वदवासतं विस्तृतोरसं विमलतेजसं विद्धराक्षसम् ।

विगततामसं विष्टरौकसं विभुमुपास्महे विघ्ननायकम् ॥ १ ॥

End :

विमतमर्दनं विश्वनायकं वितरणोत्सुकं वारणाननम् ।

विचलितश्रुतिं वीतकल्मषं विभुमुपास्महे विघ्ननायकम् ॥ ५ ॥

No. 14243. कावेरीभुजङ्गः.

KĀVĒRĪBHUJAṅGAḤ.

Pages, 4. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 106a of the MS. described under No. 2761.

Contains ten stanzas only.

A small book of hymns written in the Bhujāṅgaprayāta metre in
praise and adoration of the presiding goddess of the river Cauvery.

Beginning :

कथं सङ्ख्यान्ये सुरामे सजन्ये प्रसन्ना वदान्ये भवेयुर्वदान्ये ।
 सपापस्य मन्ये गतिं त्वाम्ब मन्ये कवेरस्य धन्ये कवेरस्य कन्ये ॥ १ ॥
 कृताम्भोधिसङ्गे कृपाद्राति(न्त)रङ्गे जलाक्रान्तरङ्गे जवोद्यत्तरङ्गे ।
 नभश्चाम्बिवन्येभसम्पन्नमन्ये नमस्ते वदान्ये कवेरस्य कन्ये ॥ २ ॥

End :

भुजङ्गप्रयाते भुजङ्गप्रयाते प्रबन्धस्ववृत्ते प्रबन्धस्ववृत्ते ।
 इहानुग्रहं त्वं विधेह्यम्ब याचे नमस्ते वदान्ये कवेरस्य कन्ये ॥ १० ॥

No. 14244. सन्न्यासिसंस्कारः.

SANNYĀŚISAMSKĀRAH.

Pages, 17. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 8488.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work described under No. 3764 ante.

Beginning :

. चमनं कृत्वा पादौ प्रक्षाल्य प्राणानायम्य
 समस्तपापक्षयार्थं नं करिष्य
 इति सङ्कल्प्य, तीर्थदेशं गत्वा मृन्मयपात्रद्वयं संपाद्य उदकेन तत्पात्रद्वयं
 पूरयेत् । दक्षिणहस्तेन एकेन [पाणिना] एकं पात्रमादाय तदुदकार्थमेष अम्बु-
 जुहुयात् ।

सर्वाङ्गवपनपूर्वकं वा स्नात्वा गृहस्थश्शुद्धात्मा यतिसंस्कारमाचरेत् ।

आदौ प्रक्षाल्य तद्देहं तीर्थतोयैरकल्मषैः ।

पौरुषेण च सूक्तेन शङ्खतोयैस्स भक्तिमान् ॥

पञ्चामृतैस्स्नापयित्वा प्रणवेन ततः परम् ।

End :

केशवाय नमः—

इदं पाद्यम् । इत्यादि प्रत्येकं पादप्रक्षालनादिकं कृत्वा प्रतिब्राह्मण-
 पादोदकमेकस्मिन् पात्रे धृत्वा गृहीत्वा देवसन्निधौ निधाय तस्य तीर्थस्य
 षोडशोपचारान् कृत्वा.

No. 14245. दत्तहोमप्रयोगः.

DATTAHÔMAPRAYÔGAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 10a of the MS. described under No. 8488.

Incomplete.

Slightly different from the work described under No. 3626 ante.

Beginning :

दत्तहोम उच्यते ।

दाता निश्चलमना राज्ञे निवेद्य स्वभ्रातृबन्धून् गृहे सम्पूर्य तान्
ज्ञापयित्वा इमं विष्णुनामधेयं कुमारममुष्मै गोविन्दशर्मणे पुत्रत्वमापादयामीति
तान् सम्यग्विज्ञाप्य ततो दाता ज्योतिर्विदुक्तशुभदिवसे मातापितरौ कुमारेण
सह मङ्गलस्नतौ भूत्वा पुण्याहं वाचयित्वा मङ्गलतूर्यवाद्यघोषैः दाता गोमये-
नानुलेपितरङ्गवल्लीचादिविरचितध्वजतोरणालङ्कृतप्रदेशमाविश्य प्राणानायम्य पुत्र-
दानं करिष्ये इति सङ्कल्प्य ।

End :

कुमारमङ्क आदायाङ्गादङ्गादिति द्वाभ्यां मूर्धन्यवघ्राणं दक्षिणे कर्णे जपं च
कृत्वा स्वकीयहस्तेन पञ्चामृतप्राशनं कारयित्वा स्वपितृनुद्दिश्य [श]शतार्थं पञ्चविं-
शतिब्राह्मणान् भोजयेत् । एतदसगोत्रविषयम् । सगोत्रश्चेदसाक्षिकसम्प्रवासमा-
त्रेणैवालम् । असावैहिकामुष्मिककर्मसु औरसाद्विशिष्यते । ब्रह्मवरं दद्यात् -
वरेण धेनु.

No. 14246. दत्तमीमांसा.

DATTAMĪMĀMSĀ.

Pages, 83. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 8488.

Name of the copyist—Sāgi Sītāpati from the MS. of Rudanti
Sītārāma. Date of copying—10th day of the dark fortnight of the
Caitra month in the year Vikrama.

Complete.

Same work as that described under No. 3164 ante. By Nanda-
pāṇḍita.

No 14247. आतुरसन्न्यासविधिः.

ĀTURASANNYASAVIDHIH.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS. described under No. 8488.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 2902 ante.

The procedure herein given is stated to have been laid down by Āṅgīrasa.

Beginning :

अथाङ्गिरसप्रोक्तमातुरसङ्ख्यासविधिं व्याख्यास्यामः

.

प्रेषमात्रं तु सङ्ख्यास आतुराणां विधीयते ॥

अपां समीपं गत्वाघटे(उ)द्धृत्य पात्रे तत्तोयमादाय दक्षिणपाणिनाप्स्तु
जुहोति ।

End :

. ततो गन्धपुष्पाद्यैर्धूपदीपकैः ॥

अन्नं बहुगुणं तत्र पायसाद्यैस्सुसंस्कृतम् ।

निवेदयेद्विष्णुबुध्या साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च ॥

No. 14248. ज्यौतिषविषयः.

JYAUTIṢAVIṢAYAḤ.

Pages, 7. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 76a of the MS. described under No. 8488.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 13762 ante.

Beginning :

त्रिंशद्भाग्मात्मकं लग्नं होरा तस्यार्धमुच्यते ।

लग्नत्रिभागो द्रेक्काणं नवभागो नवांशकः ॥

द्वादशभागो द्वादशांशकः त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ।

* * * *

कन्यकामृगवृषे मृगादयो मीनकर्कश्लिककर्कटादयः ।

द्रेक्काणम्—

चरे स्वपुत्रनवप(1): स्थिरे धर्मस्वपुत्रपे(पा:). ।

पुत्रधर्मस्वपाये च द्रेक्काणाः स्युः ॥

End :

दुरितं मत्तमातङ्गं पन्नगं वसुवारणम् ।

नबभं नन्दनं चैव पादार्थं ब्रह्म पूरुषम् ॥

निधिग्रहः) कोशदश्च भावो मन्त्रैश्च लब्धकम् ।
 आकाशं गगनं शून्यं चरुमत्पदम् (?) ।
 जलापदन्तरिक्षं च व्योम(मा)र्गं दिवि पुष्करम् (?) ॥

No. 14249. देशान्तरमृतसंस्कारः.
 DEŚĀNTARAMRTASĀMSKĀBAH.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 80a of the MS. described under No. 8488, wherein this work is called Antyēṣṭiprayōga in the list of other works.

Incomplete.

On the procedure for the performance of the funeral ceremonies by a person in relation to his father who died in a distant country or place wherein the son could not be present at or immediately after death.

Beginning :

देशान्तरे पित्रोर्मृतिं श्रुत्वा रुदि(त्वा) स्नात्वा आर्द्रवस्त्रः ब्रह्मदण्डं गृहीत्वा
 समस्तसम्पत्—पङ्कजम् । पितुर्गोत्रस्य शर्मणो देवस्य पुण्यलोकावाप्त्यर्थं
 शरीरशुद्ध्यर्थं केशवपनं कारयितुमनुज्ञा दीयताम् । प्राणानायम्य सङ्कल्प्य तिथौ

* * * * *
 पितुर्गोत्रस्य शर्मणो देवस्य तृष्णोपशमनार्थं श्रवणदिने तिलोदकाञ्जलिप्रदानं
 कर्तुमनुज्ञा दीयताम् । ब्रह्मदण्डे दत्त्वा प्राणानायम्य
 सङ्कल्प्य तिथौ पितुर्गोत्रस्य शर्मणो देवस्य अस्मिन् श्रवणेऽहनि तिलोदकाञ्जलि-
 प्रदानं करिष्ये ।

End :

इहलोकं परित्यज्य . . . यन्मे मातेत्यादि । वर्तमाने तिथौ पितुर्गोत्रस्य
 शर्मणो देवस्य श्रवणदिनादारभ्य एकादशेऽहनि तत्पितृ.

No. 14250. शिवगद्यम्.
 ŚIVAGADYAM.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 83a of the MS. described under No. 8488, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Wants the beginning and the end.

Prose passages in praise of God Śiva.

Beginning :

हर हर श्रीमन्महोदेव देवेश्वर सामगानप्रिय
 श्रीमन्महामेरुसमदृष्टिप्रदायक सकलजीवद सच्चिदा-
 नन्दस्वरूप सगुणनिर्गुणस्वरूप संसारविदूर भव भर्ग भवभञ्जन मृत्युञ्जय भव-
 विनाशन ।

End :

ईशा(न) पशुपते उमामहेश्वर भवबन्धविमोचन

No. 14251. कर्ममध्यसूतकादिविषयः.

KARMAMADHYASŪTAKĀDIVIṢAYAḤ.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 81a of the MS. described under No. 8488, wherein this work was omitted to be included in the list of other works.

Wants the beginning and the end.

Deals with the procedure when pollution affects persons who have undergone the necessary initiation for the performance of certain religious acts.

Beginning :

अथ विवाहादिषु सूतकनिवृत्तिः
 प्रारम्भे सूतकं न स्यादनारम्भे तु सूतकम् ।
 प्रारम्भाद्धूर्ध्वमाशौचे विवाहः कार्य एव हि ॥
 (कर्मा)दौ पूजने चैव प्रारम्भे नास्ति सूतकम् ।

वृद्धशौनकः—

कर्मणि क्रियमाणे तु मध्ये चेत्सूतकं यदि ।
 यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावन्नामोति सूतकम् ॥

End :

सङ्ग्रहकारः—

ना(न्दी)मुखे कर्मणि सम्प्रवृत्ते पितुर्यतो जीवति यस्य पुंसः ।
 येष्वेव कुर्यात्स्वपिता स्वयं च तेष्वेव कुर्यादिति शास्त्रसिद्धम् ॥
 नान्दीश्राद्धं पिता कुर्यात् आये पाणिग्रहे बुधः ।
 अत ऊर्ध्वं मुन कुर्यादेभ्य एव ददात्यसौ ॥ इति

No. 14252. धर्ममृतम्.

DHARMĀMṚTAM.

Substance, (Śrītāla) palm-leaf. Size, $10\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 156. Lines, 7 on a page. Character, Kanarese. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Contains one to nine Adhyāyas dealing with the following subjects:—

- | | |
|---------------------------------|---------------------------------|
| १. धर्मस्वरूपनिरूपणम्. | ९. पिण्डशुद्धिविधानम्. |
| २. सम्यक्त्वोत्पादनादिनिरूपणम्. | ६. मार्गमहोद्योगवर्णनम्. |
| ३. ज्ञानाराधनाधिगमनिरूपणम्. | ७. तपस्याराधनादिविधानम्. |
| ४. सम्यक्चारित्रनिरूपणम्. | ८. आवश्यकनिर्यत्ताभिधानम्. |
| | ९. नित्यनैमित्तिकक्रियाभिधानम्. |

A treatise on Jaina Dharmaśāstra relating to ascetics. The subjects dealt with herein are apparent from the names of the Adhyāyas given above. By Āśadhara.

Beginning:

हेतुद्वैतबलादुदीर्णमुदृशः सर्वसहास्सर्वशः

त्यक्त्वा सङ्गमजस्रसुश्रुतपराः संयम्य साक्षं मनः ।

ध्यात्वा स्वे शमिनः स्वयं स्वममलं निर्माल्यकर्माखिलं

ये शर्म प्रगुणैश्चकासति गुणैस्ते भान्तु सिद्धा मयि ॥

श्रेयोमार्गानभिज्ञानिह भवगहने जाज्वलद्दुःखदाव-

स्पन्दे चङ्क्रम्यमाणानतिचकितमिमानुद्धरेयं वराकान् ।

इत्यारोहस्वरानुग्रहरसविलसद्भावनोपात्तपुण्य-

प्रक्रान्तैरेव वाक्यैः शिवपदमुचिताच्छास्ति योऽर्हन् स नोऽव्यात् ॥

सूत्रग्रदो(थो)गणद(घ)रानभिन्नदशपूर्विणः ।

प्रत्येकबुद्धानधेव(ह)श्रुतकेवलिनस्तथा ॥

ग्रन्थार्थतो गुरुपरम्परया यथाव-

च्छ्रुत्वावदा(धार्)यं भवभीरुतया विनेयान् ।

उद्गाहयन्त्युभयनीतिबलेन सूत्रं

रत्नत्रयप्रणयिनो गणिनस्तुमस्तान् ॥

धर्मं केऽपि विदन्ति तत्र धुनुते सन्देहमन्ये परे

तद्भ्रान्तेरपयन्ति सुष्ठु तमुशन्त्यन्येऽनुतिष्ठन्ति वा ।

श्रोतारो यदनुग्रहादहरहर्वक्ता तु रुन्धन्नघं
 विष्वङ्निर्जरयंश्च नन्दति शुभैस्सा नन्दताद्देशना ॥
 अथ धर्माभूतं पद्यद्विसहस्रं दिशाम्यहम् ।
 निर्दुःखं सुखमिच्छन्तो भव्याः शृणुत धीधनाः ॥
 परानुग्रहबुद्धीनां महिमा कोऽप्यहो महान् ।
 येन दुर्जनवाग्वज्रः पतन्नेव निहन्यते ॥
 सुप्रापाः स्तनयितवः शरदि ते साटोपमुत्थाय ये
 प्रत्याशं प्रसृताश्चलप्रवृत्तयो गर्जन्यमन्दं मुषा ।
 ये प्रागब्धिचितां व(ज)र्लद्धिमुदकैर्ब्रीहीन्नयन्तो नवान्
 क्षेत्राणि प्रण(य)न्त्यलं जनयितुं ते दुर्लभास्त(स्स)द्वनाः ॥

* * * *

Colophon :

इत्याशाधरविरचिते धर्माभूतनाम्न्यनगारधर्मे धर्मस्वरूपनिरूपणं नाम प्रथ-
मोऽध्यायः ॥

End :

नित्या नैमित्तिकीश्चेत्यवितथकृतिकर्माङ्गबाह्यश्रुतोक्ता
 भक्त्या युक्ते क्रिया यो यतिरथ परमश्रावणस्यैव शक्या ।
 स श्रेयःपक्विमाग्रत्रिप(द)शनरमुखस्वादुयोगोज्झिताङ्गो
 भव्यः प्रक्षीणकर्मा व्रजति कतिपयैर्जन्मभिर्जन्मपारम् ॥
 इदं सुरुचयो जिनप्रवचना(र्णवा)दुद्धृतं
 सदा य उपयुज्यते श्रवणधर्मसाराभूतम् ।
 शिवास्पदमुपासितक्रमयमाः शिवाशापरैः
 समाधिविधुतांहसः कतिपयैर्भवैर्यान्ति ते ॥

Colophon :

इत्याशाधरविरचिते धर्माभूतनाम्न्यनगारधर्मे नित्यनैमित्तिकक्रियाभिधानं
नाम नवमोऽध्यायः ॥

इत्याशाधरयत्याचारस्समाप्तः ॥

No. 14253. जिनसंहितासङ्ग्रहः.
JINASAMHITĀSANGRAHAH.

Substance, (Śrītāla) palm-leaf. Size, 15×1½ inches. Pages, 156. Lines, 9
on a page. Character, Kanarese. Condition, much injured. Appearance,
ancient, old.

Contains the Paricchēdas 5 to 40, of which the fifth wants the beginning.

Same work as that described under R. No. 1366 of the Triennial Catalogue of MSS., Vol. II, Part I-B, but without the Tamil meaning. The topics dealt with in the Paricchēdas 21 to 40 are given below :—

| | |
|------------------------|----------------------------|
| २१. भूपरिग्रहविधिः. | ३१. मूर्धेष्टकाविधिः. |
| २२. दिक्परिच्छेदविधिः. | ३२. जिनधामविधिः. |
| २३. पदन्यासविधिः. | ३३. विमानाङ्गलक्षणसंविधिः. |
| २४. वास्तुदेवबलिः. | ३४. शालादिसंविधिः. |
| २५. मानोपकरणम्. | ३५. दारुसङ्ग्रहणम्. |
| २६. ग्रामलक्षणकथनम्. | ३६. सिंहासनलक्षणम्. |
| २७. राजधानीविधिः. | ३७. शूलस्थापनविधिः. |
| २८. गृहलक्षणविधिः. | ३८. मृदालेपविधिः. |
| २९. प्रथमेष्टकाविधिः. | ३९. प्रतिमालक्षणम्. |
| ३०. गर्भन्यासविधिः. | ४०. नयनोन्मीलनविधिः. |

End :

आचार्यः शिल्पिनो दद्यादवशिष्टांशमिद्धधीः ॥

नेत्रक्षेत्रे मण्डलं पञ्चदास्या जाड्यं पक्षः स्यात्परं वर्त्मनाम् ।

अन्य कृष्णमन्यन्मध्ये दृष्टिर्मण्डलं पञ्चमं स्यात् ॥

Colophon :

इत्यार्षे—सङ्ग्रहे नयनोन्मीलनविधिर्नाम चत्वारिंशः परिच्छेदः ॥

अथावनीन्द्र वक्ष्यामि शृणु ।

No. 14254. प्रक्रियाकौमुदीव्याख्या.
PRAKRIYĀKAUMUDĪVYĀKHYĀ.

Pages, 8. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 107a of the MS. described under No. 1332.

Wants the beginning and the end in the Śabdādhikāra.

Same work as that described under No. 1349 ante.

Beginning :

कीदृक् प्रत्यय इति । शसः शकार औटष्टकारस्य चत्वेनासन्दिग्धोच्चार-
णार्थस्सः । इतरथा हि औडसीत्युक्ते टस्येदंग्रहणं डस्य वेति सन्देहः स्यात् ।

*

*

*

*

तत्रेदं वैयाकरणसिद्धान्तरहस्यम् । इदं तावत्केषांचिन्मतम्—स्वार्थद्रव्य-
लिङ्गसङ्ख्याकर्माद्यात्मकं पञ्चकं प्रातिपदिकार्थं इति । अन्येषां तु स्वार्थद्रव्य-
लिङ्गात्मकः त्रिक इति । तत्र स्वार्थो नाम विशेषणं, तच्च कदाचित्स्वरूपं, जा-
तिर्गुणो द्रव्यं वा स्यात् ।

End :

अथो अत्रास्मै इत्यत्रान्वादेशे कृते सवर्णदीर्घ एकादेशः प्राप्नोति । तत्रैक-
पदाश्रयत्वादनन्तरङ्गत्वात् पूर्वं सौभाव एव स्यात् पश्चादेकादेशः पदद्वयाश्रय-
त्वात् सर्वनाम्नः सौ इति चतुर्थ्येकवचनस्य डे इत्येतस्य सौ । ङसिङ्योः सा-
त्स्मिन् ।

No. 14255. प्राकृतसप्तशती.

PRĀKṚTASAPTAŚATĪ.

Pages, 12. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 110a of the MS. described under No. 1332.

Wants the beginning and the end.

Same work as the text described under R. No. 23 of the Triennial Catalogue of Sanskrit MSS., Vol. I, Part I-A. By Śātavāhana. This work is also called Gāthāsaptāśatī.

No. 14256. इन्द्रियलक्षणम्.

INDRIYALAKṢAṆAM.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 33a of the MS. described under No. 4154.

Incomplete.

Gives the characteristics of the organs of sense including Manas.

Beginning :

किमिदम् इन्द्रियत्वं शरीरसंयुक्तत्वे सति ज्ञानकरणत्वे सति अतीन्द्रिय-
त्वमेव । चक्षुरादेस्तावत् शरीरेषु संयोगसम्बन्धेन विद्यमानत्वात्, अयं पुरुष
इत्याकारकज्ञानं प्रत्यसाधारणकारणत्वात्, अतीन्द्रियत्वस्यापि विद्यमानत्वान्न
लक्षणसमन्वयः । न च वाच्यं ज्ञानकरणत्वे सत्यतीन्द्रियत्वमात्रोक्तौ चारिता-
र्थ्यात्किमर्थं शरीरसंयुक्तत्वमिति । तथा सति इन्द्रियार्थसन्निकर्षेऽतिव्याप्तिः
स्यात् ।

End :

तथा च पुनरपि आत्माश्रयप्रसङ्गः स्यादिति ज्ञानाकरणकज्ञानत्वरूपलौ-
किकप्रत्यक्षत्वस्य विवक्षितत्वेन विरोधाभावात् । अतः शरीरसंयुक्तत्वे सति
जन्यज्ञानत्वन्यूनवृत्तिजात्यवच्छिन्न.

No. 14257. न्यायसिद्धान्ततत्त्वम्.
NYĀYASIDDHĀNTATATTVAM.

Substance, palm-leaf. Size, $13\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 110. Lines, 7 on a
page. Character, Grantha. Condition, much injured. Appearance,
old.

Wants the beginning ; otherwise complete.

An elementary treatise dealing with the seven Tattvas or categories
of the Vaiśeṣika philosophy.

Beginning :

संयोगः तत्र न प्रत्यक्ष इति तच्चिन्त्यम् ; तादृशवाताभावे शीतप्रत्यक्षा-
भावप्रसङ्गात् । तद्व्यञ्जकाभावात् तत्र शीतान्तर मार
एव । सङ्ख्यादयस्तु पूर्ववत् बोध्याः । संयोगोऽपि तत्र न कठिनः । द्रवत्वं
सांतिद्विकं रूपादिचतुष्टय नित्यमनित्यगतमनित्यमिति ।

नित्यानित्यविभेदेन द्वेधा रूपादिपञ्चकम् ।

सङ्ख्यादयः पूर्ववच्च जले भान्ति च . . . ॥

End :

तदुत्पत्तिविनाशानां तत्कार्यकारणभावानां तत्प्रतियोगिकतदनुयोगिकभेदा-
नां च कल्पनागौरवात् ॥

Colophon :

न्यायसिद्धान्ततत्त्वं समाप्तम् ॥

No. 14258. न्यायसारः.
NYĀYASĀRAḤ.

Substance, palm-leaf. Size, $14\frac{1}{4} \times 1\frac{3}{4}$ inches. Pages, 38. Lines, 7 on a
page. Character, Kanarese. Condition, slightly injured. Appearance,
old.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Nyāyasāralaghupañcīkā
20a.

Complete.

By Bhāsarvajña. Same work as that described under No. 5086 ante.

No. 14259. न्यायसारः, सव्याख्यः.
NYĀYASĀRAḤ WITH COMMENTARY.

Pages, 134. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under the previous number.
Complete.

Same work as the above and with a commentary called Nyāyasāra-padapañjikā. By Vāsudēva, son of Kāsmīra Sūryasūri.

Beginning :

देवदेवमभिवन्द्य शाश्वतं योगिवृन्दहृदयैकमन्दिरम् ।

वासुदेवविदुषा विरच्यते न्यायसारपदपञ्चि(ञ्जि)का परा ॥

तत्रादौ तावच्चिकीर्षितग्रन्थस्य निष्प्रत्यूहपरिपूर्णायाभिमतदेवताप्रणति-
पुरस्सरं श्रोतृजनमनस्समाधानार्थं सत्प्रयोजनमभिधेयं प्रतिजानीते—

प्रणम्य शम्भुं जगतः पतिं परं समस्ततत्त्वार्थविदं स्वभावतः ।

शिशुप्रबोधाय मयाभिधास्यते प्रमाणतद्भेदतदन्यलक्षणम् ॥

शं सुखं भवत्यस्मादिति शम्भुः तम्, किंविशिष्टं जगतः त्रिलोकस्य पतिं
स्वामिनं देवेन्द्रादीनामपि जगत्पतित्वमस्तीति तद्व्यवच्छेदायाह परमिति । पर-
मुत्कृष्टमनन्यप्रेर्यम्, इन्द्रादयः पुनरीश्वरप्रेर्यत्वेन न पर इति भावः । पर-
तत्त्वं प्रधानादीनामप्यस्तीति तद्व्यवच्छेदायाह समस्ततत्त्वार्थविदमिति ।

* * * *

Colophon :

इति श्रीकाश्मीरसूर्यसूरीन्द्रसूनुवासुदेवविरचितायां न्यायसारपदपञ्चि(ञ्जि)-
कायां प्रत्यक्षपरिच्छेदः ॥

End :

परिहरति—न ईश्वरज्ञानस्य नित्यस्यार्थैस्तह संबन्धाभावप्रसङ्गादिति ।
अस्मादादिज्ञानस्याप्यतीतानामतपदार्थैस्संबन्धो न स्यात् । अतीताद्यर्थस्य कार-
(क)त्वासंभवादिति ज्ञेयम् । उपसंहरति तस्मात्कृतकत्वेऽपि नित्यसुखसंवेदनसं-
बन्धस्य विनाशकारणाभावान्नित्यत्वं स्थितम् । तत्सिद्धमेतन्नित्यसंवेद्यमानसुखेन
विशिष्टात्यन्तिकी दुःखनिवृत्तिर्मोक्ष इति ॥

Colophon :

इति काश्मीरसूर्यसूरीन्द्रसूनुश्रीवासुदेवविरचितायां न्यायसारलघुपाञ्चि(ञ्जि)-
कायामागमपरिच्छेदः समाप्तः ॥

No. 14260. ज्यौतिषविषयः.

JYAUTISAVISAYAH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page. Character, Kanarese.

Begins on fol. 22a of the MSS. described under No. 4109.

Incomplete.

A treatise on prognostication.

Beginning :

अग्रे च जीवचिन्ता च दक्षिणे घातवस्तथा ।
 पृष्ठे च वामपार्श्वे च मूलवस्तु न संशयः ॥
 अजहरिधन्वी कार्यविलम्बं मकरे कर्किणि वृश्चिकनाशम् ।
 वृषतुलकुम्भे तत्फलसिद्धिं कन्यामीने मिथुने फलशीघ्रम् ॥

End :

तुलायां घातुचिन्ता च वृश्चिके बहुचिन्तनम् ॥
 अर्थचिन्ता धनुर्लग्ने मकरे कलहचिन्तनम् ।
 कुम्भे च स्थानपूज्यश्च मीने च गमनं भवेत् ॥

No. 14261. आर्तत्राणपरायणस्तोत्रम्.

ĀRTATRĀṆAPARĀYAṆASTÔTRAM.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 23a of the MSS. described under No. 4109.

Incomplete.

Same work as that described under No. 9871 ante.

No. 14262. महासङ्कल्पः.

MAHĀSĀṆKALPAH.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 25a of the MSS. described under No. 4109.

Wants the beginning and the end.

Same work as that described under No. 3753 ante, but with slight difference.

No. 14263. तर्कभाषाव्याख्या—चेन्नभट्टटीया.

TARKABHĀṢĀVYĀKHYĀ: CENNUBHATTĪYĀ.

Pages, 13. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 4115.

Incomplete.

Same work as that described under No. 4126 ante.

This is also called Tarkabhāṣāprakāśikā. By Cennubhaṭṭa.

No. 14264. रामायणम्.
RĀMĀYAṆAM.

Pages, 14. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 62*a* of the MS. described under No. 4115.

Contains the Saṅkṣēpasarga only.

Same work as that described under No. 1806 ante.

No. 14265. आदित्यहृदयम्.
ĀDITYAHRDAYAM.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 27*a* of the MS. described under No. 4032.

Wants the beginning and the end.

Same work as that described under No. 5945 ante.

No. 14266. सूर्यशतकम्.
SŪRYAŚATAKAM.

Pages, 40. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 46*a* of the MS. described under No. 5086.

Incomplete.

Same poem as that described under R. No. 139(*b*) of the Triennial Catalogue of the Sanskrit MSS., Vol. I, Part I-A.

No. 14267. खादिरगृध्रनूत्रम्, सृत्ति.
KHĀDIRAGRHYAŚŪTRAM WITH COMMENTARY.

Pages, 104. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 131*a* of the MS. described under No. 69.

Breaks off in the second Paṭala.

Same work as that described under No. 1172 ante. By Rudraskanda.

No. 14268. न्यायशास्त्रविषयाः केचन.
NYĀYAŚĀSTRAVISAYĀḤ KECANA.

Pages, 16. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 158*a* of the MS. described under No. 4524.

Wants the beginning and the end.

A fragment setting forth some of Maṇikāra's syllogisms proving the existence of God and similar topics of later Nyāya.

Beginning :

द्वारकोपादानगोचरजन्यकृत्यजन्यानि समवेतानि जन्यानि स्वजनका-
दृष्टप्रागभ पादानगोचरापरोक्षज्ञानचिकीर्षा-
कृतिमज्जन्यानि स्वजनकादृष्टोत्तरोपादानगोचरापरोक्षज्ञानचिकीर्षा
त्वे सति प्रागभावप्रतियोगित्वात् । यत्र यत्र समवेतत्वसमानाधिकरणप्रा-
भावप्रतियोगित्वं तत्रोक्तसाध्य कहेतुमन्ति चैतानि
तस्मादुक्तसाध्यवन्ति ।

* * * *

आत्मत्वम् उक्तसम्बन्धेन संसारीतरदिकालभिन्नवृत्ति न, आत्मेतरावृ-
त्तित्वात् ।

End :

ज्ञानान्यत्वं निष्प्रकारकत्वसमाना(धिकरणा)न्योन्याभावप्रतियोगितावच्छे-
दकं ज्ञानावृत्तिधर्मत्वात् घटत्ववत् । सप्रकारकत्वं ज्ञाननिष्ठात्यन्ताभावप्रति-
योगि सप्रकारकभिन्नावृत्तित्वात् । ज्ञानत्वं सप्रकारकभिन्नवृत्ति ज्ञानत्वसमा-
नाधिकरणात्यन्ताभावाप्रतियोगित्वात् मेयत्ववत्.

No. 14269. महान्यासः.

MAHĀNYĀSAH.

Pages, 12. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 284.

Complete.

Same work as that described under Nos. 3751 and 5465 ante.

No. 14270. शनैश्चरस्तोत्रम्.

ŚANAISĀCARASTÔTRAM.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 284.

Wants the beginning.

Similar to the work described under No. 10889 ante.

Beginning :

चिन्तितानि च सर्वाणि करोत्येव न संशयः ।

शनिना सोऽभ्यनुज्ञातः स्वस्थानं गतवान् प्रभुः ॥

End :

कोणस्थः पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको यमः ।
 सौरिश्शनैश्वरो मन्दः पिप्पलादिषु संस्थितः ॥
 कालनीलाञ्जनप्रख्यनीलजीमूतसंनिभम् ।
 छायामार्ताण्डसूनुं च प्रणमामि शनैश्वरः(म्) ॥

Colophon :

इति प्रभात(स)खण्डे दशरथकृतौ शनैश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 14271. कैवल्योपनिषद्.
 KAIVALYÔPANISAD.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 18b of the MS. described under No. 284.

Wants the beginning; otherwise complete.

Same work as that described under No. 395 ante

No. 14272. गीतासारः.
 GÎTÂSÂRAH.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 574.

Complete.

Purports to give the essence of the Bhagavad-Gîtâ.

Beginning :

अस्य श्रीगीतासाराध्यायस्य अग्निर्वायुस्सूर्यश्च ऋषयः, ऋग्यजुस्सामा-
 र्यवर्णवेदानि, ब्रह्मा विष्णुर्महेश्वरश्च देवता, मोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

क्षेत्राणि ऋग्यजुस्सामार्यवर्णवेदाश्चत्वारि, पीतविदुच्छ्वेतो वर्णः, अकारो
 बीजम्, उकारश्शक्तिः, मकार इति कीलकं, प्रणवादिसम्पुटं, श्रीमहाविष्णुप्री-
 त्यर्थे गीतासारमन्त्रजपं करिष्ये । न्यासध्याने विनियोगः ।

अर्जुन उवाच—

ओंकारस्य च माहात्म्यं रूपं स्थानं परंतप ।
 तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि ब्रूहि मे पुरुषोत्तम ॥

End :

निर्मन्थ्य चतुरो वेदान्मुनिना भारतं कृतम् ॥
 भारतो दधिमन्थस्स्याद्गीतानिर्मथनस्य च ।
 सारमुद्धृत्य कृष्णेन अर्जुनस्य मुखे हुतम् ॥

सर्ववेदमयी गीता सर्वशास्त्रमयो मनुः ।
 सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्वदेवमयो हरिः ॥
 पादं वाप्यर्धपादं वा श्लोकं श्लोकार्धमेव वा ।
 नित्यं धारयते विप्रः स मोक्षमधिगच्छति ॥

Colophon :

इति गीतासारं(रः) समाप्तम्(ः) ॥

No. 14273. बालरक्षाविधिः.
 BĀLARAṢĀVIDHIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 336 of the MS. described under No. 2898.

Complete.

On the procedure for protecting a child from the consequences of sudden fright. This is laid down in the Bhāgavata and it is stated in the Harivaṁśa that Nanda adopted it towards the child Kṛṣṇa soon after the destruction of the Śakataśura (cart-demon).

Beginning :

अथ यदि प्रमादात्पुत्रकस्य भुवि पतनादिना भीतिरुपजायते तदा पार्थि-
 वरजः परिगृह्य शिशोः शिरः त्रिः प्रदक्षिणमावृत्य विष्णुस्ते पूर्वतः पात्वित्यादि-
 भ्रिमन्त्रै रक्षां कुर्यात् । एष रक्षाविधिः शकटभञ्जने नन्दगोपेन भीतोऽयं शिशु-
 रिति बुद्ध्या यदुनन्दनस्य श्रीकृष्णस्य कृत इति हरिवंशे ।

नन्दोऽङ्गमेवमारोप्य भूरेणुं परिगृह्य च ।

शिरः प्रदक्षिणं कुर्या(र्व)न्मन्त्रमेनं ज(जाप च) ॥

विष्णुस्ते पूर्वतः पातु रुद्रो रक्षतु दक्षिणे ।

ब्रह्मा च पश्चिमे पायात् चन्द्रो रक्षत्वथोत्तरम् ॥

End :

स्वप्नदृष्टा महोत्पाता वृद्धबालग्रहाश्च ये ।

सर्वे नश्यन्तु ते विष्णोर्नामग्रहणभीरवः ॥

Colophon :

इति भागवते बालरक्षाबन्धनविधिः ॥

No. 14274. नक्षत्रहोमप्रयोगः.

NAKṢATRAHŌMAPRAYŌGAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 102a of the MS. described under No. 2898.

Complete; as laid down by Śaunaka.

On the performance of a fire-offering conducted in a particular manner according to the Nakṣatra (lunar asterism) of the day on which a person is attacked with some ailment.

Beginning:

नक्षत्रहोमस्तत्रैव यस्य यस्मिन्नक्षत्रे व्याधिरुत्पद्यते तस्य तत्सर्वत(त्रोक्त)या
नक्षत्रयो(त्रे हो)मः कर्तव्यः। नक्षत्रहोमस्य साधारणधर्मेण उच्यते (विधिः)। पूर्वे-
द्युयुग्मब्राह्मणान् भोजयित्वाशिषो वाचयित्वाथापरेद्युः देवयजनोच्छेदना . . .
प्रणीताप्रोत्था(क्षा)यामग्नेः पूर्वदेशे वोपलिप्तायां तण्डुलेषु द्वादशदलपद्मं लिखित्वा
तेषु दलेषु केशवादि द्वादश नामानि चतुर्थ्यन्तानि विलिख्य कर्णिकामध्ये नक्षत्र-
देवतामावाह्य तस्य दक्षिणोत्तरयोरनुमतिमावाह्य पूर्वादिषु केशवादीन् पूजयेत् ।

End:

दूर्वाभिश्च यथासम्भववृताक्तनिलव्रीहिद्रव्येण स्विष्टकृज(यादि)प्रभृतिमेव-
मात्मकमत्यादि सर्वेषां नक्षत्राणां तत्तन्मन्त्रैर्वा नामभिर्जुहुयात् ॥

Colophon:

इति शौनकोक्तनक्षत्रहोमः ॥

No. 14275. चतुर्विंशतिमूर्तिलक्षणम्.

CATURVIMŚATIMŪRTILAKṢANAM.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 107a of the MS. described under No. 2898.

Complete.

Describes the characteristics of the 24 kinds of forms or images of God Viṣṇu.

Beginning:

अथ शङ्खचक्रपद्मगदे—केशवस्य । खड्गपद्मगदाचक्रं—नारायणस्य । ग-
दाचक्रशङ्खपद्म—माधवस्य । चक्रगदाशङ्खपद्म—गोविन्दस्य । शङ्खचक्र—वि-
ष्णोः । शङ्खचक्रपद्मगदा—मधुसूदनस्य । पद्मशङ्खचक्रगदा—त्रिविक्रम(स्य) ।

End :

चक्रपद्मगदाशङ्ख—नृसिंह(स्य) । गदापद्मचक्रशङ्ख—अच्युत(स्य) । पद्म-
गदाचक्रशङ्ख—जनार्दन(स्य) । शङ्खगदाचक्रपद्म—उपेन्द्र(स्य) । शङ्खचक्र-
पद्मगदा—हरेः । शङ्खगदापद्मचक्र—श्रीकृष्ण(स्य) ॥

Colophon :

इति चतुर्विंशतिमूर्तिलक्षणानि ॥

No. 14276. यतिसंस्कारविधिः.

YATISAMSKĀRAVIDHIH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 117b of the MS. described under No. 2898.

Complete ; as laid down by Śaunaka.

On the details of procedure for the performance of the funeral cere-
monials of a deceased ascetic or Sannyāsin.

Beginning :

शौनकोऽहं प्रवक्ष्यामि यतिसंस्कारमुत्तमम् ।
स्नात्वा गृहस्थः शुद्धात्मा यतिसंस्कारमारभेत् ॥
पञ्चा(श्चात्)प्रत्यवरोहेण शिष्यमारोप्य तं पुनः ।
ब्राह्मं रथं समारोप्य नृत्तवाद्यैश्च घोषयेत् ॥
ग्रामं प्रदक्षिणं कृत्वा ब्राह्मणैर्वेदपारगैः ।

End :

निदध्यात्प्रणवेनैव ध्यानभिक्षोः कलेबरम् ।
प्रोक्षणं स्वननं चैव सर्वं तेनैव कारयेत् ॥
अहन्येकादशे प्राप्ते पार्वणं तु सुतश्चरेत् ।
द्वादशेऽहचेव वा पुण्ये नारायणबलिर्भवेत् ॥

Colophon :

इति शौनकीये यतिसंस्कारविधिः ॥

No. 14277. शान्तिहोमः.

ŚĀNTIHŌMAH.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 142b of the MS. described under No. 2898.

Incomplete.

On details for the performance of a propitiatory fire-offering by the followers of Āśvalāyanasūtra.

Beginning :

प्रजापते हिरण्यगर्भः प्रजापतिस्त्रिष्टुप् । प्रजापते न त्वदेतानि—विं-
विं वाक्पतिं श्वेतपङ्कजस्थं प्रजापतिं(प)द्वाक्षस्तृक्कुण्डिकाभीतिदानहस्तं विचि-
न्तयेत् ।

तिलपिष्टागरुं गन्धं विष्णुकान्तिशमीदले ।
नीलवर्णमयं पुष्पं धूपं कृष्णागरुं तथा ॥
कृसरं तिलपिष्टान्नं नैवेद्यं च समर्पयेत् ।
कस्तूरी सहताम्बूलं पश्चादष्टोत्तरं जपेत् ॥
होमस्थानं समासाद्य कुर्यादग्निमुखान्तकम् ।

End :

जयादिहोमशेषं च पूर्णाहुतिमथाचरेत् ।
ततः कुम्भस्थतोयेन कारयेदभिषेचनम् ॥
यजमानस्य शिरसि शमग्रिरिति मन्त्रतः ।
नवग्रहादिमन्त्रैश्च आप इद्वा उभादृचौ ॥
* * *

सवस्त्रप्रतिमां धेनुमाचार्याय प्रदापयेत् ।
ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चाद्यथा(विभवविस्तरम्) ।

No. 14278. तीर्थश्राद्धाङ्गपिण्डदानवचनानि.

TĪRTHAŚRĀDDHĀṄGAPIṆḌADĀNAVACANĀNI.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 143a of the MS. described under No. 2898.

Wants the beginning and the end.

A collection of stanzas taken from the Vāyupurāṇa and dealing with the offering of Piṇḍa by a person to the manes of one's deceased ancestors, preceptors, relatives, friends patrons and others.

Beginning :

तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥
आ ब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातृ(तु)स्तथा वंशभवा मदीयाः ।
वंशद्वयेऽस्मिन् मम दासभूता मृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥

मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षा स्पृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतोपकाराः ।
जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि ॥

End :

पितृवंशे मृता ये च गतिर्येषां न विद्यते ।
तेषां (पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठतु) ॥
मातृवंशे मृता ये च गतिः (येषां न विद्यते) ।
तेषां (मुपतिष्ठतु) ॥
बन्धुवर्गे मृता ये च गतिः : (न विद्यते) ।
तेषां (मुपतिष्ठतु) ॥

No. 14279. रामचन्द्राष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्.

RĀMACANDRĀṢṬĪTṬARĀŚATANĀMASTĪTRAM.

Pages, 3. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 2004.

Complete.

Same work as that described under No. 8974 ante.

No. 14280. सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्.

SŪRYĀṢṬĪTṬARĀŚATANĀMASTĪTRAM.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 80b of the MS. described under No. 2005.

Incomplete.

Same work as that described under No. 9348 ante.

No. 14281. चन्द्रशेखराष्टकम्.

CANDRAŚĒKHARĀṢṬAKAM.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 82a of the MS. described under No. 2005.

Complete.

Same work as that described under R. No. 324(m) of the Triennial Catalogue of MSS., Vol. I, Part I-A, but with the addition of a stanza given below :—

इति स्तुत्वा महादेवं मार्कण्डेयो महामुनिः ।
कालमृत्युमतिक्रम्य चिरायुरभवत्तदा ॥

No. 14282. पाण्डवगीता.

PĀṆDAVAGĪTĀ.

Substance, palm-leaf. Size, $11\frac{1}{2} \times 1\frac{3}{4}$ inches. Pages, 26. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Complete.

Same work as that described under R. No. 2171(b) of the Triennial Catalogue of the Sanskrit MSS., Vol. III, Part I-A, but wants the beginning.

No. 14283. श्रुतिगीता, सव्याख्या.

ŚRUTIGĪTĀ WITH COMMENTARY.

Substance, palm-leaf. Size, $8\frac{7}{8} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 51. Lines, 10 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Almost complete.

Similar to the work described under No. 2572 ante.

Beginning :

ब्रह्मन् ब्रह्मण्यनिर्देश्ये निर्गुणे गुणवृत्तयः ।

कथं चरन्ति श्रुतयः साक्षात्सदसतः परे ॥

इति प्रश्नात्मकोऽयं श्लोकस्त्रिंशच्छङ्कायुक्त इति ज्ञेयम् । श्रीनारायणर्षिणा नारदाय, परिहारांश्च तान् सर्वान् वक्ष्येऽहं शृणुतान(न)वेत्युक्तत्वात् । शङ्काः परिहाराश्च कथमिति चेदुच्यन्ते—आदौ श्रीशुकः—

बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् प्रजानामसृजत्प्रभुः ।

मातार्थं च भवार्थं च आत्मने कल्पनाय च ॥

सैषा ह्युपनिषद्वाह्नी पूर्वेषां पूर्वजैर्धृता ।

श्रद्धया धारयेद्यस्तां क्षेमं गच्छेदकिञ्चनः ॥

इति श्लोकद्वयेन त्रिंशच्छङ्कानां परिहारानवदत् । तानेव स्वसृष्टमित्यादि-श्रुतिगीताश्लोकैर्विशदीचकार । सुखबोधार्थमादौ श्रुतिगीताश्लोकक्रमेण विवरणं कृत्वानन्तरं श्रीशुकोक्तश्लोकद्वये च परिहाराः प्रदर्श्यन्ते । गुणवृत्तयः गुणा एषां सन्तीति गुणाः तैः कल्याणगुणविशिष्टैर्मुक्तैः सत्त्वादिगुणप्रचुरैर्वर्द्धैर्वा वृत्तिः प्रकटनं यासां ताः शब्दात्मिकाः श्रुतयः ब्रह्मणि साक्षात् चेतन-सम्बन्धं विना कथं चरन्ति केन प्रकारेण स्तुवन्ति इति प्रथमा शङ्का.

स्वसृष्टमिदमापीय शयानं सह शक्तिभिः ।

तदन्ते बोधयांचकुस्तल्लिङ्गैः श्रुतयः परम् ॥

इति श्लोकेन परिहृता प्रलयावसाने चेतनजातं विना स्वयमेव मूर्तिम-
त्यस्सत्यः स्तुवन्तीति ।

End :

योऽस्योत्प्रेक्षक आदिमध्यनिधनो योऽव्यक्तजीवेश्वरो

यः सृष्ट्वेदमनुप्राविष्ट ऋषिणा चक्रे पुरश्चास्ति ताः ।

यं सम्पद्य जहात्यजामनुशयी सुप्तः कुलायं यथा

तं कैवल्यनिरस्तयोनिमभयं ध्यायेदजस्रं हरिम् ॥

Colophon :

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे द्विनव (सप्ताशी) तितमो-
ऽध्यायः ॥

अथ श्रुतिगीतासु तात्पर्यं श्रीभुको वदति य इति । यः परमात्मा अस्य
जगतः उत्प्रेक्षकः सृष्ट्यादौ चिदचिन्मेलनार्थं द्रष्टा, सङ्कल्पकः इति यावत् ।
आदिमध्यनिधनः चिदचितोस्तत्तानिर्वाहकः प्रेरकः ग्रासकश्च । यः अव्यक्त-
जीवेश्वरः प्रकृतिपुरुषनियामकः ।

उत्प्रेक्षक इत्यनेन सङ्कल्पकत्वमुक्तम् । भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा
भूतभावन इति गीतासु जयजयेति श्लोके अखिलशक्त्यवबोधकेति पदेऽपि
इत्या.

Colophon :

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे.

No. 14284. शिवगीता.

ŚIVAGĪTĀ.

Substance, palm-leaf. Size, 14½ × 1½ inches. Pages, 102. Lines, 5 on a
page. Character, Kanarese. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Complete in 16 Adhyāyas.

Same work as that described under No. 2546 ante.

No. 14285. पञ्चीकरणव्याख्या.

PAÑCĪKARAṆAVYĀKHYĀ.

Pages, 26. Lines, 5 on a page

Begins on fol. 22b of the MS. described under No. 4621, wherein this work has been mentioned as Vēdāntaviṣaya in the list of other works given therein.

Incomplete.

Same work as that described under No. 4642 ante, wherein see for the beginning.

End :

तथाहि—सम्यग्ज्ञाने क्षणभङ्गस्त्वात् तरया न सत्ता ; गगनकुसुमवद-
त्यन्तशून्याभावाच्चासत्ता येति ज्ञात्वा स्वतस्सिद्धस्वयंप्र.

No. 14286. इतिहासोत्तमम्.

ITIHĀSOTTAMAM.

Pages, 14. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 50a of the MS. described under No. 1937.

Contains from the 19th Adhyāya (wants the beginning) to the end of the 25th Adhyāya complete and the 26th incomplete.

Same work as that described under No. 1978 ante.

No. 14287. भारतवंशावलिः.

BHĀRATAVAMŚĀVALIḤ.

Pages, 14. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 189a of the MS. described under No. 2087.

Wants the beginning and the end.

Gives the divine origin of some of the personages who figure in the Mahābhārata.

Beginning :

भरतौ तु सुदर्शनः ।

ब्रह्मयुक् साम्बस्कन्दश्च कुमारः काम उच्यते ।

शतावराद्रमायाश्च काम इन्द्राधमोऽल्पतः ॥

शर्वोत्तुङ्गगजौ प्राणवायुगुर्विन्द्रमध्यगः ।

तारो ब्रह्मांशयुग्दोणो वायुयुक्तोद्धवो गुरुः .

* * * * *

जाम्बवान् वायुयुग्धर्मो विदुरस्तत्याजिद्यमः ।

ब्रह्मा विष्णुश्च सुग्रीवो हरियुक् कर्ण एव च ॥

एवं द्विरूपस्तूर्यः स्यादिन्द्राविष्टाङ्गदः शशी ।

End :

गन्धर्वाश्चक्रवर्तिनः । मनुष्योत्तमपर्यन्ताः प्रीयन्तां गुरवो मम ॥

* * * * *

अन्ये च देवास्सततं प्रसन्ना हरौ सुभक्तिं मयि

No. 14288. महाभारतसङ्ग्रहः.

MAHĀBHĀRATASAṅGRAHAḤ.

Substance, palm-leaf. Size, $13\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 681. Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Complete in 18 Parvans.

Same work as that described under R. Nos. 2440 and 2699 of the Triennial Catalogue of MSS., Vol. III, Part I-B and C but with the additional stanzas in the beginning as given below. By Mahēśvara.

Beginning :

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं . . . : . शान्तये ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला निशेषजाब्ध्यापहा ॥

* * * *

अभ्रश्यामः पिङ्गजटाबद्धकलापः प्रांशुर्दण्डी कृष्णमृगत्वक्परिधानः ।

साक्षाल्लोकान् पावयमानः कविमुख्यः पाराशर्यः पर्वसु रूपं विवृणोतु ॥

पाराशर्यवचस्सरोजममलं गीतार्थगन्धोत्कटं

नानाख्यानककेसरं हरिकथासूर्याशुना बोधितम् ।

लोके सज्जनषट्पदैरहरहः पेपीयमानं मुदा

भूयाद्भारतपङ्कजं कलिमलप्रध्वंसि नः श्रेयसे ॥

No. 14289. धर्मशास्त्रम्.

DHARMAŚĀSTRAM.

Pages, 146. Lines, 6 on a page. Character, Nandināgarī.

Begins on fol. 82a of the MS. described under No. 2688.

Wants the beginning and end.

A tract on Dharma śāstra treatiṅg about Śapinḍīkaraṇa and other matters.

Some details of information of an astrological nature are also incidentally given here.

Beginning :

स्मरणात् पिण्डमेकोद्दिष्टाभिप्रायम् । अनापदि तु पृथगेव कार्यम् । अन्यथा पृथक् श्राद्धं तयोः कुर्यादिति पूर्वोक्तस्मृतिविरोधः स्यात् । एवं च पित्रोस्सङ्घात-मरणेऽनुमरणे च सपिण्डीकरणान्तं सह कुर्यात् । तदुत्तरभाविश्राद्धं सर्वं पाकै-क्येन पृथक् कुर्यात् इति निर्णयः ।

सपिण्डानां सहमरणे श्राद्धसम्पाते ऋश्यश्रुङ्गः—

भवेद्यदि सपिण्डानां युगपन्मरणं तथा ।

सम्बन्धासत्तिमालोक्य तत्क्रमात् श्राद्धमाचरेत् ॥ इति ।

End :

शातानपः—

बन्धुभिर्ज्ञातिभिर्वापि सपिण्डीकरणे कृते ।

देशान्तरस्थितानां तु पुत्राणां तु कथं भवेत् ॥

सपिण्डीकरणं कर्ता कुर्यादेकादशेऽहनि ॥ इति ॥

No. 14290. गायत्र्यक्षरध्यानम्.

GĀYATRYAKṢARADHYĀNAM.

Pages, 3. Lines, 6 on a page. Character, Telugu.

Begins on fol. 15^a of the MS. described under No. 2688.

Complete.

Same work as that described under No. 6237 ante but with the additional stanzas at the end as given below :—

प्रत्यक्षफलदा ब्रह्मविष्णुरुद्रा इति स्थितिः ॥

आग्नेयं प्रथमं मन्त्रं वायव्यं तु द्वितीयकम् ।

तृतीयं सूर्यदेवत्यं चतुर्थं वैद्युतं तथा ॥

पञ्चमं यमदेवत्यं वारुणं षष्ठमुच्यते ।

बार्हस्पत्यं सप्तमं तु पार्जन्यं त्वष्ट्रं विदुः ॥

*

*

*

*

वैष्णवं च चतुर्विंशमेवमक्षरदेवताः ।

जपकाले तु संस्मृत्य तासां सायुज्यमाप्नुयात् ॥

No. 14291. सन्ध्यावन्दनविधिः.

SANDHYĀVANDANAVIDHIH.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 159^b of the MS. described under No. 2688.

Complete.

Deals with the performance of the Sandhyāvandana or the morning, midday and the evening prayer of the twice-born.

Beginning :

अथ सन्ध्या । तत्र नारायणः—

संशोध्य दन्तानाचम्य विधिना स्नानमाचरेत् ।

प्रातर्मध्याह्नयोस्नानं वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥

यतेस्त्रिषवणस्नानं सकृत्तु ब्रह्मचारिणः ।
 सर्वे वापि सकृत्कुर्युरशक्तौ चोदकं विना ॥
 प्रातस्संक्षेपतस्नानं होमाद्यर्थं तदिष्यते ।

End :

अत्र व्यासः—

यद्रात्र्या कुरुते पापं कर्मणा मनसा गिरा ।
 तिष्ठन्वै पूर्वसन्ध्यायां प्राणायामैर्व्यपोहति ॥
 यदह्ना कुरुते पापं कर्मणा मनसा गिरा ।
 आसीनः पश्चिमां सन्ध्यां प्राणायामैर्व्यपोहति ॥
 तदा मध्याह्नसन्ध्यायामासीनस्तिष्ठनोऽपि वा ।
 गायत्र्यावाहनपूर्वमेव कर्तव्यम् ॥

No. 14292. प्रायश्चित्तविधिः.

PRĀYAŚCITTAVIDHIḤ.

Pages, 8. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 162a of the MS. described under No. 2688.

Incomplete.

On the performance of certain expiatory ceremonies prescribed in case of certain defaults, mistakes, etc.

Beginning :

यदा तूच्छिष्टान् द्विजान् रजस्वला स्पृशति तदा

.

अधोच्छिष्टे त्वहोरात्रमूर्ध्वोच्छिष्टे व्यहं क्षिपेत्

इति मार्कण्डेयोक्तं द्रष्टव्यम् ॥ एवमवकीर्णिप्रायश्चित्तप्रसङ्गात् कति-
 चिदनुपातकभूतप्रायश्चित्तान्यपि व्याख्याय प्रकृतमनुसरामः—तत्रावकीर्ण्य-
 नन्तरं सुतानाञ्चैव विक्रय इत्युक्तम्, तत्र मनुयोगीश्वरोक्तानि त्रैमासिकादीनि
 कामाकामजातिशक्त्याद्यपेक्षया पूर्ववत् व्यवस्थापनीयानि, यत्तु शङ्खवचनम्—
 देवगृहप्रतिश्रमोद्यानारामसमाप्रपातटाकपुण्यसेतुसुतविक्रयं कृत्वा तप्तकृच्छ्रं
 समाचरेदिति.

End :

यश्च वेदात्, विप्लवयति, यश्च रक्षणक्षमोऽपि तस्करव्यतिरिक्तं शरणाग-
 तमुपेक्षते, सोऽपि संवत्सरं यवोदनं भुञ्जानश्शुध्यति तत्र विप्लवश्च वेदात्.

No. 14293. ऋग्वेदमन्त्रप्रश्नभाष्यम्.

RGVĒDAMANTRAPRAŚNABHĀṢYAM.

Pages, 23. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 54a of the MS. described under No. 2702.

Complete.

Gives the meaning of the Vedic Mantras relating to the performance of household ceremonies, such as Aupāsana, Upanayana, etc., by Rg-vēdins

Beginning:

अग्निमुखमन्त्राणामर्थः कथ्यते—

.

विनियोगं ब्राह्मणं च मन्त्रस्यार्थं तथैव च ।

एकैकस्य ऋषेस्सोऽपि ॥

अर्थपरिज्ञाने फलं तदज्ञाने दोषं चाह—

मन्त्रार्थज्ञो जपन् जप्यं तथैवाध्ययनं द्विजः ।

स्वर्गलोकमवाप्नोति ॥ इति

अग्निप्रतिष्ठापने जुष्टो दमूना इति । हे अग्ने जुष्टः सर्वैः सेवितः
दमूनाः दानमनाः शान्तमना वा विद्वान्
ज्ञानवान् एवंभूतस्त्वं नः अस्माकं दुरोणे दुरोण इति गृहनाम गृहे इमं
यज्ञमुपयाहि उपगच्छ ।

End :

अहं गर्भमदधामिति । अहं होता ओषधीषु शाक्यादिषु फलार्थं
गर्भमदधां धारयामि । विश्वेषु सर्वेषु अन्येष्वपि भुवनेषु भूतजातेषु ।
अन्तर्मध्ये अहमेव गर्भं धारयामि । तथा पृथिव्यां भूम्यां प्रजाः

* * * *

यथा द्युलोके इन्द्रः प्रधानभूतः तस्य गर्भत्वेन निरूप्य तथा वायुर्दि-
ग्भ्यो भवति तेनासावासां गर्भं यथासामेते गर्भा एवं ते गर्भं दधामीति ॥

Colophon :

इति मन्त्रार्थाः ॥

No. 14294. वास्तुशान्तिहोमः.

VĀSTUŚĀNTIHÔMAḤ.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 66a of the MS. described under No. 2702.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3418 ante.

Beginning :

अथातस्सम्प्रवक्ष्यामि वास्तुहोमविधिं गुरो ।
कर्तव्यं मन्दिरेदेशे(राधीशैः) नूतनागारवेश्मनि(शाने) ।
इदानीं नवगेहस्य वास्तुपूजाविधिं शृणु ।
पुण्याहवाचनं कृत्वा आचार्यं वरयेद् द्विजम् ॥
भक्त्या तु वरयेद्भक्त्या वास्तुदेवार्चनाय च ।
दिग्विदिकपतिपूजार्थं वरयेच्चतुरो द्विजान् ॥

End :

जातवेदस इति मन्त्रेणाज्यहोमं समाचरेत् ।
अष्टोत्तरशतं हुनेत् । क्षेत्रस्य पतिनेति मन्त्रेण तिलाज्यैः कसैरपि
दिक्पालकान् जुहुयात्.

No. 14295. जातकर्मादिमन्त्रार्थः.

JĀTAKARMĀDIMANTRĀRTHAḤ.

Pages, 74. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 68a of the MS. described under No. 2702.

Incomplete.

Gives the meaning of the Vedic Mantras relating to the ceremonies from Jātakarma to Samāvartana to be performed by the Rgvēdins.

Beginning :

. . युक्तमन्त्राणामर्थः । प्र ते ददामीति । हे कुमार ते तुभ्यं मघोनां हविलक्ष्ण-
घनवतां गोघृतस्य वेदं स्तोत्रं प्रददामि देवताभिर्गुप्तो रक्षितस्त्वमायुष्मान् भूत्वा-
स्मिन् लोके शतं शरदो जीव । मेधां त इति । हे कुमार ते तुभ्यं देवः
(सविता मेधामा)दधातु । तथा सरस्वती देवी मेधामादधातु ।

End :

इति मन्त्रार्थः । ब्रह्मचार्यसीति । इदानीं ब्रह्मचार्यसि । अतः अपोऽशान
मूत्रपुरीषादौ शास्त्रविहितमाचमनं कुर्वित्यर्थः । कर्म कुरु यच्छास्त्रविहितं सन्ध्यो-
पासनादि ।

*

*

*

*

यस्तु द्वादशवर्षाणि ब्रह्मचर्यं कृत्वाधीतविद्यः स्नाति स विद्याव्रतस्नातक
इति ॥

No. 14296. धर्मशास्त्रवचनानि.

DHARMAŚĀSTRAVACANĀNI.

Pages, 34. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 105a of the MS. described under No. 2702.

Incomplete.

Deals with various subjects, such as the duration of pollutions, Sapinda relationship, the temporary postponement of marriages, etc. Quotations from the Dharmaśāstra works are cited in support.

Beginning:

नृसिंहपारिजाते अथ तेषां शुद्धिकाला उच्यन्ते ।

अग्निस्मृतौ—

पुंजन्मनि सपिण्डानां दशाहाच्छुद्धिरिष्यते ।

व्यहादेकोदकानां च एकाहं सूतकं क्वचित् ॥

स्त्रीजन्मनि सपिण्डानां सोदकानां व्यहाच्छुचिः ।

स्त्रीषु त्रिपुरुषं ज्ञेयं सपिण्डत्वं द्विजोत्तमैः ॥

सपिण्डादीनां लक्षणं तत्रैवोक्तम् ।

End:

अत्र कन्यामाता कर्मप्रारम्भात्प्राग्रजस्वला चेत् कन्यादाननिषेध उच्यते माधवीये—

प्रारम्भात्प्राग्विवाहस्य माता यदि रजस्वला ।

निवृत्तिस्तस्य कर्तव्या सहत्वश्रुतिचोदनात् ॥ इति.

No. 14297. गृह्यचन्द्रिका.

GRHYACANDRIKĀ.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 121a of the MS. described under No. 2702.

Incomplete

A treatise relating to the performance of certain household ceremonies. The portion contained here deals with Āśauca, Śrāddha and Malamāsa.

It is stated in the end that this MS. is based on the book belonging to Bangalore Nāraṇabhaṭṭa.

Beginning:

अथाशौचविषये पितृमातृमपत्नीमातृपितृव्यादिज्ञातीनां दशरात्राशौचं बहिर्दशहे मातापित्रोर्विना सुतादिज्ञातीनां मासत्रयपर्यन्तं त्रिरात्रं तदूर्ध्वं षण्मा-

सपर्यन्तमेकार्धदिनं तदूर्ध्वं नवमासपर्यन्तं दिवाश्रुतं चेद्दिवामात्रं रात्रिश्रुतं
चेद्रात्रिमात्रं तदूर्ध्वं स्नानमात्रमेतेषामेवं दशपुरुषपर्यन्तं तदूर्ध्वमन्तर्दशाहेऽपि
त्रिरात्रं बहिर्दशाहे स्नानमात्रम् ।

* * * *

गृह्यचन्द्रिकायां द्वितीयाध्यायेऽष्टादशखण्डे अथ मलमासविषये एकस्मिन्
वत्सरे द्वौ मासावेकनामा षष्टिदिनो मासः तदूर्ध्वं मलमासस्तदूर्ध्वं निजमास उत्तरे
व्रतादिदेवकार्यं कुर्यात् ।

End :

एकस्मिन् मासे मृताहेन सम्भवे चेत् पूर्वमासे कर्तव्यं लुप्तमासे त्वेकादश
इति बेङ्गलूरुग्भेदिनारणभट्ट पुस्तकरीत्या.

No. 14298. श्राद्धादिविषयवचनानि.
ŚRĀDDHĀDIVIṢAYAVAGANĀNI.

Pages, 14. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 123a of the MS. described under No. 2702.

Incomplete.

Prose passages relating to the performance of the funeral ceremonies
of a person.

Beginning :

अथ दशाहमारभ्य षोडशश्राद्धपर्यन्तं भवन्तः कुर्वन्ति कुशादान . .
. कुशान् गृहीत्वा स्नात्वा यजमानाया भर्तुरिति षोडशश्राद्धपर्यन्तं
कर्तव्यम् । प्रेतभार्य(या) पञ्चमेऽहनि स्नात्वा षोडशश्राद्धादि यथोक्तं कर्तव्यम् ।
समीपे बान्धवादिविप्रो नास्ति चेत् अन्यस्त्रिया कर्तव्यमिति केचित्पक्षः ।

* * * *

षष्टि त्रीणि शतानि पलाशवृन्तानि सम्पाद्य चत्वारिंशच्छिरसि दश
ग्रीवायां शतं बाह्वोः दशाङ्गुलीषु त्रिंशदुरसि विंशतिः जठरे

End :

द्वितीयाद्यनुमासिकानां द्वयोरेकस्मिन् काले कृत(ति)श्रेत् षट् पिण्डान् तृती
दिद्वादशपर्यन्तमेकस्मिन् काले सपिण्डीकरणं कृतं चेत्त्रिपिण्डान्.

No. 14299. आशौचदीपिका.

ĀŚAUCADĪPIKĀ.

Pages, 24. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 130a of the MS. described under No. 2702.

Incomplete.

A treatise dealing with pollutions due to the birth or death of certain relations: by Kambhālūr Nṛsimha who says in the beginning that he consulted Candrikā, Smṛtiratna. Smṛtisārasamuccaya, Smṛtisāṅgraha and other works.

Beginning:

विष्णौ(ष्णुं) समस्तगजकुम्भविदारणेशं प्रह्लादपालनपटुं भवनाशनास्थम् ।

वन्दे नृसिंहं भजतामभीष्टदं गुरुं तथाज्ञानतमोदिवाकरम् ॥

कम्भालुरुनृसिंहाख्यविदुषा विदुषां मुदे ।

आशौचदीपिकाग्रन्थः कृतो ह्यशौचशुद्धये ॥

चन्द्रिकां स्मृतिरत्नं च स्मृतिसारसमुच्चयम् ।

स्मृत्यर्थसारमालोक्य तथा च स्मृतिसङ्ग्रहम् ॥

आलोक्य षडशीर्तिं च विज्ञानेश्वरमेव च ।

हेमाद्रिं माधवीयं च अर्थसङ्ग्रहमेव च ॥

भागुरिं कौमुदीं चैव कालिदासीयमेव च ।

मेघातिथिं पारिजातमपरार्कार्णवौ तथा ॥

यथामति यथाशास्त्रं वक्ष्याम्याशौचनिर्णयम् ।

च[।]तुर्वर्णाश्रमाणां धर्मा निरूपितास्तेषु धर्मेषु शुद्धस्यैवाधिकारः ।

शुचिना कर्म कर्तव्यमिति स्मृतेः । “श्रौतं स्मार्तं तथा कर्म कर्तव्यमाधिकारिणा । शुचिना साधुभिश्शुद्धैः सम्यक्शुद्ध्यन्वितेन वा ॥” इति ब्रह्मपुराणाच्च, सा च शुद्धिर्यद्यपि पुरुषस्य स्वाभाविकी, तथापि केनचिदागन्तुकाख्येन पापविशेषेण दानादिधर्मेष्वयोग्यो भवति । स चासौ पापविशेषस्सद्यःशौचादिकालविशेषेणापनोद्यः । अत इदानीमाशौचं निर्णीयते । तत्र तावत्सपिण्डादिजनने मरणे वा यद्दानादिधर्मेष्वयोग्यत्वलक्षणं सपिण्डानां सम्भवति तदाशौचशब्देन बोद्धव्यम् । तच्चाशौचं सपिण्डादिमरणे जनने च सम्भवति । अत एव जनन-मरणयोश्चाशौचप्रापकत्वं मनुना दर्शितम्—“दन्तजातेऽनुजाते च कृतचौले च संस्थिते । अशुद्धा बान्धवास्सर्वे सूतकेऽपि तथोच्यते ॥” इति ।

End:

सपत्नीनामपि ज्ञेयं दम्यत्योश्च परस्परम् ।
सपिण्डानां त्रिरात्रं स्यादित्युवाच प्रजापतिः ॥

अस्यार्थः—

अनाहिताग्नेस्संस्कारः तत्सूतकमध्ये कृतश्चेत् तत्सूतकशेषेणैव.

No. 14300. निरुक्तपारिशिष्टम्.
NIRUKTAPARIŚIṢṬAM.

Pages, 7. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 145a of the MS. described under No. 2702.

Contains the first Parīṣiṣṭa complete, and the second incomplete.

Same work as that described under No. 1025 ante.

No. 14301. अमरकोशपदटिप्पणम्.
AMARAKŌŚAPADATIPPANAM.

Pages, 9. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 101a of the MS. described under No. 8167.

Contains a small portion in the Nāuārthavarga and the Liṅgādi-
saṅgrahavarga.

A brief commentary on some important words occurring in the
Nāmaliṅgānuśāsana.

Beginning :

ऋषिम् । समुदायः समूहः । प्रकाशे(ण्डे)च नृपे स्कन्धः समुदायसमूहयोः
इति रुद्रः । देशविशेषे । विधानं विधिः राज्ञां न । वेतनहस्त्यन्नेऽपि विधिः
रम्यं मनोहरः वार्धुषिके सज्जने च साधुः । जाया स्वभार्या, स्तुषा पुत्रादिभार्या ।
स्त्रीति स्त्रीमात्रं, वधूः नवोदा ।

End:

कान्तः सूर्येन्दुपर्यायपूर्वो(ऽयःपूर्व)कोऽपि च । सूर्य-
कान्तः अर्ककान्तः चन्द्रकान्तः इन्दुकान्तः विधुकान्तः । अयस्कान्तः लोहका-
न्तः वेदभेदः रल्लकः कम्बलविशेषः मृगभेदश्च.

No. 14302. पुत्रजननदानविशेषः.
PUTRAJANANADĀNAVISĒṢAḤ.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 13592.

Incomplete.

Deals with the nature and the religious efficacy of the gifts to be made on the occasion of the birth of a son with authoritative quotations from various works.

Beginning :

अस्मिन् पुत्रजननकाले दानविशेषा उच्यन्ते । तत्र वराहपुराणम्—यावत्कालं सुते जाते न नाडी छिद्यते नृप । चन्द्रसूर्योपरागेण तमाहुः समयं समम् ॥ हारीतेनाप्युक्तम्—जाते कुमारे पितृणामामोदात्पुण्यं [तस्मा] तदहत (स्त) स्मात् तिलपूर्णानि पात्राणि सहिरण्यानि ब्राह्मणमाहूय पितृभ्यः स्वधा कुर्यात् प्रजापतये चेति ।

* * * *

ब्रह्माण्डपुराणे—

देवाश्च पितरश्चैव पुत्रे जाते द्विजन्मनाम् ।
आयान्ति तस्मात्तदहः पुण्यं पूज्यं च सर्वदा ॥
तत्र दद्यात्सुवर्णं च मूर्तिं गां तुरगं रथम् ।
छत्रं छागं च मारुतं च शयनं चासनं गृहम् ॥

End :

श्रीधरीये वसिष्ठः—

दत्त्वा गोमूहिरण्यादि ततो लग्नं निरीक्षयेत् ॥
लग्नमेव प्रशंसन्ति ज्योतिष्शास्त्रविदो जनाः ।
अरिक्तपाणिर्देवज्ञाञ्छृणुयात्पुत्रजन्मनि ॥ इति ।

No. 14303. अधिष्ठानलक्षणम्, आन्ध्रटीकासहितम्.

ADHISTHĀNALAKṢAṆAM WITH TELUGU MEANING.

Pages, 20. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 49a of the MS. described under No. 13592.

Incomplete.

A treatise in Śilpaśāstra dealing with the construction of temples.

Beginning :

अधिष्ठानविधिं वक्ष्ये शास्त्रसङ्क्षेपतोऽधुना ।
त्रिंश(शद)दङ्गुलमारभ्य(षट्)षड[सद]ङ्गुलवर्धनात् ॥
चतुर्हस्तावस्थानं स्यात् कुटमं द्वादशात्मकम् ।
एतद्द्वादशभूम्या तमहर्मानं तु क्रमाश्रयेत् ॥

* * * *

विप्राणां चतुर्हस्तं च भूपतीनां त्रिहस्तकम् ।
 सार्धं द्विहस्तभेदं च यथा राजन्यहर्म्यते(के) ॥
 द्विहस्तं [द्विहस्तं] वैश्यानां प्रोक्तं चैकहस्तं तु सूत्रयेत् ।
 हर्म(र्म्य)तुङ्गं वश(विशां)प्रोक्तं कुर्यान्मन्मारकोदितम् ? ॥

End:

पूर्ववत्स्वलङ्कृतं तुङ्गैकांशभाधिकाम् ।
 पूर्वो(क्तं) तत्प्रदेशं तु कम्पमंशशराशकम् ? ॥
 द्वांशकं तु त्रिपटं वा तदूर्ध्वे चान्तरं भवेत् ।
 प्रतिशैवांशमंशं च दाजनं चैव कारयेत् ? ॥
 पूर्ववत्समलं कृत्वा शेषं प्रागुक्तं वर्णयेत् ।
 तैतलानां द्विजातीनामालयानां स्वरिक्रमात् ? ॥

No. 14304. मध्वाष्टकम्.

MADHVĀṢṬAKAM.

Pages, 2. Lines, 5 on a page

Begins on fol. 44a of the MS. described under No. 2038.

Complete.

Eight stanzas in praise of Madhvācārya or Ānandatīrtha, the well-known propounder of the Dvaita school of the Vēdānta.

Beginning :

अज्ञाननाशाय सती जनानां कृतावताराय वसुन्धरायाम् ।
 मध्वाभिधानाय महामहिम्ने हताघसङ्घाय नमोऽनिलाय ॥

End :

मध्वाष्टकं पुण्यतमं त्रिसन्ध्यं पठन्त्यलं भक्तियुता जना ये ।
 तेषामभीष्टं यदनन्तराय श्रीमध्वनामा गुरुमङ्गलाय ? ॥

* * * *

Colophon :

इति श्रीमध्वाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 14305. विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्.

VIṢṆUSAHASRANĀMASTÔTRAM.

Pages, 14. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 120a of the MS. described under No. 2038.

Breaks off in the Phalaśruti.

Same work as that described under No. 9008 ante, but with the additional stanzas given below :—

स्तोत्राणामुत्तमं स्तोत्रं विष्णोर्नामसहस्रकम् ।
 विष्णोर्नामसहस्राख्यं कलिकाले पठन्ति ये ॥
 (सर्वेषां) तु पुराणानां प्राप्नुवन्ति फलं नरः ।
 श्लोकेनैकेन देवर्षे सहस्राख्योद्वि(त्ति)तेन वै ॥
 पठतो यत्फलं प्रोक्तं न तत् क्रतुशतैरपि ।

No. 14306. रघुवंशः.

RAGHUVAMŚAH.

Pages, 12 Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 127a of the MS. described under No. 2038.

Contains the fourth Sarga only.

Same work as that described under No. 1163¹ ante. By Kalidāsa.

No. 14307. गरुडपञ्चमीव्रतविधिः.

GARUDAPAÑCAMĪVRATAVIDHIH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 134a of the MS. described under No. 2038.

Complete.

On the performance of a Vrata or ceremony on the 5th day of the bright fortnight of the Śrāvaṇa month conducted with the repetition of the Garuḍamantra. This Vrata is supposed to confer long life on one's brothers.

Beginning :

श्रीराजोवाच—

कैलामशिखरे रम्ये सर्वदेवनिषेविते ।

वज्रवैडूर्यमाणिक्यसूचिते हेमपीठके ॥

ईश्वर उवाच—

साधु साधु महादेवि यत्पृष्ठोऽहं तवानघे ।

ततोऽहं सम्प्रवक्ष्यामि व्रतानामुत्तमं व्रतम् ॥

मासि श्रावणिके देवि सितपक्षे च पञ्चमी ।
तत्र कुर्याद्भूतमिदं सुवासिन्या महेश्वरि ॥
दन्तधावनपूर्वं तु मङ्गलं स्नानमाचरेत् ।

End :

त्वां भ्रातृजीवनार्थाय कारयामास तद्भूतम् ।
व्रताचरणमात्रेण सजीवा भ्रातरस्तथा ॥
भ्रातृसज्जीवनं दृष्ट्वा स्वगृहं (स)मुपासती(ते) ।
यश्च(येच) कुर्वन्ति सततं द्विजाः पठनशील(लि)नः ।
यथाकामं तु सौभाग्यमाप्नुयात्तु न संशयः ॥

Colophon :

इति श्रीस्कान्दपुराणे गरुडपञ्चमीव्रतं संपूर्णम् ।

No. 14308. शिवरात्रिव्रतकल्पः.

ŚIVARĀTRIVRATAKALPAH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 134b of the MS. described under No. 2038.

Incomplete.

Similar to the work described under Nos. 8535 and 8536 ante.

Beginning :

स्नात्वा तु नित्यकर्माणि दन्तधावनपूर्वकम् ।
देवालये गृहे वापि पूजाद्रव्याणि वाग्यतः ॥
प्रक्षाल्य पादावाचम्य प्राणायामं प्रयत्नतः ।
* * * * *
माघे कृष्णचतुर्दश्यां (यावदावर्तते शिवः) ।
तावत्तस्य न भोक्ष्यामि न शयामि जगत्पते ॥
शिवरात्रिव्रतं वंदे(देव) करिष्ये भ(त)व सन्निधौ ।
निर्विघ्ने सिद्धिमायान्ति प्रसन्ने त्वयि शङ्कर ॥

End :

पिनाकिने नमः—अक्षतान् ।

बिल्वपत्रार्कधुतूरमल्लिकादीनि च प्रभो ।

शतपुष्पं गृहाणेश मम देवि ॥

पार्वत्यै नमः—पुष्पम् । अथा.

No. 14309. मङ्गलाष्टकम्.

MANGALĀṢṬAKAM.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 136a of the MS. described under No. 2038.

Complete.

Same work as that described under No. 11333 ante.

No. 14310. मिथ्यात्वभङ्गः.

MITHYĀTVABHAṅGAH.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 33a of the MS. described under No. 12159.

Wants the beginning.

A portion of the work described under No. 4797 ante.

Beginning :

अस्तु वा मिथ्यात्वं यत्किञ्चित् । तथापि मिथ्यात्वमबाध्यं बाध्यं वा ?
 आद्येऽद्वैतहानेः नहि प्रपञ्चोपाधिकं भ्रमकालनिश्चितं तन्मिथ्यात्वं निरुपाधिकभ्र-
 मकालनिश्चिताधिष्ठानं ब्रह्ममात्रं [ब्रह्ममात्रस्य] तस्य मां प्रत्यपि सिद्धत्वात् । दृश्य-
 त्वादेर्मिथ्यात्व एव व्यभिचारश्च । मिथ्यात्वस्य चादृश्यत्वेऽनुमानवैयर्थ्यं तस्य
 साध्यज्ञप्त्यर्थत्वात् । अन्ये सिद्धसाधनम् । अद्वैतश्रुतेरतत्त्वावेदकत्वं च स्यात् ।

End :

मिथ्यात्वस्य हि मिथ्यात्वे मिथ्यात्वं बाधितं भवेत् ।

सत्यत्वस्य च सत्यत्वे सत्यत्वं स्थापितं भवेत् ॥ इति ।

किं च

धर्मस्य तदतद्रूपविकल्पानुपपत्तिः ।

धर्मिणस्तद्विशिष्टत्वभङ्गो नित्यतमो भवेत् ॥

इति तल्लक्षणम् । नचात्र मिथ्यात्वस्य सत्यत्वे धर्मिणो मिथ्यात्ववैशिष्ट्य-
 भङ्ग उक्तः । किं त्वद्वैतहानिः । प्रत्युत भेदः किं भिन्न उताभिन्न इत्यादित्वदु-
 क्तिरेवाभिन्नादिरूपविशिष्टमात्रनिरासकत्वेन स्वव्याघातत्वाज्जातिः । उक्तं हि एता-
 मेव जातिमवष्टभ्य शुष्कतर्कवादिनां बौद्धचार्वाकवेदान्तिनां बालव्यामोहकहे-
 तवः कण्ठकोलहलाः ॥

Colophon :

इति सामान्यतो मिथ्यात्वभङ्गः ॥

No. 14311. दृश्यत्वहेतुभङ्गः.
DRŚYATVAHETUBHANGAḤ.

Pages, 21. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 33b of the MS. described under No. 12159.

Incomplete.

An unfavourable criticism of the view of Advaita-Vēdānta that the phenomenal nature of the world establishes its unreality.

A portion of the Nyāyāmṛta which is described under R. No. 871 of the Triennial Catalogue of Sanskrit MSS. Vol. II, Part I-A.

Beginning :

दृश्यत्वहेतूक्तिरपि स्तम्भादिप्रत्ययो मिथ्या प्रत्ययत्वात् । तथाहि यः प्रत्ययः स मृषा दृष्टः स्वभादिप्रत्ययो यथेति बौद्धोक्तयुक्तिः छर्दिमात्रम् । इयांस्तु विशेषः—बौद्धमते अप्रामाण्यस्य स्वतस्त्वात्तद्युक्तं, त्वन्मते तु प्रामाण्यस्य स्वतस्त्वात्तद्युक्तमिति । किं चेदं दृश्यत्वं दृष्टिव्याप्यत्वं वा फलव्याप्यत्वं वा, साधारणं वा, कदाचित् कथंचिच्चिद्विषयत्वं वा, स्वव्यवहारे स्वातिरेकिसंविदपेक्षानियतिर्वा, अस्वप्रकाशत्वं वा । नाद्यः—आत्मनोऽपि वेदान्तजन्यवृत्तिव्याप्यत्वात्; अन्यथा ब्रह्मपराणां वेदान्तानां ब्रह्मज्ञानार्थं श्रवणादिविधेश्च वैयर्थ्यम् ।

End :

वेदान्तानां कल्पितविशिष्टपरत्वे तच्चावेदकत्वायोगाच्च । तरति शोकमात्मविदित्यादौ मोक्षसाधनशुद्धरूपप्रमोक्तेश्च । किं च शुद्धज्ञानाभावे तदाच्छादकस्य मूलाज्ञानस्य निवृत्तिर्न स्यात् । ज्ञानस्याज्ञाननिवर्तकत्वे हि समानविषयत्वं तन्त्रम् । न च घटादिज्ञानेष्वन्याविषयत्वमेव तत्र तन्त्रम्; गौरवात् । दीपेच्छादौ स.

No. 14312. शिशुपालवधः.
ŚISUPĀLAVADHAḤ.

Pages, 18. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 44a of the MS. described under No. 12159.

Contains the Sargas eight and seven.

Same work as that described under No. 11719 ant. By Māgha.

No. 14313. पुनस्तन्धानप्रयोगः.
PUNASSANDHĀNAPRAYŌGAḤ.

Pages, 12. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 104a of the MS. described under No. 3529.

Complete.

Similar to the work described under No. 3691 ante.

Beginning :

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ प्रारिप्सितस्य कर्मणः निर्विघ्न .
 ध्यर्थमादौ श्रीसिद्धिविनायकपूजां करिष्ये । भूर्भुवादि-
 भिरावाह्य, गणानां त्वेति मन्त्रेण षोडशोपचारपूजां कुर्यात् । एवङ्गुणविशे-
 षणविशिष्टायां शुभतिथौ मम विच्छिन्नौपासनाग्नेः पुनस्सन्धानं करिष्ये इति
 त्रिरावृत्य । तदर्थमग्निप्रतिष्ठापनार्थं स्थण्डिलोल्लोखनाख्यं कर्म करिष्ये ।
 प्राचीः पूर्वमुदक्संस्थं दक्षिणारम्भमालिखेत् । अथोदीचीः पुरःसंस्थं पश्चि-
 मारम्भमालिखेत् । अङ्गिरभ्युक्ष्य ।

End :

अनाज्ञातत्रयमन्त्रजपं करिष्ये, औपासनसागुण्यार्थं दशगायत्री-
 मन्त्रजपं करिष्ये । होमान्ते यज्ञेश्वराय नमः सर्वोपचारपूजां समर्पयामि ॥

No. 14314. प्रत्याब्दिकश्राद्धप्रयोगः.

PRATYĀBDIKĀŚRĀDDHAPRAYÓGAH.

Pages, 41. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 109b of the MS. described under No. 3529, wherein
 this work has been omitted in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3706 ante.

Beginning :

समस्तसम्पत्समवाप्तिहेतवः . . . , पादपांसवः ॥

आपद्रनध्वान्तसहस्रभानवः . . . पादपांसवः ॥

* * *

स्वामिनः अस्मिन् दिवसे यजमानस्य पितुः प्रत्याब्दिकश्राद्धं कर्तुं तस्य
 योग्यतासिद्धिरस्त्विति, कालो मुख्यकालो भूत्वाधिकारसम्पदस्त्विति, द्रव्यसिद्धि-
 रस्त्विति, योग्यतासिद्धिरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तोऽनुगृह्यन्तु । पूर्वोक्तैवङ्गुणविशे-
 षणविशिष्टायां पुण्यतिथौ अमुकस्य पितुः प्रत्याब्दिकश्राद्धे अमुकस्य पितृ-
 पितामहप्रापितामहानां गोत्राणां शर्मणां वयुरुद्रादित्यरूपाणां पुरू-
 रवार्द्रवसंज्ञिकानां विश्वेषां देवानां च पार्वणविधानेनाज्ञा-
 दिद्रव्येण अद्य करिष्ये ।

End:

प्रतिष्ठितं चाभिघार्य यन्मे मातेति मन्त्रतः ।
 स्वाहा पित्रादिभिर्मन्त्रैः षड्विराज्याहुतिर्भवेत् ॥
 * उपवीतं * * *
 * मुखाहुत्यां प्रायश्चित्ते प्रदक्षिणे ।
 आवाहनं मुखान्ते स्याद्विश्वे देवास इत्युचा ॥
 गन्धादिभिर्हविशेषैः वा.

No. 14315. रामसप्तर्षिस्तोत्रम्.
 RĀMASAPTARṢISTŌTRAM.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 130a of the MS. described under No. 3529.

Complete.

Same work as that described under No. 10299 ante.

No. 14316. गजेन्द्रमोक्षः.
 GAJĒNDRAMŌKṢAḤ.

Pages, 8. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 131a and not on fol. 132a of the MS. described under No. 3529.

Incomplete.

Same work as that described under No. 2400 ante.

No. 14317. कृष्णकर्णामृतम्.
 KRṢṆAKARNĀMṚTAM.

Pages, 17. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 135a of the MS described under No. 3529, wherein this work has been given as Kṛṣṇastuti, fol. 136a.

Contains the stanzas 1—80 and again the stanzas 21—27 in the first Āśvāsa.

Same work as that described under No. 9885 ante. By Lilāsukā.

No. 14318. नामनक्षत्रादिनिरूपणम्.
 NĀMANAKṢATRĀDINIRŪPAṆAM.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 143b of the MS. described under No. 3529, wherein this has been omitted to be included in the list of other works.

Incomplete.

Same work as that described under No. 13815 ante.

No. 14319. भागवतम्.
BHĀGAVATAM.

Pages, 25. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 2539.

Contains the Adhyāyas 1 to 5 complete, but wants the beginning in the first Adhyāya.

Same work as that described under No. 2161 ante.

No. 14320. नामलिङ्गानुशासनम्.
NĀMALINGĀNUŚĀSANAM.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 27a of the MS. described under No. 2539, wherein this work has been omitted in the list of other works.

Contains the Viśeṣyanighnavarga incomplete.

Same work as that described under No. 1621 ante. By Amarasimha.

No. 14321. मध्वविजयः.
MADHVAVIJAYAH.

Pages, 150. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 2009 and not on fol. 18a as stated therein.

Complete.

Same work as that described under R. No. 479 of the Triennial Catalogue of Sanskrit MSS., Vol. I, Part 1-B. By Nārāyaṇapaṇḍita, son of Trivikramapaṇḍita.

No. 14322. अभिश्रवणमन्त्रः.
ABHIŚRAVAṆAMANTRAH.

Pages, 34. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 76a of the MS. described under No. 2009, wherein this work has been omitted to be included in the list of other works.

Wants the beginning; otherwise almost complete.

Same work as that described under Nos. 233 and 235 ante.

No. 14323. यमगीता.

YAMAGĪTĀ.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 93 of MS. described under No. 2009, wherein this work has been omitted to be mentioned in the list of other works given therein.

This forms the 20th Adhyāya of the Viṣṇudharma and contains the conversation between Yama and his servants about the greatness of the devotees of God Viṣṇu and that these devotees should not be approached by him or his servants. The name Yamagītā is not found in the work itself.

Beginning :

सूर्यपुत्र उवाच—

मृत्युर्गच्छति भूलोके वैष्णवानां(वांश्च) परित्यजेत् ।
अवैष्णवा(वं) जन्म चादि शीघ्रं त्वं कथय प्रभो ॥

दूत उवाच—

किं रूपं वैष्णवानां चावैष्णवव्यञ्जनं (कथम्) ।
तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥

यम उवाच—

पतिव्रता गृहे यस्य सत्यवादी सदा नरः ।
आतिथ्यं पूजयेन्नित्यं दृष्ट्वा चक्षुर्निमीलयेत् ॥

End :

जपतां शृण्वतां चैव यमगीताचमु(मनु)त्तमाम् ।
यमदूतेन पीडायां स्वप्ने चैव न दृश्यते ॥
डाकिनीभूतप्रेतेभ्यो भयं नास्ति कदा चन ।

Colophon :

इति विष्णुधर्मपुराणे धर्मरजयमदूतसंवादे विंशोऽध्यायः ॥

No. 14324. प्रयोगरत्नम्.

PRAYŌGARATNAM.

Pages, 364. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 2849.

Contains from the *Iṣṭiprāyaśaitta* to the end of the *Adhyayana-dharma*.

Same work as that described under No. 43, pages 19 and 125 of *M. Seshagiri Sastri's Report No. I.*

The scribe adds :

विक्रमाब्दे प्रोष्ठपदे मासे प्रतिपदि त्विदम् ।
प्रयोगरत्नं लिखितं कम्भारुर्वन्वयेन च ।
लक्ष्मीनृसिंहेन चिरं प्रीत्यै माधवमध्वयोः ॥

No. 14325. देवीमाहात्म्यम् .
DĒVĪMĀHĀTMYAM.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 126 of the MS. described under No. 5615.

Contains the 16th *Adhyāya* only.

Same work as that described under No. 2444 ante.

No. 14326. देवीस्तोत्रम् .
DĒVĪSTŌTRAM.

Page, 1. Lines, 8 on a page

Begins on fol. 136 of the MS. described under No. 5615, wherein this work has been omitted to be mentioned in the list of other works given therein.

Contains four stanzas in praise of the goddess *Dēvī* or *Pārvatī*.

Beginning :

विश्वयोनिं महाशक्तिं मारीलक्ष्मीं सनातनीम् ।
मातङ्गीं मदनापूरां वन्दे तां जगदीश्वरीम् ॥

End :

मेघस्वनीं रौद्रमुखीं मुक्तकेशीं त्रिलोचनाम् ।
भद्रकालीं महाभूतां वन्दे तां जगदीश्वरीम् ॥

No. 14327. हस्तामलकस्तोत्रम् .
HASTĀMALAKASTŌTRAM.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 73a of the MS. described under No. 3680.

Wants the beginning ; otherwise complete.

Same work as that described under No. 4779 ante. By Hastāmalaka.

These two additional stanzas are given in the end :

आत्मचैतन्यमाश्रित्य सर्वेन्द्रियमनोधियः ।
स्वकार्यार्थेषु वर्तन्ते आत्मबोधस्वरूपतः ॥
कार्योपाधिरयं जीवः कारणोपाधिरीश्वरः ।
कार्यकारणतां कृत्वा पूर्णबोधोऽवशिष्यते ॥

Colophon :

इति हस्तामलकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

No. 14328. एकोद्दिष्टप्रयोगः.

ĒKŌDDIṢṬAPRAYŌGAḤ.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 73b of the MS. described under No. 3680, wherein this work was omitted in the list of other works.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3708 ante.

Beginning :

आद्यमासिके यदि भोक्ता(न विद्यते) नदन्नं पुरुष . . . भोजनपर्याप्तं सपरिकरमादाय प्रभूतमानीय ग्रामाद्बहिः शुचौ समे देशे लौकिकामिमुपसमाधाय प्राणानायम्याद्यमासिकप्रतिनिधिहोमं करिष्ये—इति सङ्कल्प्य ।

End :

प्रेताय तिलोदकं दत्त्वा सुवेण तूष्णीमेकाहुतिं हुत्वा पुरुषसूक्तं प्रत्यृचं द्विरुक्त्वा हस्तेन समस्तमन्नं जुहोति । एवमाज्येन . . हुत्वा पुनस्तिलोदकं दत्त्वा स्नात्वा गृहमागत्य शेषं पूर्ववत् कुर्यात् ।

अयं होम आद्यमासिकस्यैव ॥

No. 14329. तिथ्यादिनिर्णयः.

TITHYADINIRNAYAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 73b of the MS. described under No. 3680, wherein this work was omitted in the list of other works.

Complete.

Determines what days are considered auspicious or inauspicious for the performance of funeral ceremonies, etc.

Beginning :

कालविधाने—

नन्दां मद्रां कलितिथिमिलापुत्रशुकार्यवारा-
न्नक्षत्रं च त्रिपदममराचार्यशुकेन्दुलग्नम् ।
त्यक्त्वा पापग्रहबलवशाच्छावकार्याणि सर्वा-
ण्याहुस्तत्स ॥

तथा वसिष्ठः—

नन्दायां भार्गवदिने चतुर्दश्यां त्रिजन्मसु ।
कुर्वतः प्रेतकार्याणि कुलक्षयकराणि च ॥
* * * * *
अपि नन्दाजयापूर्णास्तिसु मरणं यदि ।
दहनं तु तथा चैव तस्य वर्गस्य शोभनम् ॥
मभ्देन्दुसोम(सौम्य) सूर्याणां नन्दके दिवसे यदि ।
संस्कारो मरणं तस्य वर्गस्य तु शुभावहः ॥

End :

अर्वाक् त्रिपक्षे प्रेतस्य पुनर्दहनकर्मणि ।
न कालनियमो ज्ञेयो न मौढ्यं गुरुशुकयोः ॥
सपिण्डनक्रियाकालेष्वौर्ध्वदर्दहिकमाचरेत् ।
गुरुभार्गवयोर्भौद्ध्यान्न दोषस्तत्र विद्यते ॥

Colophon :

इति तिथ्यादिनिर्णयः ॥

No. 14330. दक्षिणामूर्त्यष्टकम्.

DAKṢIṆĀMURTYAṢṬAKAM.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 76b of the MS. described under No. 3680, wherein this work was omitted in the list of other works.

Incomplete.

Same work as that described under R. No. 118(b) of the Triennial Catalogue of Sanskrit MSS., Vol. I, Part I-B, but wants the first stanza.

No. 14331. ब्रह्मयज्ञप्रयोगः.
BRAHMAYAJÑAPRAYŪGAH.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 89b of the MS. described under No. 3680, wherein this work was omitted in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 3746 ante.

No. 14332. नक्षत्रनिघण्टुः.
NAKṢATRA NIGHAṆṬUḤ.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 98a of the MS. described under No. 3680, wherein this work was omitted in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 13797 ante, but with slightly different readings.

Beginning :

अश्वयुक् चाश्विनी दत्ता वाजीहयतुरङ्गमाः ।
भरणी याम्यकालौ च धर्मराजान्तको यमः ॥

End :

अजैकपात्रिपादुरि(ऋक्षः) अहिर्बुध्न्योऽतिपादपत् ।
उपान्त्यं रेवती पौष्णः अन्यवं(भं) चेति कथ्यते ॥

No. 14333. नमश्शिवाष्टकम्.
NAMAŚŚIVAṢṬAKAM.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 99a of the MS. described under No. 3680, wherein this work was omitted in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 11011 ante, but without the last stanza containing the Phalaśruti. By Vasiṣṭha.

No. 14334. श्रौतप्रयोगरत्नम्.

ŚRAUTAPRAYĪGARATNAM.

Pages, 82. Lines, 50 on a page.

Begins on fol. 76a of the MS. described under No. 2636.

Contains the following subjects :—

अग्निष्टोमकारिका.

यज्ञपुच्छकारिका.

अग्नीषोमीयकारिका.

मैत्रावरुणकर्तव्यतानिरूपणका-
रिका.

सर्वपृष्ठातोयामकारिका.

अग्निहोत्रकारिका.

अतिरात्रकारिका.

Deals with the procedure relating to the performance of the different kinds of sacrifices. By Nṛsimha, younger brother of Gōpīnātha.

Beginning :

आधानादथ पौर्णमासहविषा दार्शेन चेष्टा यजे-
 दिष्ट्या चामयणाख्ययाथ पशुना यो वैश्वदेव्यादिभिः ।
 सोमेनाथ यजेत पर्व हविषा चेष्टा यजेत
 धानविधेरनन्तरममास्ते मुख्यकालास्तयः ॥
 वसन्ते पर्वणि यथा सुत्या स्यादारभे . . था ।
 अमावास्यापदं मन्त्रमादौ सूत्रकृदब्रवीत् ॥
 शुक्लपक्षे वसन्ते नः सिद्धान्त्याह यजेदिति ।
 ऋत्विजः षोडशैतस्य होत्राद्याश्च (समी)रिताः ॥
 तेषु होता प्रशास्ताच्छावाको ग्रावस्तुदाह्वयः ।
 ब्रह्मा च ब्राह्मणाच्छंसी नेष्टाग्नित्पोतृसंज्ञकः ॥
 एते बह्वचसूत्रोक्तकर्मकर्तार ईरिताः ।
 तत्रादौ होतृकर्मात्रं वक्ष्यते च सुविस्तरम् ॥

Colophon :

गोपीनाथबुषानुजभट्टश्रीमन्नृसिंहचरितेऽस्मिन् ।
 श्रौतप्रयोगरत्ने अतिरात्रीयप्रशास्तृकर्षोक्तम् ॥

End :

अर्धर्चेनाथ यस्मै त्वं वासोदानाय शिक्षसि ।
 अयामनुग्रह इत्येतदर्धर्चं विहरेत्सुधीः ॥
 इत्यर्धर्चमुपोषेत्तु मघवन्नर्धतो बुधः ।

No. 14335. भागवततात्पर्यनिर्णयः.

BHĀGAVATATĀTPARYANIRŔAYAH.

Pages, 104. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 143a of the MS. described under No. 2188.

Contains the Skandhas one to nine and the first three Adhyāyas of the tenth Skandha.

Same work as that described under No. 4823 ante. By Ānandatīrtha.

No. 14336. आश्वलायनपूर्वप्रयोगः.

ĀŚVALĀYANAPŪRVAPRAYŪGAH.

Pages, 13. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 90a of the MS. described under No. 1160, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Contains the Jātakarma and Nāmakarāṇa only.

Slightly different from the work described under No. 8566 ante.

Beginning :

जाते कुमारे पिता सचेलं स्नात्वा नाभिच्छेदनात्पूर्वं देवर्षिपितृप्रीत्यर्थं
यथाशक्ति गोमूहिरण्यादिकं दत्त्वा लग्नं परीक्ष्य कृतप्राणायामो
देशकालावनुकीर्त्यास्य कुमारस्यायुर्वर्चोवलपुष्ट्यादिसिद्ध्यर्थं जातकर्माख्यं(कर्म)
कीरण्ये—इति सङ्कल्प्य एकस्मिन्पात्रे मधुसर्पिणीं निक्षिप्य हिरण्येनोपवृष्य
हिरण्येन किञ्चित् किञ्चिद् गृहीत्वा प्र ते ददामि मधुनो घृतस्य

* * * *

कुमारं प्राशयेत् ।

End :

नमस्ते गार्हपत्याय नमस्ते दक्षिणाग्रये ।

नम आहवनीयाय महादेव्यै(वेद्यै) नमो नमः ॥

प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवत्यध्वरेषु यत् ।

स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रु(स्मृ)तिः ॥

प्रायश्चित्तान्यशेषाणि तपःकर्मात्मकानि वै ।

यानि तेषामशेषाणां कृष्णानुस्मरणं परम् ॥

No. 14337. ब्रह्मयज्ञप्रयोगः.

BRAHMAYAJÑAPRAYŪGAH.

Pages, 9. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 97a of the MS. described under No. 1106.

Incomplete.

Slightly different from the work described under No. 2846 ante. This is intended for the Mādhvas.

Beginning :

श्रीविष्णुप्रेरणया श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं देवर्षिपितृतृष्यर्थं ब्रह्मयज्ञेन यक्ष्ये ।
ब्रह्मयज्ञपूर्वभागे(वि)नी गायत्रीं सावित्रीं सव्याहृतिमेको
पच्छोऽर्धचेशः करिष्ये—ओं भूः तत्सवितुर्वरेण्यम् ।

End :

ये चान्ये आचार्यास्ते सर्वे तृप्यन्तु तृप्यन्तु ॥ विष्णोर्नुकं वीर्याणि
प्र वोचं यः पार्थिवानि वि ममे रजांसि ।

* * * * *
भूररखावतः पुरुश्चन्द्रयोरापः.

No. 14338. पूर्वप्रयोगः.

PŪRVAPRAYŪGAH.

Pages, 28. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 101a of the MS. described under No. 1160.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3696 ante. The procedure laid down here is intended for the followers of Ānandatīrtha or Mādhvas.

Beginning :

स्वस्तिवाचनम्—

शुक्लाम्बरधरं विष्णुम् × शान्तये ॥

लक्ष्मीनारायण तद्भक्तप्रवरो हि यः ।

श्रीमदानन्दतीर्थाख्यो गुरुस्तं च नामाभ्यहम् ॥

सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वसिद्धिकरं परम् ।

सर्वजीवप्रणेतारं वन्दे विजयदं हरिम् ॥

* * * * *

प्राणानायम्य सङ्कल्प्य श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थं यजमानकुमारस्य चौ-
लोपनयनलग्नकाले आदित्यादीनां नवानां ग्रहाणां ये ये ग्रहाः शुभस्थानेषु
स्थिताः

* * * * *

शुभस्थानफलावाप्त्यर्थमद्य स्वस्तिवाचनाख्यं कर्म करिष्यमाणः नान्दी-
आह्वानाख्यं कर्म करिष्यमाणः नवग्रहमखं करिष्यमाणः पुनस्तन्धानाख्यं

करिष्यमाणः जातकर्मनामकरणान्नप्राशनचौलोपनयनाख्यं करिष्यमाणस्तदादौ शुद्ध्यर्थं वृद्ध्यर्थमभ्युदयार्थं च ब्राह्मणैस्सह स्वस्तिपुण्याहवाचनं करिष्ये ।

End:

यमाय जुह(हु)ता हविः । यमं हि(ह) यज्ञे(ज्ञो) गच्छत्यग्निदू(दू)तोऽरङ्कृतिः-
(तः) स्वाहा—शनैश्चरप्रत्यधिदेवतायै यमायेदम्.

No. 14339. प्रयोगरत्नम्.

PRAYÔGARATNAM.

Pages, 128. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 3273.

Contains up to the Sthālipākāprayōga.

Same work as that described under No. 43 on pages 19 and 125 of M. Seshagiri Sastri's Report No. 1.

No. 14340. ग्रहणजननादिशान्तिः.

GRAHAṆAJANANĀDISĀNTIḤ.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 72b of the MS. described under No. 3273.

Incomplete.

Same work as that described under No. 3297 ante, but slightly different.

Beginning and End:

ग्रहणे चन्द्रसूर्यस्य प्रसूतिर्जायते नृणाम् ।

सङ्क्रमे च तथा नृ(स्त्री)णामादौ च ऋतुदर्शनम् ॥

इत्थं सञ्जायते यस्य तस्य मृत्युर्न संशयः ।

व्याधिपीडा च दारिद्र्यं शोकं च कलहो भवेत् ॥

शान्तिं तेषां प्रवक्ष्यामि नराणां हितकाम्यया ।

यस्मिन्नक्षे विशेषेण ग्रहणं यदि जायते ? ॥

No. 14341. वृषोत्सर्जनप्रयोगः.

VRṢÔTSARJANAPRAYÔGAḤ.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 73a of the MS. described under No. 3273.

Complete.

Similar to the work described under No. 3074 ante. This is intended for the Mādhava community following the Āśvalāyana Sūtra.

Beginning :

पुण्याहं वाचयित्वा वृषोत्सर्जनं करिष्ये । आपो हि छेति सिन्धुद्वीप
 आपो गायत्रीतृचेन कया नो वामदेव इन्द्रो गायत्रीति ऋचाभिषिच्य
 स्थण्डिलोच्छेदनाद्यग्निप्रतिष्ठापनान्ते रुद्रं सोममिदं(न्द्रं) प्रधानदेवता श्वरुपायस-
 यावकद्रव्यैश्चरुशेषेण स्विष्टकृतमित्यादि स्थालीत्रयमासादयेत् ।

इन्द्रो गायत्रीति त्रिभिर्हुत्वा वृषभमलङ्कृत्य एतं युवानं परि वो ददामि
 तेन क्रीडन्तीश्वरति (त)प्रियेण । मानश्शास्तं जनुषा सुभागा रायस्पोषेण
 समिषा मदेम । शान्ता पृथिवी—विश्वतः परिपान्तु । सर्वतो ब्रजस्वेति-
 मन्त्रावृत्त्या त्रिभिरग्निं परिणयेत् । वृषभं शूलाङ्कितं कृत्वा पश्चादग्नेः
 प्राङ्मुखं कृत्वा स्वयं प्राङ्मुखः ।

End :

तत्रस्थगवामधिपतिर्भूत्वा समस्तपित्रन्तर्यामिजनार्दनप्रीत्यर्थं यथेच्छं विहर ।
 इमा रुद्रायेति

ततः स्विष्टकृतं जुहुयात् । तिलानुदकुम्भवासोहिरण्यानि दद्यात् ॥

No. 14342. प्रश्नोपनिषद्.

PRAŚNĪPANIṢAD.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 157a of the MS. described under No. 2435.

Incomplete.

Same work as that described under No. 610 ante.

No. 14343. गरुडपुराणम्.

GARUḌAPURĀṆAM.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 154a of the MS. described under No. 2111.

Contains a small portion of the 12th Adhyāya in the Brahmakāṇḍa which forms the third Aṁśa.

Same work as that described under No. 2108 ante.

Beginning :

सर्वेषामुत्तमो ज्ञेयः कलिरेव न संशयः ।

दूषणे विष्णुभक्तानां कलिरेव न संशयः ॥

संसारेऽप्यन्धतमसि सर्वदा हरिदूषकः ।

मिथ्याज्ञाने ज्ञानबुद्धिः दुःखे च सुखबुद्धिमान् ॥
 तस्मात् कलिसमो लोके शिवभक्तो न कुत्रचित् ।
 दुर्योधनस्त एकोऽपि दुःखानन्त्यस्वरूपवान् ॥
 तस्माच्छतगुणांशोना कलिभार्या तु सर्वदा ।
 अलक्ष्मीरिति विख्याता मन्धरानामिका भुवि ॥

End :

त्वयि मेऽच्छिन्नपक्ताय दयां कुरु महाप्रभो ।
 इति स्तुत्वा हरिं ब्रह्मा स्थितः प्राञ्जलिरग्रतः ॥

Colophon :

इति श्रीगरुडपुराणे तृतीयांशे (ब्रह्मकाण्डे) कृष्णगरुडसंवादे ब्रह्मस्तुतिर्नाम
 दशमो(द्वादशो)ऽध्यायः ॥

No. 1431. प्रेतसंस्कारविधिः (कारिका).

PRĒTASAMSKĀRAVIDHIḤ (KĀRIKĀ).

Pages, 9. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 45a of the MS. described under No. 2596.

A treatise explaining with authoritative quotations the procedure for the performance of funeral ceremonies.

Beginning :

प्रथमेऽहनि कर्तव्यं पित्रोर्वपनमात्मजैः ।
 दशमेऽहनि कर्तव्यं सूतके ज्ञातिवाञ्छवैः ॥

स्मृतिसङ्ग्रहे—

भार्यापुत्रकनिष्ठानां शिष्याणामपि सर्वथा ।
 संस्कर्तुर्वपनं नैव यदि कुर्याद्विनश्यति ॥

वृद्धगौतमः—

ज्येष्ठस्य चानपत्यस्य मातुलस्या(सुत)स्य च ।
 गर्भवानपि संस्कुर्यात् केशानपि च वापयेत् ॥

व्यासः—

यस्य केशाश्शिरोजाता दशमेऽहन्यवापिताः ।
 सूतकं तत्र(स्य) केशेषु लीयते नात्र संशयः ॥

वसिष्ठः—

पुरस्ताद्दहनान्ते वा कर्तुर्वपनमुच्यते ।
 दशमेऽहि पुनः कुर्यात्कनिष्ठैर्ज्ञातिभिस्सह ॥

End :

मध्यमं पिण्डमश्नीयात् यदि पुत्रार्थिनी भवेत् ।
 आयुष्मन्ते सुतं विन्धाद्यशोमेधासमन्वितम् ॥
 अक्षता गर्भिणी वन्ध्या गतरक्ता रजस्वला ।
 नाश्नीयान्मध्यमं पिण्डं विशेषाद्यभिचारिणी ॥
 पुत्रे जाते तु षण्मासं पुत्रिका चेद्वतुद्वयम् ।
 न देयं रजसः पूर्वं न देयं रजसः परम् ॥

No. 14345. दायविभागवचनानि.

DĀYAVIBHĀGAVACANĀNI.

Pages, 5. Lines, 6 on a page. Character, Nandināgarī.

Begins on fol. 123a of the MS. described under No. 2696.

Incomplete.

Deals with the division of the ancestral property, by one's lineal descendants.

Beginning :

वरदराजीये पौत्रस्य पुत्रेण समं विभागमाह याज्ञवल्क्यः—

भूर्या पितामहोपात्ता निबन्धो द्रव्यमेव वा ।

तत्र स्यात्सदृशं स्थाप्यं पितुः पुत्रस्य चोभयोः ॥

गृहस्पतिः—

गृहं क्षेत्रमृणं लेख्यं यस्य पैतामहं भवेत् ।

चिरकालं प्रापितोऽपि तस्य भागहरस्तु सः ॥

पैतामहे धने पितुः पुत्रस्य समानस्थिति । यदि पुनरेकस्य बहवः
 पुत्राः ते विषमान्पुत्रानुत्पाद्य स्थिता मृता वा तत्रेत्यं दायविभागमाह ।

End :

कात्यायनोऽपि चतुर्थार्थपरतो दायविभागनिवृत्तिमाह—रिक्थं प्रतिपादनं
 तु दत्ताशेषं विभाजयेत् ।

आ चतुर्थार्थसाम्राज्यं क्रमेणैव तु तत्सुतः ॥

प्रतिपादनशब्देन ऋणमुच्यते । पूर्वोक्तं चतुर्थं तु

काले देयं त.

*

*

*

No. 14346. ऋक्संहिता.

RKSAMHITĀ.

Substance, palm-leaf. Size, $14 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 382. Lines, 8 on a page.

Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Contains the Aṣṭakas 3, 1 and 2, the last being incomplete.

Same work as that described under No. 1 ante.

No. 14347. भूगोलम्.

BHŪGŌLAM.

Substance, palm-leaf. Size, $6\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 7. Lines, 6 on a page.

Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Jyautisagrantha 4a, Praśnacintāmaṇi (Telugu) 17a.

Complete.

Similar to the work described under No. 13464 ante.

Beginning :

वागीशाद्याः + गजाननम् ॥

बालार्ककोटिसङ्काशं बालचन्द्रकलाधरम् ।

ब्रह्मादिसुरसंसेव्यं तं नमामि गजाननम् ॥

एतच्छास्त्रं महाविष्णुर्ददौ स कृपया विधेः ।

लोकानां दीपवच्छास्त्रं प्रत्यक्षं पुण्यवर्धनम् ॥

चतुर्मुखः कश्यपाय कश्यपो भास्कराय च ।

भास्करोऽथ वसिष्ठाय तन्मूलाय प्रकाशितम् ॥

* * *

स्कन्धत्रयात्मकं शास्त्रमाद्यं सिद्धान्तसंज्ञिकम् ।

द्वितीयं जातकस्कन्धं तृतीयं संहिताद्वयम् ॥

अथ मेरुप्रशंसा कथ्यते भूलोकस्य च विस्तारः पञ्चाशत्कोटियोजनः ।

जम्बूद्वीपं च (पस्य) विस्तारं लक्षयोजनसंज्ञिकम् ।

जम्बूद्वीपं च यत्प्रोक्तं महामेरुप्रसंस्थितम् ? ॥

End :

एते मध्यमभेदेन ज्योतिःशास्त्रप्रमाणतः ।

मृच्छिलाशिखिवायुमयः भूगोलस्सर्वतोमुखः ॥

No. 14348. ज्यौतिषग्रन्थः.
JYAUTIṢAGRANTHAḥ.

Pages, 26. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 14347.

Incomplete.

Deals with certain minor matters bearing on astrology.

Beginning :

अथ वेदाङ्गत्वमस्य—

छन्दः पादौ शब्दशास्त्रं च वक्त्रं कल्पः पाणिज्यौतिषं चक्षुषीति (च) ।

शिक्षा घ्राणं श्रोत्रमुक्तं निरुक्तं वेदस्याङ्गान्याहुरेतानि षट् च ॥

* * * *

चैत्रादावुषसि स्मरन्मुररिपुं चोत्थाय चन्द्रस्वरं

वृद्धाशीरनुगृह्य निम्बकदलं प्राश्याज्यपात्रे सुखम् ।

वक्त्रं वीक्ष्य च दर्पणेन मनसा दैवज्ञमन्त्रिप्रजाः

स्वां भार्यां स्वगृहं प्रविश्य च सुखीभूयात्कमाद्भूपतिः ॥

अब्दादौ मित्रसंयुक्तो मङ्गलस्नानमाचरेत् ।

वस्त्रैर्वाभरणैर्देहमलङ्कृत्य ततः शुचिः ॥

यथाविभवसारेण भोजयेदिष्टबान्धवान् ।

वाणीं विनायकं खेटान् दैवज्ञं ब्राह्मणं गुरुन् ॥

सम्पूज्य वत्सरफलं साङ्गोपाङ्गं यथोचितम् ।

अथ पञ्चाङ्गप्रशंसा कथ्यते—अस्य समस्तकल्याणभाजनस्य श्रौतस्मार्त-
नित्यनैमित्तिककर्मानुष्ठानहेतुभूतात्मकस्य व्यावहारिकचान्द्रमानस्य साधारण-
संवत्सरस्य श्रीसूर्यसिद्धान्तोक्तप्रकारेण श्रीमदादिनारायणस्य श्रीमन्नाभिकमलो-
द्भवस्य ब्रह्मणः परमायुःप्रमाणनिरूपणम् ।

End :

सप्तवर्षाष्टवर्षाश्च प्रसूयन्ते तथा स्त्रियः ।

गोमूत्रं सर्वशो नद्यो भविष्यन्ति कलौ युगे ॥

* * * *

दाता दरिद्रः कृपणो घनाढ्यः पापी चिरायुः संस्कृती गतायुः ।

कुलीनसेव्यो ह्यकुलीनराजा कलौ युगे षड्गुणमाश्रयन्ते ॥

No. 14349. रघुवंशः.
RAGHUVAMŚAḤ.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 143a of the MS. described under No. 1343.

Contains the fourth Sarga incomplete.

Same work as that described under No. 11636 ante. By Kālidāsa.

No. 14350. सिद्धान्तकौमुदी.
SIDDHĀNTAKAUMUDĪ.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 145a of the MS. described under No. 1343.

Contains a small portion in Samāsāśrayavidhi.

Same work as that described under No. 1354 ante. By Bhaṭṭōji-dikṣita.

No. 14351. ऋग्वेदसन्ध्यावन्दनक्रमः.
RGVĒDASANDHYĀVANDANAKRAMAḤ.

Pages, 12. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 228.

Contains the Prātassandhyāvandana only.

Similar to the work described under No. 2874 ante. This is intended for the Mādhva community.

Beginning :

एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ श्रीविष्णुप्रेरणया श्रीविष्णुप्रीत्यर्थं
प्रातस्सन्ध्यामुपासिष्ये । आपो हि घ्रेति तृचस्य सूक्तस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः,
आपो देवता, गायत्री छन्दः, मार्जने विनियोगः । आपो हि द्वा मयोभुवः ।
ता न ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ॥

End :

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं रमापते ।

यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

अनेन प्रातस्सन्ध्यावन्दनेन भगवान् श्रीमद्भारतीरमणमुख्यप्राणान्तर्गत-
श्रीलक्ष्मीवेङ्कटेशः प्रीयताम्.

No. 14352. कृष्णजयन्तीव्रतार्घ्यश्लोकाः.

KṚṢṆAJAYANTĪVRATĀRGHYAŚLŌKĀḤ.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 20b of the MS. described under No. 228.

Complete.

Same work as that described under Nos. 8276 and 8277 ante.

No. 14353. नारायणोपनिषद्.
NĀRĀYANŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 228.

Complete.

Same work as that described under No. 561 ante.

No. 14354. गजेन्द्रमोक्षणम्.
GAJĒNDRAMŌKṢANAM.

Pages, 26. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 228.

Complete.

Same work as that described under No. 2400 ante.

No. 14355. धर्मप्रवृत्तिः.
DHARMAPRAVṚTTIḤ.

Pages, 44. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 36a of the MS. described under No. 228 and not on fol. 40a as stated therein.

Incomplete.

Slightly different from the work described under No. 2758 ante.

Contains the following Prakaraṇas :—

- | | |
|--------------------------|----------------------------|
| १. मौनविधिः. | ७. द्रव्यशुद्धिः. |
| २. मूत्रपुरीषोत्सर्जनम्. | ८. पवित्रविधिः. |
| ३. दन्तधावनविधिः. | ९. गोपीचन्दनाविधिः. |
| ४. वस्त्रविधिः. | १०. भस्मधारणविधिः. |
| ५. स्नानविधिः. | ११. शङ्खचक्रादिधारणनिषेधः. |
| ६. आचमनविधिः. | |

Beginning :

नारायणं नमस्कृत्य कामदां च सरस्वतीम् ।
गणनाथं गुरुं चापि धर्मसंरक्षणाय वै ॥

शौचादिकान् प्रवक्ष्यामि क्रियाश्चा(नुक्रमेण)तु ।

तिथीनामपि सर्वासां निर्णया(या)प्यसंशयात् ॥

योगेश्वरः—

यस्मिन् देशे मृगः कृष्णस्तस्मिन् धर्मान् निबोधत ।

धर्मसंरक्षणार्थाय(तस्मिन्) देशे वसेद्द्विजः ॥

उषःकाले समुत्थाय चिन्तयेदात्मनो हितम् ।

स्मृत्वा नारायणं देवं स्तोत्राण्यपि च संजपेत् ॥

अथ मौनम्—

प्रभाते मैथुने चैव प्रस्रावे दन्तधावने ।

स्नाने भोजनकाले च मौनं षट्सु विधीयते ॥

दशहस्तं परित्यज्य मूत्रं कुर्याज्जलाशये ।

शतहस्तं पुरीषे तु नदीतीरे चतुर्गुणम् ॥

End :

यतीनां ज्ञानदं प्रोक्तं वनस्थानां विरक्तितमम् ।

गृहस्थाश्रमयुक्तानां धर्मवृद्धिकरं तथा ॥

(ब्रह्मचर्या)श्रमस्थानां स्वाध्यायप्रदमेव च ।

शूद्राणां पुण्यदं प्रोक्तमन्येषां पापनाशनम् ॥

इति भस्मधारणविधिः ॥

शङ्खं चक्रं च शृङ्गं च यो मूढो धारयेत्तनौ ।

पाषण्डस्त हि विज्ञेयस्सर्वकर्मबहिष्कृतः ॥

इति चक्रशृङ्गादि(धारणनिषेधविधिः) ॥

No. 14356. आपस्तम्बापरप्रयोगः.

ĀPASTAMBĀPARAPRAYŪGAḤ.

Pages, 80. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 228 and not on fol. 57a as stated therein.

Complete.

Similar to the work described under No. 3519 ante.

Beginning :

अनाहिताग्नेर्मरणे संस्कारविधिरुच्यते । मरिष्यमाणपुरुषं दृष्ट्वा शुद्धदेशे
गोमयेनोपलिप्य कुशानास्तीर्य तत्रायं क्रमः—कर्ता प्राणानायम्य यजमानस्य
पितुः गोत्रस्य शर्मणः सुखेन प्राणोत्क्रमणसिद्धिद्वारा श्रीविष्णुलोकावाप्त्यर्थ-
मुत्क्रान्तिसंज्ञिकगोदानं करिष्ये ।

End :

इदमामं सोपस्करं सदक्षिणाकं सताम्बूलं सवस्त्रकं ऋद्धप्रपितामहप्रीति
कामयमानस्तुभ्यमहं संप्रददे न मम पिण्डवर्ज
विसृज्य स्नात्वा नूतनयज्ञोपवीतधारणं पुण्याहं कुर्यात् ।
सर्वैर्बान्धवैः ज्ञातिभिस्सह भुञ्जीया(त) ॥

इति सपिण्डीकरणविधिः ॥

No. 14357. भर्तृसापिण्ड्यप्रयोगः.

BHARTṚSĀPIṇḌYAPRAYŌGAH.

Pages, 11. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 100b of the MS. described under No. 223.

Complete.

On the details of procedure for the performance of the Sapiṇḍikarāṇa ceremony of a widow so that her Piṇḍa (the rice-offering intended for her) may be merged in her husband's Piṇḍa. This is intended for the Mādhva community.

Beginning :

कर्ता प्राणानायम्य तिथ्यादि सङ्कीर्त्य प्राचीनावीती प्रेतान्तर्यामिप्राज्ञ-
प्रीत्यर्थं प्रेताया गोत्राया मरणदिनादारम्य द्वादशेऽहनि प्रेतत्वाविमुक्तिद्वारा
वस्वादिपुण्यलोकावाप्त्यर्थं भर्तृसापिण्ड्याख्यश्राद्धं कर्म करिष्यमाण आदौ
आत्मशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तसूक्तमन्त्रपठनं करिष्ये । सहस्रशीर्षा पुरुषः ।

End :

प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य स्त्रीपिण्डयुक्तभर्तृपिण्डं तत्पित्रादिषु
योजयितुं त्रिधा विभजनं करिष्ये इति सङ्कल्प्य दर्भैः तत्पिण्डं त्रेधा कृत्वा
तत्प्रथमशकले मधुवाता इति मधु निनीयादाय ये समानास्मनसः । पितरो
यमराज्ये । तेषां लोकः स्वधा नमः यज्ञो देवेषु कल्पताम् । ये समानास्स-
मनसः जीवा जीवेषु मामकाः । तेषां . . . कल्पतामस्मिन् लोके शतं समाः ।

सङ्गच्छध्वम्—सत । समानिव —सति । तद्वर्तः—वसुरूप । तत्पित्रा वसुरु-
पेण सहैष ते पिण्डभाग इत्यादि ॥

No. 14358. सूतिकारजस्वलागर्भिणीमृतिप्रायश्चित्तविधिः.
SŪTIKĀRAJASVALĀGARBHINĪMṚTIPRĀYAŚCITTA-
VIDHIḤ.

Pages, 7. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 105a of the MS. described under No. 228.

Complete.

On the expiatory ceremonies to be performed when a woman dies within the first ten days after delivery, or when she is pregnant or when she is under pollution during the monthly course.

Beginning :

सूतिकायां मृतायां तु सूतिकामृतिप्रायश्चित्तं करिष्य इति सङ्कल्प्य
प्रथमं शुद्धजलेन तूर्णीं स्नापयित्वा धौतवासः परिधाय
मां पुनीहि विश्वत इत्यनेन सूक्तेनार्चितचतुःकलशोदकैः ब्राह्मणः स्नापयित्वा
धौतवस्त्रमाच्छाद्य ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दत्त्वा प्रायश्चित्तार्थं कृच्छ्रत्रयं कुर्यात्
ततः पैतृमेधिककर्माधिकारो भवति । रजस्वला मृताप्येवम् ।

End :

ततः छिन्नमुदरं सूत्रेण सङ्गृह्य घृतेनानुलिप्य उदरच्छेदनप्रायश्चित्तार्थं
वेदपारायणं कुर्युः । कुटुम्बिने ब्राह्मणाय तिलान् भूमि हिरण्यानि दद्यात् ।
सुवर्णहस्तादिति कर्म प्रतिपद्यते ॥

Colophon :

इति गर्भिणीमरणप्रायश्चित्तं समाप्तम् ॥

No. 14359. मृत्तिकासानविधिः.
MṚTTIKĀSNĀNAVIDHIḤ.

Pages, 15. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 109r of the MS. described under No. 228, wherein this work has been omitted to be mentioned in the list of other works given therein.

Complete.

Similar to the work described under No. 3757 ante; as laid down by Śaunaka.

Beginning :

अथातो मृत्तिकास्नानविधिं व्याख्यास्यामः—नदीतटाकेषु शुचिप्रदेशे
मृत्तिकामुद्धरेत् । बलिस्था पर्वतानामित्यभिमन्त्र्य-बलिस्था पर्वतानां खिद्रं
बिभर्षि पृथिवि । प्र या भूय प्रवत्वति महा जिनोषि माहिनि । मा वो
रिषित्वनितेति खनित्वा—मा वो रिषित्वनिता यस्यै चाहं खनामि वः ।
द्विपच्चतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनानुरम् । स्योना पृथिवीति मृत्तिकां गृहीत्वा—
स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानश्शर्म सप्रथाः । आयने ते
इति दूर्वा गृहीत्वा.

End :

स्नात्वाचम्य देवर्षिपितृनुद्दिश्य स्नानाङ्गतर्पणं कृत्वाचम्य यन्मया दुष्कृतं
तोयं शरीरमलसम्भवात् । तद्दोषपरिहारार्थं यद्दमाणं तर्पयाम्यहमिति यद्दमाणं
सन्तर्प्य ये के चास्मत्कुले जाता—वस्त्रनिष्पीडनोदकम्-इति वस्त्रं निपीज्या-
चम्य नमश्शौनकाय नमश्शौनकाय नमः परमऋषिभ्यो नमः परमऋषिभ्यः ॥

Colophon :

इति शौनकीयमृत्तिकास्नानाविधिः ॥

No. 14360. अनाहिताग्न्यन्त्येष्टिप्रयोगः.
ANĀHITĀGNYANTYĒṢṬIPRAYŌGAḤ.

Pages, 112. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 117a of the MS. described under No. 228, wherein this work has been omitted to be mentioned in the list of other works given therein.

Complete.

Similar to the work described under No. 3519 ante. This is according to the Āśvalāyana-Sūtra.

Beginning :

अथेदानीमनाहिताग्निमधिकृत्यान्त्येष्टिप्रयोगोऽभिधीयते । आसन्नमरणे
पित्रादिके पुत्रादयः स्नात्वा मरणकाले शुद्ध्यर्थमुक्तप्रकारेण प्रायश्चित्तं कुर्युः ।
सङ्कल्पमात्रं कृत्वा सूतकान्ते कुर्युः । अथ शुद्धदेशं गोमयेनोपालिप्य तिला-
न्विकीर्य दर्भानास्तीर्य तत्र महामुमूर्पु दक्षिणशिरसं शाययित्वा गङ्गोदकं
स्नापयित्वा गोपीचन्दनादीन् धारयित्वात्क्रान्तिगोदानं कुर्यात् ।

*

*

*

*

Colophon :

इत्यनाहिताग्न्यन्त्येष्टिप्रयोगे प्रथमदिनकृत्यं निरूपितम् ॥

End :

पूर्वोक्तैवङ्गुणेत्यादि पितुर्गोत्रस्य शर्मणो वसुरूपस्य प्रेतलोकात्
पितृलोकगमनसिद्ध्यर्थं पित्रादीनां शर्मणां वसुरुद्रादित्यरूपाणां पाथेय-
श्राद्धमामेनाद्य करिष्ये—इति सङ्कल्प्य सर्वं पार्वणवत्कुर्यात् । द्वितीयपक्षाश्रयणे
तु वृद्धप्रपितामहस्य स्वर्गलोकगमनार्थं तस्यैव नवश्राद्धमेकोद्दिष्टविधानेन कुर्यात् ।
अन्यत्सर्वं समानम् ॥

Colophon :

इत्यनाहिताग्न्यन्त्येष्टिप्रयोगे पाथेयश्राद्धप्रयोगस्समाप्तः ॥

No. 14361. ताम्बूलचर्वणविधिः.
TĀMBŪLACARVAṆAVIDHIH.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 172a of the MS. described under No. 228.

Incomplete.

Explains when the betel leaves and nuts are prohibited from being used, when they may be taken with advantage together with the relative quantity of them to be taken in the morning, noon and in the night.

Beginning :

सुपूगं च सुपत्रं च चूर्णेन च समन्वितम् ।
दत्त्वा तु द्विजदेवेभ्यः ताम्बूलं भक्षयेन्नरः ॥ इति
स्मृत्यर्थसारेऽपि—
ताम्बूलचर्वणं कुर्यात् भुक्त्वा रात्रौ च सर्वदा ;
अभ्यङ्गे चैव माङ्गल्ये दिवा वाप्यथ वा निशि ॥
कालभेदेन फलाद्याधिक्यम्—

प्रातःकाले फलाधिक्यं चूर्णाधिक्यं तु मध्यतः ।
पर्णाधिक्यं भवेद्रात्रौ लक्ष्मीवात् स नरो भवेत् ॥ इति ।
पूगनियमेन फल माह मार्कण्डेयः—
एकपूगं सुस्वारोग्यं द्विपूगं निष्फलं भवेत् ।
अतिश्रेष्ठं त्रिपूगं च अधिकं चैव दुष्यति ॥

End :

मृतौ चैव . . श्राद्धे मातापित्रोर्भृतेऽहनि ।
उपवासे च ताम्बूलं दिवारात्रं विवर्जयेत् ॥

पक्षश्राद्धे तथा दर्शे युगमन्वन्तरादिषु ।
 श्राद्धं निर्वर्त्य भुक्त्वा तु ताम्बूलं खादयेन्नरः ॥
 मोहादकृत्वा यः श्राद्धं ताम्बूलं यदि खादयेत् ।
 श्राद्धहन्ता भवेत्.

No. 14362. अग्निहोत्रप्रयोगः.

AGNIHÔTRAPRAYÔGAH.

Pages, 16. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 198a of the MS. described under No. 15.

Incomplete.

Slightly different from the work described under No. 1097 ante.

Beginning :

धृष्टिः मम यजमानस्य ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं प्रात-
 रग्निहोत्रहोमं तण्डुलैर्होष्यामि । धृष्टिरसि ब्रह्म यच्छ । उपवेशमादाय सुगार्ह-
 पत्यो विदहन्नरातीरुषसः श्रेयसीर्दिधातु । अग्ने सपत्न्या अपवाधमानो रायस्पोष
 मिषदूर्जमस्मासु धेहि । गार्हपत्यमभिमन्त्र्य ।

End :

उदङ्मुखः प्रत्यङ्मुखो वा सायमायतनेऽग्निं प्रतिष्ठापयति । प्राङ्मुखः
 प्रातः ॥

इति प्रणयनं समाप्तम् ॥

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पांसुरे । ओं भूर्भुव-
 स्स्वः समिधः प्रोक्ष्य

तदस्तु तुभ्यमिद्धृतं तज्जुषस्व चविष्टच । गार्हपत्यमुपसमिन्धे

No. 14363. वासवदत्तास्थपदनिर्वचनम्.

VĀSAVADATTĀSTHAPADANIRVACANAM.

Pages, 5. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 26a of the MS. described under No. 12401.

Incomplete

Gives the meaning of the words occurring in the Vāsavadattā of Subandhu with extracts of synonymous expressions from various lexicons.

Beginning :

विषयालाभदुःखित्वं चेत्ततो विकृतिः स्मृतमिति वै (जयन्ती) । भङ्गुरो
 हृदयार्तिकृदिति वै (जयन्ती) । शृङ्गारो रतिपाषाणाविनि वै (जयन्ती) । लक्षं
 व्याजे शरव्ये च धने च बहुसङ्ख्यके इति वै (जयन्ती) ।

माधमा कर्कटी प्रोक्ता तत्सुता सेगवा (स्मृता) इति हलायुधः । अरं शीघ्रे
कालकूटे शिलापुष्पे च कथ्यते। कुहूमुखं तु दर्शादौ कोकिलोत्पातयोरिति भागुरिः।

End:

पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतोहरः । इति ह(लायुधः) ।

स्वाहा देवहविर्दाने श्रीषड्बौषड्वषट् तथा ॥

तृणता तृणसङ्गे स्यात्तृणता धनुषि स्त्रियाम् ॥

इति भागुरिः.

No. 14364. मालतीमाधवव्याख्या.

MĀLATĪMĀDHAVAṆYĀKHYĀ.

Substance, palm leaf. Size, 13½ × 1½ inches. Pages, 28. Lines, 7 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Contains the Acts seven to ten complete.

Same work as that described under R. No. 2691(b) of the Triennial Catalogue of Sanskrit Manuscripts, Vol. III, Part I-C.

No. 14365. पत्रसन्देशः.

PATRASANDĒŚAH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 56a of the MS. described under No. 13426.

Complete.

A private message purporting to have been written by Raṅganāthacāyra to Śāli (Śādhu) Śēṣayya.

Beginning :

सौत्रामण्यास्समज्यायास्सौभाग्येन विजित्वरीम् ।

राजश्रीशालिशेषय्यसभां सम्प्राप्नुनामिदम् ॥

देवः श्रीमानतनुकृपया स्वेन सृष्टं प्रपञ्चं

रक्षन् स प्रत्युपकृतिषियोपप्लवेभ्यः पितेव ।

स्वेन प्रतैर्बहुलकरणैः प्रत्यहं वर्धमानं

पश्यन् पश्यन् मुदितमुदितो मोदयत्वीप्सितैर्व ॥

अत्रत्यानां सुखमविकलं तत्र भावत्सौख्यं

पत्रज्ञातं पुनरहरहर्ज्ञातुमत्युत्सुकाः स्मः ।

लब्धे काले द्रविडवचसां व्याकृतिं शिक्षमाणो

वर्ते युष्मत्प्रहितहृदयः किं तु निष्ठा दुरापा ॥

वैद्यारण्यं मलिनयजुषो भाष्यमाश्वेव सम्य-
 ग्वद्धं शृङ्खणं सपदि च मयासादितं पञ्चभागम् ।
 अन्यान् भागानपि पुनरहं प्राप्तमात्रानतन्द्रो
 यौष्माकीनं सद उपनयन्नैव जिह्रेमि तत्त्वम् ॥
 * * *
 कृष्णाचार्यः पठति न भृशं ताड्यतेऽतीव नैव
 प्रातः प्रातः प्रलघु दजुषो भागमध्येति भूयः ।
 सायं क्रीडारसपरवशः क्रीशसादृश्यमाप्नो-
 त्येवं मुक्तो गगनपणनैर्नो जहात्येव मौढ्यम् ॥

End:

श्रीदैदुष्यम्रदिमविनयप्रौढिवादानन्दकायै-
 राजन्मोत्थैरखिलहृदयोच्छासकानां प्रभूणाम् ।
 शेषय्यानां हृदयसुहृदा रङ्गनाथेन क्लृप्ता
 विज्ञप्तिस्तात् विविधसुमुदां सिद्धये वृद्धये च ॥

Foll. 566 and 57a contain the names of certain medicines in the Tamil language.

No. 14366. विष्णुस्तवः, सव्याख्यः.

VIṢṆUSTAVAI WITH COMMENTARY.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 53a of the MS. described under No. 3950.

Incomplete.

A eulogy on God Venkatesa, worshipped in Tirupati, and on God Rama. It is followed by a commentary, the author of which is not given.

Beginning:

वेङ्कटादा च (श्री)देवतादिभिरन्यः कण्ठाकाशुदाः पुमान् ।

अभङ्गुरविभूतिर्न परङ्गवतु मङ्गलम् ॥

अर्थः—वेङ्कटाचलवासः वेङ्कटेश्वरः ते मङ्गलं तरङ्गवतु । मङ्गल-
 परम्परावाप्तिं करोतु । वेङ्कटेशः कण्ठेश इत्याकाशभायां ये कामये(ते)त्यादि
 अन्तृणीमुक्तः (पर्यालोचनयाप्यतिमाहात्म्यं ज्ञायते । तत्पतेः वेङ्कटेश्वरस्य सर्वो-
 त्तमत्वं सिद्धमेव । त्वयमनवतीर्णः क(थं) परान् तारयिष्यतीति न्यायात् स्वस्यै-
 श्वर्याभावे परेषां ज्ञानममङ्गतमित्युक्तम् । अत एव श्लोके अभङ्गुरविभूतिरिति ।

End :

स श्रेयांसि बहूनि सन्दिशतु वो वीरः कृपात्मा शुचिः
यन्नेत्रान्तजरत्निमा समतनोदब्धि शराग्रांस्यतिम् ।
यद्वीक्षा विमतानुजाय सदया लङ्काधिपत्यं ददौ
यत्पादाब्जपरामजालमकरोत्पाषाणमेणीदृशम् ॥
* * * *

रघुनायकस्तावदनन्तकल्याणगुणपरिपूर्णः रामः सः श्रेयांसि सन्दिशतु
ददात्वित्याशीः ।

No. 14367. अग्निना रयिमिति मन्त्रार्थः.

AGNINĀ RAYIMITI MANTRĀRTHAII.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 54b of the MS. described under No. 3950.

Complete.

Gives the meaning in Sanskrit of a Mantra beginning with अग्निना occurring in the first Sūkta of the first Aṣṭaka in the first Maṇḍala of the R̥gvēda.

Beginning :

अग्निना रयिमभ्रवत्पोषमेव दिवे दिवे ।

यशसं वीरवत्तमम् ॥

तेनैव रयिमाम्नोति वित्तं विद्याधनात्मकम् ।

दिवसे दिवसे नित्यं पुष्टिमेव न हीनताम् ॥

यशश्च पुत्रसंयुतं वीर्यवत्तरमेव च । एतन्मन्त्रप्रतिपाद्यो भगवानस्य
यजमानस्य सर्वाभीष्टं दत्त्वा रक्षत्वित्याशीः ।

End :

दिवे दिवे दिवसे दिवसे पोषं पुष्टिं च अश्ववत् तस्य यशसं वीर-
वत्तमं कीर्तिमन्तं पराक्रमशालिनं पुत्रं च प्राप्नुव(मो)त्वित्यर्थः । एतादृशः
अग्निशब्दवाच्यः परमात्मा अस्य यजमानस्य धनकलत्रवस्तुवाहनाद्यष्टैश्वर्या-
दिकं दत्त्वा रक्षत्वित्याशीः ॥

No. 14368. न्यायसिद्धान्तमञ्जरीदीपिका—तर्कप्रकाशिका.

NYĀYASIDDHĀNTAMAÑJARIDĪPIKĀ : TARKA-
PRARĀŚIKĀ.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 56a of the MS. described under No. 3950.

Incomplete.

Same work as that described under No. 4223 ante.

No. 14369. मुक्तावलीव्याख्या.

MUKTĀVALĪVYĀKHYĀ.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 3950.

Wants the beginning and the end in the Pratyakṣakhaṇḍa.

A commentary on the Muktāvalī of Viśvanātha Pañcānana, which work has been described under No. 3939 ante.

Beginning :

पदार्थाः कतिविधा इत्याकाङ्क्षायामाह—किमितीत्युक्तम् ।

द्रव्यं गुणस्तथा कर्म सामान्यं सविशेषकम् ।

समवायस्तथाभावः पदार्थास्सप्त कीर्तिताः ॥ इति ॥

अत्र किञ्चिद्विचार्यते—यदुक्तं भवद्भिस्सप्तपदार्थै(र्था इ)ति, तत्तुच्छम्—शक्तिसादृश्यादीनामतिरिक्तपदार्थत्वस्य विद्यमानत्वात् । शक्तेरतिरिक्तपदार्थत्वं सादृश्यस्यातिरिक्तपदार्थत्वं कथमिति चेदित्थम् ; तथाहि—मण्यादिसहितेन वह्निना दाहो न जन्यते तच्छून्येन तु जन्यते । तदा मण्यादिना वह्नौ दाहानुकूल शक्तिर्नश्यति ।

End :

शब्दविशेषगुणकत्वमाकाशलक्षणम् । अहो आकाशत्वं जातिर्वा उपाधिर्वेति विशये आकाशकालदिशामेकैकव्यक्तिवृत्तित्वादाकाशत्वादिकं न जातिः; किन्तु आकाशत्वं शब्दाश्रयत्वम् । मूले “ आकाशस्य तु विज्ञेयशब्दो वैशेषिको गुणः ” इत्यत्र वैशेषिककथनं तु.

No. 14370. एकादशीनिर्णयः, कर्णाटकटीकासहितः.

EKĀDAŚĪNIRNAYAH WITH KANARESE MEANING.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 63a of the MS. described under No. 5950.

Incomplete.

Deals with the determination of the Ēkādāśī day for the purpose of observing the Vrata on that day. The work contains meaning in Kanarese.

Beginning :

व्रतानामेव सर्वेषां सौरेण (हि) विनिर्णयः ।
 दशम्यादित्रयाणां तु आर्येण (च) विनिर्णयः ॥
 आर्यमानैर्यदा नाड्यः षट्पञ्चाशत्परेऽहनि ।
 नो चेत्पूर्वैव दशमी किञ्चिन्न्यूनं परेऽहनि ॥
 वेधस्तु द्विविधः प्रोक्तः स्वरूपाच्च ध्रुवांशतः ।
 तत्राद्ये न तु सन्देहः द्वितीयस्त्रिविधस्मृतः ॥
 वेधस्तु पञ्चदशभिः दशभिः पञ्चभिः क्रमात् ।

End :

लित्तिर्विघटिका पञ्च लिप्तयो द्वादशैव तु ।
 घटिकैका समुद्दिष्टा ज्योतिश्शास्त्रप्रसिद्धितः ॥

No. 14371. रुद्राक्षधारणविधिः.

RUDRĀKṢADHĀRAṆAVIDHIḤ.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 176a of the MS. described under No. 631.

Complete.

Similar to the work described under No. 5471 ante.

Beginning :

अस्य श्रीरुद्राक्षधारणमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, रुद्रो
 देवता, सकलमन्त्रजपहोमादिसिद्ध्यर्थे रुद्राक्षधारणे विनियोगः ।

पद्मासने समासीन. भस्मस्नायी त्रिपुण्ड्रधृत् ।

तत्तत्स्थाने यथाशास्त्रं कुर्याद्रुद्राक्षधारणम् ॥

ओं नमश्शिवायेति मूलमन्त्रं समुच्चार्य ततः सदाशिवायेति मन्त्रमुच्चार्य
 शिखायामेकं रुद्राक्षं धारयेत् ।

End :

चट चट प्रचट प्रचट कह कह वम वम बन्ध बन्ध घातय घात-
 याघोरास्त्राय हुं फट् स्वाहा ॥

Colophon :

इति रुद्राक्षधारणविधिः ॥

No. 14372. श्रुतबोधः.
ŚRUTABŌDHAḤ.

Pages, 7. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 229a of the MS. described under No. 631.

Complete.

Same work as that described under No. 1800 ante.

No. 14373. नृसिंहतापिन्युपनिषद्.
NṚSĪMĤATĀPINYUPANĪṢAD.

Pages, 80. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 41a of the MS. described under No. 8041.

Incomplete in Uttaratāpinī.

Same work as that described under No. 577 ante.

Foll. 81 to 85 contain the names of certain medicines in Tamil language.

No. 14374. अष्टाङ्गहृदयव्याख्या— बालप्रबोधिनी.
AṢṬĀŅGAHṚDAYAVYĀKHYĀ : BĀLA PRABŌDHINĪ.

Substance, palm-leaf. Size, 15½ × 1½ inches. Pages, 161. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, much injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other work therein is Aṣṭāṅgabṛdayavyākhyā (Sarvāṅgasundarī) 82a.

Contains the Śārṅgasthāna only complete, but wants the beginning.

A commentary by name Bālaprabōdhinī on the Aṣṭāṅgabṛdaya of Vāgbhaṭa, which work has been described under No. 13072 ante.

Beginning :

तदध्यस्ते शरीरकेऽपि शरीरान्तरवातानां तत्तद्वस्ति
नात्र संशयः ।

बीजाभावे यथा न स्युरदुराश्च तथैव हि । कर्माभावे स्वात्मनोऽपि देहा-
भाव इति . ते । तेन स्वकर्मकेशचोदिन इत्युक्तम् ।

इदानीं प्रधानफलदायि वयसस्तलक्षणं वपुस्पतद्वर्णयितुमाह— दानेत्यादि ।
. . सर्वसत्त्वानामात्मभवनं न केवलं पूर्वोक्तं स्वं स्वहस्तत्रयमित्यादि वर्धमानं

शनैः शुभम् । इत्यन्तं यल्लक्षणं तच्छरीरस्यायुर्वृद्धिहेतुः, दानादिको गुणः पुण्या-
युर्वृद्धिकृत्, दानं वयश्च यथासम्भवं, केचित्पुण्यकृतः केचित् आयुर्वृद्धिकृतः
केचिदुभयकृतश्च ॥

Colophon :

इति बालप्रबोधिण्यां टीकायां युक्तनामनि ।
पूर्णस्तृतीयोऽप्यध्यायश्शरीरस्थानगोचरः ॥
इति शारीरके तृतीयोऽध्यायः ॥
अङ्गस्थितत्त्वे सिद्धेऽपि कर्मणा मर्मं वक्ष्यते ।
बहुधा वक्तव्यतया पृथग्ध्यायनिर्णयः ॥
अथात इत्यादि ।

End :

गर्भावक्रान्तीयमित्यादिभिश्चतुर्भिरध्यायैः प्रसक्तानुप्रसक्त्या यथोदीरितं
मरणं विवृतिविज्ञानीयेन दूतादिविज्ञानीयेन च । ततः शरीरस्य जन्ममरणात्का-
रणदिदं स्थानं शारीरकमुच्यते । यद्यपि सर्वं स्थानं शरीरमधिकृत्योक्तम् ; तथा-
पि इदं स्थानं साक्षाज्जन्ममरणचिन्तनात् शरीरस्य प्राधान्येन शरीरस्थानमुच्यत
इति भावः ॥

Colophon :

इति बालप्रबोधिण्यां टीकायां युक्तनामनि ।
षष्ठोऽध्यायश्च सम्पूर्णः शारीरस्थानगोचरः ॥
इति ॥
अठ्ठे प्रामादिके नाम्नि माघे मासि तथैव च ।
श्यामाचार्यस्य पुत्रेण लिखितं पुस्तकं मया ॥

No. 14375. अष्टाङ्गहृदयव्याख्या—सर्वाङ्गसुन्दरी.

ASTĀṆGAHṚDAYAVYĀKHYĀ : SARVĀṆGASUNDARĪ.

Pages, 13. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 82a of the MS. described under No. 14374.

Contains the first Adhyāya incomplete in the Sūtrasthāna.

Same work as that described under R. No. 3* of the Triennial Catalogue, Vol. I, Part I-A.

No. 14376. अभिषेकमन्त्रः.

ABHIṢĒKAMANTRAḤ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 116.

Incomplete.

The Mantras dealing with the ritualistic procedure connected with the bath to be given to the image of God in the course of the ceremonial worship of that image.

Beginning :

मित्रोऽसि वरुणोऽसि समहं विश्वेदेवैः क्षत्रस्य नाभिरसि क्षत्रस्य योनि-
रसि स्योनामासीद सुषदामासीद मा त्रा(त्वा) हिंसीत् । (मा मा हिंसीत्)
निषसाद धृनव्रतो वरुणः पस्त्यास्त्रा साम्राज्याय सुक्रतुः । देवस्य त्वा सवितुः
प्रसवे अश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । अश्विनोर्भे(र्भै)षज्येन । तेजसे
ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि ।

End :

परि णो रुद्रस्य हेतिः स्तुहं श्रुतन् । भीदुष्टम हन् । (हस्ते) बिभर्षि ।
त्वमग्ने रुद्र (आ)गहि राजानम् ? ।

No. 14377. पञ्चशान्तिः.

PAÑCAŚĀNTIḤ.

Pages, 6 Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 116, wherein this work has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 225 ante.

No. 14378. आतुरसन्न्यासविधिः.

ĀTURASANNYĀSAVIDHIḤ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 27a of the MS. described under No. 116.

Complete; as laid down by Āṅgīrasa.

Similar to the work described under No. 3542 ante.

Beginning :

अथाङ्गिरसोक्तमातुरसन्न्यासविधिं व्याख्यास्यामो व्याध्यादिग्रस्त आतुरो
वपनपूर्वकं स्नात्वाचम्य देशकालावनुकीर्त्य । एवङ्गुण (. . .) त्रिथौ समस्त-
पापक्षयद्वारा ब्रह्मलोकप्राप्त्यर्थमातुरसन्न्यासविधिं करिष्ये ।

End :

सच्चिदानन्दरूपोऽहं परिपूर्णोऽस्मि सर्वदा ।
ब्रह्मैवाहं न संसारी मुक्तोऽहमिति भावयेत् ॥

Colophon :

इत्याङ्गिरसोक्तातुरसन्ध्यासविधिः ॥

No. 14379. पुरुषसूक्तहोममन्त्रः.

PURUṢASŪKTAHÔMAMANTRAḤ.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 123.

Incomplete.

Deals with a propitiatory fire-offering conducted with the Mantras of the well-known Puruṣasūkta.

Beginning :

सहस्रशीर्षा पुरुषः । सहस्राक्षस्सहस्रपात् । स भूर्नि विश्वतो वृत्वा । अत्यति-
ष्ठदशङ्कुलं स्वाहा । पुरुष एवेदं सर्वम् । यद्भूतं यच्च भव्यम् । उतामृतत्वस्ये-
शानः । यदन्नेनातिरोहति स्वाहा ।

End :

नाभ्या आसीदन्तरिक्षम् । शीर्ष्णो द्यौरसमवर्तत । पञ्च्यां भू

No. 14380. रुद्रहोमः.

RUDRAHÔMAḤ.

Pages, 6. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 123.

Deals with a propitiatory fire-offering using 170 Mantra-formulae taken from the Rudradhyāya which is the fifth Prasua of the fourth Kāṇḍa of the Kṛṣṇa-Yajurveda.

Beginning :

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः । नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत
ते नमः स्वाहा । (1)

या त इषुश्शिवनमा शिवं बभूव ते धनुः । शिवा शरव्या या तव तया नो
रुद्र मृडय स्वाहा । (2)

End :

तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विप्सो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे
दधामि स्वाहा ॥ 170 ॥

No. 14381. अपामार्गहोमविधिः, आन्ध्रटीकासहितः.

APĀMĀRGAHŌMAVIDHIH WITH TELUGU MEANING.

Pages, 3. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 55b of the MS. described under No. 123.

Complete.

Deals with a propitiatory fire-offering conducted with the sticks of Apāmarga plant. The work contains meaning in Telugu.

Beginning :

कन्यार्थी लभते कन्यां हुत्वा लाजान् वृताल्लतान् ।

अपामार्गसमिद्धोमैरलक्ष्मीं नाशयेद्बुधः ॥

सर्वकल्मषनाशाय जुहुयाच्च वृताहुतीः ।

ब्राह्मणादीन् वशे सर्वान् हुत्वा खदिरसंभवान् ॥

सिनरक्तैर्नीलपतैस्सूत्रैस्संवेष्टितान् क्रमात् ।

अ(ल)क्षं हुत्वा वृतात्सर्वान् कपानामोति साधकः ॥

End :

यस्तु मन्त्रं जपन्नित्यं प्रातस्स्वात्वा सहस्रकम् ।

श्रीरारोग्यं च वेजश्च वर्धयेत्तस्य सर्वदा ॥

संवत्सरं जपद्यस्तु श्रीगहारो जितेन्द्रियः ।

अर्चनं च यथाशक्ति कुर्वन्ननुतमन्वहम् ॥

किं तस्य मानुषैर्भोगैः प्रसन्ने च जगत्पतौ ।

बहुना किमिहोक्तेन तच्चित्तस्तस्मैरायणः ॥

Foll. 55 and 56a contain the Telugu meaning of the above Hōma.
Foll. 57 and 58 contain a portion of Namah with Telugu meaning.

No. 14382. कलिसन्तारणोपनिषद्.

KALISANTARANOPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 66a of the MS. described under No. 505, wherein this work has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 351 ante, but with a different Śānti in the beginning and end.

No. 14383. तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्.
TAITTIRĪYŌPANISADBHĀṢYAM.

Pages, 136. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 7859.

Complete.

By Śāyaṇācārya. Same work as that described under No. 512 ante.

The scribe adds—

चित्रभानुहायनमाघमासे शुक्ले तु पूर्णिमा ।
वेङ्कटः कृष्णतनयःसीतारामस्य सूरिणा ? ॥
चतुःषष्ट्यनुवाकानां व्याख्यानं लिखितं मया ।

Fol. 69a contains a portion of Śrisūkta.

No. 14384. नारायणोपनिषत्.
NĀRĀYAṆŌPANISAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 81a of the MS. described under No. 2881.

Complete.

Same work as that described under No. 561 ante.

No. 14385. अथर्वशिरउपनिषत्.
ATHARVAŚIRA-UPANISAD.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 81b of the MS. described under No. 561.

Complete.

Same work as that described under No. 237 ante.

No. 14386. आश्वलायनश्रौतसूत्रम्.
ĀŚVALĀYANAŚRAUTASŪTRAM.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{8}$ inches. Pages, 86. Lines, 5 on a page. Character, Telugu and Nandināgarī. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Taittirīyayajus-samhitā 44a, Vēdalakṣaṇa 49a, Aparaviṣaya 55a.

Contains from the end of the 2nd Kaṇḍikā of the 7th Adhyāya to the end of the 13th Kaṇḍikā of the 12th Adhyāya.

Same work as that described under No. 1029 ante.

No. 14387. तैत्तिरीययजुस्संहिता.
TAITTIRĪYAYAJUSSAMHITĀ.

Pages, 10. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 44^a of the MS. described under the previous number.

Contains a few portions of the fifth Praśna of the sixth Kāṇḍa and the whole of third and fourth Praśnas of the seventh Kāṇḍa.

Same work as that described under Nos. 71 and 72 ante.

No. 14388. ऋग्वेदलक्षणम्.
RGVĒDALAKṢAṆAM.

Pages, 12. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 49 of the MS. described under No. 14386.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work described under R. No. 291 of the Triennial Catalogue of MSS., Vol. I, Part A.

Beginning :

ति पञ्चदश वी(नी)चाः । परेण श्वघ्नी परिपन्थि(न्थी)पत्नी(त्नी) प्रजनती
रथी(थि)यन्ति(न्ती) रश्मिणी(नी) काराधुनी अश्वी अङ्गी पितुमती वाजिनी
वर्मिणी जारिणी पूर्वी पुष्करिणी सुदृशी वपुषी महिषी चैवाष्टादश । संहिते-
ध्वीकारदीर्घेषु अधियदस्मिन्वर्जम् ।

End :

विचक्रचमसं पुरुकुत्तानीहवां स्त्रियां हि दासो न हि ते पूर्वमिन्द्र तुभ्य-
मुपब्रह्माणि शृणवः परि पणीनाम्.

No. 14389. अपरविषयः.
APARA VIṢAYAḤ.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 55^a of the MS. described under No. 14386.

Wants the beginning and the end.

The portion herein deals with the procedure relating to the performance of funeral ceremonies in regard to those who maintained the sacred fire as well as to those who did not do so.

Beginning :

तथाचोक्तम्—

वक्ष्ये ह्युत्पत्तिमात्राग्निमात्मन्यारोप्य चेन्मृतम् ।

प्रेतस्य दक्षिणं पाणिं लौकिकाग्नौ निधाय हि ॥

उपावरोह जातवेद इमं त इति मन्त्रतः ।
 अग्निराहित एवासीत्ततस्तेनाखिलं चरेत् ॥
 यदि साग्निः पिता दूरेऽनग्निर्माता गृहे मृता ।
 यद्वा साग्निर्गृहे माता पिता देशान्तरे मृतः ॥

End :

पश्चाद्वा दर्भान् संस्तीर्य दक्षिणप्राञ्चैकैकशः पात्राणि प्रयुनक्ति । सुवमा-
 ज्यस्थालीं प्रोक्षणपात्रति हस्तपादाङ्गुष्ठयोः शुक्लसूत्रेणाच्छित्वा द.

No. 14390. बोप्पनभट्टीयम्.
 BOPPAṆABHAṬṬĪYAM.

Pages, 30. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 83a of the MS. described under No. 23.

Complete in 19 Khaṇḍas.

Similar to the work described under No. 14210 ante.

The work is attributed to Boppanabhaṭṭa.

Beginning :

अथ गार्ह्याणि कर्माण्युदगयनपूर्वपक्षाहःपुण्या(हे)षु कार्याणि यज्ञोपवीती
 प्रदक्षिणं दक्षिणाङ्गाचारं कुर्यात्पुरस्तादुदग्बोपक्रमापवर्गौ पित्र्याप्यपरपक्षे प्राची-
 नावीती प्रसव्यं दक्षिणतोपवर्गौ निमित्तानन्तरं नैमित्तिकानि । नामान्नचौळोप-
 नयनगोदानविवाहस्नानसीमन्तपुंसवनेषु पूर्वद्युर्नन्दीश्राद्धं कुर्यात् ।

End :

पार्वणवदग्निमुखान्ते एतेभ्यो हुत्वा चरुणा स्रुचं पूरयित्वाचम्योदनपिण्डं
 संमृज्य परमेष्ठ्यासि परमां माश्रियं गमयेत्यनेनागारस्तूप उद्विष्टोत् । ?

Colophon :

इति बोप्पनभट्टीयं खण्डं समाप्तम् ।

No. 14391. अङ्कुरार्पणप्रयोगः.
 AṆKURĀRPAṆAPRAYŪGAḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 98a of the MS. described under No. 23.

Complete.

Similar to the work described under No. 2517 ante

Beginning :

अथानोऽङ्कुरार्पणम् । कन्याराशौ पुण्याहं वाचयित्वा । विवाहाङ्गभूतमङ्कुरार्पणं करिष्य इति सङ्कल्प्य । पञ्चपालिका आदाय ।

मध्ये चतुर्मुखं पूर्वे वज्रिणं दक्षिणे यमम् ।

पश्चिमे वरुणमुत्तरे शशिनमेवं पालिकास्थापनं कृत्वा, वल्मीकमृत्तिकां भूमिर्भूतवनुवाकेनावोक्ष्य, मा वो रिषदिनि खनित्वा, मृत्तिके हन मे पापमिति जपित्वा ।

End :

दिशां पत्नीन् नमस्यामि सर्वकामफलप्रदान् ।

कुर्वन्तु सफलं कर्म कुर्वन्तु सततं शुभम् ॥

इति प्रार्थ्य, नमस्कुर्यात्, शोभनान्ते वेदिकाचतुष्कोणेषु एकैकदेवतां गृहदेवतासमीपे निक्षिपेदित्याह भगवान् बोधायनः ।

No. 14392. श्राद्धविधिः.

ŚRĀDDHAVIDHIH.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 99. of the MS. described under No. 23.

Complete.

Similar to the work described under No. 2619 ante.

Beginning :

अपरपक्षे श्राद्धं कुर्यात्, ऊर्ध्वं वा चतुर्थ्या गृहहस्तपद्मेन तदहः ब्राह्मणानामन्त्र्य, पूर्वद्युर्वा, स्वातक्रान्ते . यतीन् गृहस्थान् साधून्वा श्रोत्रिणान् वृद्धाननवद्यान् स्वकर्मस्थानभावे ।

*

*

सर्वान्वासनेषु कुशानास्त्रीर्य विश्वान्देवानावाहयिष्ये इति पृच्छत्यावाहयेत्यनुज्ञातो विश्वं देवासआगतेयनयावाह्यावस्त्रीर्य विश्वे देवा शृणुतेममिति जपित्वा, पितृनावाहयिष्ये इति पृच्छति ।

End :

विश्वे देवाः प्रीयन्तामिति देवे वाचयित्वा, वाजेवाज इति विसृज्या मा वाजस्येत्यनुव्रज्य प्रदक्षिणीकृत्योपविशेत् ।

No. 14393. आपस्तम्बसूत्रवृत्तिः—सूत्रदीपिका.

ĀPASTAMBASŪTRAVṚTTIḤ: SŪTRADĪPIKĀ.

Pages, 16. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 101a of the MS. described under No. 23.

Contains the third Paṭala of the first Praśna.

Same work as that described under n. No. 375(b) of the Triennial Catalogue of MSS., Vol I, Part I-B.

No. 14394. बोधायनगृह्यशेषसूत्रम्.

BÔDHĀYANAGRHYAŚĒṢASŪTRAM.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 108b of the MS. described under No. 23.

Contains 10th and 12th Adhyāyas of the fourth Praśna.

Similar to the work described under No. 1175 ante.

The portion contained herein deals with the sanctification of the fire for performing offerings in it by a person with his second wife when the first wife is living.

Beginning :

अथ गृहस्थस्य(स्तु) द्वे भार्ये विन्देत कथं तत्र कुर्यादिति यस्मिन् काले विन्देतोभावमि परिचरेदपराग्निमुपसमाधाय परिस्तीर्याज्यं विलाप्योत्पूय सुक्सु-
वौ निष्टप्य संमृज्य सुचि चतुर्गृहीतं गृहीत्वाऽन्वारब्धायां यजमानो जुहोति,
नमस्तर्षे गद, अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वा ।

End :

अग्नौ विवाहस्त हि साधारणो भवति न तत्र विभाग एकत्वादग्रेरित्योह
भगवान् बोधायनः ॥

No. 14395. द्विभार्याग्निविभागः, प्रयोगसहितः.

DVIBHĀRYĀGNI VIBHĀGAḤ WITH PRAYÔGA.

Pages, 15. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 110a of the MS. described under No. 23.

Complete.

Similar to the work described under No. 3639 ante.

Beginning :

अथातोऽग्निविभागं व्याख्यास्यामो गर्भाधानपुंसवनसीमन्तोन्नयनविष्णु-
बलिजातर्कमनामकरणापनिष्क्रमणान्नप्राशनकर्णवेधनचौलोपनयनादिष्वन्यतमेषु

पार्ययोरन्यत्र प्रजासंस्कारार्थं स्थण्डिलं कृत्वोल्लिख्य संसृष्टमौपासनमुपसमाधाय
संपरिस्तीर्याज्यं विलाप्योत्पूय सुवसुबौ निष्टप्य संमृज्य सुचि चतुर्गृहीतं गृहीत्वा
जायाभ्यामन्वारब्धो जुहोति ।

End :

जयप्रभृति सिद्धमाधेनुवरदानादथाग्नेनाग्निं दर्भेषु हुतशेषं निदधाति । वै-
श्वानरो न ऊत्या पृष्ठो दिवि इति द्वाभ्यां बहुभार्यस्त्वेनं प्रयुञ्जीत

Foll. 116b and 117a contain Darśapūrṇamāsaviśaya.

No. 14396. द्विभार्याग्निद्वयसंसर्गविधिः.
DVIEHĀRYĀGNIDVAYASAMŚARGAVIDHIḤ.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 117a of the MS. described under No. 23.

Complete.

By Śiṅgābhaṭṭa. Similar to the work described under No. 3639
ante.

Beginning :

द्विभार्याग्निद्वयसंसर्ग उच्यते — पूर्वोत्तराग्नी दक्षिणत उत्तरतः स्थापयित्वा,
द्वयोरग्न्योः प्रातरौपासनं हुत्वा, पत्नीभ्यां सहितः प्राणानायम्य, गृह्याग्निसाध्यानां
कर्मणां तन्त्वानुष्ठानां सिद्ध्यर्थमौपासनाग्निद्वयसंसर्गं करिष्ये इति सङ्कल्प्य, द्वयो-
रग्न्योर्मध्ये स्थण्डिलोल्लिखनादिकं कृत्वा, भवतन्नस्समनसौ — अद्यनः । अग्ना-
वग्निः — धेयम् इति द्वाभ्यामुभयोः प्रत्यक्षाग्नी स्थण्डिले युगपदेव प्रतिष्ठापयेत् ।
पत्नीभ्यां वा कारयेत् ।

End :

यस्तु कश्चन संसर्गन्न करोति द्विवह्निवान् ।

नित्यमग्नी पृथक्धार्यै(र्यौ) तन्तिच्छर्थं पृथक्क्रिया ॥ इति ॥

इति शिङ्गाभट्टीये द्वितीयः पक्ष उक्तः ।

No. 14397. गणहोमः.
GAṆAHŌMAḤ.

Pages, 10. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 207a of the MS. described under No. 23.

Incomplete.

Same work as that described under No. 3603 ante

No. 14398. हनुमन्मालामन्त्रः.
HANUMANMĀLĀMANTRAḤ

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 212^a of the MS. described under No. 23.

Complete.

Similar to the work described under No. 7678 ante.

Beginning :

अथ हनुमन्मालामन्त्रस्य

पञ्चास्यमच्युतमनेकविचित्रवर्णं चक्रां शुशङ्खविधृतं कपिराजवर्यम् ।

पीताम्बरादिमकुटैरुपशोभिताङ्गं पिङ्गाक्षमाद्यमनिशं मनसा स्मरामि ॥

ओं ह्रीं वं खं बं ओं नमो भगवते वीरप्रचण्डप्रतापपञ्चवक्रहनुमते । हं
खं गतिबन्ध मतिबन्ध मार्गबन्ध चोरबन्ध ।

End :

ओं रं यं छैं ओं नमो भगवते श्रीमान् रामदूत हनुमते हुं फट्
स्वाहा ।

No. 14399. धर्मशास्त्रवचनानि.
DHARMAŚĀSTRAVACANĀNI.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 213^a of the MS. described under No. 23.

Wants the beginning and the end.

A collection of stanzas from Dharma-śāstra works dealing with such topics such as the duration of time during which one should not take meals before eclipses, etc.

Beginning :

अयने विषुवे चैव चन्द्रसूर्यग्रहे तथा ।

अहोरात्रोपितः स्नात्वा सवपापैः प्रमुच्यते ॥

एत(द)पुत्रविषयम् ।

सङ्क्रान्त्यामुपवासं च कृष्णैकादशिवासरे ।

चन्द्रसूर्यग्रहे चैव न कुर्यात्पुत्रवान् गृही ॥ इति स्मरणात् ।

हेमाद्रौ प्रायश्चित्तकाण्डे —

सूर्यसोमोपरागे च उक्तकालं विना द्विजः ।

तदन्नं मांसमित्याहुर्यद्भोक्ता मांसभुक्तया ॥

सूर्यग्रहे च नाश्रीयात्पूर्वं यामचतुष्टयम् ।
चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् भुक्त्वा पापं समश्नुते ॥

End :

युगं युगद्वयं च त्रियुगं च चतुर्युगम् ।
चण्डालपतितोदकया सूती चैव यथाक्रमम् ॥
दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत् ।
सत्यपूतं वदेद्वाक्यं मनःपूतं समाचरेत् ॥

No. 14400. उच्चोदार्की.

UCCÔDARKĪ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 213b of the MS. described under No. 23.

Complete.

Same work as that described under No. 875 ante.

Fol. 214a contains a few sentences from Śadvimśatisūtra.

No. 14401. योगीश्वरीमन्त्रः.

YŌGĪŚVARĪMANTRAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 214a of the MS. described under No. 23.

Complete.

The due repetition of this Mantra, which is addressed to Goddess Yōgīśvarī, is supposed to be efficacious in the accomplishment of one's desires.

Beginning :

अस्य श्रीयोगीश्वरीमहामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, योगी-
श्वरी देवता, ह्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ह्रूं कीलकम्, मम समस्ताभीष्टसि-
द्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

End :

योगिनि योगीश्वरी(रि) लोकभयङ्करि सकलस्थावरजङ्गमस्य मुखहृदयमा-
कषयाकर्षय सर्वस्त्रीपुरुषवशं कुरु कुरु स्वाहा ।

*

*

*

*

सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्क्यै नमः सकलेष्टार्थप्रदायिन्यै नमः ।

No. 14402. त्र्यम्बकमन्त्रः.
TRİYAMBAKAMANTRAḤ.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 214b of the MS. described under No. 23.

Complete.

Same work as that described under Nos. 6351, 6352 ante.

No. 14403. गौरिपञ्चाङ्गम्.
GAURĪPAÑCĀṄGAM.

Pages, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 455, wherein this work has been omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 13554 ante.

No. 14404. एकश्लोकः.
ĒKAŚLŌKAḤ.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 42b of the MS. described under No. 455, wherein this work has been omitted to be included in the list of other works.

Complete. By Śaṅkarācārya.

Same work as that described under No. 4569 ante.

No. 14405. पञ्चरत्नम्.
PAÑCARATNAM.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 455, wherein this work has been omitted in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 4630 ante; but the verses are not in order.

No. 14406. चातुश्लोकः.
CĀTUŚLŌKAḤ.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 47b of the MS. described under No. 455, wherein this work has been omitted in the list of other works.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work described under No. 12015 ante.

Taken from the Subhāṣitaratnabhāṇḍāgāra.

Beginning :

(न संसारोत्पन्नं चरि)तमनुपश्यामि कुशलं
विपाकः पुण्यानां जनयति भयं मे विमृशतः ॥
महद्भिः पुण्यौघैश्चिरपरिगृहीताश्च विषया
महान्तो जायन्ते व्यसनमिव दानुं विषयिणाम् ।
(प्र)याताः स्वातन्त्र्यादनुलपरितापाय मनसः
स्वयं त्यक्ता ह्येते शमसुखमनन्तं विदधति ॥

End :

अङ्गेन केनापि विजेतुमस्या गवेष्यते किं चलपत्रपत्रम् ।
न चेद्विशेषादिनरच्छेदभ्यः तस्यास्तु क(म्प)स्तु कुतो भयेन ॥

No. 14407. वेदान्तकारिका.

VĒDĀNTAKĀRIKĀ.

Pages, 6. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 44a of the MS. described under No. 455, wherein this work has been omitted in the list of other works.

Wants the beginning and end.

Stray stanzas taken from the Pañcadaśī of Vidyāraṇya, which work has been described under No. 4613 ante.

Beginning :

भेदोऽस्ति पञ्चकोशेषु साक्षिणो न तु भात्यसौ ।
मिथ्यात्मतान्तःकोशानां स्थाणोश्चोरात्मता यथा ॥
अन्योन्याव्यस्तरूपेण कूटस्थभासयोर्वपुः ।
एकीभूय भवंमुख्यः तत्र मूर्धः प्रयुज्यन्तं ॥

End :

एवं विविच्य पुत्रादौ प्रीतोऽत्यन्तं निजात्मनि ।
निश्चित्य परमां प्रीतिं वीक्ष्य(क्ष)ते तमहर्निशम् ॥

No. 14408. रामदुर्गाकवचः.
RĀMADURGĀKAVACAḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 91b of the MS. described under No. 633.
Complete.

Same work as that described under No. 7041 ante.

No. 14409. परमभागवतादिस्तोत्रम्.
PARAMABHĀGAVATĀDISTŌTRAM.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 93a of the MS. described under No. 633.
A eulogy on the foremost devotees of God Viṣṇu.

Beginning :

(रुक्माङ्ग)दार्जुनवसिष्ठविभीषणादीन्
पुण्यानिमान् परमभागवतान् स्मरामि ॥
पुण्यश्लोको नृगो राजा पुण्यश्लोको (युधिष्ठिरः) ।
पुण्यश्लोको हरिश्चन्द्रः पुण्यश्लोकः पुरूरवाः ॥

End :

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मण्डोदरी तथा ।
पञ्चकन्यास्मरेन्नित्यं महापानकनाशनम् ॥

Fol. 93b contains Varadarājastōtra and Gaṅgastōtra.

No. 14410. विष्णुमातृकापूजा.
VIṢṆUMĀTRĪKĀPŪJĀ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 91a of the MS. described under No. 582.
Incomplete.

On a ceremonial worship of God Viṣṇu repeating, prefixed with Praṇava, each of the letters of the alphabet with a name denoting Him.

Beginning :

ओं अं ब्रह्मणे नमः, ओं आं त्रिणवे नमः, ओं इं रुद्राय नमः, ओं ईं
मौङ्गाराय, ओं उं प्रणवाय, ओं ऊं(अ) प्रक(मे)याय, ओं ऋं सर्वव्यापिने,
ओं ॠं अनन्ताय ।

End :

एवमभ्यर्च्य देवेशं नारायणमतन्द्रितः ।
 तद्रूपं चिन्तयेद्योगी प्रणवेन समाहितः ॥
 साकारं वा यदा योगं नित्यं मनसि धारयेत् ।
 आदित्यवर्णं पुरुषं पुण्डरीकदलेक्षणम् ॥
 शङ्ख चक्र गदा पाणि पीतनिर्मलवाससम् ।
 किरीटचारुकैयूरकटकादिविभूषितम् ॥
 श्रीवत्सवक्षसं श्रीशं कौस्तुभोद्भासिवक्षसम् ।
 चतुर्बाहुं हृषीकेशं पुण्डरीकाक्षमच्युतम् ॥
 हृत्पद्मकर्णिकामध्ये स्थितमासीनमेव च ॥ इति ॥

No. 14411. वेदान्तविषयश्लोकानुक्रमणिका.

VĒDĀNTAVIṢAYAŚLŌKĀNUKRAMANIKĀ.

Pages 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 107a of the MS. described under No. 582, wherein this work has been omitted in the list of other works.

Incomplete ; wants the beginning.

Contains the beginnings of certain select stanzas of a philosophical character, and taken from different works.

Beginning :

सर्वपापप्रसक्तिं विधूय । अत्यामन्त्रं विना(शाय) । आदानमीषज्ज्ञानं च ।
 तत्कर्म यन्न बन्धाय । विरोधे गुणवादस्स्यात् । त्यज धर्ममधर्मं च । संसारमेवं
 निस्सारम् । कर्मणा बध्यते जन्तुः । ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां । यन्न दुःखेन सं
 भिन्नम् ।

End :

अणिमा महिमा । अनादिनिधना नित्या । दर्शनं स्पर्शनम् । प्रमादा-
 त्कुर्वतां तपः । उच्चैरध्ययनं पुराण ।

No 14412. रामचन्द्रमङ्गलाष्टकम्.

RĀMACANDRAMAṅGALĀṢṬAKAM.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 58a of the MS. described under No. 560.

Complete.

Eight stanzas invoking benediction on God Rāmacandra, worshipped at Ambāla town. This is also called Ambālāṣṭaka.

Beginning :

श्रीविदेहसुताभर्त्रे सर्वलोकोपकारिणे ।
स्फुरदम्बालनाथाय रामचन्द्राय मङ्गलम् ॥
आम्रायमौलिवेद्याय हरये पीतवाससे ।
अम्बालेशाय देवाय रामचन्द्राय मङ्गलम् ॥

End:

य इदं सेवते पृथ्व्यामम्बालेशाष्टकं महत् ।
हह भुक्तिं परंचान्ते स नरः प्राप्नुयात्पदम् ॥

No. 14413. रामकृष्णपञ्चरत्नम्.
RĀMAKRṢṆAPANĀNCARATNAM.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 58a of the MS. described under No. 560.

Complete.

Five stanzas pronouncing benedictions on a great person named Rāmakṛṣṇa, son of Kṛṣṇaguru of Tripurahr̥t family and of Kaundinya-gōtra.

Beginning :

श्रीमन्निपुरद्वंद्वंशक्षीररत्नाकरेन्दवे ।
कौण्डिन्यगोत्रजाताय रामकृष्णाय मङ्गलम् ॥
श्रीकृष्णगुरुपुत्राय कल्याणगुणसिन्धवे ।
अज्ञानध्वान्तसूर्याय रामकृष्णाय मङ्गलम्

End:

य इदं (दिदं) पञ्चरत्नानि(ख्यं) यः पठेत्सततं नरः ।
भुक्तिमुक्तिमवाप्नोति भविष्यति न संशयः ? ॥

No. 14414. व्यूहाराधनप्रयोगः.
VYŪHĀRĀDHANAPRAYOGAḤ.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 58b of the MS. described under No. 560.

Wants the beginning and the end.

Deals with the procedure connected with the ritualistic worship of the four deities, Vasudēva, Saṅkarṣaṇa, Pradyumna and Aniruddha, constituting the Vyūhāvātāra of Gov. Narāyaṇa, as laid down in Pāñcarātrāgama.

Beginning :

लं नमः पृथिवीतत्त्वात्मना नारायणेन गन्धमिमं पारिकल्पयामि । गन्ध-
तन्मात्रात्मने घ्राणेन्द्रियाय गन्धमिमं गृहाण स्वाहा । हं नमः आकाशतत्त्वा-
त्मना वासुदेवेन पुष्पमिदं परिकल्पयामि । शब्दतन्मात्रात्मने श्रोत्रेन्द्रियाय
पुष्पमिदं गृहाण स्वाहा ।

End :

वं नमः अक्षत्त्वात्मना अनिरुद्धेन रसतन्मात्रात्मने जिह्वेन्द्रियायामृतोपहार-
नैवेद्यमिदं गृहाण स्वाहा ।

अप्रमेय परानन्द मयाह्वावाहितो भव ।

जानकीसंयुत श्रीमन्नत्र च स्थापितो भव ॥

●

*

*

*

दैत्यारे वासुदेवावकुण्ठितो भव ते नमः ।

*

*

*

*

सकलागमसंपूज्य सकलीकृतिमान् भव ।

No. 14415. परमहंसोपनिषत्.
PARAMAHAMŚŌPANIṢAT.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 49⁶ of the MS. described under No. 306.

Complete, but wants the middle portion.

Same work as that described under No. 598 ante.

No 14416. ब्रह्मोपनिषत्.
BRAHMŌPANIṢAT.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 41^a of the MS. described under No. 306.

Wants the beginning ; otherwise complete.

Same work as that described under No. 655 ante.

No. 14417. जीवन्मुक्तिप्रकरणम्.
JIVANMUKTIPRAKARANAM.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 41^b of the MS. described under No. 303.

Wants the beginning ; otherwise complete.

A work showing that the attainment of self-emancipation is possible even in this life : by Śaṅkarācārya.

Beginning :

जीवन्मुक्तिरुच्यते । तत्त्वज्ञानवासनाक्षयमनोनाशानां चैककालाध्यासो जीवन्मुक्तिसाधनम् । तत्र केनाप्युपायेन पुनः पुनस्तत्त्वानुसन्धानं तत्त्वज्ञाने(ना)-भ्यास उच्यते । तत्त्वज्ञानपूर्वमेव जातत्वात् । वासना त्रिविधा । लोक-वासना, देहवासना, शास्त्रवासना चेति । तत्र सर्वे यथा न निन्दन्ति यथा स्तुवन्ति तथा आचरिष्याम इत्यभिनिवेशो देहवासना । तस्य दुस्सम्पाद[क]त्वान्मलिनत्वमेव ।

End :

एतच्छ्रद्धावाव न तपति । स्वस्वरूपानन्दानुभवः सुखाविर्भाव मि(इ)त्युच्यते । प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थित(प्र)ज्ञस्तदोच्यते ॥ इति ॥

Colophon :

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्भोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यश्रीमच्छङ्करभगवत्पादकृतौ जीवन्मुक्तिप्रकरणं समाप्तम् ॥

No. 14418. व्यासपुत्राष्टकम्.
VYĀSAPUTRĀṢṬAKAM.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 58b of the MS. described under No. 306.

Complete.

Same work as that described under R. No. 1229 (f) of the Triennial Catalogue of MSS., Vol. II, Part I-A.

No. 14419. अद्वैतमकरन्दः.
ADVAITAMAKARANDAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 58b of the MS. described under No. 306.

Incomplete.

Same work as that described under No. 4221 ante.

No. 14420. आत्मानात्मविवेकः.
ĀTMĀNĀTMĀVIVĒKAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 306.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work described under No. 4559 ante.

Beginning :

(शरीर)द्वयहेतुः अनाद्यविद्यानिर्वचनीयं ब्रह्मैक्यज्ञानापनोद्यं ब्रह्माज्ञानम् ।
अवस्थात्रयं नाम जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिरूपम् । जागरणं नामेन्द्रियैरर्थोपलब्धिः ।
जाग्रत्स्थूलशरीरयोरभिमान्यात्मा विश्वः ।

End :

एतत्सर्वं विविच्य यो विजानाति स नित्यशुद्धबुद्धमुक्तसत्यपरमानन्दरूप
इत्यात्मानात्मविवेकं यः करोति सदा करोति स जीवन्मुक्तो भवति तरति शोक-
मात्मवित् । अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमिति भगवद्वचनाच्च ।

No 14421. नृसिंहस्तोत्रम्.

NṚSĪMHAŚTŌTRAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 306.

Wants the beginning and the end.

A eulogy addressed to God Nṛsimha.

Beginning :

त्वदीक्षणक्षणक्षोभमायाबोधितकर्मभिः ।
जातान् संसरतः खिन्नान् नृहरे पाहि नः पितः ॥
अन्तर्यन्ता सर्वलोकस्य गीतः श्रुत्या युतचा यः ।
यस्सर्वज्ञस्सर्वशक्तिर्नृसिंहं श्रीमन्तं तं चेतसैवावलम्बे ॥

End :

नृत्यन्ती तव वीक्षणाङ्गुणगता कालस्वभावादिभिः
भावान् सत्त्वरजस्तमोगुणमयानुन्मीलयन्ती बहून् ।
मामाक्रम्य सद! शिरस्यतिभरं संमर्दयन्त्यातुरं
माया ते शरणं गतोऽस्मि नृहरे त्वामेव तां वारय ॥
* * * * *
द्युपतयो विदुरन्तमनन्त ने न च भवान्नगिरे श्रुतिमौलयः ।
त्वयि फलन्ति तु नेति त इत्यतो जय जयेति भजे तव तत्पदम् ॥

Fol. 59b contains seven witty stanzas

No. 14422. रुद्राक्षजाबालोपनिषत्.

RUDRĀKṢAJĀBĀLŌPANIṢAT.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 33a of the MS. described under No. 285, wherein this work has been omitted in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 770 ante.

In the colophon it is wrongly written : बृहज्जाबालोपनिषत् समाप्ता.

No. 14423. योगशिखोपनिषत्.

YŌGAŚIKHŌPANIṢAT.

Pages, 2. Lines, 5 on a page

Begins on fol. 48a of the MS. described under No. 285, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Complete.

Same work as that described under No. 748 ante.

In the colophon the work is wrongly stated as मन्त्रोपनिषत्.

No. 14424. जाबालोपनिषत्.

JĀBĀLŌPANIṢAT.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 50a of the MS. described under No. 285, wherein this was omitted to be included in the list of other works.

Wants the beginning.

Same work as that described under No. 470 ante.

No. 14425. भोजनविषयवचनानि.

BHŌJANAVIṢAYAVACANĀNI.

Pages, 2. Lines, 4 on a page

Begins on fol. 68a of the MS. described under No. 285.

Wants the beginning and the end.

Some rules bearing on the taking of food by a Dvija or twice-born under certain circumstances of defilement.

Beginning :

भवेदुच्छिष्टसंस्पर्शो भोक्तुर्वा भो(भा)जनस्य वा ।

अन्नं तदेव भोक्तव्यं न त्याज्यं भाजनस्थितम् ॥

पुनरन्नं न भोक्तव्यं यदि भुञ्जीत क्लिप्त्वा ।

. . . . न जपेद्देवीं शतमष्टोत्तराधिकाम् ॥

Complete, but wants the beginning as the first leaf is injured.
Similar to the work described under No. 3279 ante.

Beginning :

. हक्षेत्रे दर्शनं पद्मकूर्मयोः ।
तासु सर्वस्वनाशो वा भार्यानाशो भवेद्भुवम् ॥
* * *
आवाह्य कूर्मप्रतिमासुद्धतासीति मन्त्रतः ।
आवाह्य पद्मप्रतिमां पद्मजयेति मन्त्रतः ॥
वस्त्रे तिलोपरि न्यस्य स्पृष्ट्वेमं शतकं जपेत् ।

End :

अनेन विधिना कुर्याच्छान्तिमेतां समाहितः ।
एवं कृते नादोषो हि भवतीत्याह शौनकः ॥

Colophon :

इति शौनकोक्तपद्मकूर्मशान्तिस्समाप्ता ॥

No. 14430. समुद्रस्नानाङ्गतीर्थश्राद्धविधिः.

SAMUDRASNĀNĀṅGATĪRTHAŚRĀDDHAVIDHIḤ.

Pages, 4. Lines, 6 on a page

Begins on fol. 86 of the MS. described under No. 14426.

Apparently complete.

On the ceremony of making certain offerings to the manes of one's ancestors immediately after taking sea-bath and as subsidiary to it.

Beginning :

अब्धिस्नानविधिस्तम्यगधुना परिकथ्यते ।
दर्भाक्षततिलैस्तार्धं गत्वा तीरं सरित्पतेः ॥
दृष्ट्वाभ्युधि ततः . . . साम्भःपुष्पाञ्जलिस्तान् ।
दद्यादेतैश्च मन्त्रैश्च प्रणमेद्दण्डवद्भुजः ॥
नमस्ते सर्वतोयेन (याय) नमो गम्भीरमूर्तये ।
नमोऽस्तु . . . नादाय महातोयात्मने नमः ॥

End :

एतैर्मन्त्रैस्स्नापयित्वा,

ततस्तीरे समासाद्य क्षेत्रपिण्डं समाचरेत् ।

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाताः मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः ।
वंशद्वयेऽस्मिन् मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च ॥

* * *
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम् ।
आब्रह्मभवनाल्लोकादिम(द)मस्तु तिलोदकम् ॥

No. 14431. ग्रहणशान्तिः.

GRAHANĀŚĀNTIḤ.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 14426.

Complete.

Similar to the work described under No. 3299 ante.

Beginning :

अथातस्सम्प्रवक्ष्यामि प्राणिनां हितकाम्यया ।
चन्द्रसूर्योपरागौ वा *नामनक्षत्रराशिषु ॥
यस्य त्रिजन्मनक्षत्रे ग्रस्येते शशिभास्करौ ।
महारोगभयं तस्य केचिदाहुर्मनीषिणः ॥
षण्मासाद्वत्तराद्वापि अपमृत्युर्भविष्यति ।
तस्माच्छान्तिं प्रवक्ष्यामि साधनाद्भक्तिचतः ॥

End :

जन्मभे नामभे वापि त्रिजन्मक्षोपरागतः ।
संजातदोष(षा)दिक्पाला ! नश्यन्तु (शाम्यन्तु) मम सर्वदा ॥
इति पट्टदानमन्त्रः ॥

Colophon :

इति यामलोकतोपरागशान्तिः ॥
तिलोपरि लिखेच्छक्रं त्रिशूलं च त्रिकोणकम् ।
ग्रहणशूलदोषं मे निवारय दिवाकर ॥

No 14432. महादेवप्रतिष्ठा.

MAHĀDĒVAPRATIṢṬHĀ.

Pages, 8. Lines, 6 on a page. Character, Nandinīgari.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 14423.

* कर्मा(जन्मा)धानक्षयोरपि—इति पाठान्तरम् ।

Complete.

On details connected with the consecration of the image of God Śiva.

Beginning :

रुद्रप्रतिष्ठा—

महादेवप्रतिष्ठां वसन्ते उदगयने पूर्वपक्षे वा चतुर्थ्यामष्टम्यामेकादश्यां द्वादश्यामार्द्रायां श्रोणायां वा ज्योतिष्शास्त्रोक्ते वा काले पूर्वेषुः स्नात्वा तृ(त्रि)पुण्ड्रं मा (धृत्वा) लिङ्गा अ(का)रं वा चतुर्भुजाद्याकारं वा देवस्य प्रतिमां वा शिला(रूप)शास्त्रोक्तमार्गेण शिल्पिभिर्निर्मितां स्नापयित्वालङ्कृत्य पि(पी)ठादौ स्नापयित्वा स्वर्णोपहिता(तां) कृत्वा नवे कलशे पूर्णे हिरण्यं यवाङ्कुरदूर्वादूर्गाश्वत्थपर्णं पालाशपर्णमिति प्रक्षिप्याभिषिञ्चति ।

End :

परमात्मने नम इति द्वादशानङ्गुहं ब्राह्मणान् दिवभक्तान् हरिद्रोदनं भोजयित्वा यथाशक्ति दक्षिणां ददाति । प्रतिष्ठाकर्तारं सर्वोपकरणैरर्चयित्वा ऋषभैकादशं(शकं) दद्यात् न पुत्रशिष्याणां दक्षिणाम् ॥

Colophon :

इति महादेवप्रतिष्ठा ॥

No. 14433. ग्रहयोगशान्तिः.

GRAHAYÔGAŚĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 14428.

Complete ; as laid down in Rudrayāmala.

Similar to the work described under No. 3303 ante.

Beginning :

अतः परं प्रवक्ष्यामि ग्रहयोगादिशान्तिकम् ।

अमावास्यादितिथिषु ग्रहयोगो भवेद्यदि ॥

एकक्षे भिन्नराशौ वा एकराश्यक्षके तथा ।

शशिसूर्यसमायुक्ते ग्रहद्वयसमन्विते ॥

दुर्भिक्षादिभयं चैव चतुर्ग्रहसमन्वितः ।

महारोगभयं राष्ट्रक्षोभं दृष्टिविनाशनम् ॥

End :

एवं यः कुरुते भक्त्या ग्रहदोषं विवर्ज(नाश)येत् ।
 पूर्वोक्त(दोष)सङ्घैश्च विमुक्तः पुत्रवान् सुखी ॥
 आयुरैश्वर्यसम्पन्नः जीवेद्वर्षशतं नरः ।
 इह लोके सुखी भूत्वा पश्चाच्छिवपुरं व्रजेत् ॥

Colophon :

इति यामलोक्तग्रहयोगविधानं समाप्तम् ॥

Fol. 18a contains Navagrahasvarūpavivarana.

No. 14434. नवग्रहशान्तिविधिः.
 NAVAGRAHASĀNTIVIDHIH.

Pages, 16. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 14426.

Complete.

Similar to the work described under No. 3647 ante.

Beginning :

अथातस्संप्रवक्ष्यामि सूर्यदोषापनुत्तये ।
 बलहीने यदा सूर्ये दुष्टग्रहसमागमे ॥
 दुर्वेधकाले चक्राब्जैर्मानुवेधोक्तमार्गतः ।
 सर्वेषु दोषकालेषु ज्वररोगभयादिकम् ॥
 * * * * *
 आयुरारोग्यसंपन्नः पुत्रपौत्रसमन्वितः ।
 नृपाग्रस्त्रेहसंयुक्तः वाचा सिद्धियुतो नरः ॥

Colophon :

इति यामलोक्तसूर्यशान्तिस्समाप्ता ॥

End :

केतुदोषे समुत्पन्ने नाशमायानि तत्क्षणात् ।
 वैरिसे(नि)महाराजा(जः) केतुदोषाद्विनाशितः ॥
 केतुदोषाद्धरिश्चन्द्रश्चण्डालगृहसंस्थितः ।
 * * * * *

इमां केतुप्रतिभामधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितां सौवर्णीं स्वर्चितां साल-
ङ्कारां केतुप्रीतिं कामयमानस्तुभ्यमहं संप्रददे, न मम न ममेति दद्यात् ॥

No. 14435. कुहूशान्तिः.

KUHŪŚĀNTIḤ.

Pages, 5. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 27a of the MS. described under No. 14426.

Wants the beginning; otherwise complete.

Similar to the work described under No. 3272 ante.

Beginning :

. , . कुहूदोषापनुत्तये ।

आचार्य वरयेत्पूर्वं दैवज्ञं लक्षणान्वितम् ॥

पुण्याहवाचनं कृत्वा नमस्कृत्यष्टदेवताम् ।

सप्तद्रोण्येन धान्येन पद्ममष्टदलं लिखेत् ॥

* * * * *

शतनिष्कप्रमाणोऽसौ सौवर्णप्रतिमां कुहोः ।

करुपयित्वा तदर्धेन तदर्धेन स्वशक्तिः ॥

End :

यास्ते राके सुमतयस्सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि । तामिनीं
अद्येति तिलदशदानानि च (दत्त्वा) शतब्राह्मणभोजन चाशीर्वादः । तामिनीं
अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे रराणा ।

No. 14436. भानुवारजन्मनक्षत्रयोगशान्तिः.

BHĀNUVĀRAJANMANAKṢATRAYŌGAŚĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 30a of the MS. described under No. 14426

Complete.

Same work as that described under No. 3389 ante.

No. 14437. भौमवारजन्मर्क्षयोगशान्तिः.

BHAUMAVĀRAJANMARKṢAYŌGAŚĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 30b of the MS. described under No. 14426.

Complete.

Same work as that described under No. 3391 ante.

No. 14438. मन्दवारजन्मक्षयोगजननशान्तिः.
MANDAVĀRAJANMARKṢAYŌGAJANANASĀNTIH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 14426.

Complete ; as laid down by Bōdhāyana.

Same work as that described under No. 3396 ante.

No. 14439. उद्यदन्तजननशान्तिः.
UDYADDANTAJANANASĀNTIH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 31b of the MS. described under No. 14426.

Complete.

Deals with the Śānti to be performed for averting the evil effects supposed to arise when a child is born with its teeth or when dentition appears prematurely early in a child.

Beginning :

शिशोर्यत्तो(त्रोत्त)रे जाता दन्ताः पूर्वन्तदा कुलम् ।
विनाशयति तत्क्षेत्रं तस्माच्छान्तिं समाचरेत् ॥
प्रथमे मासि दन्तानामुत्पत्तिः कलहामिदा ।
तत्रोत्तरेषामुत्पत्तिः कुलं कल्पयति क्षयम् ॥

End :

एवं कृते न सन्देहः सदोषोऽपि प्रणश्यति ।
कुलं च वर्धते तस्य दीर्घमायुश्च विन्दति ॥

Colophon :

इति बोधायनोक्तोद्यदन्तजननशान्तिविधिः ।

No. 14440. यमलजननशान्तिः.
YAMALAJANANASĀNTIH.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 32b of the MS. described under No. 14426.

Complete ; as laid down by Śaunaka.

Deals with the Śānti to be performed for averting the evil effects supposed to arise when the mother gives birth to twins.

Beginning :

वरुणं पाशहस्तं च मकरस्थं जलाधिपम् ।
 ग्रहदोषोपशान्त्यर्थं वरुणं पूजयाम्यहम् ॥
 गोमहिष्यश्चनारीणां यमलौ यदि जायते ।
 सिनीवाल्यां प्रसूतिश्च हयादहि प्रजायते ॥
 . . . द्वित्तिनाशस्त्याद्वाहनानां च सक्षयः ।
 सम्पद्दिनाशनं कर्तुर्भवेद्राष्ट्रविनाशनम् ॥
 अतस्सर्वं विचार्याथ पश्चाच्छान्तिं समाचरेत् ।

End :

ब्राह्मणान् भोजयेच्चैव शतं च मधुसर्पिषा ।
 ताम्बूलं विप्रवचनात्कुर्यादेव प्रपूजयेत् ॥

Colophon :

इति शौनकीये यमलजननशान्तिः ॥

No. 14441. विषनाडीजननशान्तिः.

VIṢANĀDĪJANANĀŚĀNTIḤ

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 33^v of the MS. described under No. 14426.

Complete.

Same work as that described under No. 3426 ante.

No. 14442. कृष्णचतुर्दशीजननशान्तिः.

KṚṢṆACATURDĀŚĪJANANĀŚĀNTIḤ.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 34^a of the MS. described under No. 14426.

Complete ; as laid down by Garga.

Same work as that described under No. 3482 ante, but with slight difference in the beginning and the end.

Beginning :

मन्दरस्थं सुखासीनं गर्गं मुनिगणावृतम् ।
 नमः कृत्वा तु पप्रच्छ शौनको मुनिसत्तमः ॥
 शान्तिकर्माणि सर्वाणि त्वत्तो जानाम्यहं पुरा ।
 अथाथो तः श्रोतुमिच्छामि कृष्णपक्षे चतुर्दशाम् ॥
 दिवा वा यदि वा रात्रौ प्रसूतौ किं फलं वद ।

गर्गः—

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतौ षड्विधं फलम् ॥

End :

एवं यः कुरुते शान्तिं सर्वपापैः प्रमुच्यते ।

सर्वान् कामानवाप्नोति चिरंजीवै(वी) सुखी भवेत् ॥

Colophon :

इति कृष्णचतुर्दशीजननशान्तिः ॥

No. 14443. गण्डनक्षत्रशान्तिः.

GAṆḌANAKṢATRAŚĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 35a of the MS. described under No. 14426.

Complete as laid down in Agastyasamhita.

Dea's with the Śānti to be performed to avert the evil effects supposed to arise when a child is born, when the moon is in the constellation Citrā, Puṣya, etc., as well as when both the father and son happen to be born on the same Nakṣatra.

Beginning :

अथातस्संप्रवक्ष्यामि चित्रापुष्योत्तरापभम् ।

जन्मर्क्षे च प्रसूतौ तु शान्तिकर्म विधीयते ॥

चित्रार्यर्षे पुष्यमध्ये द्विपादे पूर्वाषाढर्क्षस्य पादे तृतीये ।

जातः पुत्रः पित्रोश्चोत्तरादौ मातापित्रोर्भ्रातरश्चात्मनाशः ॥

End :

सुरास्त्वामिति मन्त्रेण पवमानानुवाकतः ।

द्यौश्शान्तेति(च) मन्त्रेण अभिषेकं समाचरेत् ॥

Colophon :

इत्यगस्त्यसंहितायां गण्डनक्षत्रजननशान्तिः ॥

No. 14444. एकनक्षत्रजानशान्तिः.

ĒKANAKṢATRAJĀTAŚĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 35b of the MS. described under No. 14423.

Complete.

Same work as that described under No. 3259 ante, but with a different colophon.

Colophon:

इति वृद्धगार्ग्यैक्तिकनक्षत्रजननशान्तिः ॥

No. 14445. शनिवारार्तवशान्तिः.
ŚANIVĀRĀRTAVASĀNTIḤ.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 36a of the MS. described under No. 14426.

Complete.

Deals with the Śānti to be performed for averting the evil effects supposed to arise when a girl attains puberty on a Saturday.

Beginning:

मन्द्वारे यदि भवेन्नारीणां प्रथमार्तवम् ॥

सर्वनाशो भवेत्सद्यो दारिद्र्यं भवति ध्रुवम् ॥

End:

पवमानस्सुवर्चनः, त्रियम्बकं, महाशान्तिदशशान्तयः पञ्च शान्तयः
घोषशान्तयः, सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु धौतवस्त्रधारणमाज्यावलोकनम् ॥

Colophon:

इति यामलोक्तशनिवारार्तवशान्तिः ॥

No. 14446. भानुवारार्तवशान्तिः.
BHĀNUVĀRĀRTAVASĀNTIḤ.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 36b of the MS. described under No. 14426.

Complete.

Deals with the Śānti to be performed for averting the evil effects supposed to arise when a girl attains puberty on a Sunday

Beginning:

दिवा वा यदि वा रात्रौ भानुवारे रजस्वला ।

महाव्याधियुता चापि दुर्मार्गाभिरतिर्भवेत् ॥

तस्य शान्तिं प्रकुर्वीत तद्दोषशमनाय च ।

End :

(भानु)दोषविनिर्मुक्तः पुत्रायुर्धनवान् भवेत् ।

Colophon :

इति यामलोक्तभानुवारार्वशान्तिः ॥

Fol. 36b contains Bhaumavārārtavaśānti.

No. 14447. आपस्तम्बपूर्वप्रयोगकारिकाः.

ĀPASTAMBA PŪRVAPRAYŪGAKĀRIKAH.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{4} \times 1\frac{3}{8}$ inches. Pages, 40. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Nāgabali 21a, Śamānasandhi 22a, Kuṭṭhāsānti 24a, Agniṣaṣṭeprāyaścitta 25b, Śrāvaṇa-hōma 27b, Punassandhānapariṣatprāyaścitta 31a, Anvārambhāṇa-prayōga 34b, Sthālīpākaprāyōga 35a, Garbhadbhāna 37a, Pumsavana-simantaprayōga 38b, Vratatatuṣṭaya 41a, Dharmasāstravacanāni 47a.

Complete in 400 stanzas.

Similar to the work described under No. 3694 ante. By Kapardin.

Beginning :

अग्निपात्रं तु भिन्नं स्यात्प्रमादादुद्धहे यदि ।

सर्वान् कपालानादाय जलभूमौ विनिक्षिपेत् ॥

प्रायश्चित्तमभिनेति जुहुयादाहुतिद्वयम् ।

तुभ्यं त इत्यृचं हुत्वा शेषं कर्म समापयेत् ॥

*

*

*

*

केवलैस्तण्डुलैर्वापि तच्चूर्णेन मृदापि वा ।

गौरवर्णेन कुर्वीत स्थण्डिलं चतुरश्रकम् ॥

प्रागग्र्याणां तु रेखाणां ब्रह्म(ऽ)वैवस्वतो ध्रुवः ।

उदगग्र्याणां तु रेखाणां मुकुन्देशपुरन्दराः ॥

प्राचीः पूर्वमुदक्स्थं दक्षिणारम्भमालिखेत् ।

अथोदीचीः पुरस्स्थं पश्चिमारम्भमालिखेत् ॥

उत्तानेन तु हस्तेन कर्तव्यं प्रोक्षणं भवेत् ।

अवाचीनेन हस्तेन कर्तव्यं स्यादवोक्षणम् ॥

End :

आज्यस्थाल्यां भवेन्मूलं सुवे मध्यं च बर्हिषाम् ।

सुच्यग्रं च क्रमेणैव याज्ञिकैरपरैर्मतम् ॥

सव्येन सव्यं स्पृष्ट्वा (I तु) . . दक्षिणेन तु दक्षिणम् ।
आत्मपादौ तथा भूमिं सन्ध्याकालेऽभिवादयेत् ॥

No. 14448. नागबलिः.

NĀGABALIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under the previous number.
Complete.

Similar to the work described under No. 3653 ante. The procedure explained here is laid down by Bōdhāyana.

Beginning :

अथ चतुर्थ्या दम्पती श्मश्रुकर्म, नखनिकृन्तनं, मङ्गलस्तनं च कृत्वा
सन्ध्यानन्तरं समित्समारोपणं कृत्वाग्निमुद्रास्य त्रयस्त्रिंशत्पादपरिमितां भूमिं
गोमयेनोपलिप्य पञ्चवर्गैस्तण्डुलैश्चनुरश्रपुष्कराकारं लिखित्वा दक्षिणोत्तरयो-
र्गजाकारं प्रतिलिख्य पुष्करमध्ये इन्द्राणीं निधाय तदुपरि गौरीं प्रतिष्ठाप्या-
युध निधाय तन्तून् वेष्टयित्वा ।

End :

क्षमन्तु मे इत्यृचं जपित्वा विप्राशीर्वचनं कृत्वा बन्धुभिस्तह गृहं
प्रविश्य स्वस्तिवाचनं कृत्वा ब्राह्मणान् भोजयेदित्याह भगवान् बोधायनः ॥

No. 14449. शमानसन्धिः.

ŚAMĀNASANDHIḤ.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 22a of the MS. described under No. 14447.

Complete.

Same work as that described under No. 979 ante.

No. 14450. कुहशान्तिः.

KUHŪŚĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 14447.

Complete.

Similar to the work described under No. 3272 ante. This procedure is laid down for the followers of Āśvalāyanaśūtra.

Beginning :

सिनीवालीकुहकाले प्रसूतिर्यदि जायते ।
 नृपाश्वश्वगजाती(दी)नां महिषच्छागयोर्यदि ॥
 विनाशं(शो) जायते शीघ्रं विवर्धनम् ।
 पितरं चाद्यपादे तु द्वितीये हन्ति मातरम् ॥

End :

कदुद्राय आ नो भद्रा अग्नये पुरुषसूक्तम् । ईशान्यादिप्रदाक्षिणं कलश-
 पूजामन्त्रः । यत्ते देवी इति मूलमन्त्रः ; अनेन पूजाहोमं च(रे)दिति
 चिन्तयेत् ॥

Fol. 25a contains Āṅkurārpanaprayōga.

No. 14451. अग्निनष्टप्रायश्चित्तम्.
 AGNINAṢṬAPRĀYAŚCITTAM.

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 25b of the MS. described under No. 14447.

Complete.

This is intended for the followers of Āpastambasūtra.

Deals with the expiatory ceremony to be performed for the sanctifi-
 cation of the sacred fire when it becomes extinguished during Upa-
 nayana, marriage and other occasions.

Beginning :

अयमग्निरौपासनात्पूर्वं यद्यनुगच्छेत्, तत्र किं कुर्यादित्यत्राह—खेनस
 इत्यादि लाजहोमान्तं कुर्यात् ।

तथापस्तम्बः—

उद्वाहौपासनात्पूर्वं मनले शान्तिमागते ।

युगलाजान्तरं कर्म कृत्वा शेषं समाचरेत् ॥

यद्युपनयने त्रिरात्रात्पूर्वं, विवाहोपक्रमादूर्ध्वं चतुर्थीहोमात्पूर्वं, दहना-
 दूर्ध्वमस्थिसञ्चयनात्पूर्वं, जातकर्मणि कृते दशरात्रात्पूर्वं तत्तदग्नि(ग्नौ) शान्ति
 गते सति तद्दोषपरिहारार्थं तत्तदग्न्युत्पत्तिं करिष्य इति सङ्कल्प्य, एवंगुण-
 —तिथौ अनया नवोदया वध्वा सह विवाहाग्नौ अनुगते सति तद्दोषपरिहारार्थं
 विवाहाग्न्युत्पत्तिं करिष्य इति सङ्कल्प्य, शं नो देवीरिति भस्माद्विरवोक्ष्य ।

End :

अनन्तरमनाज्ञातं व्याहृत्यः प्रणवादिकम् ।
 वारुण्यस्तन्तुमत्यश्च तथा तन्त्रं प्रयोजयेत् ॥
 इमं मे वरुणेत्यादि चतस्रो वारुणीर्विदुः ।
 तन्तुं तन्वन्नुद्धुध्यस्व त्रयस्त्रिंशत्तन्तुमती ॥

Fol. 27b contains Pithadarbhalakṣaṇas.

No. 14452. आपस्तम्बश्रावणहोमः.
 ĀPASTAMBAŚRĀVAṆAHŌMAḤ.

Pages, 7. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 27b of the MS. described under No. 14447.

Complete.

Similar to the work described under No. 14193 ante

This is laid down for the followers of Āpastamba.

Beginning :

श्रावण्यां पौर्णमास्यां शिष्यैस्सहाचार्यः तीर्थोदकाद्यप्सु स्नात्वा प्राणा-
 नायम्य एवंविशिष्टे शुभे अभ्युदये मुहूर्ते अध्यायोपाकर्म करिष्ये—इति
 सङ्कल्प्य प्राणानायम्य एवंविशिष्टे शुभे अभ्युदये मुहूर्ते अध्यायोपाकर्मङ्गित्वेन
 प्रजापतिं काण्डऋषिमित्यादि नव ऋषीनुद्दिश्य

तण्डुलविरचितस्थण्डिले नव ऋषीन् स्थापयित्वा निवीती भूत्वा प्रजापतिं
 काण्डऋषिमावाहयामि, सोमं काण्डऋषिमावाहयामि ।

End :

इति शिष्यानध्याप्य स्विष्टकृतं च हुत्वा समित्सन्नहनं जुहुयात् ।
 जयादिब्रह्मविसर्जनान्तं कृत्वाभ्युदयिकं कुर्यात् । एवमेवोत्सर्जनं कुर्यात् ॥

Colophon :

इति श्रावणहोमः ।

Foll. 30b and 31a contain Adhyāyōtsarjana.

No. 14453. पुनस्सन्धानपरिषत्प्रायश्चित्तम्.
 PUNASSANDHĀNAPARIṢATPRĀYAŚCITTAM.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 14447.

Complete.

On the expiatory ceremony to be performed as laid down by a learned assembly with a view to make one fit to renew the sacred fire.

Beginning :

एवंविशिष्टे अभ्युदये मुहूर्ते ममौपासनान्तरितप्रभृत्येतत्क्षणपर्यन्तं मध्य
औपासनान्तरितदोषपरिहारद्वारा पुनस्सन्धानं कर्म करिष्यमाणः तदङ्गत्वेन
तदादौ शुद्ध्यर्थं महाजनैस्सह स्वस्तिपुण्याहवाचनं करिष्ये । पुण्याहवचनं कृत्वा

* * *
अशेषे हे परिषत् मदीयविज्ञापनामवधार्य मया समर्पितामिमां यथा-
शक्तिं परिषद्दक्षिणामुक्तदक्षिणामिव स्वीकृत्य मम विच्छिन्नौपासनाग्रेतत्पुन-
स्सन्धानकालपर्यन्तं मध्यवर्तिनि . . मासपरिमितकाले सम्भावितानां पापानां
द्वादशरात्रान्तरितकाले सर्वग्रहणातीतपर्वतारोहणसमुद्रगनद्युत्तरणार्दानां पापा-
नामपनोदकप्रायश्चित्तं निश्चित्य

* * *
प्रायश्चित्ते त्वया सम्यगाचरिते सति त्वया विज्ञापितेभ्यः पापेभ्यो
विमुक्तो भूत्वा पुनस्सन्धानाधिकारी भविष्यसीत्येषा परिषदादिशति ।

End :

विच्छिन्नमग्निं सन्धाय विधाय विधिवत्पुनः ।
सायमारभ्य जुहुयादाहुतीनां चतुष्टयम् ॥
पाण्याहुतिर्द्वादश पक्कपूरिका पक्काहुतिर्वादरिकप्रमाणम् ।
आज्याहुतिर्मिषनिमग्नधारा हुताशनस्योपरि षोडशाङ्गुलम् ॥
सूतकान्तरिते वह्नौ मनो या भूर्भुवस्सुवः ।
मध्ये पर्वणि सम्प्राप्ते पुनस्सन्धानकर्मणि ॥

No. 14454. अन्वारम्भणीप्रयोगः.
ANVĀRAMBHAṆĪPRAYŌGAH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 34b of the MS. described under No. 14447.

Complete.

On the procedure to be observed by one once either on the new moon day or the full moon day prior to the commencement of the daily worship of the sacred fire.

Beginning :

प्रातरौपासनं हुत्वा बरो दक्षिणत आसीनः प्राणानायम्य एवङ्गु—
तिथौ अनया सह आयु—र्थं मम पार्वणस्थालीपाकप्रारम्भाधिकारासिद्ध्यर्थं
तत्राग्निरग्नाविष्णू सरस्वती सरस्वानग्निरभिगिनी च प्रधानदेवता स्विष्टकृदङ्ग-
देवता, ब्रीहि चरुद्रव्येणान्वारम्भणीयेन स्थालीपाकेन सद्यो यक्ष्ये ।
विद्युदसीत्यप उपस्पृश्य पूर्वपरिषेचनं कृत्वा अदितेऽनु(मन्य)स्व—सुव ।
पत्न्यवहन्ति चरुं श्रपयित्वाभिघार्य प्राचीनमुदीचीनं चोद्वास्य प्रतिष्ठितमभि-
घार्यग्नीन्धनाद्याज्यभागान्तेऽन्वारब्धायां सरस्वत्यै स्वाहा ।

End :

वृष्टिरसीत्यप उपस्पृशेत् । वृष्टि—गाम् । ततः ताम्बूलदक्षिणादि
ब्राह्मणसन्तर्पणमाशीर्विचनं नीराजनमिति ॥

Colophon :

इत्यन्वारम्भणीया ॥

No. 14455. स्थालीपाकप्रयोगः.

STHĀLĪPĀKAPRAYŪGAH.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol 35b of the MS. described under No. 14447.

Contains Āguṇyasthālīpāka, Pratipaddhōma Agnihōtrikavidhi and Vibhraṣṭeṣṭi.

Similar to the work described under No. 3867 ante.

Beginning :

प्राणानायम्य एवंविशिष्टे—र्ते अनया नवोढया सहा(यु)ष्यार्थं पौर्ण-
मास्येनाग्रेयेन स्थालीपाकेन श्वो यक्ष्ये । तत्राग्निः प्रधानदेवता, स्विष्टकृदङ्ग-
देवता ब्रीहिमयं चरुद्रव्यम् । अन्यतरास्मिन् काल उपवत्स्यामि, ब्रह्मचर्यं
चरिष्यामीति सङ्कल्प्य, विद्युदसीत्यप उपस्पृश्य, अमावास्यायामप्येवम् । तत्र
अमावास्यायामाग्रेयेन स्थालीपाकेनेति विशेषः ॥

इत्यन्वाधानम् ।

अथ प्रतिपद्धोमः—प्रतिपदि प्रातरौपासनं हुत्वा वधूं दक्षिणतः
उपवेश्य स्वयमुत्तरत आसीनः प्राणानायम्य

* * * *

चरुं श्रपयित्वाभियार्य, अग्नयेस्थालोपाकवत्सर्वं कुर्यात् । अत्र वृषभद-
क्षिणा नास्ति, किन्तु पूर्णपात्रदक्षिणा ।

* * * *

इति प्रतिपद्धोमः ।

तस्याग्निहोत्रिकविधिस्स्यात् । तस्यायं प्रयोगः—चरुं पक्त्वाग्निं परिस्तीर्य
चरुणा सुचं पूरयित्वा भागत्रयं कृत्वा अग्नये स्वाहेति एकभागं हुत्वा तच्छेषमग्नेः
पश्चात् बर्हिष्योषधीभ्य इति निर्मृज्य ।

No. 14456. गर्भाधानम्.

GARBHADHĀNAM.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 37a of the MS. described under No. 14447.

Complete.

Slightly different from the work described under No. 3607 ante.

Beginning :

गर्भाधानं पुंसुवनं तीमन्तो जातकर्म च ।

नामान्नप्राशनं चौलं मौञ्जीव्रतचतुष्टयम् ॥

गोदानाख्यं स्नातकञ्च विवाहः पैतृमेधिकम् ।

इत्येतानि षोडश कर्माणि । अथ गर्भाधानमुच्यते—ऋतुस्नातायां
भार्यायां शुभेऽहनि दम्पती मङ्गलस्नातौ भूत्वा रात्रौ पुण्याहवाचनं कृत्वा
पत्नीं दक्षिणत उपवेश्य स्वयमुत्तरत आसीनः प्राणानायम्य एवं विशिष्टेऽ
भ्युदयेमुहूर्ते मम धर्मपत्न्याः प्रथमगर्भसंस्कारद्वारा सर्वगर्भसंस्कारार्थं गर्भाधानं
करिष्य इति तद्वक्तुं कुर्यात् ।

End :

अस्मद्रूपं तिलान् दर्भानपसव्यं तथैव च ।

नान्दीश्राद्धे त्यजेद्विद्वान्दृष्टपूर्वन्तु सर्वदा ॥ इति

यदि जीवत्पितृकस्स्यात्तर्हि पितुः प्रपितामह्य(हा)दीनुद्दिश्य कुर्यात् । तथा
ए(ये)भ्य एव पिता दद्यात्तेभ्यो दद्यात्सपुत्र(कः) इति ॥

Colophon :

इति गर्भाधानम् ॥

No. 14457. पुंसवनसीमन्तप्रयोगः.

PUMSAVANASĪMANTAPRAYŪGAH.

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 38b of the MS. described under No. 14447.

Complete.

Similar to the work described under No. 3685 ante ; as laid down by Bōdhāyana.

Beginning :

अथ पुंसवनमुच्यते—

प (पुंसवनं) शुभलग्ने पुण्यनक्षत्रे ज्योतिर्विदुक्तपुण्य-
नक्षत्रे वा सीमन्तेन सह कुर्यात् । व्यक्ते गर्भे

ततस्समुद्घर्ते * पुंसवनमसीत्यनेन यजुषा पत्न्या दक्षिणे नासिकाच्छिद्रे रसं
निनयेत् । पत्नी तं रसं गर्भपर्यन्तं गिरति । अभिष्टाहामिति पञ्चभिर्मन्त्रैस्त्रिः
प्रोक्ष्यात्मसमारोपणं कुर्यात् । कर्मणः पुण्याहं वाचयित्वाभ्युदयिक्रं कुर्या-
दित्याह भगवान् बोधायनः । सीमन्तोन्नयनं प्रथमे गर्भे चतुर्थे मासि
षष्ठेऽष्टमे वा पत्न्याः सीमन्तोन्नयनं कर्म करिष्य इति सङ्कल्प्य ।

End :

नक्षत्रोदयपर्यन्तं दम्पती मौनीभूत्वाथ नक्षत्रोदये सति प्राचीमुदीचीं
वा दिशमुपनिष्क्रम्य वत्समन्वारम्य व्याहती[भि]श्च जपित्वा वाचं विसृजेत् ।

यस्य भार्याद्वयं वापि बह्व्यो वा यस्य यत्नतः ।

सीमन्तं सवनञ्चैव संसृष्टाग्रीं विधीयते ॥

No. 14458. व्रतचतुष्टयम्.

VRATACATUṢṬAYAM.

Pages, 13. Lines, 7 on a page

Begins on fol. 41a of the MS. described under No. 14447.

Complete ; as laid down by Āpastamba.

Similar to the work described under No. 14165 ante.

Beginning :

व्रतानामुदयनपूर्वपक्षाहःपुण्याहेषूपक्रमः ।

आचार्यः कुमारस्योत्तरत आसीनः कृतप्राणायामः इमं प्राजापत्यव्रतेन
कर्मणा संस्करिष्य इति सङ्कल्प्य तूष्णीं केशान् वापयित्वा महापगाप्सु स्नात्वा

पवित्रपाणिः निवीती षडृषीन् समभ्यर्च्यन्ते तर्पयेत् । प्रजापतिं काण्डर्षिं
तर्पयामि, सांहितीर्देवता उपनि—मि, याज्ञिकीर्देव—तर्पयामि, वारुणीर्देवता
उप—मि, ब्रह्माणं स्व—मि, सदस्पतिमिति माणवको वार्यञ्जलिभिरक्षताभिश्च
सन्तर्प्य ।

End :

वैश्वदेवकाण्डमध्यापयेदुत्सर्जनमपि पूर्ववत् । अग्रे व्रतपते काण्डर्षिभ्यः
वैश्वदेवव्रतमचारिषम् । तदशकं तन्मे राधीति विशेषः ॥
व्रतेषु हि चतुर्वेषु विधिवत्पूजयेदृषीन् ।
(सन्तर्प्य) वार्यञ्जलिभिरेतांस्तान्पूजयेदृषीन् ॥

No. 14459. धर्मशास्त्रवचनानि.

DHARMAŚĀSTRĀVACANĀNI.

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 14447.

A collection of stanzas taken from works on Dharmaśāstra and dealing with different topics such as the undesirability of receiving certain gifts, etc.

Beginning :

मृतान्नं मृतशय्या च नग्रप्रच्छादनं तथा ।
उत्क्रान्तिं कालपुरुषं[ञ्च] न भूयः पुरुषो भवेत् ॥
वेपस्करं गृहं मेघीमुत्क्रान्तिप्रतिरूपकम् ।
कुरुक्षेत्रे च यद्दानमुपरागे च भोजनम् ॥
कृष्णाजिनं हयं शय्यां गजमश्वतरं तथा ।
लवणं द्विमुखीं धेनुं गृहीत्वा न पुनर्भवेत् ॥

End :

भानुवारे दिवा रात्रौ मन्दवारे तथैव च ।
दिवा कपित्थच्छायायां रात्रौ बोधिशमीषु च ॥
धात्रीफले च सप्तम्यामलक्ष्मीर्वसते(ति) ध्रुवम् ।
प्रज्ञाप्रतापलक्ष्मीहं सदैतद्वर्जयेन्निशि ।
आमलक्याः फलं चैव जम्बीरं तिन्त्रिणीफलम् ।
आयुर्हानिर्यशोहानिः प्रजाहानिस्तथैव च ॥
यस्मात्तस्मान्नरो रात्रौ सदा धात्रीर्विवर्जयेत् ।

No. 14460. वरमङ्गलाष्टकम्.
VARAMAṄGALĀṢṬAKAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Same work as that described under No. 11333 ante.

No. 14461. काकमैथुनदर्शनशान्तिः.
KĀKAMAITHUNADARŚANĀŚĀNTIḤ.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 36a of the MS. described under No. 1165.

Complete; as found in the Pādmapurāṇa.

Deals with the Śānti to be performed to avert the evil effects supposed to arise if a man happens to see the crows when they pair together.

Beginning :

उत्पाता द्वि(वि)विधा लोका(के) दिव्यभौमान्तरिक्षजाः ।

नराणामशुमार्थाय दृश्यन्तेऽद्य कलौ युगे ॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ यः पश्येत्काकमैथुनम् ।

स नरो मृत्युमाप्नोति ॥

तद्दोषशमनार्थाय शान्तिकर्म समारभेत् ।

निष्कमात्रसुवर्णेन कुर्यान्मृत्युञ्जयं शिवम् ॥

End :

अकालमृत्युं निर्जित्य दीर्घमायुरवामुयात् ।

एवं यः कुरुते सम्यक् तेन दोषः प्रमुच्यते ॥

Colophon :

इति पाद्मे पुराणे काकमैथुनदर्शनशान्तिस्समाप्ता ॥

No. 14462. महोत्पातशान्तिः.
MAHŌTPĀTAŚĀNTIḤ.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 36a of the MS. described under No. 1165.

Almost complete.

Deals with the Śānti to be performed to avert the evil effects supposed to arise when a pigeon sits on the house or on a pillar inside it, when crows pair together therein or enter the house or when a dog, an owl or a vulture ascends or sits on a house or makes an ominous noise like weeping.

Beginning :

शौनक उवाच—

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ ज्ञानराशे तपोधन ।
 पृच्छामि त्वामहं ब्रह्मन् वसिष्ठ मुनिसत्तम ॥
 उत्पाता विविधा लोके संभवन्ति कलौ युगे ।
 भौमान्तरिक्षदिव्याश्च भव्यारिष्टप्रसूचकाः ॥
 मनुष्या भाग्यहीनाश्च ज्ञानवेला(लेश)विवर्जिताः ।
 सर्वलोकोपकारार्थं तत्प्रकारं वदस्व भोः ॥

वसिष्ठ उवाच—

यदि गेहेऽथवा स्तम्भे कपोतारोहणं भवेत् ।
 काकयोः क्रीडनञ्चाहि गृहद्वारप्रवेशनम् ॥
 शुनकोरुकगृध्रादिपिङ्गलानां गृहोपरि ।
 पतनञ्च तथा तेषां रोदनञ्च दिवा निशि ॥
 * * *
 तदुत्थदोषशान्त्यर्थं कुर्याच्छान्तिं विधानतः ।
 स्थले गोमयसंलिप्ते सिततण्डुलसंस्थुले ॥
 लिखित्वाष्टदलं पद्मं तस्मिन्निन्द्रं प्रपूजयेत् ।
 हैममैरावतारूढं भूषणैरुपशोभितम् ॥

End :

अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि सर्वोपद्रवशान्तये ।
 ऐरावतगजारूढं वज्रपाणिं चतुर्भुजम् ॥
 * * *
 आरूढो वारु(र)णेन्द्रं दशशतनयनः शाङ्खलश्यामलाङ्गो
 वर्मी वीरः पताकी प्रतिमठदहनः प्रज्वलद्वज्रपाणिः ।
 दोर्भिर्दिव्यायुधैर्बहुभिरपि महान् देवसेनाधिनाथो
 दत्त्वाभीष्टानि शश्वत्परिहृतदुरितः पातु विश्वं महेन्द्रः ॥

No. 14463. जातवेदसदुर्गान्यासः.

JĀTAVĒDASADURGĀNYĀSAḤ.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 38b of the MS. described under No. 1165.
 Complete.

Similar to the work described under No. 6310 ante.

Beginning :

जातवेदस इत्यस्य मन्त्रस्य ऋषिः, जातवेदामिदुर्गा देवता,
त्रिष्टुप् छन्दः, दुर्गाप्रीत्यर्थे विनियोगः, न्यासः—जातः—शिखायां, वेदसे
—ललाटे, सुन—नेत्रयोः, वाम—कर्णयोः, सोमम्—नासिकायाम् । अराती-
ओष्ठयोः, यतोनि—दन्तेन्धु, दहाति—बाह्वोः, वेदः—जिह्वायाम् ।

End :

अति—जङ्घयोः, अग्निः—पादयोः, रक्षतु जातवेदाः—सर्वाङ्गेषु नमः
ब्रह्मतेजो ज्वालामालिनि सर्वाङ्गेषु देवि स्वाहा ॥

No. 14464. नामत्रयविधानम्.

NĀMATRYAVIDHĀNAM.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 38b of the MS. described under No. 1165.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 6470 ante; but wants the end.

Beginning :

नामत्रयविधानम्—

अस्य श्रीनामत्रयमन्त्रस्य नृचिदायत्री छन्दः, पराशरव्यासनारदामहा-
ऋषयः, श्रीमहावराहो देवता; अच्युत इति बीजम्, अनन्त इति शक्तिः,
गोविन्द इति कीलकं, मम सर्वारिष्टशान्त्यर्थे विनियोगः ।

End :

श्रीभूमिसहितं देव मुद्यदादित्यसन्निभम् ।

प्रातरुद्यत्सहस्रांशुमण्डलोपरिसंस्थितम् ॥

अभयं वरदं चैव प्रयच्छन्तु(न्तं) मुदान्वितम् ।

एवं ध्यात्वा हरिं नित्यं परब्रह्मस्वरूपिणम् ॥

No. 14465. त्र्यम्बकमन्त्रः.

TRYĀMBAKAMANTRAḤ.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 39a of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Same work as that described under Nos. 2351 and 6352 ante.

No 14466. सर्वशान्तिकर्मप्रकारः.
SARVAŚĀNTIKARMAPRAKĀRAH.

Pages, 12. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 4^a of the MS. described under No. 1165.

Complete ; as found in Gārgyasamhitā.

Deals with all the Śāntis to be performed to avert the evil effects which are supposed to arise from various causes.

Beginning :

शौनक उवाच —

सम्यग्ज्ञातागमार्थस्त्वं वृद्धगार्ग्य मुनीश्वर ।
शान्तिकर्मप्रकारं च समस्तं ब्रूहि तत्त्वतः ॥

गार्ग्य (उवाच) —

साधु शौनक यत्नेन भाषितं यच्चयानघ ।
ग्रहशान्तिप्रकारं च नानाशास्त्रसमुद्भवम् ॥
सर्वानुष्ठार(न)सारं च सर्वोपद्रवनाशनम् ।
वक्ष्यामि मुनिशार्दूल शृणु सर्वं सविस्तरम् ॥
लोके सर्वमनुष्याणामायान्ति बहुधापदः ।
सर्वोपद्रवमूलं हि ग्रह एव न संशयः ॥

End :

एतदुक्त्वा(त्पा)तदोषेण मुच्यते नात्र संशयः ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं लभते नात्र संशयः ॥
उत्पातशान्तिकाध्याये वृद्धगार्ग्येण धीमता ।
प्रोक्ता शान्तिरियं पूर्वमुत्पातस्य विनाशिनी ॥

Colophon :

इति गार्ग्यसंहितायां क्रूरपक्षिशान्तिः ॥

No. 14467. कपोतशान्तिः.
KAPŌTAŚĀNTIḤ.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 45b of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Slightly different from the work described under No. 14462 ante

Beginning :

आरोहयेद्गृहं यस्य कपोतो हि प्रतीयते ।
 स्थानहानिर्भयं तत्र यद्दानार्थपरम्परा ॥
 दोषाय धनिनां गेहे दरिद्राणां शिवाय च
 पूर्णगेहेऽर्थनाशाय शून्यगेहे समृद्धये ॥
 तत्र शान्तिः प्रकर्तव्या जपहोमविधानतः ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत्तत्र स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ॥

End:

ब्राह्मणान् भोजयेद्भूरिशान्तिवाचनपूर्वकम् ।
 एवं यः कुरुते सम्यक् तस्माद्दोषापनुत्तये ॥

इति कपोतशान्तिः ॥

वासिष्ठे—

कपोतो विशति ग्राममारोहेद्वा विशेद्गृहम् ।
 श्येनगृध्रादयो वापि तच्छून्यपि(म)चिराद्भवेत् ॥
 * * *
 देवाः कपोत इत्यादि जप्तव्याः पञ्चभिर्जनैः ॥
 सुदेव इति मन्त्रेण जपे चासति कल्पयेत् ॥

No 14468. कदलीशान्तिः.

KADALISĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 4^a of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Slightly different from the work described under No. 3263 ante.

Beginning :

कैलासशिखरे रम्ये सिंहासनगतं शिवम् ।
 नारदः प्राञ्जलिर्भूत्वा नमः कृत्वाह शङ्करम् ॥
 ब्रूहि सर्वेश कदलीशान्ति मे पृच्छतः प्रभो ।
 त्वत्तः सर्वा श्रुता शान्तिमु(रु)त्पातानां मया प्रभो ॥
 इमामेव महादेव कृपया वक्तुमर्हसि ।
 इति पृच्छो(ष्टो) नारदेन हृष्टः प्राह तदा विभुः ॥

शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि सम्यक् प्रशस्त्वया कृतः ।
 नूतनोद्यानकदली प्रतीची . . . दणा प्रति ॥
 पुन्नाग[1] नारिकेलानां नैव शान्तिर्द्विजोत्तम ।
 इन्द्रे तु पुत्रलाभः स्यात् गृहदाहो हुताशने ॥

End :

कारयेद्गृहहोमं च जापयेच्च द्विजोत्तमैः ।
 अभिषेकं ततः कुर्यात्कारयेन्मन्त्रपूर्वकम् ॥

Colophon :

इति कदलीशान्तिः ॥

No. 14469. उत्पलशान्तिः.

UTPALAŚĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 46b of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Deals with the Śānti to be performed to avert the evil effects supposed to arise when mushrooms grow in a house or in the garden attached to it.

Beginning :

उत्पलस्थाने खननं कृत्वा शुभमृत्तिकाभिः पूरयेत् । तत्स्वरूपाश्च
 ख(म)ण्डलाकृतिः, चक्राकृतिः, दण्डकाकृतिः, हस्ताकारः । अथवा एकहस्तं,
 द्विहस्तं वा त्रिहस्तं वा । एकद्वित्रिचतुःपञ्चाङ्गुलं वा । अथोर्ध्वनानाविकृति-
 प्रकृतिः । प्रकारमुत्पलदोषेण एकमास एवार्थभयं, प्राणहानिः, शत्रुभयं
 विन्दन्ति । अर्घं वा स्थाननाशो भवति । कर्तव्यमुत्पलरूपमृत्युदेवताप्रतिमां
 सुवर्णमात्रेण महारजतेन कुर्यात् । ततो वस्त्रद्वयं तदङ्गे कर्तव्यम् । ?

End :

होमानन्तरं यजमानः पूर्णाहुतिं जुहुयात् । तत आचार्यमभ्यर्च्य सवस्त्रां
 प्रतिमां सालङ्कारां पयस्विनीं(स)वत्सां गां च दद्यात् । तच्छान्त्यर्थं
 शतब्राह्मणभोजनं कुर्यात् ॥

Colophon :

इति उत्पलशान्तिः समाप्ता ॥

No. 14470. उत्पलशान्तिः.

UTPALAŚĀNTIḤ.

Pages. 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Similar to the work described under the previous number.

Beginning :

गृहेष्वारामगे दण्डिस्थलेषु तुरगेषु च ।
 क्षेत्रेषु द्व्यष्टगेहानामुत्पलो जायते यदि ॥
 तत्तद्द्रव्यविनाशाय द(रि)द्रि(द्य)मपि जायते ।
 मध्ये सुखविनाशाय पूर्वे मित्रसमागमः ॥
 आग्नेये धनलाभं च दक्षिणे मृत्युमाप्नुयात् ।
 * * *
 तद्दोषपरिहारार्थं शान्तिकर्म समाचरेत् ।
 कर्षमात्रसुवर्णेन तदर्धार्धेन वा पुनः ॥
 रूपं च प्रतिमां कुर्यात्तत्तन्मन्त्रप्रकाशकैः ।
 आवाहनादि सर्वाणि तत्तन्मन्त्रैर्नियोजयेत् ॥

End :

ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चाच्छतमर्धं तदर्धकम् ।
 स्वस्तिवाचं शान्तिपाठं तद्दोषहरणाय च ॥
 एवं (यः) कुरुते शान्तिं सर्वदोषान् विनश्यति (नाशयेत्) ।
 दीर्घमायुश्च सततं सर्वबाधाविकृ(न्तनम्) ॥

Colophon :

इति दैवज्ञवल्लभे सर्वशान्तिपटले उत्पलशान्तिस्त्रयोविंशोऽध्यायः ॥
 श्रीरभिर्बन्धुनाशाय वित्तहानिर्महद्यशः ।
 बन्धुलाभः पुत्रहानिः भूचिन्ता महती गदा ।
 प्रागादिदिग्विभागानामुत्पलस्य फलं भवेत् ॥

No. 14471. शिथिलीशान्तिकल्पविधिः.

ŚITHILĪŚĀNTIKALPAVIDHIḤ.

Pages. 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 48a of the MS. described under No. 1165.

Complete as laid down by Bōdhāyana

Similar to the work described under No. 3445 ante.

Beginning :

शिथिल्याश्च सदा सर्वमेतदिवा प्रकरयेत् । ?

ब्रह्माण्डतत्त्वतं वन्देषु सम्यक् (?) क्रमेण गेहे शिथिलीफलानि ।

सुखं विनाशं सुहृदागमं च प्रियं च पुष्टिं च तथार्थसिद्धिम् ॥

स्त्रियो विनाशं मुखमप्यनूतं भयं च राज्ञां प्रभवेदधस्तात् ।

*

*

*

*

तत्र प्रजानां व्याधिभिः पीडा भवति च ध्रुवम् ।

सप्ताहाभ्यन्तरे कुर्याच्छान्तिकर्म शुभार्थिनः ॥

अत ऊर्ध्वं न कुर्वीत शोकरोगभयप्रदम् ।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शान्तिं कुर्याद्विधानतः ॥

शिथिलीकरूपविधिः ।

अथ शिथिलीकरूपविधिं व्याख्यास्यामः—

गृहसीमचतुष्टयने विदिक्षु स्थानेन दशाहाभ्यन्तरे शान्तिं कुर्याच्छुभं भवति । अत ऊर्ध्वं प्रजाव्याधिर्भवति । सुवर्णेन शिथिलीप्रतिमां कृत्वा मृत्युरूपं संस्मरन् मृत्युमावाहयामीत्यावाहनादि षोडशोपचारान् कृत्वा ।

End :

शतब्राह्मणभोजनं च कुर्यादित्याह भगवान् बोधायनः ।

मृत्युरूपशिथिलीप्रतिमापूजामावाहनादिषोडशोपचारपूजां कुर्यात् ।

ईश्वरस्य त्रियम्बकमन्त्रेण पूजाभिषेकं कुर्यात् ॥

No. 14472. अमावास्याप्रसूतिशान्तिः.

AMĀVĀSYĀPRASŪTISĀNTIḤ.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 48b of the MS described under No. 1165.

Complete ; as laid down by Śaunaka.

Slightly different from the work described under No. 3273 ante.

Beginning :

शौनकः—

भगवन् सर्वधर्मज्ञ वृद्धगार्ग्य मुनीश्वर ।

त्वत्तः सर्वं सुविज्ञातं द्र(प्र)ष्टव्यं मम विद्यते ॥

अमावास्याप्रसूतेश्च फलं शान्तिं विधिं मुने ।

तत्सर्वं ब्रूहि भगवन् मर्त्यानां हितकाम्यया ॥

गार्ग्यः —

अमावास्याप्रसूतिः स्याद्यस्य भार्या वसु(पशु)स्तदा
तदा कर्तुर्भवेन्नाशो यद्वानर्थपरम्परा ॥
विना भार्या प्रसूतां च परित्यागो विधीयते ।
नक्षत्रतिथिलग्नानां गण्डेषु त्रिविधेषु च ॥
त्रिविधो गण्डदोषो यः कर्तुस्तस्य भवेन्मुने ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शान्तिं कुर्याज्जि(जी)विषुः ॥
शान्तिप्रकारं वक्ष्यामि शृणु शौनक यत्नतः ।
अमावास्यादिदेवानां पितॄणां प्रतिमां शुभाम् ॥
सुवर्णेन प्रकुर्वीत वित्तशाठ्यविवर्जितः ।

End :

अङ्गिरसो नः पितर इति मन्त्रेण ततो मृत्युञ्जयेन हुत्वा तिलव्रीहिव्या-
हतिहोमं तिलाक्षतदूर्वाहोमं कृत्वा जयादिपरिषेचनान्तं कृत्वा पत्नीशिशुसमो-
(सु)पेतयजमानस्याभिषेकं कुर्युः । प्रतिमादानं कृत्वा ब्राह्मणभोजनं दद्यात् ॥

No. 14473. मूलाश्लेषाजननशान्तिः.

MŪLĀŚLEṢĀJANANĀŚĀNTIḤ.

Pages, 17. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 51a of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Deals with the śānti to be performed to avert the evil effects supposed to arise when a child is born when the moon is in the constellation Mūlā or Āślēṣa.

Beginning :

मन्दिरस्थं सुखासीनं सुखासीनं पितामहम् । ?

प्रणम्य शिरसा भक्त्या नारदः परिपृच्छति ॥

मूलर्क्षे गण्डदोषस्य आश्लेषायास्तथैव च ।

तयोर्गण्डेषु जातानां शान्तिकर्म विधीयते ॥

श्रोतुमिच्छामि तद्धेन वद मे कमलासन ।

नारदस्य वचः श्रुत्वा प्रत्युवाच पितामहः ॥

* * * *

मूलादौ च द्विघटिका ज्येष्ठान्ते च तथैव च ;

अभुक्तमिति तज्ज्ञेयं तत्र जातं शिशुं त्यजेत् ॥
 अभुक्तजातपुत्र(स्य) दर्शनं वर्जयेत्पिता ।
 यदि दर्शनतो मृत्युः षण्मासाभ्यन्तरे भवेत् ॥

End :

भुञ्जीत स्वजनैस्सार्धं प्रसन्नो हृष्टमानसः ।
 अनेन विधिना शान्तिं कुर्यात्सम्यग्विधानतः ॥
 आयुरारोग्यवृद्ध्यर्थं तुष्टिं पुष्टिं विवर्धयेत् ।
 सर्वशान्तिकरं पुण्यं सर्वसौख्यं च जायते ॥

Colophon :

इति पैतामहे योतिश्शास्त्रे दशसाहस्र्यां संहितायां मूलश्लेषविधिर्नाम
 शान्तिकर्म तृतीयोऽध्यायः ॥

No. 14474. ज्येष्ठानक्षत्रजननशान्तिः.

JYĒṢṬHĀNAKṢATRAJANANĀŚĀNTIḤ.

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 1165.

Complete as laid down by Vṛddhagārgya.

Same work as that described under No. 3316 ante; but with slight difference in the beginning and the end and colophon :

इति वृद्धगार्ग्यसंहितायां ज्येष्ठानक्षत्रशान्तिः समाप्ता ॥

No. 14475. सदन्तजननशान्तिः.

SADANTA JANANĀŚĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 61a of the MS. described under No. 1165.

Complete as found in Viṣṇudharmōttara.

Similar to the work described under No. 14439 ante.

Beginning :

दन्तजन्मनि बालानां लक्षणं तन्निबोध मे ।
 उपरि प्रथमं यस्य जायते च शिशोर्द्विज ॥
 दन्तैर्वा सह यस्य स्याज्जन्म भार्गव सत्तम ।
 मातरं पितरं चाथ खादेच्चात्मानमेव च ॥
 तत्र शान्तिं प्रवक्ष्यामि तन्मे निगदते शृणु ।

*

*

*

*

सूत्रोक्तैर्ब्राह्मणानां च तैश्च कुर्याच्च पूजनम् ।
पूज्याश्चाविधवा नार्यो ब्राह्मणास्सुहृदस्तथा ॥

Colophon :

इति विष्णुधर्मोत्तरे सदन्तोत्पत्तिशान्तिः ॥

अथोत्तरदन्तानां पूर्वजननशान्तिः—

सदन्तो जायते यस्तु दन्ताः प्रागस्य चोदिताः

कुर्वीत तस्मिन्नुत्पाते शान्तिं तांच द्विजातये ॥

End :

शिरस्स्नातं शुचिं कृत्वा कुमारमथ वाम्बरम् ।

गजमारोपयित्वा तु शान्तिकर्म णि(च) कारयेत् ॥

ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चाद्यथास्वं मधुसर्पिषा ।

तेनास्य शान्तिर्भवति बलमायुश्च वर्धते ॥

No. 14476. दन्तजननशान्तिः.

DANTAJANANASĀNTIḤ

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 62a of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Slightly different from the work described under the previous number.

Beginning :

यस्योत्तरे शिशु(शो)र्जाता दन्ताः पूर्वं तदा कुलम् ।

विनाशयति तत् क्षिप्रं शान्तिकर्म समाचरेत् ॥

प्रथमे मासि दन्तानामुत्पत्तिः कुलहानिदा ।

तत्रोत्तरेषामुत्पत्तिः कुलं कल्पयति क्षयम् ॥

End :

एवं कृते न सन्देहः स दोषोऽपि प्रणश्यति ।

कुलं च वर्धते तस्य दीर्घमायुश्च विन्दति ॥

Colophon :

इति दन्तजननशान्तिः समाप्ता ॥

No. 14477. चतुर्दशीप्रसूतिशान्तिः.

CATURDĀŚĪPRASŪTISĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 62b of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Similar to the work described under No. 3310 ante. Taken from Agastyasambhitā.

Beginning :

सिनीवालीप्रसूता स्याद्यस्य भार्या पशुस्तथा ।
 महिष्यश्च गजाश्चैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥
 एकोऽनङ्गान् त्रयो गावः सप्ताश्वा नव दन्तिनः ।
 नष्टेन्दौ च प्रसूताश्चेद्धरेयुस्सर्वदा श्रियम् ॥
 दर्शे प्रसूतान्यन्यानि तत्प्रासादोपजीविनः ।
 पशुपक्षिमृगादीनि वर्जयेयुः प्रयत्नतः ॥
 कुहूप्रसूतिरस्यर्थं सर्वदा दोषदायिनी ।
 यस्याः प्रसूतिरेतेषां तस्या यूथं विनश्यति ॥
 सर्वगण्डसमस्तस्मिन् दोषस्तद्वत्फलं लभेत् ।
 कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतिर्यदि जायते ॥
 चतुर्दश्यास्तु षड्भागे प्रथमे दोषवर्जितः ।
 द्वितीये पितरं हन्ति तृतीये मातरं तथा ॥

End :

तिलदानं वस्त्रदानं कुर्याद्दोषापनुत्तये ।
 सर्वशान्तिर्भवेत्तस्य अगस्त्यवचनं यथा ॥

Colophon :

इत्यगस्त्यसंहितायां चतुर्दशीगण्डशान्तिः समाप्ता ॥
 चतुर्दश्यधिदेवता ईश्वरमृत्युञ्जयरुद्रो देवता वृषारूढः श्वेतवर्णः चतुर्भुजः
 स्त्रिशूलवज्रवरदाभयपाणिः । नमश्शङ्करायेति पूजामन्त्रः । त्र्यम्बकमिति वा ।
 चन्दनकर्पूरगन्धधुतूरपुष्पं दशाङ्गधूपं चतुर्विधान्नं नैवेद्यम् ॥

No. 14478. कुहूशान्तिः.

KUHŪŚĀNTIḤ.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 63a of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Similar to the work described under No. 3272 ante. This work is taken from Kātyāyanasambhitā.

Beginning :

कुहूशान्तिं प्रवक्ष्यामि सिनीवाली(ल्या)स्तथैव च ।
 गृहस्य पूर्वदिग्भागे उत्तरस्यामथापि वा ॥
 मण्टपे वा गृहे वापि पूजास्थानं प्रकल्पयेत् ।
 गोमयेनोपलिप्याथ रङ्गवल्लीः विनिक्षिपेत् ॥
 पुण्याहं वाचयित्वा तु सुसङ्कल्प्य यथाविधि ।
 आचार्यं वरयेद्धीमान् ब्रह्माणमृत्विजस्तथा ॥
 तान् सर्वान् सम्यगभ्यर्च्य वस्त्रमाल्यविभूषणैः ।
 स्थण्डिलं चतुरश्रं च तण्डुलैः कारयेत्ततः ॥
 पद्ममष्टदलं कृत्वा तन्मध्ये स्थापयेद्भविम् ।
 सुवर्णेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः ॥

End :

दद्याद्गोभूहिरण्यदि द्विजेभ्यो विधिपूर्वकम् ।
 इत्थं पूजादि कृत्वाथ सुकृतं लब्धवानथ ॥
 विप्रान् सर्वान् समाराध्य भोजयेत्पायसादिभिः ।
 स्वयं बन्धुजनैस्तार्धं भुञ्जीयात्प्रीतमानसः ॥

Colophon :

इति कात्यायनसंहितायां कुहूसिनीवालीशान्तिः ॥

No. 14479. ग्रहणजननशान्तिः.
 GRAHANAJANANASĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 65a of the MS. described under No. 1165.

Complete as laid down by Śaunaka.

Same work as that described under No. 3297 ante; but with some slight difference.

इति शौनककृते ग्रहणजननशान्तिः समाप्ता ॥

No. 14480. गोमहिष्यादिद्वित्रिवत्सप्रसूतिशान्तिः.

GÔMAHIṢYĀDIDVITRIVATSAPRASŪTISĀNTIḤ.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 66a of the MS. described under No. 1165.

Complete ; as laid down by Garga.

Deals with the śānti to be performed for averting the evil effects supposed to arise, when a mare or a cow or a she-buffalo gives birth to two young ones.

Beginning :

मन्दिरे यस्य तुरगी गौर्वा कासारिकास्तथा ।
द्वित्रिवत्साः प्रजायन्ते तस्य दोषकरं महत् ॥
तां शत्रुग्रामे संवेश्य कुर्याद्राजा विचक्षणः ।
शत्रुनाशो भवेदाशु कुलं तस्य विनश्यति ॥
न परित्यजते मर्त्यो मोहादज्ञानताऽपि वा ।
तत्प्रजा नाशयेदाशु स्वामिनो हानिकारणम् ॥
गृहक्षेत्रधनं धान्यं ह्रस्वमायाति शीघ्रतः ।
तद्यूथरक्षणार्थं च शान्तिकर्म समारभेत् ॥
अथ शान्तिं प्रवक्ष्यामि गर्गशास्त्रानुसारतः ।

End :

आयुरारोग्यमैश्वर्यं सर्वदा वृद्धिमेति वै ।
कदाचित्तस्य दोषाश्च न स्पृशन्ति तमन्वहम् ॥
अश्वाभिवृद्धिर्धेनूनां महिषाणां तथैव च ।
पुत्रपौत्रसमायुक्तस्त चिरं सुखमश्नुते ॥

Colophon :

इति उत्तरगर्गोक्तवत्सद्वित्रिप्रसूतिशान्तिः समाप्ता ॥

No. 14481. आज्यादिदानविधिः.

AJYĀDIDĀNAVIDHIḤ.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 67a of the MS. described under No. 1165.

On the making of gifts of ghee, sesamum seeds, jaggery, etc., to Brahmins with a view to avert certain evils.

Beginning :

कांस्यपात्रं सप्तपलं घृतं कुडपसंमितम् ।
हेम सम्पूर्त्य(र्य) निष्कं स्यादाज्यावेक्षणलक्षणम् ॥

कामधेनोस्समुद्भूतं सर्वक्रतुषु संस्थितम् ।
 देवानामाज्यमाहारमतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥
 अनेन प्रार्थयेत्पात्रं घृतं स्वर्णेन संयुतम् ।

End :

निर्वर्तसंमिता भूमिः द्रोणत्रयमितास्तिलाः ।
 सुवर्णं निष्कमात्रं स्यात् आज्यं संप्रस्थमात्रकम् ॥
 मृदुवर्तिद्वयं चैव गुडं च पलषट्कम् ।
 सार्धस्वारिद्वयं चैव ब्रीहयः परिकीर्तिताः ॥
 निष्कत्रयमितं कांस्य सार्धस्वारितम् ।
 अभावे सर्वधान्यानां सुवर्णं तत्र कारयेत् ॥

No. 14482. रजस्वलाशान्तिः.
RAJASVALĀŚĀNTIḤ.

Pages, 9. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 67b of the MS. described under No. 1165.

Complete.

Regarding the śānti to be performed for averting the evil consequences conceived to be associated when a girl attains puberty on certain inauspicious days.

Beginning :

करादिपञ्चोत्तरमूलपूषविष्णुत्रयाश्चिज्यविधीन्दुभेषु ।
 आद्यं रजः सौख्यसुतायुरर्थं सौभाग्यवृद्धिं कुरुतेऽङ्गनानाम् ॥
 पूर्वत्रये याम्यभुजङ्गधिष्ण्ये वैधव्यमस्या द्वि(वि)दधीत नूनम् ? ।
 मधेशये(योः) शोकमथादिति(ते)र्भे सा बन्धकीन्द्रेऽप्यनले दरिद्रा ॥
 फल्गुनीप्रथमे पादे(चेत्) दम्पत्योर्मृतिर्भवेत् ।
 द्वितीये पुरुषं हन्ति तृतीये गृहनाशनम् ॥
 चतुर्थे च स्त्रियं हन्ति नारीणां प्रथमार्तवे ।

End :

दक्षिणामितरेषां च इत्वा सर्वान् समाचरेत् ।
 ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात् स्वयं भुञ्जीत भक्तिः ॥
 अनेन विधिना शान्तिं कुर्यात्सम्यक् समाहितः
 सर्वेशान्तिकरं पुण्यं सौख्यं चैव प्रजायते ॥

Colophon :

इति रजस्वलाशान्तिः ॥

No. 14483. स्वनक्षत्रजननशान्तिः.

SVANAKṢATRAJANANASĀNTIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 71b of the MS. described under No. 1165

Complete.

Similar to the work described under No. 3364 ante.

Beginning :

स्वनक्षत्रशान्तिलक्षणम्—

यः पितुर्जन्मनक्षत्रे स दिवा पितृघातकः ।

कन्यकाजननं रात्रौ मातृम मातृघातिका ॥

किंच

यः पुमान् जन्मनक्षत्रे पितुर्मातुश्च सोदरः ।

तस्माच्छान्तिं प्रकुर्वति यथावित्तानुसारतः ॥

पितृजन्मर्क्षकर्मक्षजातः पितृविनासकृत् ।

विशेषाच्चैकपादे च भिन्नपादे शुभावहम् ॥

End :

आचार्यप्रमुखेभ्यश्च ऋत्विज(भ्य)श्च यथाविधि ।

जपहोमार्चनफलं प्रतिगृह्य च सर्वशः ॥

तेषां च दक्षिणां दद्यात् प्रातिमादानपूर्वकम् ।

साङ्गोपाङ्गं तथा कृत्वा कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥

Fol 76a contains Sarpasūkta.

No. 14484. गुरुगीता.

GURUGĪTĀ.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 52a of the MS. described under No. 115.

Incomplete.

Same work as that described under No. 2417 ante; wants the introductory stanzas in the beginning.

Foll. 53b and 54a contain Liṅgaviṣaya (logic) in Telugu language, and a few sentences of Śāṅkarācāryacarita with Telugu meaning.

No. 14485. षडशीतिः, सन्याख्या-
ṢAḌAŚĪTĪH WITH COMMENTARY.

Pages, 7. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 80a of the MS. described under No. 115.

Incomplete.

Same work as that described under No. 3041 ante.

No 14486. चन्द्रमौलिपञ्चकम्.
CANDRAMAULIPAÑCAKAM.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 83b of the MS. described under No. 115.

Complete.

Similar to the work described under No. 10954 ante.

Beginning :

शिवाननारविन्दसन्मिलिन्दभावभाञ्जनो-
विनोदिने दिनेशकोटिकोटिदीप्तनेजसे ।
स्वशि(शै)वलोकसादरावलोकनैकवर्तिने
नमः शिवाय साम्बशङ्कराय चन्द्रमौलये ॥

End :

अखण्डदण्डबाहुदण्डदण्डितोग्रडिण्डिम-
प्रधि धिमि (धिमि) धिमिध्वनिक्रमोत्थताण्डवम् ।
अखण्डवैभवाय नाथमण्डितं चिदम्बरं
नमः शिवाय (साम्बशङ्कराय चन्द्रमौलये) ॥

Fol. 84a contains Āśaucavaṇanavacanas.

No. 14487. अपरविषयवचनानि.
APARAVIṢAYAVACANĀNI

Pages, 31. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 81b of the MS. described under No. 115.

Incomplete.

. Similar to the work described under No. 3047 ante.

Beginning :

स्तुषामृताहे सम्प्राप्ते जीवित्वं श्वशुरीयति (?) ।
प्रपितामहिकभागं भागद्वयपितामहि (?) ॥

प्रेतस्य पित्रोर्यदि जीविता चेत् प्रेतार्घ्यपिण्डश्च विधिं च कुर्यात् ।

द्वौ भागयुक्तौ तु पितामहेन युक्तैकभागः प्रपितामहेन ॥

पितामहं च जीवन्तमतिक्रम्य यथा सुतः ।

अतिक्रम्य द्वये चैव सपिण्डीकरणश्चरेत् ॥

End :

पितृक्षयाहे सम्प्राप्ते सर्वेषान्तर्पणं न हि ।

मातृक्षयाहे सम्प्राप्ते तद्वर्गे तर्पणं न हि ॥

वचनेन पितृमातृविभागेन तर्पणं निषिद्धम् । कथमिति चेत् मैवम्.

No. 14488. भ्रमराम्बिकाष्टकम्.

BHRAMARĀMBIKĀṢṬAKAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 101a of the MS. described under No. 115.

Complete.

Same work as that described under No. 9615 ante, but with some slight difference in the beginning.

Beginning :

श्रीवागीशसुरेन्द्रसेवितपदां सिंहासने संस्थितां

साङ्गैर्भूषणभूषितामभयदामार्द्रैः कटाक्षैः शुभैः ।

ऐंहींश्रीमितिमन्त्रराजवरदामानन्दपूर्णात्मिकां

श्रीशैलभ्रमराम्बिकां शिवसतीं चिन्मात्रमूर्तिं भजे ॥

End :

श्रीशैलभ्रमराम्बिकाष्टकमिदं श्रेयःप्रदं सर्वदा

ऐन्द्रं श्रीकरमप्रमेयवरदं हर्षप्रदं बुद्धिमान् ।

प्राभाते नियतः पठेद्यदि पुमान् मद्भ्रान्तरात्मा शुचिः

सौख्यं कीर्तिमवामुयाच्च विभवं सर्वाश्रयत्वं भजे(त) ॥

No. 14489. त्रिपुरसुन्दर्यष्टकम्.

TRIPURASUNDARYAṢṬAKAM.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 102b of the MS. described under No. 115.

Complete.

Same work as that described under No. 10762 ante.

End :

त्रिमूर्तिजननस्थलीं त्रिभुवनैकनौकारतां
त्रिधामयपरिष्कृतां त्रिगुणरूपपारम्परीम् ॥
त्रिविष्टपपतिव्रतामुचितचक्रमध्वंसिनीं
त्रियम्बककुटुम्बिनि त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये (?) ॥

No. 14490. कृष्णजयन्तीव्रतकल्पः.

KṚṢṆAJAYANTĪVRATAKALPAḤ.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 113a of the MS. described under No. 115.

Complete.

Same work as that described under No. 8270 ante.

No. 14491. जन्माष्टमीव्रतकल्पः.

JANMĀṢṬAMĪVRATAKALPAḤ.

Pages, 12. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 116a of the MS. described, under No. 115.

Complete; as found in the Padmapurāṇa, but wants the beginning.

Similar to the work described under No. 8266 ante.

Beginning :

देवीं स्वच्छाम्बरयुतां सर्वाभरणभूषिताम् ।
श्रीकृष्णवदनाम्भोजे निक्षिप्य कुचमण्डलम् ॥
ततः श्रीमन्संविष्टं गोविन्दं बालकं मुदा ।
लालयन्तीं प्रसन्नास्यां वन्दे हं देवकीं पराम् ॥
अदितिर्देवमातस्त्वं सर्वपापप्रणाशिनि ।
त्वामहं स्थापयिष्यामि प्रसन्ना भव शोभने ॥

श्वर उवाच—

शृणु देवि हितं पुण्यं सर्वलोकहितावहम् ।
अनन्तसुखदं नृणां वक्ष्यामि सुकृतं परम् ॥
कृष्णाष्टमी पुण्यतमा श्रावणे मासि पार्वशे(ति) ।
तस्यामहर्निराहाराज्जन्मेष्टार्थफलं लभेत् (?) ॥

तस्यामुपोषयेद्वक्त्या कृष्णमभ्यर्च्य भक्तिः ।

गङ्गास्नानफलं तेन लभेद्यज्ञायुतं फलम् ॥

End :

यद्व(दि)दं पुण्यमाख्यानं यश्शृणोत्यधनाशनम् ।

तस्य पुत्राश्च पौत्री च वर्धन्ते सुकृतं शुभे ॥

Colophon :

इति श्रीपद्मपुराणे जन्माष्टमीव्रतकल्पं संपूर्णम् ॥

No. 14492. सङ्क्रान्तिनिर्णयः.

SAṆKRĀNTINIRṆAYAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 123a of the MS. described under No. 115.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3149 ante.

Beginning :

सङ्क्रान्तिनिर्णयमाह—

कर्कटो मकरस्सिंहः कुम्भोऽलिवृषभस्तुला ।

मेषः कन्या धनुर्मीनो मिथुनश्चेति संक्रमाः ॥

सङ्क्रात(न्त)य[1]: इति शब्दवचनः । अत्र एषु द्वादशसङ्क्रमेषु मध्ये
आद्यौ सङ्क्रमौ क्रमादक्षिणोत्तरे अयने स्याताम् । तुला दक्षिणविषुवम् । मेष-
उत्तरविषुवमित्यर्थः । तदनन्तराश्रत्वारः कन्याधनुर्मीनमिथुनानि षडशीति-
मुखाः प्रोक्ताः ।

End :

वृषवृश्चिककुम्भेषु सिंहे चैव रवेर्गतिः ।

एतद्विष्णुदं नाम विषुवादधिकं फलैः ॥

इति स्नानादि.

Fol. 123b contains a portion of Lakṣmīpūjā.

No. 14493. नवग्रहाराधनम्.

NAVAGRAHĀRĀDHANAM.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 129a of the MS. described under No. 115.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work described under No. 8639 ante; as laid down by Āśvalāyana.

Beginning :

(आ)वाहयामि ।

बृहस्पतीत्यस्य मन्त्रस्य गृत्समदक्त्राणिः बृहस्पतिर्देवता, त्रिष्टुप् छन्दः ।
बृहस्पतिग्रहाराधने विनियोगः । सौम्य . वर्णद्युतिस्तौम्यमुख स्सिताभः
दन्ताक्षमालाञ्जलिपात्रधारिणी । सिन्धवारुदेशी वरदश्च जीवः
बृहस्पते अति यदर्यो इन्द्र मरुत्व ब्रह्मजिज्ञानं (इह पाहि सोमं) बृहस्पतिं कनकवर्णं
कनकमाल्याम्बरधरं

* * * *

अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहितं बृहस्पतिग्रहमावहयामि ।

End :

भार्गवगोत्रं दैत्यगुरुं किरीटिनं चतुर्भुजमक्षसूत्रकमण्डलुजठाधरं पुष्यनक्ष-
(त्र)जातं पत्नीपुत्रसहितम्.

No. 14494. आपस्तम्बापरप्रयोगः.

ĀPASTAMBĀPARAPRAYŌGAḤ.

Pages, 80. Lines, 7 on a page

Begins on fol 1a of the MS described under No 8231.

Complete.

Similar to the work described under No. 3526 ante.

Beginning :

अथान्त्येष्टिर्वक्ष्यते—

यस्यकस्यचित्पुरुषस्य मरणसंशयेऽग्निः स्नापयित्वा, यथोक्तसर्व-
प्रायश्चित्तं कृत्वा गोमयेनोपलिप्ततिलकुशास्तृतभूमौ दक्षिणाशिरसं निधाय
कर्ता प्राणानायम्य यजमानस्य पितुः कौशिकसगोत्रस्य केशवयशर्मणः सुखेन
प्राणोत्क्रमणार्थमुत्क्रान्तिसंज्ञकगोदानं करिष्य इति सङ्कल्प्य.

* * * *

प्राणानायस्य सङ्कल्प्य एवङ्गुणविशेषणविशिष्टायां पुण्यतिथौ यजमानस्य
पितरं गोत्रं शर्माणं प्रेतं पैतृमेधेन कर्मणा संस्करिष्ये ।

End :

अपुत्रायास्सुवासिन्याः विधवाब्रह्मचारिण(णोः) ।
सपिण्डीकरणादूर्ध्वं न कुर्यादनुमासिकम् ॥
आत्रे भगिन्यै पुत्राय स्वामिने मातुलाय च ।
मित्राय गुरवे श्राद्धमेकोद्दिष्टं न पार्वणम् ॥
अर्वाक् त्रिपक्षालेतस्य पुनर्दहनकर्मणि ।
न कालनियमो ना(ह्य)स्ति न मौढ्यं गुरुशुक्रयोः
एकोद्दिष्टे सपिण्डे च कपित्थं तु विधीयते ।
नारिकेलप्रमाणं तु आब्जिके मासिके तथा ॥
तीर्थे दर्शे च सम्प्राप्ते कुक्कुटाण्डप्रमाणतः ।
महालये गयाश्राद्धे कुर्यादामलकोपमम् ॥

No. 14495. आतुरसन्न्यासविधिः.
ĀTURASANNYĀSAVIDHIḤ.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on foll. 53a and 54a of the MS described under No. 8231
Complete.

Similar to the work described under No. 3542 ante.

Beginning :

अथातुरविधिं व्याख्यास्यामः—

प्रव्रजेद्ब्रह्मचर्येण प्रव्रजेद्वा गृहादथ ।
वनस्थः प्रव्रजेद्विद्वानातुरो वापि दुःखितः ॥
प्राजापत्यं समष्ट्येष्टिं सार्ववेदसदक्षिणाम् ।
आत्मन्यग्निं समारोप्य ब्राह्मणः प्रव्रजेद्गृहात् ॥
आसन्ने संकटे घारे चोरव्याघ्रादिसङ्कुले ।
भयं प्राप्तस्य सन्न्यासः कर्तव्यो मनुरब्रवीत् ॥

*

*

*

*

कृदुम्बं पुत्रदारांश्च वेदाङ्गानि च सर्वशः ।
यज्ञं यज्ञोपवीतं च त्यक्त्वा गूढश्वरेन्मुनिः ॥

Colophon :

इत्यातुरविधिः ॥

End :

ओम् भूः सन्यस्तं मया, ओम् भुवः सन्यस्तं मया, ओम् सुवः सन्यस्तं मयेति ब्रूयात् । ततो दिगम्बरो भूत्वा गृहस्थेन दत्तकौपीनकटि-सूत्रकाषायादिकं धृत्वा तदनन्तरं गृहान्निर्गत्य गच्छेत् । ग्रामाद्बहिर्निर्गत्य यतिकर्माणि कुर्वन् सञ्चरेत् । मृते तु यतिसंस्कारविध्या(धिना) और्ध्वदैहिकं कुर्यात् ॥

No. 14496. अत्यातुरविधिः.

ATYĀTURAVIDHIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 53b of the MS. described under No. 8231.

Complete.

Slightly different from the work described under the previous number.

Beginning :

अत्यातुरविधिरुच्यते—ओं प्रणवस्यान्तर्यामी ऋषिः, गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, ओं भूः अग्न्यात्मने हृदयाय नमः, ओं भुवः प्राजापत्यात्मने शिरसे स्वाहा, ओं सुवः सूर्यात्मने शिखायै वषट्, ओं भूर्भुवस्सुवः ब्रह्मात्मने कवचाय हुम् ।

End :

द्वादशसहस्रं प्रणवजपं कुर्यात्, उत्तरषडङ्गं कुर्यात्, ध्यायेत्, ब्रह्मार्पणमिति ब्रूयात् ॥

No. 14497. यतिसंस्कारप्रयोगः.

YATISAMSKĀRAPRAYŌGAḤ.

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 54b of the MS. described under No. 8231.

Complete ; as laid down by Śaunaka.

Slightly different from the work described under No. 3767 ante.

Beginning:

अथ परमहंसानां संस्कारविधिं व्याख्यास्यामः । पुत्रोऽन्यो वा गृहस्थ-
शिष्यो वा सिद्धिं प्राप्नुवन्तं यतिं निरीक्ष्य, गीतादिजपं कुर्वन्, देवस-
न्निधौ गोमयाम्बुना स्थलं परिमृज्य, पूर्वाभिमुखं यतिं संस्थाप्य ।

End :

आसनगन्धमाल्यादिभिरलंकृत्य तान् भोजयित्वा तदनन्तरं तीर्थं
षोडशोपचारैस्संपूज्य नीराजनं दत्त्वा तीर्थं स्वशिरसि निधाय, नर्तनं
कृत्वा अनुज्ञाप्य तैर्दत्ततीर्थं पीत्वा प्रदक्षिणं कृत्वानुज्ञाप्य विसर्जयेत् ।
इष्टैस्सह भोजयेत् । एवं प्रतिसंवत्सरं सिद्धिदिवसे पार्वणश्राद्धं कृत्वापरेद्यु-
राराधनं कुर्यात् ॥

Colophon :

इति शौनकोक्तयतिसंस्कारविधिस्तमाप्तः ॥

No. 14498. तैत्तिरीयब्राह्मणानुक्रमणिका.

TAITTIRIYABRĀHMAṆĀNUKRAMANĪKĀ.

Pages, 35. Lines, 7 on a page.

Begins on foll. 61a and 72a of the MS. described under No. 8231.

Contains, in the reverse order, the initial passages of the various
Pañcāsats in the first, second (one to three Praśnas) and the third
Aṣṭakas of the Kṛṣṇa Yajurveda Brāhmaṇa.

Beginning:

तेन सोऽस्याभीष्टः प्रीतः । पशून्वैतेन स्पृणोति । तामात्मनोऽधि-
निर्मिमीते । सा चतुर्थमुदकामत् । दोहा एव युष्माकमिति । प्रजापतिः
प्रजा असृजत । सैव साग्रेस्सन्ततिः । नैनं प्रतिनुदन्ते । यन्मांसमश्नीयात् ।
जगतीभिर्वैश्यस्य । एतद्वा अग्नेः प्रियं धाम ।

*

*

*

*

प्रजापतिर्दशहोता । ब्रह्मवादिनो वदन्ति । स एना विद्वान्
यक्षयसि । इमे धेनू अमृतं ये दुहाते । हविषोऽस्य नवस्य
नः । उभा हि वां सुहवा जोहवीमि । स नो रास्व सहस्विणः ।
अग्निर्विशां मानुषीणाम् । स प्रत्नवन्नवीयसा । ब्रह्म यज्ञस्य तन्तवः ।
प्रसद्यो अग्ने अत्येप्यन्यान् । विश्वा आशाः पृतनाः संजयं जयन् । अस्मे
द्यावापृथिवी भूरिवामम् । आयाहि सोमपीतये । इन्द्रो जातो विपुरो रुरोज ।
तस्यैवात्मा पदवित्तं विदित्वा । विश्वसृजः प्रथमास्सत्रमासत ।

End :

अर्यमा राजाजरस्तुविष्मान् । ये अग्निदग्धा येऽनग्निदग्धाः । ये अन्तरिक्षं
पृथिवीं क्षियन्ति । बृहस्पतिः प्रथमं जायमानः । प्रमुञ्चमानौ दुरितानि
विश्वा । यत्ते नक्षत्रं मृगशीर्षमस्ति । सा नो यज्ञस्य सुविते दधातु । अग्निर्नः
पातु कृत्तिकाः ॥

No. 14499. गायत्रीजपविषयः.

GĀYATRĪJAPAVIṢAYAH.

Page, 1. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 164a of the MS. described under No. 3019.

Wants the beginning and the end.

Deals with the repetition of the Gāyatrī-mantra, which is supposed to enable one to realise one's desires and to absolve one's self from all sins.

Beginning :

मङ्गलं जयतु मे रघूत्तमो मङ्गलं जयतु जानकी शुभा ।
मङ्गलं जयतु मे महेश्वरो मङ्गलं जयतु मे महेश्वरी ॥
नियतिर्न हि दोषाणां मन्त्राणां कलिदोषतः ।
कलिदोषनिवृत्त्यर्थं विश्वासेनाचरेद्विजः ॥
गायत्रीमन्त्रसिद्ध्यर्थं गायत्री व्ययुतं जपेत् ।
सर्वेषां वेदमन्त्राणां सिद्ध्यर्थं लक्षकं जपेत् ॥

End :

होमः कार्यश्च गायत्र्या जुहुयादयुतं मधु ।
वेदमन्त्रास्ततस्तस्यगृद्धिजानां कामधेनवः ॥
तर्पणञ्चाभिषेकं च होमं विप्रांश्च भोजयेत् ।
चिन्तामणिर्वेदमन्त्रः कामधेनुस्सुरद्रुमः ॥

No. 14500. उपान्त्यभार्गवव्रतम्.

UPĀNTYABHĀRGAVAVRATAM.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 146a of the MS. described under No. 3115.

On the Vrata which consists in the worship of the Goddess Lakṣmī on the penultimate Friday of the bright fortnight in the Śrāvaṇa month in each year.

Beginning and the End :

(नभो)मासे पूर्णिमायां नातिक्रान्ते भृगोर्दिने ।
मत्पूजा तत्र कर्तव्या वरं दास्यामि काङ्क्षितम् ॥

इति केचित्पक्षः ।

अन्यच्च —

नभोमासि सिते पक्षे पूर्णिमोपान्तभार्गवे ।
मत्पूजा तत्र कर्तव्या वरं दास्यामि काङ्क्षितम् ॥

न तु पौर्णमास्यां पूर्णिमोपान्तभार्गव इत्युक्तत्वात्केवलं सिते पक्ष इति
सामान्येनानुक्तत्वाच्च । तदुक्तं सङ्ग्रहे—

यदा तु पूर्णिमायां वै भृगुवारो भवेत्तदा ।
पूर्वस्मिन्वासरे कार्यं पूर्णिमोपान्तवाक्यतः ॥

यदा पौर्णमास्यामेव भृगुवासरौ भवति तथापि(दा) उपान्तभार्गव एव
व्रतं कार्यम् ॥

No. 14501. आङ्गिरसस्मृतिः.
ĀṆGIRASASMṚTIH.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 2639.
Contains a small portion in the end of the 12th Adhyāya.
Same work as that described under No. 2611 ante.

No. 14502. कर्तृक्रमः.
KARTṚKRAMAH.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 91a of the MS. described under No. 2996.
Similar to the work described under No. 3154 ante.

Beginning and the End :

पुत्रस्सपत्नीपुत्रश्च पुत्रिकातनयस्ततः ।
दत्तः पौत्रः प्रपौत्रश्च दौहित्रो धनभागथ ॥

दौहित्रश्च पतिः पत्नी दुहिता सोदरस्तथा ।
 असोदरस्तु भ्राता च भ्रातृपुत्रौ च तत्क्रमात् ॥
 पिता माता स्नुषा भ्रात्री भागिनेयस्ततः परम् ।
 स्वसपिण्डोऽथ मातुश्च सपिण्डस्सोदकस्तथा ॥
 सगोत्रशिशुपत्यत्विजौ च तथाचार्यस्सुतापतिः ।
 सखा राजा त्रिंशदेते कर्तारस्मृतिषूदिताः ॥
 पूर्वपूर्वस्य नाशे वाऽसन्निधावुत्तरोत्तरः ।
 उक्तानुक्रमतोऽप्यन्यः क्रमः कचन दृश्यते ॥

Fol. 91b contains one stanza regarding Maudhyaviṣaya.

No. 14503. भोजचरित्रम्.

BHŌJACARITRAM.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 92a of the MS. described under No. 2996.

Contains a small portion only.

Same work as that described under No. 12202 ante.

Fol. 94a contains Daśamīvēdhaviṣayavacana and 94b Saṅkrama-
viṣayavacana.

No. 14504. गौतमधर्मसूत्रभाष्यम्.

GAUTAMADHARMASŪTRABHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size, 19 × 1½ inches. Pages, 252. Lines, 11 on a
page. Character, Grantha. Condition, slightly injured. Appearance, old

Wants the beginning and breaks off in the 24th Adhyāya.

Same work as that described under No. 1206 ante.

Beginning :

(वेदस्यैव धर्ममूलत्वं किं तु तद्विदां च स्मृतिशीले—वेदविदां ये
 प्र(स्मृ)तिशीले अपि धर्ममूले ने अपि वेदादविरोधिनी तद्विदामित्यारम्भात् ।
 शीलशब्दश्चेह द्वाभ्यामभिसम्बध्यमानो द्विवचनान्तो द्रष्टव्यः । चश(तच्छ)-
 व्देन सषडङ्गो वेदो लक्ष्यते । स्मृतिरूपं निबन्धनम् । मनुयमवसिष्ठ-
 भृग्वङ्गिरोवृहस्पत्युशनोभारद्वाजगौतमापस्तम्बसंवर्तव्यासशातातपशङ्खलिखितबो-
 धायनयाज्ञवल्क्यप्राचेता(तसा)दिभिः कृतं शीलमनुपनिबन्धस्समाचारः ।

End :

अ(त्र)क्षत्रियायां द्विगुणं, वैश्यायां त्रिगुणं द्रष्टव्यम् । तथा ब्राह्मणस्याथः
क्षत्रियवैश्येत्याद्यपि गमनं प्रति कूश्माण्डैर्होमश्च द्रष्टव्यः । द्विरुक्तिरध्याय-
परिसमाप्त्यर्था ॥

Colophon :

इति मस्करीये गौतमभाष्ये त्रयोविंशोऽध्यायः ॥

आविष्कृतैतन्सां तु प्रायश्चित्तमुक्तमनाविष्कृतैतन्सां तु वक्तव्यमित्यत आह—
रहस्यप्रायश्चित्तमविख्यातदोषस्य—रहस्यमप्रकाशं कर्तव्यमिति यथान्यैर्न
ज्ञायते । प्रायश्चित्तग्रहणमल्पेनापि महतः पापस्य निष्कृतिर्भवतीत्येव(मर्थम्) ।

* * * *

तदा प्रतिगृह्य जपेत् । इतरत्र पूर्वमिति द्रष्टव्यम् । तत्राप्यभोज्यभो.

No. 14505. वामदेवसंहिता.

VĀMADEVASAMHITĀ.

Pages, 40. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 306 of the MS. described under No. 3500.

Contains the Adhyāyas 64--69 only of the second part.

Same work as that described under No. 5481 ante.

No. 14506. प्रतिशुक्रशान्तिः.

PRATISUKRASĀNTIḤ

Pages, 2. Lines, 7 on a page

Begins on fol. 141a of the MS. described under No. 3501.

Complete ; as laid down in Vasisthasmṛti.

On the Śānti to be performed for averting the evils, supposed to result to one, if the planet Śukra (Venus) is found to be situated in unfavourable positions in one's horoscope.

Beginning :

शुक्रस्य संमुखो लोके बहुदोषकरस्तदा ।

तद्दोषशमनार्थाय शान्तिं वक्ष्ये समासतः ॥

वासिष्ठे—

भृगुलग्रे भृगोर्वारे भृगुवर्गे भृगूदये ।

उपोष्य भृगुवारेऽपि यावच्छुक्रोदयं प्रति ॥

रजतेनैव शुद्धेन कारयेत्प्रतिमां शुभाम् ।

लिखेदष्टदलं पद्मं कांस्यपात्रेण तण्डुले ॥

End :

तत्तत्संमुखजो दोषस्तत्क्षणादेव नश्यति ॥
 सूर्याय कपिला दद्याच्छृङ्गं चन्द्रमसेऽपि च ।
 कुजाय वृषभं दद्यात्स्वर्णं दद्याद्भुघाय च ॥
 गुरवे पीतवस्त्रं च असितायासितां च गाम् ।
 एवं प्रयत्नतः कृत्वा सर्वान् कामानवाप्स्यसे ॥

No. 14507. प्रायश्चित्तवचनानि.

PRĀYAŚCITTAVACANĀNI.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 265a of the MS. described under No. 2746.

The verses describing the expiatory ceremony to be performed by one for the sin resulting from unnatural intercourse with a camel, mare or an ass.

Beginning and the End :

खरमुष्ट्रं च बडवां विप्रो यदि मदान्धकः ।
 यच्छेद्यदि स पापात्मा रौरवं नरकं व्रजेत् ॥

वसिष्ठः—

बडवां खरमुष्ट्रं च विप्रः कामातुरस्तकृत् ।
 रमेच्छजां विहायाशु स वै नरकमश्नुते ॥

जाबालिः—

खरमुष्ट्रं च बडवां यच्छेद्विप्रो मदातुरः ।
 रौरवं नरकं याति यावदाभूतसंप्लवम् ॥
 तस्य दोषविनाशार्थं प्रायश्चित्तमुदीरितम् ।
 खरे चान्द्रं तथोष्ट्रे च वराकं बडवागमे ॥
 एतेन शुद्धमाप्नोति पुनस्तस्कारपूर्वकम् ।
 पञ्चगव्यं पिबेत्पश्चाच्छुद्धो भवति निश्चयः ॥

क्षत्रियवैश्ययोर्विप्रोक्तात् द्विगुणं प्रायश्चित्तम् ।

अथ वत्समहिषीवस्तगमने प्रायश्चित्तमाह—देवलः.

No. 14508. शुद्धिचन्द्रिका.

ŚUDDHICANDRIKĀ.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 188a of the MS. described under No. 2745.

Incomplete. By Kālidāsa.

Same work as that described under No. 3038 ante.

Fol. 90a contains a few Prastāvikaślōkas.

No. 14509. ज्यौतिषविषयः.

JYAUTIṢAVIṢAYAḤ.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 191a of the MS. described under No. 2745.

Incomplete.

A few stanzas taken from various texts and dealing with Puṣkarayōga and horoscopy, etc.

Beginning :

मेघे गङ्गा वृषे रेवा गते युग्मे सरस्वती ।
यमुना[यां] कुलीरे च सिंहे गोदावरी तथा ॥
कन्यायां कृष्णवेणी तु तुला कावेरिका स्मृता ।
भीमरथ्या वृश्चिके तु चापे पुष्करवाहिनी ॥
* * * * *
राशित्रयमुपागम्य एकवर्षे गुरुस्तथा ।
वक्राभिमुखमागम्य तद्राशौ चादिपुष्करम् ॥
वक्रं त्यक्त्वा पुनर्जीवं ऋजुराशयन्त्यपुष्करम् ।

End :

लम्नाधिपेन सहिते यदि वाहनेशे जीवेक्षिते तनुगते बलपूर्णयुक्ते ॥
पुत्रे(श)दाराधिपनिर्गुरोश्चेदखण्डसाम्राज्यमुपैति लक्ष्मीम् ।

No. 14510. कपिलधेनुप्रशंसा.

KAPILADHĒNUPRAŚAṂSĀ.

Substance, palm-leaf. Size, 176 × 1½ inches. Pages, 18. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Incomplete.

On the importance and religious efficacy of making gifts to Brahmins of cows of brown complexion of ten different varieties.

Beginning :

श्रीवैशम्पायनः—

दानपुण्यफलं श्रुत्वा तपःपुण्यफलानि च ।
धर्मपुत्रः प्रहृष्टात्मा केशवं पुनरब्रवीत् ॥

या चैषा कपिला देव पूर्वमुत्पादिता विभो ।
 होमधेनुस्सदा पुण्या चतुर्वक्त्रेण माधव ॥
 सा कथं ब्राह्मणेभ्यो वै देया कस्मिन् दिनेऽपि वा ।
 कीदृशाय च विप्राय दातव्या पुण्यलक्षणा ॥
 * * * * *
 दशैव कपिलाः प्रोक्ताः स्वयमेव स्वयम्भुवा ।
 या देवेभ्यः श्रोत्रियेभ्यो दत्त्वा स्वर्गाय ताः शुणु ॥
 प्रथमा स्वर्णकपिला द्वितीया गौरपिङ्गला ।
 तृतीया रक्तपिङ्गाक्षी चतुर्थी गलपिङ्गला ॥

End :

कपिलेऽथ महादेवि सर्वदेवनमस्कृते ।
 नमस्ते निर्मले सत्त्वे सर्वतीर्थमये शुभे ॥
 दातारं स्वजनोपेतं ब्रह्मलोकं नय स्वयम् ।
 * * * * *
 अदातारस्तमर्था ये द्रव्याणां लोभकारणात् ॥
 दीनाननाथान् वध्यन्ते ? बाधन्ते च पुनः पुनः ।
 शस्त्राग्निगरदाश्रयं ते वै निरयगामिनः ॥
 क्षान्तदान्तविहीना ये

No. 14511. विभागनिर्णयः.

VIBHĀGANIRŪPAḤ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 48a of the MS. described under No. 1217.

Incomplete.

A small portion dealing with the division of ancestral property taken from the Vyavahārādhyāya of Yājñyavalkyasmṛiti, which work is described under No. 2673 ante.

The work contains the commentaries Vijñānēśvariya and Sarasvatīvilāsa.

Beginning :

विज्ञानेश्वरः—

विभागं चेत्पिता कुर्यादिच्छया विभजेत्सुतान् ।
 ज्येष्ठो वा श्रेष्ठभागेन सर्वे वा स्युस्तमांशिनः ॥
 यदि कुर्यात्समा(नांशान्पत्न्यः कार्याः समांशिकाः) ।
 न दत्तं स्त्रीधनं यासां भर्त्रा वा श्वशुरेण वा ॥

अत्राह सरस्वतीविलासकारः—

ब्राह्मणानां तत्पत्नीनां पुत्रास्सर्वे विभागो नास्ति, किं
तु पतीच्छया यत्किञ्चिद्देयमिति वैश्यशूद्रयोः पत्नीभागः ।

End :

पितृद्रव्याविरोधेन यद्धनं स्वयमार्जितम् ।
मैत्रमौद्वाहिकं चैव दायादानां न तद्ववेत् ॥

No. 14512. रामसप्तर्षिस्तोत्रम्.

RĀMASAPTARṢISTŌTRAM.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 69a of the MS. described under No. 1217.

Contains a small portion only.

Same work as that described under No. 10299 ante.

No. 14513. पूर्वप्रयोगपद्धतिः.

PŪRVAPRAYŌGAPADDHATIḤ.

Pages, 159. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 71a of the MS. described under No. 1217.

Complete.

Same work as that described under R. Nos. 1709—1711 of the
Triennial Catalogue of the Sanskrit MSS., Vol. II, Part 1-C.

No. 14514. आग्रयणप्रयोगः.

ĀGRAYANAPRAYŌGAḤ.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 149b of the MS. described under No. 1217.

Incomplete.

On the procedure for conducting a sacrificial offering of food made
of newly harvested corn on the full- or new-moon day in the autumn of
every year, or whenever the crop is over. Here Āpastamba says that a
fire-worshipper must offer the cooked food of Śyāmāka in the rainy
season, that of Vrihi in autumn and of Yava in spring.

Beginning :

अथाग्रयणमुच्यते—

अग्रं प्रत्यग्रं द्रव्यं प्राणान्प्रापयतीत्याग्रयणम् । इदं कर्म[णि]शरत्काले
पर्वणि कुर्यात् । अत्र कारिका —शरद्याग्रयणं कुर्यात्पर्वणि व्रीहिभिर्वैरिति ।

पर्वणीति पौर्णमास्यां वेत्यन्ये । अपरे यदा निमित्तसंभवस्तदनन्तरमेवाचरेदिति ।
अत्र बोष्पनभट्टीये—निमित्तानन्तरं नैमित्तिकानि ।

* * * *

तथाचापरस्तम्बः—

वर्षासु श्यामाकैर्यजेत शरदि ब्रीहिभिर्वसन्ते यवैरिति । अत्र प्रयोगः—
शरत्काले पर्वणि प्रातरौपासनं कृत्वा प्राणानायम्य नवान्नप्राशनार्थमाग्रयणं
करिष्ये । तत्रेन्द्राग्नी विश्वे देवाः द्यावापृथिवी प्रधानदेवताः ।

End :

यावदुक्तविधाका(ना)वा भवेदाग्रयणक्रिया ।

शेषात्प्राश्य ततो ग्रासं शेषं संवृत्य चोदनम् ॥

परमेष्ठ्यसीति यजुषाम्नि(ग्न्य)गारवंशे विलम्बः ।

Colophon :

इत्याग्रयणं समाप्तम् ॥

No. 14515. अग्निसंसर्गप्रायश्चित्तप्रयोगः.

AGNISAMSARGAPRĀYAŚCITTAPRAYŪGAH.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 150b of the MS. described under No. 1217.

Contains Laukikavaidikāgnisamsargaprāyaścitta and Vaidikāgni-
prāyaścitta only.

On the performance of the expiatory ceremony to be observed when
the sacred fire happens to be mixed up with the ordinary fire or when the
sacred fire maintained by a person happens to be mixed up with that
maintained by another person.

Beginning :

एवंविशिष्टे शुभेऽभ्युदयमुहूर्ते ममौपासनाभेलौकिकाग्निप्रायश्चित्तं
विविचेष्टिस्थालीपाकं करिष्ये इति सङ्कल्प्य प्रतिष्ठितमभिधार्य
अग्नीन्धनाद्यग्निमुखान्ते अयाश्चाग्नेऽस्यनभिःशस्तीश्च—भेषजं स्वाहा, अग्नये
अयस इदम् ।

* * * *

परिधिप्रहरणं नास्ति । ब्रह्मविसर्जनान्तं कुर्यात् । ततः पुनस्सन्धानं
कुर्यात् ॥

Colophon :

इति लौकिकाग्निवैदिकाग्निसंसर्गः ॥

End :

अन्यौपासनामिसंसर्गप्रायश्चित्तपुनस्सन्धानोक्तषोडशाज्याहुतीः पथि-
कृतेष्टि सङ्कल्प्य, चतुष्पात्रं प्रयुज्य आज्यसंस्कारान्ते अयाश्चेति व्याहृति-
मिश्र पुनस्सन्धानवत् त्रिंशदाज्याहुतीर्हुत्वा, ततः पथिकृतेष्टिस्थालीपाकेन
शेषं पूर्ववत्कुर्यात् । ततः ब्राह्मणसन्तर्पणं कुर्यात् ॥

Colophon :

इति वैदिकामिप्रायश्चित्तम् ॥

No. 14516. अश्वत्थपूजाविधिः.

AŚVATTHAPŪJĀVIDHIḤ.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 110a of the MS. described under No. 2763.

Complete ; as found in the Brahmanḍapurāṇa.

On the procedure laid down by Bōdhāyana for worshipping the Aśvattha tree, the worship of which is supposed to please God Nārāyaṇa and to bestow all kinds of prosperity and remove all kinds of sin and barrenness.

Beginning :

एवङ्गुणविशिष्टायां शुभतिथौ सहकुटुम्बस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्यादि-
पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थं वन्द्याचतुष्टयनिवृत्त्यर्थं धर्मार्थकाममोक्षार्थसिद्ध्यर्थं ममेह
जन्मनि जन्मान्तरेषु नानाविधसम्भावितसमस्तपापक्षयार्थं

श्रीविष्णुसायुज्यप्राप्त्यर्थमश्वत्थनारायणमुद्दिश्याश्वत्थनारायणप्रीत्यर्थं ब्रह्माण्डपु-
राणोक्तकल्पोक्तप्रकारेण सम्भवद्विद्रव्यैः सम्भवद्विरुपचारैस्तम्भवता नियमेन
यथा(वत्) अश्वत्थपूजां करिष्ये । तदङ्गकलशार्चनं पीठार्चनं कुर्यात् ।
अश्वत्थमूले गोमयेनानुलिप्तरङ्गवल्ल्यादिविरचिताष्टदलपद्मकर्णिकामध्ये कृततण्डु-
लोपरि संस्थाप्य ।

End :

पत्न्या सह सङ्कल्पपूर्वकस्थण्डिलदानानि कृत्वा शतब्राह्मणान् भोजये-
दित्याह भगवान् बोधायनः ॥

No. 14517. व्रतदानादिविषयवचनानि.

VRATADĀNĀDIVIṢAYAVACANĀNI.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 117a of the MS. described under No. 2763.

A collection of stanzas dealing with the following subjects :—

- | | |
|----------------------|----------------------------|
| १. शिवरात्रिनिर्णयः. | ५. जीवत्पितृकप्राचीनावीतल- |
| २. षोडशमहादानानि. | क्षणम्. |
| ३. चित्रगुप्तबालिः. | ६. गण्डपुरुषलक्षणम्. |
| ४. यतिविषयः. | ७. शान्तिविधिः. |

Beginning :

दिनद्वयेऽप्यर्धरात्रौ वर्तते च चतुर्दशी ।
 परैव सा प्रकर्तव्या न च पूर्वा कदाचन ॥
 दिनद्वये यदा न स्यान्मध्यरात्रौ चतुर्दशी ।
 तदा पूर्वा परित्यज्य कर्तव्या सा नरैः परा ॥

* * * *

कनकाश्रुतिला नागदासीगृहमहीरथाः ।
 कन्या च कपिला धेनुः महादानानि वैदश (षोडश) ॥
 चित्राय चित्रगुप्ताय भूतेभ्यश्च यमाय च ।
 धर्माय च बालि भूमौ दत्त्वा भुञ्जीत वै द्विजः ॥

End :

अकाले भाग्यदश्चैव पाताले विजयप्रदः ।
 मर्त्यलोके मृत्युदस्स्याद्गण्डदोषफलं विदुः ॥
 तिलपात्रं चोत्तराख्ये पुष्ये गोदानमुच्यते ।
 आश्लोषायां घोटकं च मूलर्क्षे महिषं तथा ॥

* * * *

ज्येष्ठा पञ्चदशे मासे पुत्रो लोकं तु वर्ज(ये)त् ।
 दानं होमं जपं कृत्वा तत्कालेऽपि शुभावहम् ॥

No. 14518. दत्तहोमप्रकरणम्.
 DATTAHÔMAPRAKARANAM.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 118b of the MS. described under No. 2763.
 Complete.

Same work as that described under No. 3626 ante, but with additional stanzas in the beginning and slight difference in the end.

The procedure is laid down by Bôdhāyana.

Beginning :

पितृव्यपुत्रे दौहित्रे भ्रातृपुत्रस्सगोत्रजः ।

यदि लोपादि होमस्य दत्तत्वं न विमुञ्चति ॥

दाता निश्चलमना राज्ञे निवेद्य स्वभ्रातृबन्धून् गृहे सम्पूज्य तान् ज्ञापयित्वा इमं विष्णुनामधेयं कुमारममुष्मै गोविन्दाय शर्मणे पुत्रमुपपादयामीति तान् सम्यग्विज्ञाप्य ।

End :

पञ्चगव्यप्राशनं कारयित्वा स्वपितनुद्दिश्य शतं शतार्धं पञ्चविंशतिं वा ब्राह्मणान् भोजयेदित्याह भगवान् बोधायनः ॥

Colophon :

इति दत्तहोमप्रकरणं समाप्तम् ॥

No. 14519. चातुर्मास्यनिर्णयः.
CĀTURMĀSYANIRṆAYAH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 120b of the MS. described under No. 2763.

Fol. 120a contains कन्यादानविषय and 120b चन्द्रसूर्यग्रहणमुद्रिका.

Incomplete.

On the determination of the Vrata of Cāturmāsya (described under Nos. 8703 to 8706 ante) for observance by Sannyāsins.

Beginning :

चातुर्मास्यनिर्णयः—

आषाढी(च) श्रावणीं पौर्णमासीमारभ्यान्तं कार्तिकी मार्गशीर्षी ।

चातुर्मास्या नाम सत्रयासिनो वै ग्रामाद् ग्रामं न व्रजेयुश्च तत्र ॥

आषाढ्यां पौर्णमास्यां च क्षौरं कुर्याद्यथाविधि ।

त्रिमुहूर्ताधिकायां तु भिक्षुर्मोक्षपरायणः ॥

तिथिक्षये विद्धमपि पर्वं ग्राह्यं मनीषिभिः ।

मुहूर्तत्रितयं नो चेत् क्षौरकर्म परेऽहनि ॥

End:

ऋतुसन्धौ पूर्णिमायां सङ्गवस्पृशि वापयेत् ।
 त्रिमुहूर्ताधिकं ग्राह्यं पर्व क्षौरप्रणामयोः ॥
 ऋतुसन्धावतीते तु क्षौरं नास्ति कदाचन ।
 मलमासे नैव कार्यं यतिभिर्मोक्षकाङ्क्षिभिः ॥

Foll. 121b and 122a contain Vaisvadevavidhi and Śaṇṇavati-
 śrāddhaviṣayavacanas.

No. 14520. ग्रहणनिर्णयः.

GRAHANANIRNAYAH.

Pages, 5. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 122a of the MS. described under No. 2763.

Complete.

Similar to the work described under No. 3116 ante.

Beginning:

कालादर्शे ग्रहणनिर्णयः—

अहोरात्रं न भुञ्जीत ग्रस्तावेवास्तगौ तु तौ ।

तौ रवीन्दू यदा राहुग्रस्तावेवास्तगौ भवतः तदाहोरात्रं न भुञ्जीत । अय-
 मर्थः—ग्रस्तास्तगे सूर्ये ग्रहात्पूर्वस्मिन्नहनि परस्यां रात्रौ न भुञ्जीत । ग्रस्ता-
 (स्त)गे शशिनि ग्रहणात्पूर्वस्यां रात्रौ परस्मिन्नहनि न भुञ्जीतेति । तदुक्तं
 विष्णुधर्मोत्तरे—

अहोरात्रं न भोक्तव्यं चन्द्रसूर्यग्रहो यदा ।

मुक्तिं दृष्ट्वा तु भोक्तव्यं स्नानं कृत्वा ततः परम् ॥ इति

End:

ज्यौतिषदर्पणं—

चन्द्रसूर्योपरागे च यावद्दर्शनगोचरः ।

पुण्यकालस्त विज्ञेयः स्नानदानादिकर्मसु ॥

मंघादिना छत्रे स्नानादि न कर्तव्यमिति ॥

Colophon:

इति ग्रहणनिर्णयस्समाप्तः ॥

No. 14521. मुखावलोकनविधिः.
MUKHĀVALŌKANAVIDHIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 124a of the MS. described under No. 2763.

Complete.

Deals with the proper occasion and manner for seeing and conveying condolence to a woman by her relations for the recent loss of her husband.

Beginning :

मुखावलोकने—

सूत्रं लुठति या नारी पितृमातृसहोदराः ।
तत्काले दर्शनं कुर्युरभावे त्वाब्दिके तथा ॥
मुखावलोकनं शस्तं बन्धूनां तु दशाहके ।
तिथिदोषादिकं नास्ति इति शानातपोऽब्रवीत् ॥

दशाहातिक्रमे गतिमाह—

अयुग्ममासे द्रष्टव्यं शास्त्रोक्तं विहिते दिने ।
युग्ममासे तु हानिः स्यात्पञ्चाङ्गप्रबलेऽपि च ॥
आत्राीयो भागिनेयश्च पितृव्यो दुहितुः पतिः ।
एतेषां दर्शनं दोषो नेतेरेषां कदाचन ॥
मुखं दृष्ट्वा तु विधिवद्वस्त्रं दत्त्वा तथैव च ।
यजमानमपृष्ट्वा च ब्रजेद्ग्रामान्तरं पुनः ॥

End :

No. 14522. मलमासमृताहनिर्णयः.
MALAMĀSAMRTAHANIRNAYAH.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 124b of the MS. described under No. 2763.

Incomplete.

On fixing the Śrāddha day in an intercalary month. It is stated that if the first annual ceremony falls during the intercalary month, one should perform the first annual ceremony in that month as well as in the regular month, and if one does not remember or know the exact date or month of the ceremony, he should perform it on the new moon day in any of the Māgha, or Mārgaśīra months.

Beginning :

मलिम्लुचे मासि मृतस्य पुंसः = मास एव द्वादशे त्रयोदशे चातीत
इत्यर्थः ।

आब्दिकं प्रथमं यत्स्यात्तत्कुर्वीत मलिम्लुचे ।

त्रयोदशे तु सम्प्राप्ते कुर्वीत पुनराब्दिकम् ॥

पुनराब्दिकं द्वितीयाब्दिकम् ।

वर्षे वर्षे तु यच्छ्राद्धं मातापित्रोर्मृतेऽहनि ।

मलमासे न तत्कार्यं व्याघ्रस्य वचनं तथा ॥

End :

मृताहं यो न जानाति मासं वापि कथंचन ।

तेन कार्यममायां तु श्राद्धं मार्गेऽथ माघके ॥

दिनमासौ न विज्ञातौ मरणस्य यदा पुनः ।

प्रस्थानमासदिवसौ ग्राह्यौ पूर्वोक्तया दिशा ॥

दिनमेव तु जानाति मासं नैव तु यो नरः ।

मार्गशीर्षेऽथ वा भाद्रे माघे वा तद्दिनं भवेत् ॥

No. 14523. श्राद्धीयस्मृतिवचनानि.

ŚRĀDDHĪYASMRĪTIVACANĀNI.

Pages, 17. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 126a of the MS. described under No. 2763.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work described under No. 3086 ante.

Beginning :

साम्निका बहवः पुत्रा यदि ज्येष्ठोऽप्यनग्निकः ।

ज्येष्ठेनैव तु कर्तव्यं कनिष्ठाग्रौ जुहोति सः ॥

सुवासिन्यां मृतायान्तु ब्राह्मणैस्तहभोजने ।

सुवासिनीं ततः पश्चादमन्त्रकमथार्चयेत् ॥ इति कपर्दिकारिका

द्वादशाहे सपिण्डाख्यं मुख्यं कलियुगे स्मृतम् ।

तदप्येकादशेऽहि स्यात्परतो विघ्नसंभवे ॥ इति ॥

एकादशेऽहि कुर्वाणः पूर्वाहे सर्वमाचरेत् ।

अपारहे तु सापिण्ड्यं कुर्यादित्याह शाण्डिलः ॥

End :

आवाहनस्वधाकारहित्वा(राहुत्य)ग्रौकरणादिकम् ।
ब्रह्मचर्यादिनियमः विश्वे देवास्तथैव च ॥
नित्यश्राद्धे त्यजेदेतान् भोज्यमन्नं प्रकल्पयेत् ।
दत्त्वा च दक्षिणां शक्त्या नमस्कारैर्विसर्जयेत् ॥

Foll. 136 and 141a contain Āśaucaviṣaya and Gayatrijapaviṣaya.

No. 14524. सङ्करकुललक्षणम्.

SAṆKARAKULALAKṢAṆAM.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 142a of the MS. described under No. 2763.

Complete.

On the origin and the characteristics of a low hybrid class of people known as Saṅkara race as explained in the Brahmandapurāṇa.

Beginning :

हिरण्यगर्भदेवस्य मुखवाहूरुपादजाः ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यश्शूद्रो वर्णा जनोत्तमाः ॥
इतरेषान्तु वर्णानां सङ्कराश्च चतुर्दश ।
शूद्रस्त्रीवैश्यजातस्तु पुरुषो व्यावहारिकः ॥
व्यवहारवधूश्शूद्रजातस्यै(श्रै)वतु शिल्पिकः ।
वैश्यस्त्रीक्षत्रजातस्तु गोपालक इति स्मृतः ॥

End :

ब्राह्मणस्त्रीशूद्रजातश्चण्डालस्तु तथैव च ।
सर्वसङ्करवर्णानां जननाज्जन्मलक्षणम् ॥

Colophon :

इति ब्रह्माण्डपुराणे सङ्करकुलपरीक्षा समाप्ता ॥

Fol. 142b contains Grāmacakra.

No. 14525. पराशरस्मृतिः, सव्याख्या.

PARĀŚARASMRITIḤ WITH COMMENTARY.

Pages, 9. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 146a of the MS. described under No. 2763.

Wants the beginning and the end.

A small portion of the work described under No. 2646 ante.

Beginning :

न च गान्धर्वादिविवाहेषु सप्तपदादि(द्यभिक्रम)क्रमाणा(म)भावात्
पतित्वभार्यात्वाभाव इति शङ्कनीयम्, स्वीकारात्प्राक् तदभावेऽपि पश्चात्त-
त्सद्भावात् ।

तदाह देवलः—

गान्धर्वादिविवाहेषु पुनर्वैवाहिको विधिः ।

कर्तव्यश्च त्रिभिर्वर्णैस्तमर्थेनामिसाक्षिकम् ॥ इति ॥

गृह्यपरिशिष्टेऽपि—

गान्धर्वासुरपैशाचा विवाहो राक्षसश्च यः ।

पूर्वं परिश्रयस्तेषां पश्चाद्धोमो विधीयते ॥

होमाकरणे तु न भार्यात्वम् । अत एव वसिष्ठबोधायनौ—

का(व)लादपि हता कन्या मन्त्रैर्यदि न संस्कृता ।

अन्यस्मै विधिवद्देया यथा कन्या तथैव च (सा) ॥ इति ॥

End :

या नारी भर्तृसुतयोरग्रे च प्रमूर्तिं गता ।

वृषोत्सर्गो न कर्तव्य एका ग्रौ(गौ)र्दीयते तदा ॥

एकादशाहे सम्प्राप्ते यस्य नोत्सृज(ज्य)ते वृषः ।

पिशाचत्वं ध्रुवं तस्य दत्तैश्चाद्दशतैरपि ॥

Fol. 151 contains *Dēśāntaramṛtilakṣaṇa*, *Tripādinakṣatra* and *Madhvādisānti*.

No. 14526. सुभाषितानि.

SUBHĀṢITĀNI.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 89a of the MS. described under No. 3016.

Contains the *Vidvatpaddhati* incomplete.

Similar to the work described under R. No. 797 of the Triennial Catalogue of MSS., Vol. I, Part I-C.

Beginning .

विद्वान्प्राकृतसंस्कृतादिषु तथा भावा(षा)सु निष्णातकः

नानादेशसमुद्भवासु बलवान् सङ्गीतदक्षश्शुचिः ।

प्रस्तावोचितवाक्यमन्त(न्त्र)परभावेषु प्रवीणोल्लस-

च्छारीरो विजितश्रमश्च विलसन्माधुर्यवान्(क्) पाण्डितः ॥

शतनिष्केन सम्पन्नश्शतग्रामेण भूपतिः ।
शतौषधेन वैद्यस्याच्छतश्लोकेन पण्डितः ॥

End :

सद्धिया यदि किं धनैरपयशो यद्यस्ति किं मृत्युना
ज्ञातिश्चेदनलेन किं यदि सुहृद्दिव्यौषधैः किं फलम् ।
किं सपैर्यदि दुर्जनाः किमु धनैर्विद्यानवद्या यदि
ब्रीडा चेत्किमु भूषणैस्सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् ॥

No. 14527. दत्तपुत्रविषयः.

DATTAPUTRAVISHAYAH.

Pages, 9. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 3020.

Incomplete and wants the beginning.

Similar to the work described under No. 3157 ante.

Beginning :

शङ्खबृहस्पती—

हरिद्राजलपाताद्वा वाग्दानाद्वा सगोत्रजः ।
सोदको वा भ्रातृजो वा दत्तपुत्रत्वमश्नुते ॥
गोत्रान्तरसमुत्थस्य जातकर्मादिकाः क्रियाः ।
..... ॥

अन्यगोत्रं न गृहीयाद्गृही पुत्रं कदाचन ।
गृहीयाद्यदि मोहेन सहपुत्रो विनश्यति ॥

इत्यादि विस्तरभयान्न लिख्यन्ते । प्रयोगपारिजाते वसिष्ठः—

ब्राह्मणानां स ।

..... कारयेत् ॥

End :

गार्ग्यसंहितायाम्—

ज्येष्ठस्य तु कनिष्ठस्य भ्रातृपुत्रस्य सङ्ग्रहे ।
न होमो न च संस्कारो वाचा दानं विधीयते ॥
एकमातृप्रसूतानामेकोऽपि यदि पुत्रवान् ।
तेन पुत्रेण ते सर्वे पुत्रिणस्स्युर्न संशयः ॥

* * * * *

. न स्वीकरणं कृतम् ।

No 14528. कर्तृक्रमः.

KARTRKRAMAH.

Pages, 6. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 3020.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3154 ante.

Beginning :

पुत्रादिदौहित्रान्ताभावे पत्न्याः पतिः कुर्यात् । तथाच कात्यायनः—

तेषामभावे तु पतिस्तदभावे सपिण्डकाः ।

अपुत्रायाः पतिर्दद्यात्सपुत्राया न तु कश्चित् ॥

संग्रहे—

भार्यापिण्डं पतिर्दद्याद्भर्तृभार्ये परस्परम् । इति ।

तथा स्मृतिरत्ने—

अप्रजायां प्रमीतायां भर्तुरेव तदिष्यते ।

पतिरेव क्रियां कुर्यादपुत्रायास्ततस्त्रिधाः । इति ।

तत्पत्नीधनम् । सपत्नीपुत्रसद्भावेऽपि भर्त्रेव दाहादिकं कार्यमित्युक्तं तत्रैव

End :

अपुत्रस्याथ कुलजा पत्नी दुहितरोऽपि वा ।

तदभावे पिता माता भ्राता पुत्रः प्रकीर्तिताः ॥

इति कात्यायनस्मरणात् । पत्नी दुहितरश्चैव पितरौ भ्रातरस्तथा । इति धन-

ग्रहणे कर्मस्मरणाच्च पित्रोः प्राथम्यम् । भ्रात्रादेस्तु ततो विप्रकर्ष इति ।

अन्ये तु—पत्नी भ्राता च तत्पुत्रः पिता मातेति पूर्वोक्तवचना

No. 14529. आशौचविषयः.

ĀŚAUCAVIṢAYAIL.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 97a of the MS described under No. 245.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work described under No. 3032 ante.

Beginning :

भार्यायां परमगुरुसंस्थायामिति । भार्या पत्नी, परमगुरुवः आचार्यो
मातापितरौ च । आचार्यादयः परमगुरुवस्त्रयः । मातुलादयो गुरुव इति
विशेषः । मातरि पितर्याचार्य इति द्वादशाहमिति पूर्वमुक्तेऽपि परमगुरुव-
द्भार्याया अपि बहिर्दशाहेऽपि मरणवार्ताश्रवणे द्वादशाहाशौचदीक्षानियमा-
वश्यकत्वद्योतनार्थं पुनर्वचनम् । अतो न पौनरुक्त्यदोषः । एतेषामेकत्वबो-
धनार्थं चकारो न प्रयुक्तः । तथाचोक्तं मनुना—मातापित्रोर्विंशौचं दशाहं
क्रियते सुतैः । अनेकेऽब्देऽपि दम्पत्योस्तथैव स्यात्परस्परम् ॥

दक्षः—

जीवमानः पिता यस्या मात्राशौचं लघु स्मृतम् ।
बहिः पत्न्या मृतिं श्रुत्वा तनयेभ्यो वदेत्पिता ॥

End :

त्रिरात्रव्रताचरणानन्तरं पितृगोत्रनिवृत्तिरित्यर्थः । अनन्तरं भर्तुः ।
अस्थिमांसत्वचैस्सह स्वकीयानामस्थ्यादीनामेकत्वमैक्यं सह समर्पयतीति भोगे
सहगमने च तात्पर्यम् । पिण्डे भर्तृसापिण्ड्यविषये । गोत्रे भर्तृगोत्रप्राप्त्य-
र्थम् । सूतके परस्परं दशाहाशौचदीक्षानियमार्थं च ।

आर्तार्तिं मुदिते हृष्टा प्रोषिते मलिना कृशा ।

मृते म्रियेत या नारी सा स्त्री ज्ञेया पतिव्रता ॥

इति मनुस्मरणात् । शिष्टं स्पष्टम् ॥

No. 14530. धर्मशास्त्रवचनानि.

DHARMAŚĀSTRĀVACANĀNI.

Pages, 38. Lines, 7 on a page

Begins on fol. 148a of the MS. described under No. 2762.

Imperfect and in disorder.

Similar to the work described under No. 3087 ante.

Beginning :

प्रतिभोज्यं प्रशंसन्ति भयभीतिगुणस्य च ।

अनधीतः प्रेप्ये चैव पञ्चै ते श्राद्धवर्जिताः ॥

दर्भहीनं तु यत्स्नानं यस्य दानानि रो(नो)दकम् ।

अन्यशाखे(खा)कृतं श्राद्धं सर्वं निष्फलितं भवेत् ॥
 भगिनी दशविप्राणां ब्रह्मचारी शतैरपि ।
 भगवान् शतसहस्राण्यनन्तं दुहितापतिः ॥
 चतुश्राद्धं पवित्रेण एकं भुक्त्वा शतं भवेत् ।
 पापकर्मपतितश्च पाषाण्डं मुद्रधारणम् ॥
 कुल्हीनेऽन्यशाखेन निराशाः पितरो गताः ।

End:

समानोदकपिण्डं च पितृश्राद्धं समाचरेत् ।
 उत्तर्याकं शिलानम्रं नवश्राद्धानि वै तथा ॥
 वृषोत्सर्जनप्रेतानां दशमैकाहिकं विना ।
 अन्यशाखाक्रिया होमा(न) न कुर्यात्कारयेद्विजः ॥
 * * * * *
 शिरवामात्रं तु केशानां सर्वाङ्गं वपनं तथा ।
 षडङ्गुलप्रमाणेनोत्तमं विप्रमुच्यते ॥

No. 14531. व्यवहारकाण्डः.

VYAVAHĀRAKĀNDAH.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 167a of the MS. described under No. 2762.

Fragmentary ; wants the beginning and end.

A portion of Yājñavalkyasmṛti, which work has been described under No. 2681 ante.

Fol. 167 contains a few stanzas regarding the duties of a married girl.

Beginning :

देवरस्य भार्यात्वमापादयति—अतस्तदुत्पन्नमपत्यं क्षेत्रस्वामिन एव
 भवति, न देवरस्य ; संविदा तूभयोरपि समानौ समानजातीयानां पुत्राणां
 विभागऋतिरुक्ता । अधुना मुख्यगौणपुत्राणां दायग्रहणव्यवस्थां दर्शयिष्यन्
 तेषां स्वरूपं तावदाह—

औरसो धर्मपत्नीजः तत्पुत्रः पुत्रिकासुतः ।

क्षेत्रजः क्षेत्रजातस्तु सगोत्रेणेतरेण वा ॥

गृहे प्रच्छन्न उत्पन्नः गूढजस्तु सुतो मतः ।

*

*

*

*

एवं मुख्यामुख्यपुत्राननुक्रम्य तेषां दायग्रहणे क्रममाह—पिण्डदौऽऽशहरश्रैषां

पूर्वाभावे परः परः । एतेषां पूर्वोक्तानां पुत्राणां द्वादशानां पूर्वपूर्वपुत्रस्याभावे
उत्तरोत्तरः पिण्डदः श्राद्धदः अंशहरो धनहरो वेदितव्यः ॥

End :

पितरि प्रेते भ्रातृविभागसमये स्पष्टगर्भायां मातरि भ्रातृविभागोत्तरकाल-
मुत्पन्नस्य विभागः तद्विभागो द्विभागः । कुत इत्याह—दृश्यात् भ्रातृभिर्गृहीताद्द-
नाद् कीदृशो दायव्ययवि.

No. 14532. पतितश्राद्धादिविधिः.

PATITAŚRĀDDHĀDIVIDHIḤ.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 117b of the MS. described under No. 1164.

Incomplete.

Deals with the performance of the Śrāddha of a person who has
committed suicide or who has become an outcaste, etc. At the end
there are two unconnected stanzas.

Beginning :

आत्मनस्त्यागिनां नास्ति पतितानां तथा क्रिया ।

तेषामपि तथा गङ्गातोयसंस्थापनं हितम् ॥ इति ॥

नारायणबालिः कार्यो लोकगर्हभयान्नरैः ।

तथा तेषां भवेच्छौचं नान्यथेत्यब्रवीद्यमः ॥

तस्मात्तेभ्योऽपि दातव्यमन्नमेव सदक्षिणम् । इति ।

End :

इति शास्त्रानुसारेण पातित्यावगमात्संवत्सरान्तसंस्कारो युक्तः ।
आचारस्तु सद्य एव तत्र तत्र संस्कारः क्रियत इति । सर्वप्रायश्चित्तं वा
संस्कारः कार्यः ॥

एकगर्भप्रसूतानामिमे जातकुमारकाः ।

युगपत् क्रियमाणानां पिता कुर्वन्तु कर्मसु ॥ ?

एकवन्द्यामेकलग्नमेकब्रह्माङ्कुरार्पणम् ।

एकनान्दीमुखं तत्राग्निकार्यं पृथक् पृथक् ॥

No. 14533. तिथ्यादिनिर्णयः.

TITHYĀDINIRNAYAH.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on foll. 117b and 118b of the MS. described under No. 1164.

Similar to the work described under R. No. 1969(g) of the Triennial
Catalogue of Sanskrit MSS., Vol. III, Part I-A.

Beginning and End :

कुतपाद्यपराह्व(ह्वान्त)व्याप्तिराद्वि(ब्दि)क उत्तमा ।

तथा भवेत् पराह्वस्य व्याप्तिरागृहिका तिथिः ॥ ?

अमावास्या यदा तिथिः ।

क्षये पूर्वा तु कर्तव्या वृद्धि(द्धौ)स्यात्परगामिनी ।

पुनस्सन्धानहोमी तु नास्ति पूर्णा तिथिर्वरा ॥

अनन्तादित्रतेष्वेव ब्रूयुरस्तीति याज्ञिकाः ।

पिता माता च भार्यादिदुहिता भगिनी तथा ॥

पितृष्वसा मातृष्वसा सप्त गोत्राः प्रकीर्तिताः ।

चतुर्विंशति विंशतिश्च षोडश द्वादशस्तथा ॥

एकादशादशादौ च कुलमेकोत्तरं शनम् ।

दर्शो यत्रापराह्वं स्पृशति स दिव(स)श्श्राद्धकाले द्वयोश्चेत् ?

यत्रानल्पो यदासौ यदि भवति दः(तदा)क्षीयमाणे तु पूर्वः । ?

वृद्धौ साम्येऽप्यनग्निर्युवतिष्ठषलयोश्चाश्च एवाहिताग्नेः ?

पूर्वा नात्रापराह्वं स्पृशति स कृतपस्पर्शतोयं विधिस्स्यात् ॥ ?

सायन्तन्यपरत्र चेन्मृततिथिस्तैवाब्दिके मासिके

सा ग्राह्या द्व्यपराह्वयोर्यदि तदा यत्राधिका सा मता ।

तुल्या चेदुभयापराह्वसमये पूर्वा न चेत्तद्वृत्त(यो)ः

पूर्वेव त्रिमुहूर्तगास्तसमये नो चेत्परं योषितः (रैवोचिना) ॥

No. 14534. द्विभार्याग्निद्वयसंसर्गविधिः.

DVIBHĀRYĀGNIDVAYASAMŚARGAVIDHIḤ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol 118a of the MS. described under No. 1164.

Complete.

Similar to the work described under No. 3639 ante.

Beginning :

अथ ज्येष्ठकनिष्ठाग्निद्वयसंसर्गविधिरुच्यते—द्वितीयविवाहकाले पूर्वविवाहाग्रेसरसन्निधिश्चेत्तथा लौकिकाग्निना द्वितीयविवाहं कुर्यात् । तदनु प्रयोगं वक्ष्यामि—उल्लिखनादिकं कृत्वा स्थण्डिलद्वयं लौकिकाग्निं प्रतिष्ठाप्य

दक्षिणाग्रौ ज्येष्ठाग्रिमुपसमाधायोत्तराग्रौ कनिष्ठाग्रिमुपसमाधाय ततो ज्येष्ठाग्रं प्रतिष्ठाप्य ज्येष्ठभार्याग्रिमन्वारब्धो भूत्वा प्राणायामपूर्वकं सङ्कल्प्य कनिष्ठभार्याग्रौ ज्येष्ठभार्याग्रिसंसर्गानिमित्तं तदङ्गमन्वाधानं कारिष्ये—इत्यादि ।

End :

अन्वाधानक्रमेणाग्निनाग्रिस्समिध्यते । त्वं ह्यग्ने अग्निना । पाहि नो अग्र-
एक्येति तिसृभिश्चास्तीदमाधिमण्डनामिति तिसृभिश्चाज्यं हुत्वा तथैनमार्गं
परिचरेत् ।

Colophon :

इति लोकोपकारसमप्रयोगे शौनकीये गृह्यपरिशिष्टे द्विभार्याग्रिद्वयसं-
सर्गविधिस्समाप्तः ॥

No. 14535. सूर्यशतकम्, सव्याख्यानम्.

SŪRYAŚATAKAM WITH COMMENTARY.

Pages, 3. Lines, 7 on a page

Begins on fol. 148a of the MS. described under No. 1164.

Contains only two stanzas in the middle.

Same work as that described under R. No. 139(b) of the Triennial Catalogue, Vol. I, Part I-A.

Beginning :

गन्धर्वैर्गद्यपद्यव्यतिकरितं (. . .) दिवसकृतोऽसाववद्यानि वोऽद्य ॥
गन्धर्वैरिति । [न]वाद्यमात्रवाच्योऽप्यातोद्यशब्दोऽत्र वाद्यविशेषे वीणायां
वर्तते आतोद्यस्य वीणाया वाद्यं येषां तैः गन्धर्वैः वेदवेद्यैः वेदवेदिन इत्यर्थः ।
वेदप्राकाश्याः । आद्यैः नारदाद्यैः मुनिभिश्च विभिद्य यः अभिनुतः द्राविडगानेन
स्तुतः । स्तोत्रेण पृथग्गानं कृत्वा उभयैस्तुत इति ।

End :

अतितनुत्वात्कुहरोपान्तनिम्नप्रदेशान्न प्रविष्टवतीत्यर्थः । तथापि भासमाना
दीप्यमाना, एवं पाठवात् दीप्यमानत्वात् यस्यास्तमानं न विद्यते सा अ.

No. 14536. याज्ञवल्क्यस्मृतिः, ऋजुमिताक्षरासहिता.

YAJÑAVALKYASMRITIḤ WITH RĪJUMITĀKṢARĀ.

Pages, 48. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 2689.

Contains the Divyaprakaraṇa (wants the beginning) and Dayavibhāgaprakaraṇa (wants the end).

Same work as that described under No. 2682 ante.

No. 14537. धर्मशास्त्रवचनानि.

DHARMAŚĀSTRAVACANĀNI.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 2787.

Wants the beginning and the end.

Similar to the work described under No. 14296 ante.

Beginning :

वर्ज्यं गोनरवाजिमेधकरणं मद्यं विवाहः पुन-
र्व्यूढायाश्च कलौ कमण्डलुधृतिर्वृद्धव्रतं नैष्ठिकम् ।
ज्येष्ठांशोद्धरणं वरातिथिपुराचर्यं पशोर्हिंसनं
भ्रातुः स्त्रीषु नियोगतस्सुतजनस्तद्वद्वनस्थाश्रमः ॥

End :

एवं सुनिश्चिते काले विद्यारम्भन्तु कारयेत् ।
उत्तरायणगे सूर्ये कुम्भमासं विवर्जयेत् ॥
बालस्य पञ्चमे वर्षे प्राप्तं भानौ कुलीरगे ।
आरम्भ(रभे)ताक्षराभ्यासं शुभकाले यथोदिते ॥
पञ्चाब्दे पञ्चमासे च पञ्चाहे पञ्चनाडिषु ।
विद्यारम्भो वृद्धिकगे जन्मादिगणनं बुधैः ॥

No. 14538. अपरविषयः.

APARAVISAYAH.

Pages, 6. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 195a of the MS. described under No. 2787.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 3527 ante.

Beginning :

दाहादिकर्मणि मृते परिवर्तमाने मध्ये भवेद्यदि निवृत्तिस्थान्तरायैः ।
दाहं विना सकलमेव तिलोदकानि(दि)संवत्सरेऽपि विगते करणीयमेतत् ॥
एकोद्दिष्टान्तमेव स्यात्संस्कर्तुं शुद्धतात्परात् । इति बोधायनस्मरणात् ।
पितुः पुत्रेण कर्तव्याः पिण्डदानोदकक्रियाः ।
पुत्राभावे तु पत्नी स्यात्पत्न्यभावे तु सोदरः ॥

असगोत्रस्सगोत्रो वा यदि स्त्री यदि वा पुमान् ।
प्रथमेऽहनि यः कर्ता स दशाहं समापयेत् ॥

End:

दशाहाभ्यन्तरे बाले प्रमीते तस्य बान्धवैः ।
शावाशौचं न कर्तव्यं सूत्याशौचं समाचरेत् ॥

.

आशौचसन्निपाते तु समयोर्मृतजातयोः ।

न जात दा भवेत् ॥

शावेन शुध्यते सूतिर्न सूति (श्शावशोधिनी) ।

. . . न सपिण्डीकृते प्रेते ॥

No. 14539. धर्मशास्त्रवचनानि.

DHARMAŚĀSTRĀVACANĀNI.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 2822.

Incomplete.

A collection of stanzas from various Smṛtis and Purāṇas.

Similar to the work described under No. 14223 ante.

Beginning:

न चान्यत्क्रियते भूयस्स दोषोऽस्तु महान् भवेत् ।

अधश्शिरोभिर्दृश्यन्ते नारकैर्दिवि देवताः ॥

देवाश्चाऽधोमुखान्सर्वानधः पश्यन्ति नारकान् ।

वृत्तिश्च विहिताचारः प्रतिषेधविवर्जनम् ॥

दृष्टिर्भक्तिस्तथा लक्ष्म सतां सेवेति षड्विधा ।

* * * *

धिया यदक्षरश्रेणीं वर्णस्वरपदात्मिकाम् ।

मन्त्रार्थचिन्तनाभ्यासस्त जपो मान(वैः)स्मृतः ॥

ये द्विजा अभिभाषन्ते सन्ध्यावन्दनकर्मणि ।

ते यान्ति नरकान् घोरान् यावदाचन्द्रतारकम् ॥

अङ्गुष्ठाग्रं समाकुञ्च्य मध्यमामूलपर्वणि ।

मुक्ताङ्गुष्ठकनिष्ठाभ्यां शेषमाचमनं पिबेत् ॥

End :

गणान्नं गणिकान्नं च यत्त्यन्नं याचकस्य च ।
 अजा(ज्ञा)नादपि भुञ्जीयात् भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत् ॥
 चौर्यकर्मरतो विप्रो गोभूस्वर्णापहारकः ।
 सगोत्रीं रमते यस्तु स विप्रो गण उच्यते ॥
 भर्तृहीना तु या नारी गुप्तं सङ्कुरुते पतिम् ।
 गर्भस्त्रावं चरेत्काले सा नारी गणिका स्मृता ॥
 वैश्वदेवविहीनस्तु बलिदानविवर्जितः ।
 इतस्ततस्तु यो भुङ्क्ते स विप्रो यतिरुच्यते ॥

No. 14540. विष्णुसहस्रनामावलिः.
 VIṢṆUSAHASRANĀMĀVALIḤ.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 2822.

Incomplete.

Same work as that described under No. 9050 ante.

No. 14541. जितन्तेस्तोत्रम्.
 JITANTĒSTĪTRAM.

Pages, 3. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 25b of the MS. described under No. 2822.

Contains the first twenty stanzas only.

Same work as that described under R. No. 174(i) of the Triennial Catalogue of the Sans. MSS., Vol. I. Part I-A and with the additional stanzas given below :—

मज्जन्मनः प्रभृति मोहवशं गतेन नानापराधशनमाचरितं मया ते ।
 अन्तर्बहिश्च सकलं तव पश्यतोऽपि क्षन्तुं त्वमर्हसि हरे करुणावशेन ॥
 कर्मणा मनसा वाचा या चेष्टा मम नित्यशः ।
 केशवाराधनं सा स्यात् जन्मजन्मान्तरेष्वपि ॥

No. 14542. पर्वतेशस्तोत्रम्.
 PARVATĒŚASTĪTRAM.

Page, 1. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 34a of the MS. described under No. 5506.

Contains ten stanzas only.

A prayer to Parvatēśa, a form of God Śiva as worshipped in the village Hēmanasa.

Beginning :

श्रीसोमनाथ श्रीनाथनाथ श्रीशैलनाथ श्रीभूतनाथ श्रीपर्वतेश ।

गङ्गोत्तमाङ्गभङ्गीतन(र)ङ्गसङ्गीतसङ्गवारनिभाङ्ग श्रीपर्वतेश ॥

* * * *

हेमाद्रि . कारुण्यरूप सोमकलाहेमाङ्गरूप श्रीपर्वतेश ॥

वारिधितूण दैत्यारिबाण सारङ्गपाणे नित्यकल्याण श्रीपर्वतेश ॥

End :

फालाक्ष शम्भो श्यामाङ्गसङ्ग कालावलेपदैत्यविभङ्ग श्रीपर्वतेश ।

हेमनसारुग्रग्रामनिवास श्रीपर्वतेश नाशोधिताख्य श्रीपर्वतेश ॥

No. 14543. पार्वतीशङ्करजयस्तोत्रम्.

PĀRVATĪŚAṆKARAJAYASTŌTRAM.

Page, 1. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 34b of the MS. described under No. 5506.

Incomplete.

A eulogy addressed to Goddess Pārvatī and God Śaṅkara as worshipped in the village Hēmanasa.

Beginning :

कमलजहरिनुतकमलजभवनुतकमलानुतहत(र) कमलादेवि जय ।

अरुणजययुतकरिमुख गुहसुत गिरिवरजाते धीरनुते जय ।

End :

गजचर्माम्बरगजवाधाकर गजनाथाहर राजधरे जय शङ्कर ।

हेमनसापुरधामगिरीश्वर सोमकलाधर सुमनोधारे जय ।

No. 14544. मलमासविषयः.

MALAMĀSAVIṢAYAH.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1b of the MS. described under No. 2972.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 14522 ante.

Beginning :

मासः प्रधानं खल(लु)कैकर्म मुक्त्वा फलं कर्म न कार्यमत्र

पञ्चोत्सवादिब्रततीर्थयात्रा विवाहकर्मादि विनाशमेति ॥

मलमासेऽवश्यकर्तव्यानि—

गर्भे वार्षि(र्धु)षिके प्रेत भृत्ये श्राद्धानुमासिके ।

आब्दिके च तथा श्राद्धं नाधिमासे विवर्जयेत् ॥

End:

द्वौ मासावेकनामानावेकस्मिन्वत्सरे यदि ।

उत्तरे देवकार्याणि पितृकार्याणि चोभयोः ॥

देवकार्याणि पितृकार्याणि चोभयोर्मासयोर्मध्ये उभयशब्देन दर्शमन्वा-
दियुगादिमासिकश्राद्धविषयं प्रत्याब्दिकमुत्तरनिजचैत्रे कर्तव्यमिति ।

मलिम्लुचे मासि मृतस्य पुंसः त्रयोदशे तु प्रथमाब्दिकं स्यात् ।

मध्येऽधिमासेऽपि मृतस्य तद्वदतोऽधिके द्वादशमास एव ॥

No. 14545. कुहूमन्त्रः.

KUHŪMANTRAḤ.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 2972.

Complete.

On the manner of repeating the Kuhūmantra addressed to the goddess Kuhū (the daughter of Āṅgiras).

Beginning and the End:

ओं हां हौं नमः । कुहू शङ्किनि नाडिभ्यां नमः । ओं हां देव-
दत्तधनञ्जयाभ्यां नमः ओं हौं सदाशिवाय नमः । एवं न्यसेत् । उक्तं च—

द्वे तत्त्वे शान्त्यतीतायाः(ः) क्रमाच्छक्तिशिवात्मके ।

तथानाश्रितशक्त्यादिनिवृत्तिर्वावदन्तिका ? ॥

नाभिन्याधिष्ठितान्यासं भुवनान्यूनषोडश ।

नादजं प्रणवं विद्धि पदं साक्षानिवात्मकम् ? ॥

आकारादिविसर्गान्ता वर्णाष्णोडश कीर्तिताः ।

ईशानास्त्रशिवमन्त्राः बीजे द्वे नादको(कस्त)तथा ? ॥

नाट्ये कुहू शङ्कनी च देवदत्तधनञ्जयौ ।

No. 14546. नवरात्रिपूजाविधिः.

NAVARĀTRIPŪJĀVIDHIḤ.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 2972.

Incomplete.

Similar to the work described under No. 8358 ante.

Beginning :

पूर्वोक्त-एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ मम सकलाभीष्टसिद्ध्यर्थं
सकलारिष्टनिवृत्त्यर्थं भौमान्तरिक्षदिव्यस(क)लोत्पाताद्भुतदर्शनादिदुर्निमित्तसूचित-
सकलारिष्टनिवृत्तिं बाह्याभ्यन्तरयोश्शत्रुप्र(भृ)तिभिः मामुद्दिश्य कृतक्रियमाणा-
भि(चा)रादिकृत्यजनितसर्वोपद्रवशान्तिं

अभीष्टसिद्धिं च कामयमानः अस्मिन्वर्षे शरत्कालमहोत्सवे आदिमहादुर्गास-
रस्वतीपूजामन्दोलिकच्छत्रचामरपूजां पताकायुधपूजां कुमारीसुवासिनीपूजां सप्त-
शतीस्तोत्रादिजपहोमादिकमेतद्बाह्यैश्च सह करिष्ये ।

End :

अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ।

सुप्रसन्नाश्च कु(र्वन्तु) शान्तिकं विधिपूर्वकम् ॥

इति संप्राप्त्यर्था जपार्थं त्वामहं वृणे . . स्वीकीरयामि । ततः कलश-
स्तान्नं(स्थापनम्).

No. 14547. नारायणोपनिषद्.

NĀRĀYAṆĪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS. described under No. 1250.

Complete.

Same work as that described under No. 561 ante.

No. 14548. दत्तात्रेयवज्रकवचः.

DATTĀTREYA VAJRAKAVACAḤ.

Pages, 8. Lines, 4 on a page

Begins on fol. 146a of the MS. described under No. 1454.

Complete.

Same work as that described under No. 6400 ante but with slight difference in the beginning as given below :—

अस्य श्रीदत्तात्रेयकवचस्तोत्रमन्त्रस्य वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीदत्तात्रेयः परमात्मा देवता, द्वां

No. 14549. प्रक्रियाकौमुदीव्याख्या—प्रसादः.

PRAKRIYĀKAUMUDĪVYĀKHYĀ: PRASĀDAḤ.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 1\frac{3}{4}$ inches. Pages, 156. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other works herein are ; Kumārasambhava-vyākhyā ; Sañjivini 77a, Sarasvativratakālpa 95a, Lalitāsahasranāmāvali 98a.

Contains from the beginning of Curāḍiprakriyā to the end of Lakārārthaparakriyā.

Same work as that described under No. 1349 ante, wherein see for the beginning.

End :

पिवतखादतेति अभ्यवहरतेति सामान्यक्रियावाचिनोऽनुप्रयोगः । भुङ्-
ध्वमास्वदध्वमिति ध्वमि स्वादेशाभावे पक्षे ध्वमि उदाहरणे । पक्षे हिस्वा-
विति पिव खाद भुङ्क्व आस्वदस्व लोडभावपक्षे इति । क्रियासम-
भिहार इत्यादिना लोटो वैकल्पिकत्वात् लोडभावपक्षे हिस्वाद्यभावात् लड-
न्तस्य पुनः पुनः पिवति खादति इत्यादिक्रियाविशेषा उदाहार्या इत्याशयः ।

No. 14550. कुमारसम्भवव्याख्या—सञ्जीविनी.

KUMĀRASAMBHAVAVYĀKHYĀ: SAÑJIVINĪ.

Pages, 32. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 79a of the MS. described under the previous number.

Contains the first Sarga incomplete and in disorder.

Same work as that described under No. 11512 ante, but without the text.

No. 14551. सरस्वतीव्रतकल्पः.

SARASVATĪVRATAKALPAḤ.

Pages, 6. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 95a of the MS. described under No. 14549.

Wants the beginning ; otherwise complete.

Same work as that described under No. 8564 ante.

No. 14552. ललितासहस्रनामावलिः.
LALITĀSAHASRANĀMĀVALIḤ.

Pages, 53. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 98a of the MS. described under No. 14549.

Complete.

Same work as that described under R. No. 185(a) of the Triennial Catalogue of Sanskrit MSS., Vol. I, Part I-A.

No. 14553. वृत्तिसिद्धरूपसङ्ग्रहः.
VR̥TTISIDDHARŪPASAN̄GRAHAḤ.

Pages, 66. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 22a of the MS. described under No. 1278.

Contains the Śabdamañjarī and Samāsacakra (imperfect and in disorder.

Same work as that described under No. 1557 ante.

No. 14554. लिङ्गनिर्णयः.
LIŒGANIRNAYAH.

Pages, 8. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 55a of the MS. described under No. 1278.

Wants the beginning ; otherwise complete.

Similar to the work described under No. 1495 ante.

Beginning :

(अ)ङ्गुलीयहर्म्यहृदयकौशेयभयेन्द्रियमाल्यालेख्यसस्यानि नपुंसकः । मण्डलं
त्रिषु । मुकुलकुङ्मलकमलानि न स्त्रियाम् । शाला-
मालावेलाडोलाजालमेखलाकलातुलाहालोहलास्त्रीवाचककमला स्त्रियाम् ।

End :

सकथ्यक्षिनाभ्युक्षशब्दाः पुंवाचकाः बहुव्रीहिसमासा(न्ता)श्चाकारान्ता भ-
वन्ति । यथा दीर्घसकथः पुण्डरीकाक्षः पद्मनाभः (महोक्षः) इत्यादि ॥

Colophon :

इति लिङ्गनिश्चयस्संपूर्णः ॥

No 14555. भेरीताडनक्रमः.
BHĒRITĀḌANAKRAMAH.

Pages, 10. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 71a of the MS. described under No. 1340.

Incomplete.

On certain details of procedure, such as the proper occasion for sounding the Bhēri, or kettle drum in temples.

Beginning :

ब्रह्मोवाच—

श्रोतुमिच्छाम्यहं देव भेरीनां ताडनक्रमम् ।
ससुरासुरगन्धर्व द्यकम् ॥
त्वत्प्रसादाच्छ्रुतं पूर्वं युष्मद्वाक्यं स्वनिर्मितम् ।
मन्त्रोत्पत्तिश्च देवेश स्थापनावाहनं तथा ॥
एतत्सर्वं समासेन ब्रूहि मे पुरुषोत्तम ॥

श्रीभगवानुवाच—

साधु साधु चतुर्वक्त्रं तत्सर्वं कथयामि ते ।
तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामि भेरीनां ताडनं शृणु ॥
ध्वजारोहणतद्वात्रौ भेरीताडनमाचरेत् ।
अग्रतो ब्रह्मपीठस्य बहिर्वा धाम गोपुरात् ॥
षोडशस्तम्बसंयुक्तं मण्डपं कारयेत् बुधः ।

End :

स्वानुष्ठानपरो नित्यं देवदेवे च भक्तिमान् ।
देवतास्मरणोपेतो वाद्य ॥
. नं त्यक्त्वा निश्चलं रोमहर्षणम् ।
अ(ह)स्ते संप्रोक्षयेत्पश्चादर्घ्यतोयेन तत्परम् ॥
आचार्यश्च विचार्यथ ब्राह्मणा ।
. चार्योऽथ पश्चान्मन्त्रमिमं पठेत् ॥

No. 14556. यज्ञोपवीतधारणप्रयोगः.

YAJÑOPAVITADHĀRAṆAPRAYŌGAḤ.

Pages, 9. Lines, 6 on a page. Character, Nandināgarī.

Begins on fol. 43a of the MS. described under No. 1352.

Complete.

Similar to the work described under No. 2853 ante.

Beginning :

अथ यज्ञोपवीतधारणप्रयोगः— शुभे दिने विधिवत् कार्पासबीजमुप्त्वा
तत्रोत्पन्नकार्पासं वने स्वतस्सिद्धं कार्पासं वा संशोध्य विधिवत्सूत्रं कारयित्वा

तेन यज्ञोपवीतं विधिवद्धारयेत् । तत्रायं क्रमः—शुभे दिने स्नात्वा शुचि-
भूत्वा ग्रामाद्बहिः स्वक्षेत्रे शुचौ देशे जानुमात्रावटं स्नात्वा शुद्धगोमयचूर्णेन
शुद्धमृत्तिकाभिश्च संपूर्य

* * * *

तेन सूत्रेण शुभे दिने शुभस्थाने कृतनित्यक्रियः समन्त्रं यज्ञोपवीतं कुर्यात् ।

End :

नद्यादौ स्नात्वा अन्यानि यज्ञोपवीतानि पूर्ववत् धृत्वा छिन्नं पूर्ववत्
विसृज्य छेदनपापविशुद्धचर्ममष्टोत्तरसहस्रवारं गायत्रीं जपेत् । अथ महा-
पातकयुक्तस्तत्पातकप्रायश्चित्ताचरणपर्यन्तं स्वसंस्कृतं यज्ञोपवीतं विहाय
लौकिकं सूत्रं धारयेत् । ब्राह्मणब्रुवकानीनकुण्डगोलकप्रात्यकुष्ठचवकीर्णनस्तु
असंस्कृतं यज्ञोपवीतं धारयेयुः ।

Colophon :

इति यज्ञोपवीतधारणप्रयोगः ॥

No. 14557. नानास्मृतिवचनानि.

NÂNĀSMṚTIVCANĀNI.

Pages, 8. Lines, 6 on a page. Character, Grantha and Nandināgarī.

Begins on fol. 48a of the MS. described under No. 1352.

Contains Garbhādhāna, Pūmsavana, Sīmanta, Nāndī, etc.

A collection of stanzas taken from various Smṛtis dealing with the
necessity for fulfilling the desires of a pregnant woman and with the
proper time for the performance of Sīmanta, Pūmsavana and other such
ceremonies.

Beginning :

(तदाह याज्ञवल्क्यः)

आत्मा गृह्णात्यजस्सर्वं तृतीये स्पन्दनं ततः ।

दौहदस्याप्रदानेन गर्भो दोषमवाप्नुयात् ॥

वैरूप्यं मरणं वापि तस्मात्कार्यं प्रियं स्त्रियाः ।

पुंनक्षत्राणि चैतानि तिष्यो हस्तः पुनर्वसुः ॥

अभिजित्प्रोष्ठपाच्चैव अनूराधाश्चयुक् तथा ।

नारदः—

हस्ते मूले हरेर्भेष्वदितौ मृगशिरस्त्वापि ।

पुष्ये प्रजापतौ चैवाजैकपाद्भयसंयुते ॥

पुंनामानि नवैतानि पुंकर्मात्र प्रयोजयेत् ।

काष्णाजिनिस्तु आप्रसवात्समिन्तकाल इत्याह—

गर्भालम्बनमारभ्य यावन्न प्रसवस्तदा ।

सीमन्तोन्नयनं कुर्यात् शङ्खस्य वचनं यथा ॥ इति ।

एवमादिगृह्यज्यौतिषविरोधे श्रीधरीयस्मृतिभास्करयोः निर्णय उक्तः ।

यस्मिन् काले विरोधोऽस्ति ज्यौतिषोक्तागमोक्तयोः ।

ज्यौतिषोक्तं विहायैव श्रुतिचोदितमाचरेत् ॥

पितरि पितामहे च जीवति कथं कार्यमित्यपेक्षिते स एवाह—पितरि जीवति श्राद्धं कुर्यात् । स एषां पिता कुर्यात्तेषां कुर्यात्पिता पितामहे च येषां पितामह इति । एतद्वृद्धिश्राद्धाकरणे प्रत्यवायमाह वृद्ध-शातातपः ।

End:

रोगार्दितस्तु तत्काले स्पृशन्नन्येन कारयेत् ॥

No. 14558, आगमग्रन्थः.

ĀGAMAGRANTHAH.

Pages, 20. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 1334.

Wants the beginning and the end.

Contains the Prāyascittabhāga which deals with the purificatory ceremonies to be performed when the inner sanctuary of a temple becomes polluted in different ways.

Beginning :

. रादिकन्तनरैस्तथा ।

परदारप्रवेशश्च व्याधिभिः परिभूयकैः(?) ॥

तदन्यैर्दोषयुक्तश्च स्पृश्यते देवगात्रकम् ।

प्रमादादवशाच्चैव बल्युक्तेन देवराट् ॥

पूर्वोक्तमखिलेनैव प्रमादात्स्पृश्यते यदि ।

अध(आग)मोक्तप्रकारेण स्नापयेत्कलशेश्वरम् ॥

पूजयेद्भिभवेनैव भोजयेद्देवपारगान् ।

बलिहोमं तु विप्रेन्द्र कारयेद्द्विधिवत्ततः ॥

End :

ध्वजारोहणपूर्वन्तु महोत्सवमथाचरेत् ।
अवमृतं कुर्यात्तस्मिन् पुष्पयागमथाचरेत् ॥

No. 14559. गायत्रीरामायणम्.
GĀYATRĪRĀMĀYAṆAM.

Pages, 9. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 128a of the MS. described under No. 1334.

Complete.

It is explained herein how the 24 stanzas of the Gāyatrīrāmāyaṇa which begin with each of the 24 successive letters of the Gāyatrīmantra indicate and bring out the significance of the Gāyatrīmantra.

Beginning :

गुणाढ्यत्वं कारणत्वं शरण्यत्वं प्रकाशिता ।
प्रकाशत्वं च निखिलैर्ध्येयत्वं च नियन्तृता ॥
एते ब्रह्मगुणा नित्यं गायत्रीपरिवोदिताः ।
प्रथमेन गुणाढ्यत्वं (कारणत्वं द्वितीयतः) ॥
तृतीयेन शरण्यत्वं चतुर्थेन प्रकाशिता ।
* * * * *
विभीषणादिवृत्तान्ते शरण्यत्वं प्रकाशितम् ।
निग्रहानुग्रहत्वाभ्यां बोधित्वं तेन बोध्यते ॥
इत्यत्रार्था ध्येयता च पूजिता सर्वदैवतैः ।
चातुर्वर्ण्यं च यो ॥
. मित्यर्थः साम्प्रदायिनः ।
अत्र(क्ष)रं मानमुक्तार्थसम्प्रदायनियामकम् ॥
प्रबन्धाद्यन्तदृष्टिर्यद्वायज्याद्यन्तिमाक्षरे ।

विद्यारण्यः—

उक्तार्थविषयश्चान्यो विशेष ॥
. हतमसोऽपि विस्तरेण प्रकाशयते ।
प्रणम्य माघवारण्यं तत्प्राप्तादुपदेशतः ॥
व्याकरोम्यद्य गायत्रीमन्त्रवर्णान् पृथक् पृथक् ।
* * * * *
एवमेते ब्रह्मगुणा गायत्रीवर्णबोदिताः ।

End :

प्रकाश्यन्ते रामकथास्तद्गृहे नारदेरिते ॥
 तत्तद्गुणपरग्रन्थे तत्तद्गुणसमुद्भवाः ।
 आद्यवर्णस्यैकदेशः प्रबन्धादौ समुद्धृतः ॥

* * *
 प्रबन्धान्तश्लोकः—

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराभवः ।
 येषामिन्दीवरश्यामो हृदये सुप्रतिष्ठितः ॥

Colophon :

गायत्रीरामायणं समाप्तम् ॥

No. 14560. रामायणरहस्यम्.
 RĀMAYANARAHASYAM.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 132a of the MS. described under No. 1334.

Incomplete.

Herein the sage Agnivarma purports to give the time of the occurrence of the leading events in the life of Rāma.

Beginning :

चरितं रघुनाथस्य महापातकनाशनम् ।
 ज्ञानदृष्ट्या (च) यदृष्टं तथा वक्ष्यामि सिद्धिदम् ॥
 रामः पञ्चदशे वर्षे षड्वर्षमभिमैथिलीम् ।
 उपयेअ(मं ह्य)योध्यायां द्वादशाब्दानुवासनम् ॥
 सप्तविंशतिके वर्षे यौवराज्यमकल्पयत् ।
 राजा रामाय कैकेय्या वरद्वयमयाचत ॥

End :

आषाढशुद्धनवमीदिने तु जनकात्मजा ।
 वाल्मीकेराश्रमे पुत्रद्वितयं समसूयत ॥
 षड्विंशत्या समधिकं नव वर्षशतानि तु ।
 वाल्मीकेराश्रमे सीता सपुत्रा ह्यवसत्किल ॥
 भूमौ गतायां सीतायां सपुत्रः किल राघवः ।
 दशवर्षसहस्राणि भुजन्ते(बुभुजे) केवलां महीम् ।
 अग्निवर्णेन मुनिना विहितं बालबुद्धये ।
 रामायणीयमखिलं रहस्यमिदमुत्तमम् ॥

GENERAL INDEX.

[Note —The names printed in *italics* are those of the works described.]

Abhisēkamantra, 9614
 Abhisraṇamantra, 9614
 Adhānaprayōga, 9500
 Adhishānalakṣaṇa with Telugu meaning, 9506
 Ādiryāhrdaya, 9596
 Advaitamahāranda, 9661
 Āgamagrantha, 9742
 Agastyasārūhitā, 9673, 9695
 Agnihōtrāprayōga, 9686
 Ājñamukha, 9560
 Ājñānīrayimīmantrāsthā, 9639
 Ājñānāstapādīpavasthā, 9677
 Āgnisāmsargapṛāya-citrāprayōga, 9716
 Āg nīrōṣṇaprayōga, 9502
 Ājrayanaprayōga, 9715
 Ājrananasthūlīpika, 9552
 Āiturēyōpaniṣad, 9516
 Ājapāvullhāna, 9537
 Ājñādikāśāvalī, 9647
 Āmarakōṣapadīpapaṇa, 9605
 Āmarasūtra, 9614
 Āmāśyājñasūtrasānti, 9691
 Āmbūlāṣṭaka, 9653
 Āndhātāgnyantīrēṣīprayōga, 9634
 Ānandatīrtha, 9607, 9621, 9622
 Ānantavratākālpa, 9525
 Āñjīrasānti, 9709
 Āñkuvārpaṇaprayōga, 9649
 Āñvīrambhāṇīnaprayōga, 9679
 Āp mīrghahōmaśānti with Telugu meaning, 9646
 Āpārāprayōga, 9556
 Āpārārka, 9604
 Āpārāśayā, 9732
 Āpārāśayavacana, 9700
 Āpātambadharmasūtra, 9563
 Āpastambagṛhyānaprayōga, 9554
 Āpastambāparaprayōga, 9631, 9704
 Āpastambagṛhyānaprayōgāṅkī, 9675
 Āpastambasāpānāhōma, 9678
 Āpṛīyā, 9564
 Āṣkāśīlā, 9532, 9533
 Āṣṭāṣṭapārāśayastōtra, 9545
 Ārthasāṅgraha, 9604
 Āśādīrta, 9579, 9580
 Āśācāṭīpika, 9604
 Āśācāśayā, 9726
 Āṣṭmāhādaya, 9642
 Āśṭmāhādayayāñkīyā Bālapratibhīnī, 9642
 Āśṭmāhādayayāñkīyā Sāvāṅga-sundarī, 9643
 Āstārgadaśīphalādivarāṇa, 9566
 Āśvalāyana pīṭhīrēṣhīkaprayōga, 9568
 Āśvalāyanapūrvaprayōga, 9526, 9568
 Āśvalāyanasmṛtīāpīka, 9568

Āśvalāyanaśrautasūtra, 9647
 Āśvatthapūjāvidhī, 9717
 Ātharvasātra-upanīśad, 9647
 Ātmāntmavivēka, 9661
 Ātura-sannyāsaprayōga, 9536
 Ātura-sannyāśāśī, 9519, 9555, 9572, 9575, 9644, 9645, 9705, 9706.

Bālapratibhīnī, 9642, 9643
 Ālarakāśīrī, 9589
 Bhāgaradvijitā, 9549, 9551, 9588
 Bhāgarata, 9589, 9595, 9614
 Bhāgaratadharmā, 9523
 Bhāgavātra, anmanakāśāśīrī, 9670
 Bhāgavāśīrīrīpāśānti, 9674, 9675
 Bhāratavāṁśīrī, 9596
 Bhārtr̥hīpīyānaprayōga, 9632
 Bhāsurvājñā, 9583
 Bhāsyakāra, 9495, 9496
 Bhāṭṭojidīkīśa, 9629
 Bhāgavātrajanmāśāśīrī, 9670
 Bhāḍāḍāḍā with Śāṭkīyā, 9497
 Bhāṭṭāśāśīrī, 9739
 Bhāṭṭāśāśīrī, 9710
 Bhāṭṭāśāśīrī, 9683
 Bhāṭṭāśāśīrī, 9701
 Bhāṭṭāśāśīrī, 9627
 Bhāṭṭāśāśīrī, 9512
 Bhāṭṭāśāśīrī, 9551
 Bhāṭṭāśāśīrī, 9651
 Bomby, 9549
 Boppanābhātī, 9649
 Boppanābhātī, 9649, 9716
 Brahmacāśīrī, 9526
 Brahmacāśīrī, 9717, 9723
 Brahmacāśīrī, 9604
 Brahmacāśīrī, 9495, 9511, 9619
 9621
 Brahmacāśīrī, 9660
 Bhāṭṭāśāśīrī, 9514

Cakrāśīrī, 9503
 Candramaulīpāśāśīrī, 9700
 Candramaulīpāśāśīrī, 9549, 9593
 Candrikā, 9704
 Candrikā, 9695
 Candrikā, 9719
 Candrikā, 9590, 9591
 Candrikā, 9555
 Candrikā, 9585
 Candrikā, 9514, 9516, 9521
 Candrikā, 9529

Deivajñāvalabha, 9690
Dakṣiṇāmūrtystaka, 9618
Dantaajananaśānti, 9694
Darśanāsraṇḍhāprayōga, 9560
Darśapūrnāmāsa, 9652
Darśasthūlipīkaviḍhi, 9515
Dattahōmaprakaraṇa, 9718, 9719
Dattahōmaprayōga, 9575
Dattamīmāṃsā, 9575
Dattaputrasaṃsaya, 9725
Dattotrēyavajrakaraca, 9737
Dāyavibhāgaśloka, 9504
Dāyavibhāgavacana, 9626
Dēśāntaramṇīasamśkāra, 9577
Dēvīmāhātmya, 9616
Dēvīstōtra, 9616
Dharmāmṛta, 9579, 9580
Dharmaprayōgi, 9630
Dharmasāstra, 9597
Dharmasāstrasloka, 9561
Dharmasāstravacana, 9602, 9653, 9683,
 9727, 9732, 9738
Dharmānirūpaṇa, 9491
Dharmānakrama, 9517
Dikṣālanamaskāra, 9550
Dravyavahētubhāṅga, 9611
Dvādaśīvrata, 9559
Dvibhīryāgnidvaya-amśargaviḍhi, 9652,
 9730, 9731
Dvibhīryāgnisamśkāra, 9533
Dvibhīryāgnivibhāga with prayōga, 9651

Ēkādaśanirṇaya with Kanarese meaning,
 9640

Ēkanakṣatrazananaśānti, 9673, 9674

Ēkaśloka, 9655

Ēkōddiṣṭaprayōga, 9617

Gaṇḍarāmōksa, 9613, 9630
Gapahōma, 9652
Gapdanaṣṭatrasānti, 9673
Gapāntāśāntimantra, 9542
Garbhādhāna, 9631, 9682
Gārgyasaṃhitā, 9687, 9725
Garudapañcamīvrata, 9608
Garudapurāṇa, 9624, 9625
Guthāśaptasatī, 9582
Gaurīpañcāṅga, 9655
Gautamadharmasūtrabhāṣya, 9708
Gūyatrījapamāya, 9719
Gūyatrīmūlajapākrama, 9508
Gūyatrīśānti, 9743, 9744
Gūyatrīśāntīśānti, 9563
Gūyatrīyākṣaradhāna, 9598
Gharasradhānā, 9569, 9570
Gītāgōvinda, 9515
Gītāśāra, 9588, 9589
Gōmahāśyāntīdvitīyāprasūtīśānti, 9697
Gōpīlakasandhyāvandanaprakara, 9505
Gopikāṅga, 9573
Gopinātha, 9620
Gōvindabhāṣya, 9651
Grahapajananaśānti, 9623
Grahapajananaśānti, 9696

Grahānanirṇaya, 9720
Grahayōgaśānti, 9668
Grhyacandrikā, 9602, 9603
Grhyaparīṣṭi, 9731
Gurugītā, 9699

Hanumānyāntroddhāra, 9506
Hanumanmālīmantra, 9653
Harivamsa, 9589
Hastāmālaka, 9617
Hastāmālakaśtōtra, 9616
Hautraprayōga, 9499
Hemādri, 9566, 9568, 9653
Hēambōpanisad, 9509, 9510

Jābīlōpanisad, 9663
Jannāṣamīvratakalpa, 9702, 9703
Jātukarmāḍīmantrīrtha, 9601
Jātavēdasāhryyīnāsa, 9685
Jayādīprāyāścittahōmānukramapīkī,
 9559
Jatōttarasamhitā, 9535, 9536
Jīnasamhitāsaṅgraha, 9580
Jitāntōstōtra, 9734
Jīvanmuktīprakaraṇa, 9660, 9661
Jyauṭṣādarpaṇa, 9729
Jyauṭṣasāṃsaya, 9539, 9576, 9585, 9623
 9713
Jyōṣṭhānakṣatrazananaśānti, 9693

Kādīśānti, 9683, 9689
Kaivalyōpanisad, 9588
Kāmarāhmadāśānti, 9684
Kālīāra, 9720
Kālāntīraṇa, 9536
Kālāvidhāna, 9613
Kālidāsa, 9531, 9504, 9608, 9629, 9713
Kāśāntīśāntīpanisad, 9646
Kapardin, 9675
Kapādhēnuprasamsā, 9713
Kapōtāśānti, 9657
Karnamadhyaśūt-kāḍīvīsaṃsaya, 9578
Kārtavīryārjunayāntroddhāra, 9540, 9541
Kārtikrama, 9709, 9726
Kāṭyāyanaśānti, 9696
Kavēṭīthūṇa, 9573
Kaumudī, 9604
Khādīrāgrahāśānti, 9586
Kramasāmyā, 9579
Kṛṣṇa, 9617
Kṛṣṇācārya, 9533
Kṛṣṇacaturdaśījananaśānti, 9672, 9673
Kṛṣṇagura, 9534
Kṛṣṇajyauṭṣāntīratakālpā, 9702
Kṛṣṇajyauṭṣāntīrāghyaśloka, 9629
Kṛṣṇaśāntī, 9613
Kuhūmantra, 9736
Kuhūśānti, 9670, 9676, 9695, 9696
Kumārāsānīhavyākhyā, 9733
Kunīkṛṣṇa, 9539
Kūrmāśānti, 9635, 9666

Lakṣmīraśmīha, 9616
 Lalitāsahasranāmāvalī, 9739
 Līlāsuka, 9613
 Līṅganīrṇaya, 9739
 Līṅganyāsa, 9510
 Līṅgatarpana, 9507

 Madhvācārya, 9607
 Madhvāstaka, 9607
 Madhva, 9616
 Madhvanvijaya, 9614
 Mādhaṇya, 9604
 Māgha, 9611
 Mahābhārataśaṅgraha, 9597
 Mahādēvapratīstha, 9667, 9668
 Mahānyāsa, 9552, 9587
 Mahāsaṅkalpa, 9585
 Mahāśūkyārthavivaraṇa, 9517
 Mahēśvara, 9597
 Mahōtpātasaṁti, 9634
 Malamāsaṁptāhanīrṇaya, 9721
 Malamāsavisaya, 9735
 Mālītiśūdhavavyākhyā, 9637
 Mālava, 9540
 Mandavīrajanmarkanyōgasānti, 9671
 Muṅgalōstaka, 9530, 9610
 Manīṣīpañcaka, 9489
 Mārkaṇḍēyastōtra, 9549
 Mātṛkāśurasvatīmantra, 9538
 Medhūtiṭhi, 9604
 Mithyātvaḥhaṅga, 9610
 Mr̥ttikāśmīnavīdhī, 9633
 Mr̥ttikāśmīnavīdhāna, 9522
 Mr̥tyulīṅgalamantra, 9559
 Muktvāvalī, 9640
 Mukhāvalōkanuvīdhī, 9721
 Muktvāvalīvyākhyā, 9640
 Mūlāślēṣājānanasānti, 9692, 9693
 Muṇḍakōpanīśad, 9516
 Mūrtidhyāna, 9562

 Nāgabali, 9676
 Nāgapratīsthāvrata, 9571
 Nakṣatrahōmaprayōga, 9590
 Nakṣatranighaṇṭu, 9619
 Nāmaliṅgānusāśana, 9614
 Nāmanakṣatradīnīrūpaṇa, 9613
 Namassivayāśaka, 9619
 Nāmatrayavīdhāna, 9686
 Nānāsmṛtīvacana, 9741
 Nandapandita, 9575
 Nāndīprayōga, 9547
 Nārāyaṇabali, 9573
 Nārāyaṇapāñṭita, 9614
 Nārāyaṇārama, 9497
 Nārāyaṇopaniśad, 9630, 9647, 9737
 Narasimhadhyāna, 9504
 Navagrahapūjā, 9567
 Navagrahasatōtra, 9534
 Navagrahahōmavīdhī, 9669
 Navagrahapūjāhōmavīdhī, 9548
 Navagrahanamaskīra, 9550
 Navagrahīrīdhāna, 9703
 Navarītrīpūjāvīdhī, 9736

Niruktaparīṣṭa, 9605
 Nṛsimhāśrama, 9467
 Nṛsimhasatōtra, 9632
 Nṛsimhatāpīṇyupaniśad, 9642
 Nṛsimha, 9604, 9620
 Nyāyāmṛta, 9611
 Nyāyasāra, 9583
 Nyāyasāra Savyākhyā, 9584
 Nyāyasāralaghupañjikā, 9584
 Nyāyasārapadapañjikā, 9584
 Nyāyāsāstravīṇyaya, 9586
 Nyāyasīdadhīmtatattva, 9583
 Nyāyasiddhāntamañjarīdīpikā : Tarkapra-
 kāśikā, 9639

 Padaratnaparībhāṣā, 9493
 Pādmapurāṇa, 9684, 9702, 9703
 Pañcabrahmamānta : with commentary,
 9506
 Pañcadaśī, 9656
 Pañcākṣarīmantra, 9513
 Pañcaratna, 9655
 Pañcasānti, 9644
 Pañcikarāṇavyākhyā, 9517, 9595
 Pañcikarāṇa, 9519, 9542
 Pāṇḍuvagīśā, 9594
 Paramabhāṣavatīśatōtra, 9657
 Paramahamsōpanīśad, 9660
 Paramarahasyaśivatatattvōpanīśad, 9523,
 9524
 Parāśarasmr̥ti with commentary, 9723
 Pārvatīśaṅkrajaya stōtra, 9735
 Parvatīśastōtra, 9734
 Putatīśrāddhavidhī, 9729
 Patrasandēsa, 9637
 Peterson, 9540
 Prakrīyākaumudīvyākhyā : Prasāda, 9738
 Prakrīyākaumudīvyākhyā, 9581
 Prakṛtasaptasatī, 9583
 Prāṇavāmantra, 9518
 Prāṇapratīsthīmantra, 9511
 Prāśnōpanīśad, 9624
 Prathanārtavasānti, 9664
 Pratiśāhīkārīkā, 9510
 Pratisūkraśānti, 9711
 Pratyūbhīkāśrāddhaprayōga, 9612
 Pravavīdhī, 9566
 Prayōgapārijāta, 9725
 Prayōgapaddhati, 9543
 Prayōgaratna, 9615, 9616, 9620, 9623
 Prāyascittavīṇyaya, 9521, 9526
 Prāyascittavīdhī, 9599
 Prāyascittāvacana, 9712
 Prētanīmskīravīdhī (Kārīkā), 9625
 Pūnāvāsanāśimantaprayōga, 9682
 Pūnarvīdhāna, 9545
 Pūnassandhīnuparīśatprāyascitta, 9678
 Pūnassandhīnuprayōga, 9611
 Pūnassandhīna, 9548, 9549
 Pūnyāvacana, 9561
 Pūrvaprayōga, 9622
 Pūrvīparaprayōga, 9534
 Pūrvaprayōgapaddhati, 9715
 Puruṣasūktahōmamantra, 9645
 Putrajananādānavīṣēṣa, 9606

- [illegible]

Uccōdarikī, 9654
 Udakakriyā, 9570
 Udakasāntimantra, 9548
 Udakasāntiprayōga, 9548
 Udyaddantajananaśānti, 9671
 Uḥacchalōkṣara, 9501
 Upākarmavidhi, 9528
 Upanayanasaṅkalpa, 9527
 Upāntyabhārgavarṇita, 9708
 Utpalāsānti, 9689, 9690
 Uttaraḡārgya, 9697

Vadhūvarāśīrvōda, 9531
 Vāgbhaṭa, 9642
 Vakulābharapa, 9498
 Vāmadēvasamhitā, 9711
 Varadarājya, 9626
 Varadūrya, 9498
 Varāhapurāṇa, 9606
 Varamaṅgalōṣṭaka, 9529, 9530, 9531,
 9544, 9684
 Vāśavadattāsthapadaśīrvacana, 9636
 Vāstusāntihōma, 9600
 Vāsudeva, 9584
 Vāsyaprayōga, 9557
 Vātūlatantra, 9512
 Vatvaṇuśraṇōṣṭaka, 9545
 Vāyupurāṇa, 9592
 Vāyustōtramantrapurāṣcarapaddhati,
 9535
 Vēdalakṣaṇa, 949', 9502
 Vēdāṅgaṇyautisa, 9502
 Vēdāntadrayatātparya, 9498
 Vēdāntakūṣkā, 9656
 Vēdāntasāra, 9496
 Vēdāntasāya, 9496, 9506
 Vēdāntaviśayaślōkānukramapikā, 9658
 Vēdārthasaṅgraha, 9495
 Vēṅkata, 9617
 Vēdhājanapraya, 9714
 Vidyāranya, 9651, 9743
 Vidyāntithamahēvara, 9505

Vighnōśavaragīta, 9573
 Vijñānēśvara, 9604, 9714
 Vijñānēśvarīya, 9714
 Vikṛtivallī, 9502
 Viśanvīdījananaśānti, 9665, 9672
 Viśayaṇakyaḍipikā, 9524
 Viśiṣṭādrastarōdānta, 9496
 Viśnubharmōttara, 9693, 9694, 9720
 Viśnubharmapurāṇa, 3615
 Viśnumātrikāpūjā, 9657
 Viśnusahasraṇāmāvali, 9734
 Viśnusahasraṇāmastōtra, 9607
 Viśnustava-Saṇyākhyā, 9638
 Viśvāmītra-samhitā, 9535, 9536
 Viśvanāthapañcānana, 9640
 Vratacatuṣṭaya, 9533, 9682
 Vratādānvidīviśayaṇavacana, 9717
 Vṛddhagārgyasaṅhitā, 9693
 Vṛṣṭisārjanaprayōga, 9623
 Vṛttsiddharūpasamgraha, 9739
 Vyāsa, 9498
 Vyāsaputrāṣṭaka, 9661
 Vyatīpātavaśidhṛtiprathamārtavaśānti,
 9664
 Vyavahārakāṇḍa, 9728
 Vyūhārādhanaprayōga, 9659

Yājñavalkyasamṛti, 9714, 9728
 Yājñavalkyasamṛti-Ājumatīśśurōśahitā,
 9731
 Yājñopavitadndraṇaprayōga, 9740, 9741
 Yallāji, 9569
 Yallubhaṭṭa, 9569
 Yamagītā, 9615
 Yamalajananaśānti, 9671, 9672
 Yāmala, 9674
 Yamunāpūjā, 9524
 Yatipārvaṇaprayōga, 9556
 Yatisamśkāraprayōga, 9555, 9706, 9707
 Yatisamśkāravidhi, 9591
 Yōga-śikhōpaniṣad, 9663
 Yōgīśvarīmantra, 9654

•

•

•

•

100
100

Central Archaeological Library,
NEW DELHI.

Call No. 091. 4912/G.C.M.M. 23621

Author—Sastri, S. Kuppur
Iraam

Title—~~Descriptive Catalogue~~
of the Sanskrit Manuscripts
vol. 25

| | | |
|--------------|---------------|----------------|
| Borrower No. | Date of Issue | Date of Return |
|--------------|---------------|----------------|

"A book that is shut is but a block"

CENTRAL ARCHAEOLOGICAL LIBRARY
GOVT. OF INDIA
Department of Archaeology
NEW DELHI.

Please help us to keep the book
clean and moving.